CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

10.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-सन्देश

(चयाँक) १९८५ –

ब्रह्मर्षि-समाज

कानपुर (उ०प्र०)

स्व० राष्ट्रकवि पद्मभूषण डा० रामधारी सिंह दिनकर की पुण्य स्मृति में

दिनकर स्मृति अंक

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर द्वारा प्रकाशित अनियतकालीन पत्रिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-सन्देश कानपुर :

विशिष्ट एवं सम्मानित सहयोगी

१. स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती
(दण्डी स्वामी)
राजगुरु मठ, शिवालाघाट,
वाराणसी (उ. प्र.)

२. डॉ० विवेकी राय,
बड़ी बाग, गाज़ीपुर

३. डॉ० रघुनाथ सिंह,
भू. पू. संसद सदस्य,
डी ५५/१९७, औरंगाबाद,
वाराणसी
फोन : ६४२८६

४. पं. सूर्य नारायण शर्मा,
ब्लाक प्रमुख, भू. पू. विधायक
लोकमान्य तिलक पुस्तकालय,
ग्राम-पोस्ट : सिमरी
ज़िला : भोजपुर (बिहार)

५ चौधरी राजनारायण शर्मा,
(मंत्री, अ. भा. ब्राह्मण परिषद्)
ग्राम : रामपुर अयोध्या
पोस्ट ; बैनी
ज़िला : समस्तीपुर (बिहार)

६. पं० कुलदीप नारायण राय 'झड़प'
ग्राम - पोस्ट : सिकन्दरपुर
ज़िला : बलिया (उ. प्र.)

७. श्री सुरेन्द्र नारायण सिंह
भू. पू. न्यायाधीश, इला० उच्च न्यायाल
२, दयानन्द मार्ग, इलाहाबाद

८. आचार्य तरिणीश झा
अध्यक्ष, पुराण इतिहास विभाग,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
इलाहाबाद

९. श्री अनिल कुमार 'आंजनेय'
पो. : उजियार
ज़िला : बलिया (उ. प्र.)

१०. श्री हरिशंकर शर्मा
'हिन्दी शिक्षक' कार्यालय,
महाराजा बिल्डिंग,
१२५, गिरगांव रोड,
बम्बई - ४०००० ४

११. श्री मथुरा राय
भू पू. मुख्य अभियंता रा०वि०प०
एच-१२, संजय गांधी नगर,
वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी
(दण्डी स्वामी)
को साभिवादन।
— विन्ध्य वासिनी सिंह
(वी० वी० सिंह)

व्यवस्थापक
ब्रह्मर्षि सन्देश
कानपुर

ब्रह्मर्षि-समाज

कानपुर

ब्रह्मर्षि-सन्देश

स्व० राष्ट्रकवि पद्मभूषण
डा० रामधारी सिंह 'दिनकर'
की पुण्य स्मृति में

परिवार
की
श्रद्धांजलि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं।
उर्वशी, अपने समय का सूर्य हूँ मैं।

— दिनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झारखण्डे राय
भू०पू० विधायक एवं
मंत्री संविद सरकार
भू०पू० संसद सदस्य

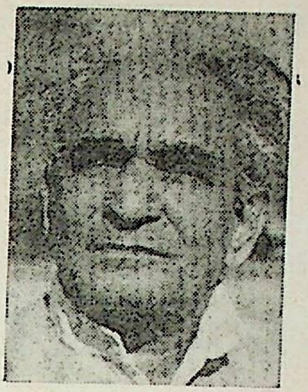

जी ५/३ पेपर मिल कालोनी
निशातगंज, लखनऊ (उ०प्र०)

१०-१०-८५

सन्देश

प्रिय सिंह साहब,

सप्रेम नमस्कार।

आपके पत्र से यह जानकर कि ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर से ब्रह्मर्षि-सन्देश नामक एक अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ करने जा रहा है बड़ी प्रसन्नता हुई।

वर्तमान परिप्रेक्ष में जब देश धर्म, जाति तथा क्षेत्रीयता आदि अलगाववादी शक्तियों के आडंबर पूर्ण, सुरुचिविपन्न, झूठी उदात्तता के प्रचार एवं प्रसार से जर्जर हो रहा है, किसी धर्म या जातिवादी संगठन का गठन प्रतिक्रियावाद की भावना से मुक्त नहीं कहा जा सकता। पर यदि कोई संगठन अपने उत्कर्ष की आकांक्षा के साथ राष्ट्रीय हित में सांस्कृतिक एकता तथा अखण्डता को ध्यान में रखते हुए समाज को अपनी उदात्त एवं गौरवमयी परम्परा बनाये रखने का सन्देश भी देता है तो उसे निःसन्देह प्रगतिवादी ही कहा जायगा। आपके प्रपत्र में राष्ट्रीय अखण्डता एवं सांस्कृतिक एकता को दृष्टिगत रखते हुए, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रकाशन द्वारा सामाजिक चेतना तथा नैतिकता के उत्कर्ष की जो भावना व्यक्त की गई है वह स्पृहणीय है।

वस्तुतः कम लोग जानते होंगे कि पूज्यपाद दण्डी स्वामी सहजानन्द जी सरस्वती, जिसने देश के विभिन्न भागों में बसे विभिन्न नामों के ज्ञात भूमिहार, त्यागी, मोहियाल, चितपावन तथा नम्बूदरी आदि अयाचक ब्राह्मणों को एक सूत्र में पिरोने के लिए "ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर" की रचना की तथा समाज को ब्रह्मर्षि वंश की संज्ञा दी, मात्र एक धार्मिक नेता ही नहीं अपितु एक प्रगतिशील विचारक तथा उच्चकोटि के एवं राष्ट्रीय स्तर के किसान नेता भी थे। वे अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष रहे तथा सामंतवाद विरोधी किसान-संघर्ष के जनक भी कहे जा सकते हैं। उन्हीं के ग्रंथ से प्रेरणा पाकर आप लोगों ने समाज का नाम "ब्रह्मर्षि समाज" तथा पत्रिका का नामकरण ब्रह्मर्षि सन्देश किया है– यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई।

ब्रह्मर्षि-वंश ने भारतीय इतिहास में सदा कोई न कोई गौरवपूर्ण अध्याय जोड़ा है। प्राचीन इतिहास प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं कूटनीतिज्ञ आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य (कौटिल्य) एवं अर्वाचीन इतिहास में स्वतन्त्रता संघर्ष के नायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, बलिदानी चापेकर बन्धु एवं भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रपितामह सावरकर बन्धु इसी वंश की विभूति थे। आशा है ब्रह्मर्षि-समाज कानपुर भी समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तर के संदर्भ में अपनी गौरवशाली परम्परा को ध्यान में रखकर सच्ची समाजवादी व्यवस्था की स्थापना में सहायक होगा तथा समाज में व्याप्त अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं के विरोध संघर्ष में अग्रणी रहेगा।

ब्रह्मर्षि-वंश का जैसा प्रतिभाशाली भूत रहा है तदनुरूप देदिप्यमान ब्रह्मर्षि सभाज कानपुर का भविष्य भी हो। आप लोगों द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्रह्मर्षि-सन्देश" अपनी वांछित भूमिका के निर्वाह में समर्थ एवं सफल हो। –शत् शत् शुभकामनायें–

–झारखण्डे राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Dr. Raghunath Singh
M.A. LL.B , Ph.D., D.Litt. F.R.A.S. (Lond)
Ex-M.P. (Lok-Sabha) & Ex-Chairman
Shiping Corporation of India

Phone : 64286
D55/197 Aurangabad
VARANASI-221001
12—11—85

संदेश

प्रिय विन्ध्य बासिनी सिंह,

आपका सुन्दर लिपियुक्त पत्र मिला धन्यवाद । आपके पत्र से पत्रिका के विषय में जानकर हर्ष हुआ । मैं समय मिलने पर अवश्य कुछ लिखूँगा ।

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप जातिगत् कार्यों में बड़ी रुचि रखते हैं । यह जाति इस समय विपन्नावस्था में है । बिहार, उत्तर प्रदेश जहाँ भी इनका प्रभाव था वह प्रायः लुप्त सा हो गया है। उसमें पुनर्जागृति करने की आवश्यकता है ।

दीपावली की शुभकामनाओं सहित

सस्नेह
रघुनाथ सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

GENERAL MOHYAL SABHA (Regd.)

EG-29-30, INDERPURI, NEW DELHI - 110012

Rzd. B. D. Bali gms/bdb/8305

President 19th October, 1985

My Dear Rai Sb.,

Thank you very much indeed for your kind letter of 15th ultimo which could not be replied earlier as I was out of station most of the time.

It gives me immense pleasure to learn that Rais and Tyagis have formed Brahmrishi Samaj which meets very often to discuss and solve mutual problems. I sanguinely hope that your Samaj wlil grow in stature gradually and will be able to do some useful work for the Society.

I also feel very happy to note that your Samaj is bringing out a Souvenir. I wish you and your Samaj all success in your endeavours aimed at the welfare and wellbeing of the community and society.

Mr. P. N. Bali a very renowned writer is writing a Mohyal History which is under print. I shall send you a copy thereof as soon as it is published which shall give a detail account of Mohyals and their ancestors.

With best wishes and regards,

Shri Ramji Rai,
Mantri, Brahmrish Samaj,
E-4, N. S. I. Colony,
Kalyanpur. Kanpur-27

Yours sincerely,

B. D. BALI

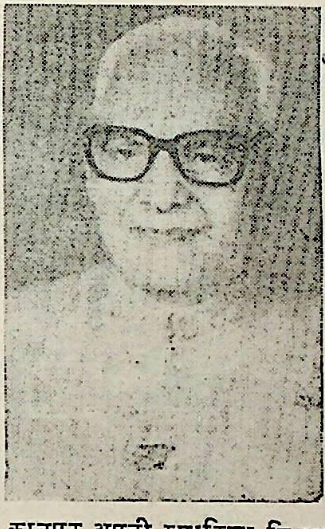

पुरुषोत्तम राय
अध्यक्ष, भूमिहार ब्राह्मण समाज
गोरखपुर

B-89 सूरजकुण्ड कालोनी,
गोरखपुर (उ० प्र०)
पिन 273901

यह जानकर कि 'ब्रह्मर्षि समाज' कानपुर अपनी स्मारिका निकालने जा रहा है, बड़ा हर्ष हुआ।

ब्रह्मर्षि समाज, अयाचक ब्राह्मणों के विभिन्न समुदायों तथा भूमिहार ब्राह्मण, त्यागी, मोहियाल आदि को एक मंच पर लाकर उनमें परस्पर सद्भाव सहयोग तथा भ्रातृ भावना का विकास कर ऐक्य सूत्र में बांधने का श्लाघनीय कार्य कर रहा है साथ ही समाज के सदस्यों के चारित्रिक उत्थान दहेज आदि कुरीतियों के समूल नाश हेतु सतत प्रयत्नशील रहा है।

स्मारिका के माध्यम से ब्रह्मर्षि समाज अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो, इस आशा के साथ मैं अपनी शुभ कामनाएँ भेज रहा हूँ।

दिनांक १७-१०-८५

पुरुषोत्तम राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरेन्द्र नारायण सिंह
न्यायाधीश हाईकोर्ट (अवकाश प्राप्त)

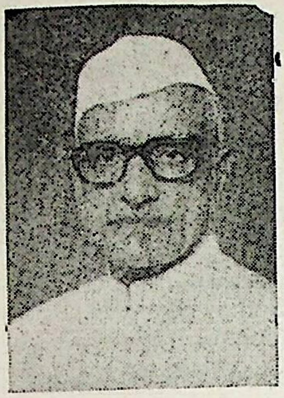

फोन : ३०४४
२ महर्षि दयानन्द मार्ग
इलाहाबाद–१

सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कानपुर ब्रह्मर्षि समाज एक 'ब्रह्मर्षि सन्देश' नामक पत्रिका निकाल रहा है इस अवसर पर हम अपनी शुभ कामना भेज रहे हैं और ईश्वर से प्रार्थना है कि आप लोगों को इस कार्य में सफलता मिले। यह पत्रिका ब्रह्मर्षि समाज के लिए बहुत लाभदायक होगी।

भवदीय,

–सुरेन्द्र नारायण सिंह

ॐ

दलीप दत्त त्यागी
सम्पादक
त्यागी ब्राह्मण समाज
(हिन्दी मासिक, मेरठ)

कार्यालय पता –
२१ राजेन्द्र नगर,
मेरठ (उ० प्र०)
दिनांक ७/१०/८५

सन्देश

बन्धुवर,

आपका पत्र मिला। यह जानकर कि ब्रह्मर्षि-समाज, कानपुर, उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी कानपुर से "ब्रह्मर्षि-सन्देश" नामक अर्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है स्वाभाविक हर्ष हुआ। ब्रह्मर्षि-समाज का यह संकल्प सराहनीय है।

किसी भी समाज के आदर्शों एवं उद्देश्यों के प्रचार का सर्वोत्तम साधन लेखन तथा प्रकाशन हैं। पत्रिका 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार फूले फले–इस शुभकामना के साथ आगत् नवजात शिशु के स्वागत की प्रतीक्षा करता रहूँगा। शुभकामनाओं सहित–

–दलीप दत्त त्यागी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

प्रयाग
दिनांक ९-९-८५

प्रिय भाई, सप्रेम नमस्कार !

'ब्रह्मर्षि समाज' की स्मारिका प्रकाशित होने जा रही है, इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। ऋषि-मुनि सामाजिक, आध्यात्मिक राष्ट्रीय जागरण में जीवनपर्यंत लगे रहे। समाज के जीवन केन्द्र का स्पन्दन ब्रह्मर्षि समाज बने, राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन की पावन धारा प्रवाहित करे, यही हमारी अभिलाषा और शुभ कामना है। शुभ कार्य में मैं सदैव आपके साथ हूँ। ईश्वर आपके कार्य को यशस्वी बनावें।

—सधन्यवाद।

शुभाकांक्षी,

गिरिजा सिंह

वाराणसी,
२५ सितम्बर. १९८५

सन्देश

बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारा ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर, एक विशेष स्मारिका प्रकाशित कर रहा है। इसके माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ेगा। हमारे समाज की कुरीतियों की ओर ध्यान आकर्षण करने में यह पत्रिका सफल होगी, यही मेरी कामना है, सदाशा है। इनका निवारण समाज के जागरण एवं उत्थान के लिये नितांत आवश्यक है।

इसके सफल प्रकाशन के लिये सभी उत्तरदायी व्यक्ति, बधाई के पात्र हैं।

मंगल कामनाओं के साथ,

शुभेच्छु :

(राम चन्द्र शर्मा)
अवकाश प्राप्त मुख्य अभियंता
उत्तर प्रदेश शासन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभ-सन्देश

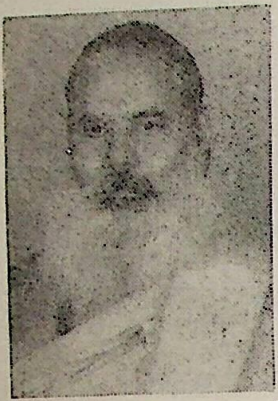

॥ श्री हरिः ॥

फोन : २४१२३०

डा० शौनक ब्रह्मचारी
एम.ए.,एल-एल. बी. दर्शनाचार्य, पी-एच.डी
महामन्त्री
उद्बोधन-समिति
उ०प्र० भारत-भक्त-समाज
मुख्य संरक्षक, मानस-मंच

उद्बोधन-समिति
१०७/२४१ नेहरू नगर
कानपुर-२०८ ०१२

भारत के प्राचीन तपोनिष्ठ महर्षियों ने राष्ट्र एवं विश्व की स्थिति को सुस्थिर बनाने के लिए अपनी कुशाग्र स्थितप्रज्ञता से जो प्रयत्न किया है, वह रचना क्षेत्र में महान् एवं प्रशंसनीय है। उन्होंने नाना रूपात्मक पदार्थों के अन्तः स्थल में विद्यमान एक रूपता की खोज करके उसके आधार पर मनुष्य की वैयक्तिक तथा सामाजिक रचना की–जिससे मानव जीवन की सर्वाङ्गीण उन्नति, राष्ट्रीय जीवन का मौलिक सुधार तथा उसका विशुद्ध एवं स्थायी सुधार हो सके।

ऋषियों की वैयक्तिक रचना ही आश्रम व्यवस्था है। इस वैयक्तिक रचना से मनुष्य अपने चरमध्येय की प्राप्ति कर सकता है–जिससे समस्त मानसिक दोषों की जननी कामना उत्पन्न ही नहीं हो सकती। दूसरे की वस्तुओं को देखकर हमें भी उन्हें भोगने की इच्छा होती है, यह कामना, नाम की पिशाची है। उन वस्तुओं की प्राप्ति के लिए तथा उनके भोग को स्थायी रखने के लिए हमें अनेक दोष करने पड़ते हैं, यह कामना का ही परिणाम है। इसलिए यह वैयक्तिक रचना मानव की सर्वांगीण उन्नति की पराकाष्ठा एवं राष्ट्र और समाज का मौलिक सुधार था।

समस्त मानव को समाज का अंग प्रत्यंग समझकर उसे सुदृढ़ बनाने के लिए भारतीय ऋषियों ने मनुष्य की प्रकृति पार्थक्य के आधार पर वर्ण व्यवस्था किया। यह एक प्राकृतिक नियम है कि मानसिक एवं बौद्धिक उन्नति में सबका बराबर स्थान नहीं हो सकता और सबकी प्रकृति में भी एकता नहीं दीख पड़ती। अतः सभी मनुष्यों को एक ही कार्य न सौंप कर उन्हें अपने उत्कर्ष में प्रवृत्त करने के लिए तथा सामाजिक सुव्यवस्था के लिए उनकी जन्मगत वृत्ति एवं मानसिक स्थित्यनुसार भिन्न कार्य ही उन्हें सौंपे जाने चाहिए, इस तथ्य को समझकर भारतीय प्राचीन मनीषियों ने विशिष्ट और शक्तिशाली समाज का निर्णय कर दिखाया।

मानव के सर्वांगीण विकास के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था में ईर्ष्या - द्वेष के लिए स्थान नहीं है। स्वधर्माचरण ही मानव का वास्तविक विकास करता है स्वधर्माचरण से चित्त में वैराग्य होता है, तब उसे अपने जीवन के वास्तविक तथ्यों का अनुभव होने लगता है। मानव का उद्देश्य चिरन्तन सुख है। भौतिक सुखों को गृहस्थाश्रम में संयम पूर्वक भोगते हुए वानप्रस्थाश्रम में सीमित कर सन्यास में मूलतः समाप्त करने का ऋशियों ने विधान बनाया है।

मानव-जीवन का चरम लक्ष्य आत्म दर्शन है। वर्णाश्रम-व्यवस्था लक्ष्यपूर्ति में सहायक है। वर्णाश्रम में ब्राह्मण सात्विकता का प्रतिमूर्ति होता है इसलिए गीता ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म की व्याख्या इस प्रकार करती है —

शमो दमः तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम् ॥

उपर्युक्त लक्षण युक्त ब्राह्मण सभी का श्रद्धास्पद होता है। राज सत्ता के प्रवाह में ब्राह्मणों का स्थान भेद से वर्गीकरण किया गया। मूलतः सभी ब्राह्मण एक हैं। ब्राह्मण प्राणीमात्र का हितैषी होता है। वह सहन शक्ति का प्रतिमूर्ति होता है। वह अपने ज्ञान के वर्चस्व, बुद्धि की स्थित प्रज्ञता एवं हृदय की विशालता के कारण मानव मात्र का मार्गदर्शक होता है।

इसी दृष्टिकोण को प्रसारित करने के लिए 'ब्रह्मर्षि-समाज' कानपुर ने 'ब्रह्मर्षि-सन्देश-पत्रिका' का श्रीगणेश किया है। विद्वान, सज्जन, कर्त्तव्यनिष्ठ सम्पादक-मण्डल इस पत्रिका के माध्यम से समाज का सही मार्गदर्शन करने में भगवत्कृपा से पूर्ण सक्षम होगा। यही मेरी सद्भावना है।

– शौनक ब्रम्हचारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मथुरा राय
प्रबंध निदेशक उ०प्र०रा०वि०उ०नि०लि०(से०नि०)
मुख्य अभियन्ता उ० प्र० रा० वि० प० (से० नि०)
अध्यक्ष भूमेश्वर-समाज, लखनऊ

फोन . ६२६१५
एच-१२, संजय गान्धी नगर,
(पुराना काटन मिल)
वाराणसी-२२१००२

संदेश

आदरणीय विन्ध्य बासिनी सिंह जी,

सादर नमस्कार,

आपका पत्र प्राप्त हुआ मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है कि पत्रिका का पहला अंक "परिचयांक" प्रकाशित होने जा रहा है –

हम लोगों का समाज कितना विघटित है इसे सभी जानते हैं– इसकी एकता राष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त आवश्यक है– इस पत्रिका के माध्यम से, हमें आशा है, समाज को एक सूत्र में बाँधने में सहायता मिलेगी –

आपकी पत्रिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें –

सादर
मथुरा राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Always use Rocket & Luna Brand G. I. Products

Manufactured by

PRASAD PRODUCTS

Manufacturers & Govt. Suppliers

76/578, Coolie Bazar,
KANPUR—208001

Gram : BALTIWALA

Phone { Off : 65366
Resi : 219362

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बात

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की यात्रा को वाह्याभ्यंतर सघर्षों का इतिहास कहना अनुचित नहीं होगा। शायद ही किसी अन्य देश को इतने संघर्ष झेलने पड़े हों। एक ओर यहां समय समय पर होने वाले वाह्य आक्रमणों द्वारा तथ्य-परक ऐतिहासिक गरिमा–चिन्ह नष्ट होते रहे वहीं दूसरी ओर संस्कृति तथा दर्शन के मूल ग्रन्थ तथा भाष्य आन्तरिक वैचारिक मतभेदों के कारण परस्पर विरोधी प्रक्षिप्त उक्तियों के कारण अपना मौलिक स्वरूप खोते रहे। फलतः किसी भी क्षेत्र में विकास क्रम का क्रमबद्ध इतिहास लिखने के लिये इतिहास-वेत्ता कल्पना का सहारा लेने को बाध्य हुए दिखाई पड़ते हैं। भाषा के निरन्तर बदलते परिवेश के कारण मूल ग्रन्थों तथा भाष्यों में निहित स्वार्थ साधक विकृति प्रेमी तत्वों द्वारा प्रक्षिप्त अंश इतनी सफाई से जोड़े गये हैं कि भाषा विज्ञान के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान भी उन्हें अलग करने तथा उनका मंतव्य स्पष्ट करने में अपने को असमर्थ अनुभव करते हैं। वर्तमान काल में अपेक्षित सांस्कृतिक एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता की दृष्टि से आज समाज को जातिवाद, क्षेत्रीयता तथा धार्मिक उन्माद ग्रस्त संकुचित दृष्टिकोण वाली अलगाववादी शक्तियों तथा वाह्य एवं अंतर्साक्ष्यों के भ्रमपूर्ण विवेचन प्रसारित कर जनता को भ्रमित करने वाले तथाकथित समाज सेवियों एवं भ्रष्ट राजनीतिज्ञों से मुक्त कराने की आवश्यकता पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठी है। अतः राष्ट्र के हितचिन्तकों तथा सत्यान्वेषी विद्वानों का धर्म है कि वे खण्डन, मण्डन एवं समीकरण की प्रक्रिया में जोड़े गये प्रक्षिप्त अंशों की विकृति मूलक भावना को स्पष्ट कर संस्कृति तथा दर्शन के मूल में निहित सनातन सार्वभौम सत्य की प्रतिष्ठा तथा आधुनिक परि-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पेक्ष्य में उसका औचित्य स्पष्ट करें तथा सर्वसाधारण को भ्रम से मुक्त करने तथा सत्य से परिचित कराने में सहायता करें।

भारतीय समाज की संरचना का आधार वैदिक वर्ण-व्यवस्था तथा वर्णाश्रम धर्म आज सर्वाधिक विवाद का विषय बन गया है। शुक्ल यजुर्वेद का वह मंत्र (अं० ३२-मं०१२) जो हिरण्यगर्भ या प्रजापति के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जाघों से वैश्य तथा पावों से शूद्र की उत्पत्ति को प्रतीकात्मक भाव से एक ही समाज रूपी शरीर के विभिन्न अविभाज्य अंगों के रूप में व्यक्त करता हैं, वर्तमान तथाकथित वर्णविहीन समाज को स्थापना के प्रसंग में औचित्य की कसौटी पर कसा जा रहा है। प्रतीकात्मक कल्पना को वरिष्ठता तथा कनिष्ठता का पर्याय बनाकर अर्थ का अनर्थ किया जा रहा है। जिस सूक्त से उद्धृत यह बारहवाँ मंत्र स्वार्थ साधन की दृष्टि से दिखाया जाता है उसका पहला मंत्र पढ़ने या समझने का कष्ट नहीं उठाया जाता।

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमिम् सर्वतः स्पृत्वात्य तिष्ठ दशांगुलम्॥

अर्थात जगत में जितने भी प्राणी हैं, सबके सिर उस विराट-पुरुष के सिर हैं, सबकी ज्ञानेन्द्रियां एवं कर्मेन्द्रियां उसी की ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां हैं। वह इस विश्व को हर विन्दु पर छूता है या सर्वव्यापी है तथा दशांगुल अर्थात दस दिशाओं वाले इस विश्व के बाहर भी है। अब विचारणीय है कि जब सभी ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों सहित उसके अंश माने जा चुके तो वरिष्ठता तथा कनिष्ठता की कल्पना का आधार कहाँ से आ गया?

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में भी गुण, धर्म एवं स्वभाव की समानता के आधार पर ग्रहनक्षत्रादि तथा राशियों को भी देव, मनुष्य एवं राक्षस आदि गणों तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आदि सांकेतिक वर्गों में विभाजित किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पष्टतया यह वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन नहीं मात्र स्वभाव तथा गुणादि का स्पष्टीकरण मात्र है। भारतीय साहित्य में भी अभिधा, लक्षणा तथा व्यन्जना तीन शब्द शक्तियाँ मानी गयी हैं जहाँ जैसी आवश्यकता हो उसी के अनुसार व्यवहार तथा अर्थ प्रतिपादन उपयुक्त कहा जा सकता है। व्यंजना या लक्षणा का अभिधात्मक अर्थ तो मात्र स्वार्थ सिद्धि की दृष्टि से विद्वान नहीं, अन्य प्रकार के लोग ही कर सकते हैं।

आज जब समाज में "सब नर कल्पित करहिं अचारा" वाली स्थिति व्याप्त है तथा अर्थ का अनर्थ कर स्वार्थ साधन के लिए जन साधारण को भ्रमित करना ही ध्येय बन रहा है, विविध वैदिक ग्रन्थों, उपनिषदों, भाष्यों तथा स्मृतियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त एवं विद्वतापूर्ण विवेचन पाश्चात्य विद्वानों के लिए शोध का वस्तु भले ही हों अपने देश तथा समाज के लिए अर्थहीन एवं अप्रासंगिक बनकर रह गये हैं। स्वार्थ साधन के लिए अब राजनैतिक स्तर पर भी उनके विकृत अर्थों का दुरुपयोग अनुचित नहीं माना जा रहा है। साहित्य और संस्कृति के स्तम्भ एवं मर्यादा के प्रतिपादक "मनुस्मृति" तथा रामचरितमानस प्रभृति ग्रन्थ भी विधान सभा कक्षों तथा जनसभा मंचों पर फाड़े एवं अपमानित किये जा सकते हैं तथा किये जा रहे हैं ऐसी परिस्थित में समाज के एक वर्ण या वर्ग विशेष के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विकास क्रम से सम्बन्धित प्रकाशन को विवादों से दूर रख पाना कहां तक संम्भव होगा यह स्वयं में एक विचारणीय विषय है। पर मात्र मिथ्यापवादों से भयभीत होकर सत्य की प्रतिष्ठा एवं प्रचार के पुनीत कर्तव्य से विरत होने वाली पलायनवादी प्रवृत्ति का प्रदर्शन भी तो अभीष्ट या तर्क संगत नहीं होगा।

प्राचीन ऋषियों तथा स्मृतिकारों ने तो "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः" (गीता ४-१३) की नैसर्गिक वर्ण व्यवस्था द्वारा कर्म प्रधान समाज की स्थापना को विवादों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर रखने के प्रयास में सदा सदाचार मूलक कर्मों पर ही बल दिया तथा स्पष्ट शब्दों में लिखा कि :—

"न योनिः नापि संस्कारो न श्रुतं न च संततिः ।
करणानि द्विज एवस्य वृतमेव तु कारणभ् ।।
तथा म. भावन पर्व ३१३/१०८

शूद्रो ब्राह्मणामेति, ब्राह्मणश्चैव शूद्रताम् ।
क्षत्रियात् जातमेवं तु, विद्याद् वैश्यात् तथैवच ।। मनु १०/६५

अर्थात जन्मसंस्कार, वेदाध्ययन याकुलमात्र ब्राह्मणत्व का कारण नहीं, ब्राह्मणत्व का कारण तो मात्र वृत्ति या सदाचार है। १ ।। आचार के कारण ही ब्राह्मण शूद्र एवं शूद्र ब्राह्मण हो जाता है। तथा यही तर्क क्षत्रिय एवं वैश्य के लिये भी दिये जा सकते हैं।

ऋषियों एवं स्मृतिकारों के इन वचनों में कहीं कुछ विवादास्पद तथा विषमता मूलक तो नहीं था। पर कालांतर में वाह्याभ्यंतर प्रभावों, स्पर्धा तथा संघर्षों के कारण वर्णों से जातियों तथा जातियों से उपजातियों में स्वयं विभाजित करने का जो क्रम चला उसके कारण वह संख्या १२६६ तक (१९७१ की जनगणना के आधार पर) पहुँच गई थी और अब और बढ़ी हो तो आश्चर्य नहीं। सनातन आर्य (सभ्य) धर्म वाह्य प्रभावों तथा विदेशी इतिहासकारों द्वारा दिये गये नामों के आधार पर अब हिन्दू या ब्राह्मण धर्म (ब्राह्मनिजम) का नाम ग्रहण कर चुका है। इसका दोष किसे दिया जाय ? मात्र ब्राह्मणों को ! समाज को !! या व्यवस्था को !!! नैतिक दृष्टि से क्या हम सभी इसके लिये दोषी नही 'हैं'? आज हम स्वयं नये वर्ग व्यवसायिक आधार पर यथा नेता, वकील, डाक्टर आदि भी पैत्रिक उत्तराधिकार के आधार पर बनाने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप में सहायक हो रहे हैं फिर भी वर्ग हीन तथा जातिहीन समाज की स्थापना का दंभ भरने के लिये नहीं चूकते। कथनी और करनी का यह अन्तर हमारे मौलिक दार्शनिक एवं सांस्कृ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिक मूल्यों को उदरस्थ करता जा रहा है। प्रबुद्ध वग अब यह सोचने पर विवश हो गया है कि जन साधारण को अपनी प्राचीन सांस्कृतिक चेतना के प्रति जाग्रत कर ही यह नैतिक अधः-पतन रोका जा सकता है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि हम किसी भी मंच पर संगठित होकर यदि राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक उत्थान में सहायक हो सकें तथा अपने समाज को उसके नैतिक एवं सामाजिक सदाचरण के प्रति जाग्रत कर सकें तो हम राष्ट्र या समाज का ही हित नहीं अपितु अपना भी हित चिन्तन ही करेंगें।

किसी भी समाज, संघ या संस्था के गठन के मूल में समानता का सिद्धान्त प्रधान होता है समानता सूक्ष्म हो या स्थूल, सामाजिक, साँस्कृतिक तथा आध्यात्मिक स्तर पर हो, या भौतिक क्षेत्र में समाज के गठन के मूल में भी यही सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक आदर्शों की समानताका सिद्धान्त निहित है। इस समाज में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में भूमिहार ब्राह्मण, पश्चिमी उतर प्रदेश में त्यागी ब्रह्मण पंजाब में मोहि-याल, दक्षिण में अनाविल तथा कोकण एवं महाराष्ट्र में चितपावन तथा अन्य प्राँतों में अन्य विभिन्न नामों से स्वयं को संबोधित एवं परिचित कराने वाले अयाचक ब्राह्मण जो अपने को ब्राह्मण कहने में भी संकोच का अनुभव करते हैं, सम्मिलित होते हैं। यह समाज वस्तुतः अपने को एक पृथक जाति समझने लगा है जिसके मूल में हमारा अज्ञान ही प्रधान कहा जा सकता है। आज हम अपनी उदात्त परम्परा को भूलकर कर्म-च्युत हो रहे हैं। पूज्यपाद स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने इसी भावना को दूर करने के लिये "ब्रह्मर्षि वंश विस्तर" तथा "हिन्दू कर्म कलाप" आदि ग्रंथों की रचना की थी तथा भारत भ्रमण कर हमें जाग्रत करने का प्रयास किया था। जब स्वामी जी की कृति से प्रेरणा प्राप्तकर हमने अपने समाज का नाम "ब्रह्मर्षि समाज" पत्रिका का नामकरण "ब्रह्मर्षि सन्देश" किया है तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशा है हम स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित राष्ट्र, समाज तथा प्रत्येक के समग्रहित चिन्तन की भावना को मूर्त रूप देने का प्रयास भी करेंगे तथा उसमें सफल होंगें। हमें स्वामी जी ने हमारा पूर्व इतिहास भी दिया है। आशा है हम ब्राह्मण हैं तथा हमारी जीविका का साधन भिन्न होने के बाद भी हमारा कर्म यज्ञ, दान तथा अध्ययन ही प्रधान है यह हम सदा याद रखेंगे। महर्षि आत्रे ने लिखा भी है :—

कर्म विप्रस्य यजनं दानमध्ययनं तपः ।
प्रतिग्रहो अध्यापनं च याजनं चेति वित्तयः ॥

अर्थात ब्राह्मण के कर्म यज्ञ, दान एवं अध्ययन मात्र हैं। प्रतिग्रह (दान लेना) पढ़ाना तथा यज्ञ कराना तो वृत्ति या जीविका के साधन मात्र हैं। आशा है जाति एवं धर्म का इतिहास निरंतर इस पत्रिका के अंको में मिलेगा तथा आप के ज्ञान को वृद्धि में सहायक होगा।

मनुष्य मात्र का प्रथम विभाजन तो दैवी या आसुरी स्वभाव के आधार पर ही होता है। आसुरी स्वभाव वालों का न कोई संगठन होता है न उनके संगठन से कोई समाज हो बनता है। समाज तो मात्र दैवी स्वभावगत् वहुजन हिताय की भावना से ही बनता है तथा बनता रहेगा। समाज में प्रायः वही आते भी हैं जो बहुजन हिताय में ही स्वान्तः सुखाय का अनुभव करते हैं। सुख मात्र सदाचरण या उसके प्रतिपादन में ही नहीं होता। पीडित को पीड़ा तथा अन्याय से मुक्त करने में भी अनुभव किया जा सकता है। आज समाज अनेक कुरीतियों यथा दहेज रुढ़िवादिता एवं अशिक्षा आदि तथा सामाजिक विषमताओं से ग्रस्त है। हमारे ब्रह्मणत्व की सार्थकता इनसे समाज को मुक्त करने कराने तथा जन जन तक इनके प्रति जागृति उत्पन्न करने में ही निहित है। आशा है हम आपके सहयोग से इसमें समर्थ एवं सफल होंगे।

ब्रह्मर्षि समाज कानपुर द्वारा प्रकाशन का यह प्रथम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयास नहीं कहा जा सकता। इसके पूर्व मई सन् १९७६ में भी समाज ने एक परिचय पुस्तिका प्रकाशित की थी जिस में तत्कालीन स्थानीय सदस्यों का परिचय तथा समाज का एक संक्षिप्त इतिहास भी प्रकाशित किया गया था प्राचीन सदस्यों में से अधिकांश आज भी समाज के नियमित सदस्य हैं तथा समाज की प्रगति में सहायक हो रहे हैं। विगत नौ वर्षों में समाज ने कोई नया प्रकाशन तो नहीं किया पर अपना संविधान बनाकर उसको सोसाइटीज ऐक्ट के अंतर्गत रजिस्टर अवश्य करा लिया है। इस शुभकार्य के लिए हम सर्वश्री दामोदर राय तथा रामायण राय प्रभृति सक्रिय एवं उत्साही सदस्यों के आभारी हैं। समय समय पर नवागत सदस्यों के कारण वातावरण में कुछ सार्थक कर दिखाने का उत्साह अवश्य दिखाई पड़ा पर किसी योजना को मूर्त रूप देना संभव नहीं हो पाया। वर्तमान सत्र में कुछ युवा उत्साही एवं सुरुचि संपन्न सदस्यों के सत्प्रयास से पत्रिका प्रकाशन के निर्णय को मूर्तरूप देना सम्भव हो पाया है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उनका उत्साह बना रहा तथा समाज के सदस्यों का सहयोग मिलता रहा तो हम अपने प्रयत्न में अवश्य सफल होंगे। इस संदर्भ में इतना ही कहना पर्याप्त होगा :–

शानदार था भूत औ, भविष्य भी महान है।
संभालें उसे आप जो कि वर्तमान है ॥

इसी आशा एवं विश्वास के साथ यह परिचयांक, जो स्व० राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के स्मृति अंक के रूप में प्रकाशित है, हमें आपके सम्मुख प्राप्त करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। आपकी प्रतिक्रियायें तथा बहुमूल्य सुझाव भविष्य में हमारा मार्ग दर्शन करने में सहायक होंगे।

— विन्ध्य बासिनी सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

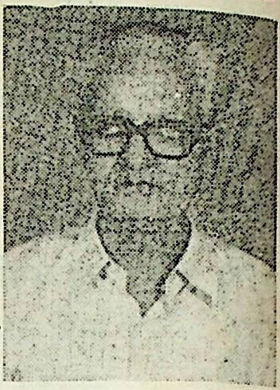

निवेदन

उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी कानपुर में ब्रह्मर्षि-समाज की स्थापना हुये प्रायः दो दशक बीत चुके हैं। यह हर्ष का विषय है कि समाज में भूमिहार, त्यागी तथा मोहियाल समाज के सभी सदस्य अपना अपूर्व सहयोग समय समय पर प्रदान करते रहे हैं और उनके सतत प्रयास से समाज की सदस्य संख्या निरंतर बढ़ती रही है। समाज की नियमित मासिक बैठक तथा विचार विमर्श के फलस्वरूप समय समय पर वार्षिकोत्सव, पिकनिक तथा मनोरंजन के कार्यक्रम भी आयोजित होते रहे हैं। फिर भी यह कहना अधिक तर्क-संगत होगा कि समाज को उसका वास्तविक विधि सम्मत स्वरूप संस्था के २४-१-८३ से सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन के बाद ही प्राप्त हुआ है। इस स्वरूप के निर्धारण में सर्वश्री मेजर रामायन राय तथा दामोदर राय प्रभृति उत्साही एवं सक्रिय सदस्यों ने जो प्रयास किये उसके लिये समाज उनके प्रति आभारी है।

समाज के उत्साही सदस्यों ने विगत वर्षों में कई बार समाज की अपनी एक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पत्रिका निकालने का निर्णय लिया पर कर्मठ सदस्यों के अभाव तथा वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण स्वप्न साकार नहीं हो पाया। इस वर्ष श्री रामजी राय सचिव, के सत्प्रयास तथा सर्वश्री विन्ध्यबासिनी सिंह, विधुभूषण सिंह राय, तथा डा० मंगलाराय प्रभृत कर्मठ एव उत्साही सदस्यों की निःस्वार्थ सेवा के कारण नियमित अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन का स्वप्न भी साकार होने जा रहा है। पत्रिका का यह प्रथम अंक जो परिचयांक के नाम से समाज के गौरव स्व० राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह "दिनकर" की स्मृति में प्रकाशित हो रहा है आप सबके कर कमलों में प्रेषित करते समय मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। क्योंकि समाज का पंजीकरण तथा पत्रिका प्रकाशन संबन्धी दोनों कार्य मेरे अध्यक्षीय कार्यकाल में ही सम्पन्न हो रहे हैं।

पत्रिका का अगला अंक शिवरात्रि पर समाज के गौरव युगपुरुष महर्षि स्वामी सहजानन्द स्मृति-अंक के रूप में प्रकाशित होगा। आशा है उसमें प्रथम अंक पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आयी प्रतिक्रियायें तथा आपके बहुमूल्य सुझाव भी प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

आशा है आपके सतत सहयोग से अपना समाज विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

—शुभ कामनाओं सहित।

आपका ही :

चन्द्रभान त्यागी

दि० १-१२-८५

अध्यक्ष

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-सन्देश

कानपुर
पत्रिका प्रबन्ध कारिणी
एवं
सम्पादन-समिति
१९८५-८६

श्री चन्द्र भान त्यागी
अध्यक्ष,
ब्रह्मर्षि समाज कानपुर
५८/५२, बिरहाना रोड, कानपुर

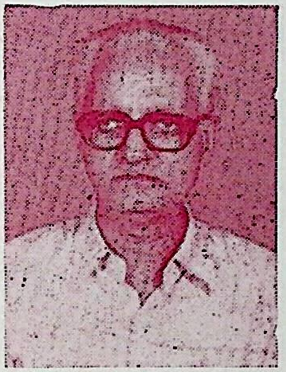

पत्रिका के प्रेरणा स्रोत

विन्ध्य बासिनी सिंह
एम.ए., एल-एल.बी., आई.आर.एस. (से.नि.)
अधिवक्ता (आयकर-सलाहकार)
२/४९२ आजाद नगर, कानपुर २०८००२

प्रधान-सम्पादक

विधु भूषण राय
बी. एस. सी. (मेक. इजि. आनर्स)
निरीक्षण-निदेशक,
पूर्ति विभाग (भारत-सरकार)
३/२०९, विष्णुपुरी, कानपुर

पत्रिका व्यवस्थापक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशिष्ट सहयोगी
एवं परामर्शदाता पत्रिका समिति

डॉ० शौनक ब्रह्मचारी
एम. ए., एल-एल. बी., पी-एच. डी.
उद्‌बोधन समिति
१०७/२४१ नेहरू नगर, कानपुर-२०८०१२

मेजर रामायन राय
११७ बी, नेपियर रोड, कानपुर कैण्ट

विशेष सहयोगी
पत्रिका समिति

श्री साँवलिया राय
४/१ केसा कालोनी,
आजाद नगर, कानपुर

विशेष सहयोगी
(पत्रिका समिति)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका सम्पादक

डॉ० मंगला राय
एम. एस. सी., पी० एच० डी०
परियोजना समन्वयक
कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर
२/४४८ ए, आजाद नगर, कानपुर

डॉ० रवीन्द्र नाथ राय
एम. एस-सी., पी-एच.डी. (केमि०)
छात्रावास अधीक्षक एवं प्रवक्ता,
९६/१२ पी. पी. एन. डिग्री कालेज, परेड, कानपुर

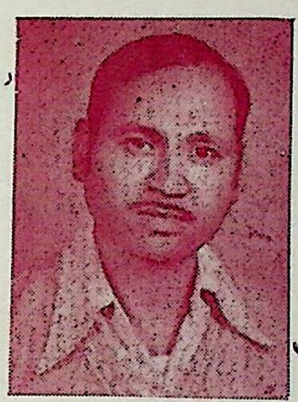

पत्रिका सम्पादक

कोष-संचालक (पत्रिका)

डॉ० गुलाब नाथ सिंह
एम. एस. सी., पी-एच. डी. (ऐग्रो. इकानो.)
कृषि अर्थशास्त्री,
कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर
३ए/७ आजाद नगर, कानपुर

श्री राम जी राय
मंत्री, ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर
ई-४ एन० एस० आई० कालोनी,
कल्यानपुर, कानपुर

पत्रिका प्रचार-प्रसार व्यवस्थापक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-समाज कानपुर के वार्षिक समारोह १९८५
एलेन फारेस्ट कानपुर में बोलते हुए
विशिष्ट अतिथि भइया जी (पटना)

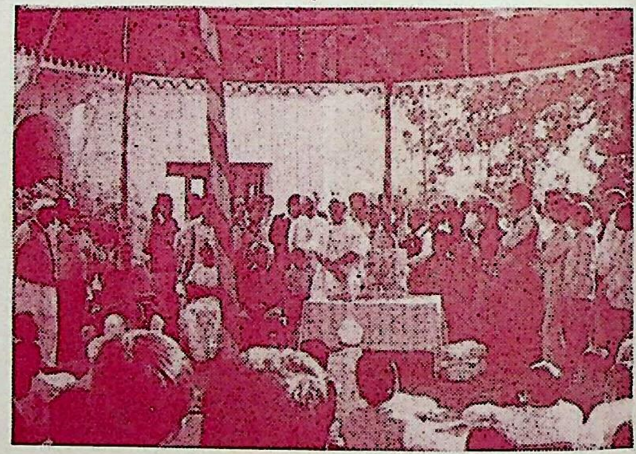

ब्रह्मर्षि समाज कानपुर के वार्षिक समारोह १९८५ पर
भाषण करते हुए डा० शौनक ब्रह्मचारी एवं अध्यक्ष
चन्द्रभान त्यागी बायें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि सन्देश
कानपुर
अनियत कालीन पत्रिका

अनुक्रम

दिनकर के प्रति

१.	वंशज वक्तव्य	बालकवि वैरागी	१
२.	अपनी ज्वाला से ज्वलित	फणीश्वर नाथ 'रेणु'	३
३.	दिनकर के प्रति	नीरज	५
४.	युग का पुरुरवा	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	६
५.	नज़राना-ए-अकीदत	मौ० मुजिबुल्लाह 'अकमल'	७
६.	श्रद्धांजलियां	श्रीमती इन्दिरा गाँधी, जयप्रकाश, हजारी प्रसाद द्विवेदी, किशोरी दास बाजपेयी	८
७.	दिनकर एक दृढ़ संकल्प	बी. पी. शर्मा	९
८.	दिनकर जीवन-झाँकी एवं रचना-संसार	संकलनकर्ता—अनिल कुमार आंजनेय	११

आलेख

९.	अयाचक्र ब्राह्मण	कुलदीप नारायण राय 'झड़प'	१४
१०.	एक उद्‌बोधन (कविता)	झारखण्डेराय	१७
११.	भूमिहार ब्राह्मण	आचार्य तरिणीश झा	१९
१२.	ब्राह्मण समाज का दायित्व	चन्द्र भाल राय	२३
१३.	गोस्वामी तुलसीदास की जाति	कुलदीप नारायण राय 'झड़प'	२९
१४	मानस के मुहावरे	विवेकी राय	३५
१५	भूमिहार ब्राह्मण समाज	चौ० राजनारायश शर्मा	४३
१६.	विश्व संस्कृति में दीपक	हरिशंकर	४५
१७	ब्राह्मण	अर्जुन सिंह	४७
१८.	ब्रह्मर्षि समाज एक कड़ी	श्रीमती गिरिजा देवी	४९
१९.	माता भूमिः पुत्रों ऽहं पृथिव्याः	डाँ० कालिन्दी राय	५१
२०.	गीत	कैलाश गौतम	५३

परिशिष्ट

संविधान (स्मृति पत्र, नियमावली),
सदस्यता-प्रपत्र, आजीवन सदस्य सूची, साधारण सदस्य सूची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-सन्देश

सम्पादक मण्डल :

प्रधान सम्पादक — श्री बिन्ध्य वासिनी सिंह

विशिष्ट सहयोगी व परामर्शदाता — डॉ० शौनक ब्रह्मचारी

सम्पर्क-सूत्र : 2/492, आज़ाद नगर, कानपुर - 208002

प्रस्तुत अंक के लिये लेख तथा अन्य प्रकाशन सामग्री बहुतायत से प्राप्त होने तथा स्थानाभाव के कारण सबका प्रकाशन संभव नहीं हो पा रहा है। इस व्यापक स्वागत के लिये हम अपने लेखक बन्धुओं के आभारी हैं तथा उन्हें आश्वस्त करना चाहते हैं कि उनके द्वारा भेजी गई उपयुक्त सामग्री आगामी अंकों से अवश्य प्रकाशित होगी। हम इस अपार स्नेह प्रदर्शन के लिये आभारी हैं तथा आशा करते हैं कि भविष्य में उनका ऐसा ही स्नेह हमें उत्साहित करता रहेगा।

राष्ट्रकवि स्व० दिनकर जी पर प्रकाशित सामग्री समय समय पर संकलित कर उपलब्ध कराने के लिये तथा पत्रिका प्रकाशन में सुझाव तथा योगदान के लिये हम डा० अनिल कुमार "आंजनेय" प्रकाशन मंत्री अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। इस पत्रिका प्रकाशन में सतत् सहयोग के लिये हम कानपुर की साहित्यिक संस्था "श्रृंगार संध्या" परिवार के सदस्यों तथा विशेषतया श्री राम प्रकाश शुक्ल "शतदल" संयोजक श्रृंगार संध्या के भी आभारी हैं।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर के प्रति—

वंशज का वक्तव्य

—बाल कवि बैरागी

क्या कहा कि 'दिनकर' डूब गया दक्षिण के दूर दिशांचल में ?
क्या कहा कि गंगा समा गई रामेश्वर के तीरथ जल में ?
क्या कहा कि नगपति नमित हुआ तिरुपति के घने पहाड़ों पर ?
क्या कहा कि उत्तर ठिठक गया दक्षिण के ढोल–नगाड़ों पर ?

वह दिव्य भाल, उन्नत ललाट, दिपता था जिस पर सूर्य-बिन्दु,
वह धवल वेश, वह स्कंध-वस्त्र, लिपटा था जिसमें अमल इन्दु।
सुग्रीव - शीश, वे वृषभ-स्कंध, वह चट्टानों सा वक्ष - प्रान्त,
वह चलता - फिरता हवन - कुंड, वह हिन्दी का अद्‌भुत निशान्त।

वे रक्त - रचे, जलते लोचन, वह भैरव स्वर, वह महाघोष,
वे प्रबल प्रकम्पित पुष्ट ओष्ठ, वह अपनी वय का मुखर रोष।
वह धधक् - धधक् सा पदाघात, वह दिग् - दिगन्त का सिंहनाद,
वह लावे का जीवित प्रमाण, वह पौरुष का सम्पूर्ण स्वाद।

वह आर्य रक्त का युद्धगीत, वह बड़वानल का छन्द पूत,
वह दावानल का रूपान्तर, वह महामन्यु का रक्तदूत।
वह तप्त रुधिर का भाग्य लेख, वह वह्नि - वलय पावक प्रपात,
वह नील कण्ठ का आप्त रोष, वह पुण्य-प्रलय का चक्रवात।

वह रण मंत्रों का जन्म - लग्न, वह प्रगति - काल का शिलान्यास,
वह आह्वानों का महाकाव्य, वह रवि-शशि दोनों का प्रकाश।
निर्धूम अनल का मणि - किरीट, वह परशुराम का कटु - कुठार,
वह संकल्पों का युग - चारण, वह मसिमय असि का रक्त - ज्वार।

आजानुबाहु वह काल - पुरुष, वह कामिनियों का कण्ठहार,
वह उर्वशियों का स्वप्न-देव, वह ऋतुमतियों का ऋतु संहार।
पर्याय - पुरुष वह शोणित का, वह इस शताब्दि का स्पष्ट भाष्य,
वह कुरुक्षेत्र का काव्य - कमल, वह यौवन का अर्जित उपास्य

वह वासुदेव इस आँगन का, वह पूर्वघोष पूर्वोदय का,
उन्चास पवन का अनुगायक, वह रश्मि–रथी सूर्योदय का ।
वह राजनीति का कुश–अंकुश, वह अघट अनय का रिपु विशेष,
राजीव–नयन, वह करुणाकर, वह संस्कृतियों का अर्थश्लेष ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह मूँद गया अपनी आँखें, क्या कहते हो, वह चला गया ?
अध-घायल माता हिन्दी को वह बाँध हिचकियाँ रुला गया ?
विश्वास नहीं होता मुझको, लगता है सब-कुछ है असत्य
प्रतिवाद करो, ऋण मानूँगा, यह है असत्य, यह नहीं सत्य !

मरता है केवल मर्त्य मनुज, वह अमर कहाँ मर सकता है !
आजीवन जिसने नय गाया, क्या वह भी छल कर सकता है !
कल ही तो उसका काव्य-पाठ सुनता था, सागर शान्त पड़ा
तिरुपति का नाथ सुना मैंने, हो गया मुग्ध, रह गया खड़ा।

वह मृत्यु-याचना तिरुपति में अपने श्रोता से कर बैठा,
औ, वहीं-कहीं हो समाधिस्थ क्या कहते हो; वह मर बैठा !
यदि यही मिलेगा देवों से उत्कृष्ट काव्य का पुरस्कार,
तो कौन करेगा धरती पर ऐसे देवों को नमस्कार !

कितना अच्छा होता दादा ! यह पारिश्रमिक नहीं लेते,
उस निर्मम श्रोता के आगे मुझसे कविता पढ़वा देते ।
तुम करते रहते संचालन, मैं कविताएँ पढ़ता रहता,
बारी न तुम्हारी आ पाती, उद्दण्ड सतत लड़ता रहता ।

पर पता नहीं तुम क्यों. कैसे, मानस पुत्रों को टाल गये,
इस बौनी गूँगी पीढ़ी पर वाणी का बोझा डाल गये।
हम कंधा तुमको दे न सके, हम श्राद्ध तुम्हारा कर न सके,
जो शून्य बनाया है तुमने हम तिल भर उसको भर न सके।

पर सम्भव हो तो सुनो ! आज यह इस पीढ़ी की वाणी है,
संस्कार तुम्हारा बोल रहा, यह गिरा अमर कल्याणी है ।
है वचन समूची पीढ़ी का हम तुम्हें नहीं मरने देंगे,
इस आँगन में तम को तांडव हम कभी नहीं करने देंगे ।

तुम नहीं मरे हो निरवंशी ! मैं साबित करने आया हूँ,
बेशक अनाथ हूँ आज भले, तो भी दिनकर का जाया हूँ ।
हे तीन लोक ! चौदहों भुवन ! वक्तव्य सुनों इस वंशज का,
दायित्व निबाहूँगा पूरा मैं दिनकर-जैसे पूर्वज का।

आश्वस्त रहो हे पूज्य जनक !
वाणी में अंश तुम्हारा है,
कुल, गोत्र भले ही हो कुछ भी
यह सारा वंश तुम्हारा है !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी ज्वाला से ज्वलित आप जो जीवन

—फणीश्वर नाथ 'रेणु'

हाँ, याद है !
उचक्के जब मंचों से गरज रहे थे
हमने उन्हें प्रणाम किया था
पहनाया था हार।
भीतर प्राणों में काट रहे थे हमें
हमारे वे पाप
हमारी बुझी ज्वाला को धधका कर
हमें अग्नि स्नान कराकर पाप-मुक्त
खरा बनाया।
पल–विपल हम अवरुद्ध चले
हमें झकझोर कर तुमने जगाया था
'रथ के घर्घर का नाद सुनो......'
'आ रहा देवता जो उसको पहचानो''''',
'अंगार हार अरपो रे !'
वह आया सचमुच, एक हाथ में परशु
और दूसरे में कुश लेकर
किंतु ...... तुम ही रूठकर चले गये।
विशाल तम–तोम और चतुर्दिक घिरी
घटाओं की व्याकुलता से अशनि जनमा,
धुओं और उमस में छटपटाता हुआ प्रकाश
खुलकर बाहर आया।
किंतु, तुम ...... ?
अच्छा ही किया, तुम सप्राण
नहीं आये।
नहीं तो, पता नहीं, क्या हो जाता !

यहाँ,
जवानी का झंडा उड़ाते
कालकूट पिये और भाल पर अनल–किरीट लिये
कृपाण, त्याग, तप, साधना, यज्ञ, जप को टेरते
गरजते, तरंग से भरी आग भड़काते
तुम्हारे बाग के असंख्य अनल–कुसुम
तुम्हारी अगवानी में आँखें बिछाकर
प्रस्तुत थे.........
उनकी जवानियाँ लहू में तैर–तैर कर
नहा रही थीं।
ऐसे में तुम आते
तो पता नहीं, और क्या-क्या होता,
पता नहीं, अब तक क्या-क्या हो जाता,
और, तब तुमको फ़ासिस्ट और चीनी
और अमेरिकी और 'देसी' सेठों की दलाली
और देश द्रोह के जुर्म में
निश्चय ही देश से बाहर निकाल दिया जाता।
पता नहीं कहाँ ··· किस देश ···
किस हिमालय और गंगा–विहीन देश में
अच्छा ही किया, चले गये
उत्तर की दिव्य कंचन–काया को
दक्षिण की माटी–माता की गोद में छोड़
बाहर–ही–बाहर, भले गये !
हमें क्षमा करना, कविवर विराट !
हम तुम्हारी आत्मा की शांति के बदले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसको अपनी काया के एकांत और पवित्र
कोने में
प्रतिष्ठित करने की कामना करते हैं ।
ताकि, जहाँ–कहीं भी अनय हो उसे रोक सकें,
जो करें पाप शशि–सूर्य भी, उन्हें टोक सकें
हमारे भीतर जो एक नया अंगार भर रहा है
बस, वही एक आधार है हमारा।
कपट–शोकातुर मुखौटा लगा
रूआँसी आवाज में, गले को कँपा–कँपा
तुम को श्रद्धांजलि देने का नाटक
हम नहीं करेंगे ।
तुम तो जीवित हो, जीवित रहोगे हमारे बीच–
तेजोद्दीप्त !
मरने को हमेशा 'दोपहरी के तिमिर'
तुम्हारे दुश्मन ही मरेंगे।
इस बार जब गाँव जाकर,
उत्तर की ओर निहारूँगा
हिमालय के स्वर्ण–शिखरों में देखूँगा
एक और नया शिखर ।
निश्चय ही – दिनकर !

इसे क्या संयोग ही कहेंगे ?
तुम्हारी शव–यात्रा से लौटकर बैठा ही था
कि पड़ोस में कहीं रेडियो ग्राम पर
साधक गायक हरींद्रनाथ का भावाकुल कण्ठ स्वर–
'सूर्य अस्त हो गया
गगन मस्त हो गया,
सूर्य अस्त हो गया ।

●

सुनूँ क्या सिन्धु ! मैं गर्जन तुम्हारा,
स्वयं युग – धर्म का हुङ्कार हूँ मैं !

—दिनकर

जब तक मनुज–मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा !

—दिनकर

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगाने वाली,

—दिनकर

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं।
उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं !

—दिनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर के प्रति

— 'नीरज'

सिसक रहे लय - छंद, तड़पती है कल्पना - किशोरी,
बिलख रहा साहित्य, विकल है रस - चन्द्रिका - चकोरी !

कविता भरती आह, शीश धुन रही नागरी - भाषा,
अरे, ठहर जा काल ! ख़त्म कर अपना खेल - तमाशा !

तुझे नहीं मालूम, काव्य का "दिनकर" अस्त हुआ है,
जिसने दिया उजाला सबको, वह तम - ग्रस्त हुआ है !

'कुरुक्षेत्र' तज चला गया है 'रश्मि - रथी' अनजाने,
कौन जलाये दीप आज फिर 'संस्कृति' के सिरहाने !

सब के उर में बसी 'उर्वशी' होकर जिसकी वाणी,
मौन हुई वह गिरा, सभी की आँखों में है पानी !

लेकिन आँसू से न भिगोना उसके धवल वसन को,
जीत चुका था वह शाश्वत सर्जन से काल - मरण को !

कण्ठ बदलते, मंच बदलते, राग नहीं मरता है,
फुल भले झर जाये, कब उसका पराग मरता है !

वह आयेगा, फिर आयेगा, उसकी करो प्रतीक्षा !
मृत्यु नहीं है अन्त, नये जीवन की है वह दीक्षा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग का पुरुरवा

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

दिनकर अचानक ही
अस्तंगत द्वाभा में
पौरुष–पुंजीभूत ज्वाला
उफन उठा रक्ताभ,
भाल तमिल भारती का
अनुरंजित हो उठा
हिन्दी की बिन्दी से !
जीवन–भर जोधा का
जामा उतारा नहीं
अंगद के पाँव सा
अड़ा रहा संजुग में
पलकें बिछाये—
परशुराम की प्रतीक्षा में !

"दिनकर" हिमालय का
अस्त हिन्द सागर में
कुंकुम के छंदों में
मेघ–मंद्र गर्जन बन ।
नील रक्त खौल उठा
सिन्धु की शिराओं में,
आहत अहेरी का
सिंहनाद गूँज उठा
हिमगिरि की माँदों में ।
अनजानी उपेक्षा की
मायावी विषकन्या
तिल–तिल कुरेदती रही
विद्रोही काया को
मरहम पुरस्कारों का
नासूर बन गया ।

नाटक का अंतिम अंक
त्रासदी के तेवर में
लिखने को लालायित
हमदम बाणभट्ट का
जाने किस "उर्वशी" के
स्निग्ध–लोल कमलों की
खोज में विरम गया
युग का पुरुरवा

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नज़राना-ए-अक़ीदत

— मौ० मुजिबुल्लाह 'अकमल' भोजपुरी

हैफ़ है यक शायरे हिन्दी ज़ुबाँ जाता रहा,
फ़िल हक़ीक़त नाज़िशे हिन्दोस्ताँ जाता रहा।

कहते थे 'दिनकर' जिसे, था एक मर्दे बाकमाल,
आज वह देकर हमें दर्दे-निहाँ जाता रहा।

वह "पद्मभूषण," ग़रीबों औ, बेकसों का ग़मगुसार,
आफ़ताबे-इल्मो-मीरे-कारवाँ जाता रहा।

ख़ूने दिल से जिसने सींचा, गुल्शने हिन्दी-अदब,
गुलिस्तांने इल्मो-फ़न का बाग़बाँ जाता रहा।

याद हैं अ-रबाबे-फ़न को जिसकी ख़िदमाते-अज़ीम,
आह! वह अब रूठ कर फ़ख़्रे-ज़ुबाँ जाता रहा।

शाहिदे-शेरो-सुखन का लूट गया सारा सुहाग,
आज दुनियाए-अदब का मेहमाँ जाता रहा।

ऐ कि जिसकी ज़ात से हिन्दी अदब को था फ़रोग़,
सर ज़मीने—हिन्द से वह कद्रदाँ जाता रहा।

कल जहाँ बजता था नक्क़ारा, वहाँ मातम है आज,
शोमिए-क़िस्मत कि वह रुहे—रवाँ जाता रहा।

वाये 'अकमल' आज दुनियाए-अदब सूनी हुई,
महफ़िले-इल्मो-अदब का पासबाँ जाता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर जी के निधन से देश ने एक ऐसे प्रतिभाशाली, सृजनशील लेखक को खो दिया है जो हमारी जनता की धरोहर और आकांक्षाओं के प्रतीक थे। दिनकर जी हमारी संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ गये हैं। अन्य सभी मान्य कवियों की भाँति उन्हें भी रचनाओं के माध्यम से याद किया जायेगा।

– श्रीमती इन्दिरा गाँधी

दिनकर-साहित्य का जितना प्रचार किया जायेगा, हमारी राष्ट्रीयता उतनी ही बलवती होगी और साहित्यकारों को मार्ग-निर्देश मिलेगा। दिनकर ने हिन्दी साहित्य को जो कुछ दिया है वह न केवल हिन्दीं, बल्कि विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि है।

– लोकनायक जयप्रकाश नारायण

"दिनकर जी रूप और गति के कवि हैं। कोई अदृश्य नीरव प्रवाह है जो अपने विचित्र वेग से नये-नये रूपों और रंगों में प्रकट हो रहा है, उसके ताल-ताल पर 'सुन्दर' की सृष्टि होती है। किन्तु अपने-आप में वह छन्द है, मानस उल्लास है–'उर्वशी' पढ़ने वाले के मन में ऐसा भाव पैदा होता है। ऐसा जान पड़ता है कि दिनकर जी ने उस विश्व व्यापी छन्द का सन्धान पा लिया है। 'उर्वशी' की कविता में इस मूल छन्द के इशारे पर रूप और रंग स्वयमेव उपस्थित होते जाते हैं।........

'उर्वशी' दिनकर की रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ समझी जायगी। वह कवि के अन्तंजगत् के निगूढ़ चिन्तन के मन्थन से निकला हुआ नवनीत है। न जाने कितना अध्ययन–मनन उसमें मुखर हुआ है।........ 'उर्वशी' के पढ़ने से लगता है कि दिनकर का कवि अब भी जी रहा है, उसमें प्राण-धारा का वेग बहुत प्रबल है, जीवन का उल्लास जैसे बाँध तोड़कर बह रहा हो। 'उर्वशी' प्रौढ़ किन्तु सुकुमार रचना है।

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

महाकवि दिनकर अपने ढंग के एक ही थे। मुझे अन्य कवि-साहित्यकार बहुत ढूँढ़ने पर भी ऐसा दिखायी नहीं देता जिसका नाम उनके साथ लिया जा सके। तुलसीदास के साथ सूरदास, पंत के साथ निराला और हरिऔध के साथ श्री मैथिलीशरण गुप्त का नाम स्वतः आ जाता है, परन्तु 'दिनकर' के साथ रखने के लिए कोई नाम नहीं मिलता।

– आचार्य किशोरीदास बाजपेयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रकवि-
रामधारी सिंह 'दिनकर"
एक दृढ़ संकल्प

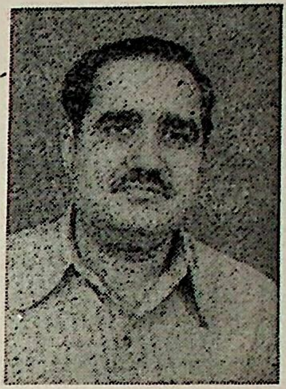

–बी० पी० शर्मा आई० आर० एस०
आयकर अधिकारी, कानपुर

आत्मज्ञान सम्पन्न एवं अमृतस्वरूप परमार्थ तत्व का अनुभव करने वाले, एक दृढ़ संकल्प के प्रतिमूर्ति थे रामधारी सिंह 'दिनकर'।

उनका जन्म सन् १९०८ में मुंगेर जिले के अन्तरगत सेमरिया गाँव में ३० सितम्बर को हुआ था। दैव योग से किशोरावस्था में ही संघर्ष के दुर्गम पथों पर चलना पड़ा क्योंकि पिता श्री का वरद हस्त उनकी १३ वर्ष की अवस्था में ही हट गया था। मां ने ऐन केन प्रकारेण तीनों पुत्रों का पालन किया।

निम्न मध्य वर्गीय परिवार में जन्म लेने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। गंगा जी के समीप जमीन स्थिति होने से यदा-कदा फसल नष्ट भी हो जाती थी तब दो जून की रोटी मिलना भी एक समस्या हो जाती लेकिन ऐसी विषम परिस्थितियों में भी दिनकर जी अपनी पढ़ाई से विमुख नहीं हुए। शारीरिक, आर्थिक एवं मानसिक कष्टों को सहन करते हुए उन्होंने स्नातकोत्तर परीक्षा पास की।

राज्य सभा के सदस्य बनने के उपरान्त उनका दिल्ली प्रवास हो गया। पं० जवाहर लाल नेहरू से उनकी खूब बनती थी, पंडित जी उन्हें महाकवि कहकर सम्बोधित करते थे। पंडित जी के साथ उनके कई रोचक संस्मरण जुड़े हैं। एक बार दिनकर जी अपने मित्र प्रो० देवेन्द्र प्रसाद वर्मा के किसी काम से पंडित जी के पास पहुँचे, नेहरू जी बोले—

'आप भी पैरवी करते हैं' ?

दिनकर जी ने उत्तर दिया—

'पंडित जी पैरवी तो आज का युगधर्म है' !

सन् १९३५ तक दिनकर जी की कवितायें पूरे भारतवर्ष में छा चुकी थीं। आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण वाणी, मर्मस्पर्शी कवितायें कुल मिलाकर एक दिव्य स्वरूप हजारों-हजारों श्रोताओं को मुग्ध करता था। वे भारतवर्ष की संसार में अनूठा देश मानते थे इसीलिए तो जब कोई शोधार्थी देश पर ऐसी-वैसी टिप्पणी करता तब वे उसे सबक भी देने से नहीं चूकते थे।

उनकी प्रख्यात पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका पं० जवाहर लाल नेहरू ने लिखी। यह बात उनके समकालीन कवि श्री मैथलीशरण जी गुप्त को नहीं भायी। तीनमूर्ति भवन के एक समारोह में उन्होंने पंडित से पूछ ही लिया –

'पंडित जी पूरी पुस्तक तो आपने पढ़ी नहीं होगी, फिर भूमिका कैसे लिख दी।'

पंडित जी इरादे को भाँप गये और धैर्य से बोले– "मैं पृष्ठ पढ़ा करता हूँ, शब्द और अक्षर नहीं।"

दिनकर जी राज्य सभा सदस्य तो थे लेकिन राजनीतिज्ञ नहीं थे क्योंकि उनकी धारणा राजनीतिज्ञों के प्रति अच्छी नहीं थी। ऐसा इसलिए भी था वे किसी परिस्थिति में अपने को झुठलाना नहीं चाहते थे। सत्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में रहकर ही कोई श्रेष्ठ काम किया जा सकता है, ऐसा वो कदापि नहीं मानते थे। वे सबसे स्नेहभाव से मिलते और अपने गुरुजनों का सदैव सम्मान करते। वह सम्बन्ध के लिए सम्बन्ध नहीं रखते थे। इंदिरा जी के अदम्य साहस, परिपक्व चिंतन की वे सदैव प्रशंसा करते। उन पर कुछ पंक्तियाँ बांग्ला देश के मुक्ति आन्दोलन के उपरान्त लिखी थीं–

'माँ ! तुमने सदियों के बाद–
विजय का मुकुट पहना,
जान देने वाले बेटे–
तुमने कम पैदा नहीं किये–
लेकिन, यह मुकुट–
एक बेटी का दिया गहना है,
माँ आशीष दो,
कि तुम्हारी यह बेटी;
खुश रहे, कायम रहे
नहाते समय भी–
उसके सिर के बाल न टूटें,
और यह देश,
सच्चे अर्थों में आज़ाद रहे !

दिनकर जी के कवि हृदय की रागात्मक वृत्ति भारतवर्ष के अणु-अणु में विद्यमान है। श्रेष्ठ कवि, चिन्तक, विद्वान होने के साथ-साथ एक कुशल सामाजिक व्यक्ति भी थे महान राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'। जब कभी वे सामाजिक परिवेश में भेद-भाव, दुराचार या कुरीतियों का वर्चस्व देखते तो विद्रोह करते। उनके भीतर दावाग्नि धधक उठती, और फिर उनकी लेखनी कभी नहीं हिचकती थी ऐसी व्यवस्था को क्षत-विक्षत करने में।

हिन्दी जगत में उनके कई काव्य संकलन क्रान्तिकारी साबित हुए। पौराणिक आख्यानों की विसंगतियों पर लिखा गया कथा विचार काव्य 'कुरुक्षेत्र एवं 'रश्मिरथी' उनके गहन चिन्तन का परिचायक है। 'रेणुका' ज्ञानपीठ पुरस्कार) 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'परशुराम की प्रतिज्ञा' आदि संकलन विशेषरूप से देश में चर्चित हैं। उनका अन्तिम काव्य संकलन' 'हारे को हरिनाम' उनके आत्मा की विनय-पत्रिका है।

जिस प्रकार सुवर्ण से आभूषण अभिन्न है, जल से तरंगे, उसी प्रकार 'दिनकर' का साहित्य युगों युगों तक साहित्य के उज्जवल प्रकाश से अभिन्न है और रहेगा ऐसा स्पष्ट है।

२४ अप्रैल १९७४ को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ब्रह्मलीन होकर भी सर्वत्र व्याप्त हैं–

यह मनुज सृष्टि का श्रृंगार
ज्ञान का आलोक का आगार,
एक से दूसरे के बीच का व्यवधान,
तोड़ दे जो, बस वही ज्ञानी, वही विद्वान।

दिनकर छायावादियों और प्रगतिवादियों के बीच की कड़ी हैं–कम छायावादी, अधिक प्रगतिवादी। 'कुरुक्षेत्र' में उनकी सामाजिक चेतना की बहुमुखी अभिव्यक्ति हुई है। दिनकर अपने ढंग का अकेला हिन्दी कवि है। यौवन और जीवन उसे आकृष्ट करते हैं। सौन्दर्य के मोहक संगीत उसे मुग्ध करते हैं। वह उनसे अभिभूत नहीं होता।

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

तुमने दिया देश को जीवन,
देश तुम्हें क्या देगा।
अपनी आग तेज करने को,
नाम तुम्हारा लेगा।

– दिनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर : जीवन – झाँकी

जन्म : २३ सितम्बर १९०८ ई०, सिमरिया, जिला–बेगूसराय (बिहार)

पिता : बाबू रविसिंह, स्वर्गवास १९१० ई० सिमरिया।

माता : श्रीमती मनरूपदेवी, स्वर्गवास १४ मार्च, १९७९, सिमरिया।

श्वसुर : स्व० रक्षा ठाकुर, पो०–टभका, जिला–समस्तीपुर।

विवाह : श्यामवती देवी के साथ १९२१ में। पत्नी का स्वर्गवास, २० नवम्बर, १९८०, सिमरिया।

पुत्र : १. रामसेवक सिंह, स्वर्गवास १२ अप्रैल, १९६७, दिल्ली। २. श्री केदारनाथ सिंह, राजेन्द्र नगर, पटना–१६।

पुत्री : १. विनतादेवी, पति विश्वेश्वर नारायण शर्मा, एडवोकेट, पो०–काझा (पूर्णिया)
२. विभादेवी, पति प्रो० ब्रजभूषण शर्मा, पो०–रहुआ, (दरभंगा)

भाई : १. वसन्त सिंह (अग्रज), स्वर्गवास ७ जनवरी, १९७७ई०, सिमरिया। २. सत्यनारायाण सिंह (अनुज), स्वर्गवास २५ अप्रैल, १९८१ ई०।

शिक्षा : १९२८ में पूरे प्रान्त में मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास करने पर 'भुदेव'-स्वर्णपदक, १९३२ में पटना कालेज से बी० ए०।

जीवन-चक्र : प्रधानाध्यापक, एच० ई० स्कूल, बरबीघा (१९३३ से ३४ तक); सब–रजिस्ट्रार, १९३४ से १९४२ तक
युद्ध–प्रचार–विभाग १९४३-४५ तक
डिपटी डाइरेक्टर, जन–सम्पर्क–विभाग, बिहार १९४७ से १९५० तक।
हिन्दी प्रोफेसर, बिहार – विश्वविद्यालय १९५२ तक।

यात्रायें : यूरोप १९५५, चीन १९५७, रूस १९६१, मारिशस १९६७, पश्चिम जर्मनी १९६८, इंगलैंड १९७१।

प्रकाशन : १९२८ में प्रथम पुस्तक बारदोली विजय, उसके बाद ३२ काव्य पुस्तकें तथा २७ गद्य पुस्तकें प्रकाशित।

१९४८ ई० : 'कुरुक्षेत्र' पर 'साहित्यकार संसद प्रयाग', काशी नागरी प्रचारिणी-सभा, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत – सरकार द्वारा पुरस्कार।

१९५२ ई० : राज्य–सभा के मनोनीत सदस्य, १२ वर्ष तक रहे।

१९५६ ई० : 'संस्कृति के चार अध्याय' केन्द्रीय साहित्य-अकादमी पुरस्कार, ६ नवम्बर, १९५६।

१९५९ ई० : 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित। प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा, ८ अप्रैल १९५९।

१९६२ ई० : 'डाक्टर आफ लिट्रेचर' की उपाधि भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा० जाकिर हुसैन द्वारा ३ मार्च, १९६२ ई०।

१९६२ ई० : मानपत्र, 'सरस्वती' पत्रिका की हीरक–जयन्ती पर राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त द्वारा, १२ जनवरी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९६४ ई० : कुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय।

१९६५ ई० : 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि से गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा सम्मानित।

१९६५ ई० : हिन्दी सलाहकार, भारत सरकार।

१९६८ ई० : 'साहित्य चूड़ामणि' की उपाधि से राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा ८ नवम्बर, को सम्मानित।

१९७३ ई० : 'ज्ञानपीठ–पुरस्कार' प्रसिद्ध काव्य पुस्तक 'उर्वशी' पर भारतीय ज्ञान पीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार। १ दिसम्बर, १९७३ को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में प्रदत्त।

१९७४ ई० : स्वर्गवास : २४ अप्रैल, अर्ध रात्रि को मद्रास में हृदय-गति रुक जाने पर हुआ। पार्थिव शरीर को वायुयान से पटना लाकर पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ बाँस घाट पर २१ अप्रैल को दाह संस्कार।

–शेष-निशेष (सम्पादक कन्हैया लाल)
से
साभार

दिनकर : रचना–संसार

पुस्तक		विधा		प्रथम प्रकाशन
१. बारदोली–विजय	...	पद्य	...	१९२८
२. प्रणभंग	...	,,	...	१९२९
३. रेणुका	...	,,	...	१९३५
४ हुंकार	...	,,	...	१९३९
५. रसवन्ती	...	,,	...	१९४०
६. द्वन्द्वगति	...	,,	...	१९४०
७ कुरुक्षेत्र	...	,,	...	१९४६
८. धूप–छाँह	...	,,	...	१९४६
९ मिट्टी की ओर	...	गद्य	...	१९४६
१०. सामधेनी	...	पद्य	...	१९४७
११ बापू	...	पद्य	...	१९४७
१२. चित्तौड़ का साका	...	गद्य	...	१९४९
१३. इतिहास के आँसू	...	पद्य	...	१९५१
१४. धूप और धुआँ	...	,,	...	१९५१
१५. मिर्च का मजा	...	,,	...	१९५१
१६. रश्मि-रथी	...	,,	...	१९५२
१७. अर्द्धनारीश्वर	...	गद्य	...	१९५२
१८. दिल्ली	...	पद्य	...	१९५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९. नीम के पत्ते	...	"	...		१९५४
२०. नील कुसुम	...	"	...		१९५४
२१. रेती के फूल	...	गद्य	...		१९५४
२२. हमारी सांस्कृतिक एकता	...	"	...		१९५४
२३. भारत की सांस्कृतिक कहानी	...	"	...		१९५५
२४. सूरज का ब्याह	...	पद्य	...		१९५५
२५. संस्कृति के चार अध्याय	...	गद्य	...		१९५६
२६. चक्रवाल	...	पद्य	...		१९५६
२७. उजली आग	...	गद्य	...		१९५६
२८ कविश्री	...	पद्य	...		१९५७
२९. सीपी और शंख	...	पद्य	...		१९५७
३० नये सुभाषित	...	पद्य	...		१९५७
३१ देश–विदेश	...	गद्य	...		१९५७
३२. राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय एकता	...	गद्य	...		१९५८
३३. काव्य की भूमिका	...	गद्य	...		१९५८
३४. पन्त, प्रसाद–मैथिलीशरण	...	गद्य	...		१९५८
३५. वेणु–वन	...	गद्य	...		१९५८
३६. धर्म, नैतिकता और विज्ञान	...	गद्य	...		१९५९
३७. वट–पीपल	...	गद्य	...		१९६१
३८. उर्वशी	...	पद्य	...		१९६१
३९. परशुराम की प्रतीक्षा	...	पद्य	...		१९६३
४०. आत्मा की आँखे	...	पद्य	...		१९६४
४१. कोयला और कवित्व	...	पद्य	...		१९६४
४२ मृत्ति–तिलक	...	पद्य	...		१९१४
४३. दिनकर की सूक्तियाँ	...	पद्य	...		१९६५
४४. लोकदेव नेहरू	...	गद्य	...		१९६५
४५. शुद्ध कविता की खोज	...	गद्य	...		१९६६
४६. साहित्य–मुखी	...	"	...		१९६८
४७. राष्ट्रभाषा आन्दोलन और गांधी जी	...	"	...		१९६८
४८. हे राम !	...	"	...		१९६९
४९. संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ	...	"	...		१९६९
५०. भारतीय एकता	...	"	...		१९७०
५१. मेरी यात्राएँ	...	"	...		१९७०
५२. हारे को हरिनाम	...	गद्य	...		१९७०
५३ संचयिता	...	पद्य	...		१९७३
५४. दिनकर के गीत	...	गद्य	...		१९७३
५५ दिनकर की डायरी	...	गद्य	...		१९७३
५६. चेतना की शिखा	...	गद्य	...		१९७३
५७. आधुनिक बोध	...	गद्य	...		१९७३
५८. रश्मि-लोक	...	पद्य	...		१९७४
५९. विवाह की मुसीबतें	...	गद्य	...		१९७४
६०. उर्वशी तथा अन्य शृंगारिक कविताएँ	...	पद्य	...		१९७४
६१. दिनकर के पत्र } सम्पा०–कन्हैयालाल	...	गद्य		(मरणोपरान्त)	१९८१
६२. शेष–निःशेष } सम्पा०–कन्हैयालाल	...	गद्य		(मरणोपरान्त)	१९८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयाचक ब्राह्मण

— कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

ब्राह्मणों के दो भेदों का उल्लेख वैदिक काल से ही मिलता है, जैसा कि दान देने के लिए उद्यत राजा ईक्ष्वाकु से पिप्पलाद-पुत्र ने कहा था —

ब्राह्मणा द्विविधा राजन् धर्मश्च द्विविधः स्मृतः ।
प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहं प्रतिग्रहात् ॥

अर्थात् हे राजन् ! ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं– प्रवृत्त और निवृत्त । मैं निवृत्त ब्राह्मण हूँ, जो दान दक्षिणा नहीं लेते ।

प्रवृत्त कर्मकाण्डी होते थे और निवृत्त ज्ञानाश्रयी मनुस्मृति तथा अग्नि पुराण में काम्या कर्म को प्रवृत्त तथा निःश्रेयस कर्म को निवृत कहा गया है । आगे चलकर निवृत्त ब्राह्मणों को 'यायावर' और प्रवृत्त ब्राह्मणों को 'शालीन' कहा जाने लगा । बौधायन ने इन दोनों भेदों का उल्लेख इस प्रकार किया है–वृत्या वरया तीति यायावरम् ।

देवल स्मृति के अनुसार भी ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं यथा–द्विविधो गृहस्थो यायावर शालीनश्च । तयो यायावर प्रवरो याजनाध्यापन प्रतिग्रहरिक्थ संचय वर्जनात ।

अर्थात् गृहस्थ ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं-यायावर और शालीन । इनमें याजन, अध्यापन और प्रतिग्रह का त्याग करने के कारण यायावर श्रेष्ठ है ।

कालान्तर में वे भू-स्वामी ब्राह्मण भी यायावर ब्राह्मणों में आ मिले जो प्रायः दान दक्षिणा नहीं लेते थे । ब्राह्मण जाति भारतवर्ष की पथ प्रदर्शन तथा शासक जाति रही है । कुरु कुलों के कुलपति, आचार्य, राज्य के उच्च पदाधिकारी और राजवंश के लोग यज्ञों का अनुष्ठान करते और दान-दक्षिणा देते थे । वे वेद-शास्त्र के भी पारंगत विद्वान होते थे, किन्तु अध्यापन द्वारा जीविकोपार्जन नहीं करते थे, यज्ञ-याग कराने और दान-दक्षिणा ही लेते थे । पुराणों में ऐसे ही जीविका शुद्ध सदाचारी और प्रतिग्रह (दान) से दूर रहने वाले विद्वान तथा दानी ब्राह्मण को 'पंक्तिपावन' कहा गया है ।

अप्रतिग्रही ब्राह्मण प्रायः भारतवर्ष के सभी भागों में बसे हुए हैं और भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते हैं । इनमें से कुछ प्रमुख वर्गों का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है –

मोहियाल

मोहियाल के दो अर्थ किए जाते हैं–पृथ्वी का पालन करने वाला राजा और पृथ्वी को अलंकृत करने वाला, भूमि-भूषण । मोहियालों के सात कुल हैं । इसी से इनका एक नाम सप्तवंशी है । हिन्दू शासन काल में सप्तवंशी राजा ही अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, सिन्ध, पठानिस्तान काश्मीर, पंजाब, हरियाना, हिमांचल प्रदेश और राजस्थान के कुछ भाग पर शासन करते थे । सिकन्दर को नाकों चने चबवाने वाले राजा पुरु, बंग देश तक विजय यात्रा करने वाले कश्मीर के राजा ललितादित्य वीर रानी दिद्दा, सिन्धु पति दाहिर, पंजाब के प्रतापी नरेश आनन्द पाल, ओम पाल, त्रिलोचन पाल आदि मोहियाल ब्राह्मणों के ही पूर्वज थे ।

मोहियालों के सात वर्ग इस प्रकार हैं–

१. **वैद्य (भारद्वाज गोत्र)**-ये अपने को द्रोणाचार्य का वंशज मानते हैं । इस वंश के राजा पुरु से त्रिलोचन पाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक पश्चिमोत्तार भारत पर शासन करते थे और महमूद गजनवी से जम कर लोहा लिया था तथा पश्चिमोत्तार भारत को वर्वर आक्रमणकारियों से बचने की भरपूर चेष्टा की थी। बंगाल - बिहार और उड़ीसा पर शासन करने वाले सेन वंश के राजा वल्लाल सेन, विजय-सेन, लक्ष्मण सेन आदि परम्परा के बताये जाते हैं। चित्तपावन ब्राह्मणों में भी भारद्वाज गोत्रीय वैद्य आस्पद-धारी ब्राह्मण मिले हुए हैं।

२. दत्त—इनका गोत्र भी भारद्वाज है। इस्लाम का उदय होने के पूर्व अरब देशों में भारतीयों की बहुंत सी बस्तियां थीं, जिनमें ब्राह्मण, जाट, आमीर आदि अनेक जातियों के लोग थे। श्री मोहम्मद साहब के पूर्वज भी भारत से ही गए थे, जो मूलतः ब्राह्मण थे मनुस्मृति में शैरव, पुष्पध वाटधान (पठान) आदि को वृषल ब्राह्मण (शूद्रता को प्राहा असंस्कृत) कहा गया है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वहाँ के सभी ब्राह्मण आदि बृषल हो गए थे। उनमें बहुत से वैदिक धर्म से आस्था रखने वाले भी थे, जिनका भारत से सम्बन्ध बना हुआ था। दत्रों के पूर्वज भी इसी प्रकार के सामन्त ब्राह्मण थे, जो इराक में रहते थे। सिद्ध दत्र ब्राह्मण के कानों में जब यह वात पड़ी कि कर्वला के मैदान में इमाम हुसैन के परिवार के साथ अत्याचार किया जा रहा है तो वे द्रवित हो उठे। उन्होंने अत्याचारी सैनिकों पर आक्रमण कर उनसे उस असहाय परिवार का उद्धार किया और भारत ले आए। इस वंश के कल्लरदत्र, भीम शाही आदि ने अफ़गानिस्तान तथा दीपालपुर पर शासन किया था।

३. बाली (पाराशर गोत्र)-मोहियालों में बाली और भूमिहार ब्राह्मणों में एकसरिया मूलतः एक हैं। दोनों के पूर्वज हस्तिनापुर से इधर-उधर गए थे। टाट साहब के कथनानुसार बाली ब्राह्मणों से पाली के पालीवाल भी सम्बद्ध थे।

ईस वंश के राजा ध्रुवपति मथुरा में शासन करते थे। राजा दिलीप सिंह महमूद गजनवी से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। राजा रणजीत सिंह के सेना-पति महा सिंह इसी वंश परम्परा के थे।

४. छिब्बर (भार्गव गोत्र)— इस वंश के राजा राजा नर सिंह देव मथुरा में शासन करते थे। इनके पुत्र छाज ने सिन्ध मकरान और बलूचिस्तान पर अधि-कार किया। छाज के पुत्र दाहिर और पौत्र जयपाल सिंह थे। गुरू तेग वहादुर के साथ बलिदान होने वाले भाई परमानन्द और आधुनिक हिन्दू नेता भाई परमानन्द इसी कुल के भूषण थे।

५ मोहन—इस वंश के लोग भी हस्तिनापुर से कश्मीर गए थे। कश्मीर के प्रसिद्ध राजा प्रतापादित्य, ललिता-दित्य, जयापीड़ आदि इसी वंश परम्परा के थे। भूमिहार ब्राह्मणों में जैथरिया और भेलवरिया ब्राह्मणों का इनसे मौलिक सम्बन्ध ज्ञात होता है।

६ लव— इस वंश परम्परा के लोग मुल्तान और राजस्थान में शासन करते थे।

७ भूमवाल— इस वंश के राजा नन्द जो झेलम में राज्य करते थे, महमूद के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। राजा ध्रुवपति के मंत्री वामदेव इसी वंश के थे, जिनको ध्रुवपति के साथ कुतुबुद्दीन ने सिन्ध सागर द्वावे में भेज दिया।

सारस्वत ब्राह्मणों के अन्तर्गत मोहियालों की गणना प्रथम श्रेणी में की जाती है। ये सारस्वतों की लड़की तो तो लेते हैं, पर उन्हें अपनी लड़की नहीं देते। सारस्वत ब्राह्मणों के उच्च कुलों में गिने जाने वाले—भोग, ईसर, पाल, लखनपाल सेतपाल, वमनिपाल, बलोत्रे, विजराय, शासन, सैगन, सूदन, शारद शामापोलें, धनपौत्रे, बाला पोत्रे, वसदेव, कौल, काले, मनोत, नेवले, मंजु, मीन गीत, लालडे आदि मोहियालों से अलग हुए हैं। प्रसिद्ध विद्वान काकाराम शास्त्री और स्वामी दयानन्द के गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती मोहियाल ही थे।

त्यागी (तगा)

कहा जाता है कि जिन ब्राह्मणों ने राजा जन्मेजय के यज्ञ में प्रतिग्रह को निंद्यमान कर त्याग दिया, वे त्यागी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहलाए। त्यागी का अर्थ है दानी, निष्काम कर्मयोगी। त्यागी ब्राह्मण बिजनौर, देहरादून, गाजियाबाद, मुरादाबाद, सहारनपुर, मेरठ, बुलन्द शहर, नैनीताल, मुजफ्फर नगर (उ० प्र०), गुड़गाँव, रोहतक, सोनीपत (हरियाना) गुरुदासपुर, अम्बाला (पंजाब) और दिल्ली प्रान्त में विशेष रूप से पाये जाते हैं। मुसलमानी शासन के केन्द्र दिल्ली के आसपास हिन्दू संस्कृति की रक्षा त्यागी और जाटों की तलवार ही कर सकी थी।

त्यागी लोग स्थानीय भूम्याधिकारी हैं और खेती करते हैं। इनकी कई रियासतें भी थीं, जैसे—रतनगढ़, ताजपुर, नहटौर। अकबर काल और उससे पूर्व मेरठ—रुहेलखंड की अधिकांश भूमि इनके अधिकार में थी। इनमें कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, जो 'मूला तगा' कहलाते हैं।

भूमिहार ब्राह्मणों की तरह त्यागी ब्राह्मणों की भी कई वंश परम्परायें अपना आगमन अन्य प्रदेशों से मानती हैं, जैसे शिवहारे के त्यागी चित्तौर से और सिकरौरा नवादा के त्यागी अजमेर से अपना आगमन बताते हैं। शिवहारे के इतिहास में उनका आगमन 'इन्दौर' से बताया गया है। त्यागियों के २२ गोत्र या मूल हैं जैसे—वात्स्यायन, दात्यापन, पूले, वासिष्ठ, भारद्वाज, आत्रेय, शांडिल्य आदि। इनके आस्पद सिंह चौधुरी, पंडा, तिवाड़ी, दीखत (दीक्षित) मखी (याज्ञिक) अध्वर्यु आदि हैं। कुछ लोग नाम के पूर्व मिर्जा और ठाकुर भी जोड़ते हैं। कुछ आस्पद गोत्र सूचक हैं।

कान्यकुब्ज

प्राचीन और मध्य युग में कान्य कुब्ज ब्राह्मणों को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। इनके ७२ गोत्र हैं, जिनमें १६ घरों को ही प्रधानता प्राप्त है। ये लोग पुरोहिती को निंद्यकर्म मानते हैं। भूमिहार, त्यागी, मोहियाल और वंगीय ब्राह्मणों के अनेक कुलीन तथा प्रतिष्ठित घरानों का मौलिक सम्बन्ध कान्यकुब्ज ब्राह्मणों से है।

भूमिहार

भूमिहार ब्राह्मण पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार मे बसे हुए हैं। इनके पूर्वज अग्रहार भोगी थे, जैसा कि इस क्षेत्र में मिले हुए ताम्रपत्रों से विदित होता है। बिहार और उत्तर प्रदेश में इनकी अनेक बड़ी जमीदारियाँ और रियासतें रही हैं। ये लोग भारतवर्ष के सभी कुलीन तथा प्रतिष्ठित ब्राह्मणों से विवाह सम्बन्ध द्वारा बँधे हैं। इसका कारण यह है कि इनकी अनेक शाखायें विभिन्न प्रदेशों से आईं और मिलाईं।

चित्तपावन

कोंकण प्रदेश का निवासी होने के कारण इन्हें कोंकाणस्थ भी कहते हैं। कहा जाता है कि परशुराम जी ने इनके पूर्वजों को वहाँ बसाया था। इनके ८ गोत्र और ७२ आस्पद हैं। पेशवा लोग इसी परम्परा के थे। इस वर्ग ने अनेक क्रान्तिकारी वीर और अनेक चिन्तन शील पुरुषों को उत्पन्न किया, जैसे-झांसी की रानी, नानासाहब, वासुदेव फड़के, लोकमान्य तिलक गोपाल कृष्ण गोखले, महादेव गोविन्द रानाडे, वीरसावरकर, इतिहासकार रजवाड़े, विनोबाभावे, अच्युत परवर्धन आदि। इन की जनसंख्या महाराष्ट्र के थाना, रत्नागिरी, कल्याणी और वेसीन जिलों में विशेष है।

अनाविल

इन की निवास भूमि दक्षिणी पश्चिमी गुजरात है। इनके दो भेद हैं—भाटेले और देशाई। देशाई का अर्थ है-देश का अधिकारी। महादेव देशाई इसी वर्ग के था भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई इसी परम्परा के हैं।

गोलापूर्व—ग्वालियर से पूरब का निवासी होने से यह नाम पड़ा। ये लोग आगरा—भरतपुर के क्षेत्र में हैं एवं अपने को त्यागी कहते हैं।

मेड़तवाल—जोधपुर के निकट मेड़ता के निवासी हैं। इनका निकट सम्बन्ध त्यागियों से है।

पोकरने-जैसलमेर और जोधपुर के मध्यवर्ती पोकरन से निकास होने के कारण यह नाम पड़ा।

नम्बूद्री—केरल के भूमिपति ब्राह्मण नम्बूद्री कहलाते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं, जिसका अर्थ है—नम्बरदार। इनकी शूद्रा सन्तान 'नायर' कहलाती हैं।

अय्यर और आयंगर—ये क्रमशः शैव और वैष्णव मत के मानने वाले तमिल देशीय ब्राह्मण हैं।

सरुआ और मस्तान—उड़ीसा के अप्रतिग्राही कृषक ब्राह्मण हैं।

इसी प्रकार औदीच्य ब्राह्मणों का एक वर्ग प्रतिग्रह के प्रति संयत है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म ऐसे ही वर्ग में हुआ था। सनाढयों में दंडौतिया, चौधरी भू स्वामी होने से प्रतिग्रह से दूर रहते हैं बंगाली ब्राह्मणों में देवशर्मा कमायूँनी ब्राह्मणों में ऊँची धोती वाले मैथिलों में सोति, पहाड़ी में पांडे वारेन्द्रीय और राठी ब्राह्मणों में कुलींन लोग, पालीवाल और भार्गव भी प्रतिग्रही नहीं होते। इनमें अन्तिम दो प्रायः वाणिज्य व्यवसायी हैं। (विशेष विवरण के लिए कुलदीप नारायण राय कृत अयाचक ब्राह्मण परम्परा और ब्राह्मण राज्य का इतिहास द्वितीय खण्ड देखें)।

एक उद्‌बोधन् (समाज के प्रति)

ब्रह्मर्षि वंश सिरमौर जगो, हम सबको समय पुकार रहा।
दुनिया में नव-उन्नति करने, जन-जन हमको ललकार रहा॥
द्रुत गति से सृजन समन्वय में, अब धन-जन से तुम जुट जाओ।
हो उन्नत भाल सभी जन का, ऐसा पौरुष दिखला जाओ॥
हो, लोकोत्तर निःस्वार्थजन्य, हम सबको ही बढ़ना होगा।
हों, मूर्ति मान सपने अपने, संघर्षों से लड़ना होगा॥
ब्रह्मर्षि तेज के मंडल का, यदि करना है उत्थान हमें।
स्वामी जी के आदर्शों का, रखना होगा अब ध्यान हमें॥
किया अकेले स्वामीजी ने, प्रबल पराक्रम जैसा।
भ्रातृ - एकता परहित पथ पर, करो काम तुम वैसा॥
ब्रह्म संघ में शामिल होकर, ब्रह्मरीति अपनाओ।
वेद प्रकाश करो जन मन में, 'सहजानन्द' बन जाओ॥
गुरु द्रोण की परम्परा को, नया मार्ग दिखलाना है।
कर्मयोग का साधक बनकर, नयी चेतना लाना है॥
बिखरे हुए सभी जन को फिर, एक मंच पर लाना है।
'स्वामीजी' के महामन्त्र को, अब साकार बनाना है॥
द्वेष क्लेश से दूर हमें अब, नयी जागृति लानी है।
भावी सन्तति को, उत्कर्षो की राहें दिखलानी है॥
प्राचीन मान दण्डों पर भी, हमको विचार करना होगा।
जो कुछ हमने विस्मृत करदी, उनको फिर से करना होगा॥

—झारखण्डे राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best Compliments from :

Surendra Singh

Surveyor & Loss Assessor Engineering
Claim Consultant

129/7, JAY KAY PURI, JAJMOW,
KANPUR-208010

With best Compliments from :

M/s. Gopi Spray Manufacturers & Engineers

104-A, Udyog Nagar, Kanpur.

Manufacturers of :

'HIGHGO' Monoblock Pumps
and
'SAMEER' Exaust Fans.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण

—आचार्य तारिणीश झा

प्राचीन काल में मिथिला के व्यवहार से धर्म का निर्णय किया जाता था–मिथिलाया व्यवहारतः 'अर्थात धर्म आदि के सम्बन्ध में मिथिला के निवासी जो कुछ कहते या करते थे, वह शास्त्रानुमोदित होता था। शास्त्र प्रतिकूल वे कुछ भी रागद्वेषवश कहने या करने को तैयार नहीं होते थे। इसी से उनके वचन मान्य होते थे। मिथिला में आज भी भूमिहार ब्राह्मण को पछिमा ब्राह्मण कहते हैं। इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं। फिर भी कुछ दुराग्रही लोग भूमिहार को ब्राह्मण मानने से कतराते हैं। यहाँ तक तो गनीमत है, क्योंकि जिसका मानसिक स्तर द्वेषग्रस्त है उससे सद्विवेक की बात करना ही अनावश्यक है। किन्तु इधर जातिगत वाद-विवाद सम्बन्धी एक मुकदमें का विषय जो मुझे दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती रचित पुस्तक "ब्राह्मण कौन" में पढ़ने को मिला, उससे मुझे आश्चर्य हुआ। पश्चात् मेरे एक मित्र ने इस सम्बन्ध में अपना विचार प्रकट करने के लिये मुझसे आग्रह किया। अतएव इस लेख में आगे रखे जाने वाले अपने विचार के उपोद्वलक उक्त मुकदमें का संक्षिप्त विवरण पहले यहाँ उद्धृत किया जा रहा है–"अयोध्या जी में पुराना 'आनन्द भवन' नामक एक मठ है, जिसकी स्थापना भूमिहार ब्राह्मण कुल में उत्पन्न एक बिरक्त महात्मा ने की थी। उस मठ के महंथ 'सियावर शरण' अपना उत्तराधिकारी घोषित किये बिना ही साकेत वासी हो गये। अस्तु, उनके भण्डारे में उपस्थित संतमहंथों ने परम्परा के अनुसार उनके शिष्य 'महाबीर शरण' को चादर देकर महंथ घोषित किया। 'आनन्द भवन' की भू-सम्पत्ति फैज़ाबाद जिले के बीकापुर विकास प्रखण्ड भीतर 'मंझनपुर' ग्राम में पड़ती है। वहाँ का एक लोभी व्यक्ति मठ की कुछ भूमि हथियाना चाहता था। महंथ महावीर शरण के रहते इसकी संभावना न देख उसने एक कठपुतली वैरागी संत नामधारी 'राम दुलारे शरण' के द्वारा अदालत में 'श्री महाबीर शरण' की महंथी को चुनौती देते हुए यह दावा कराया कि महंथ 'सियाराम शरण' का भंडारा मैंने किया था और संत महंथों ने आनन्द भवन का महंथ मुझे चुना है। उनका यह भी कहना था कि आनन्द भवन मठ' का महंथ वसीयतनामे के अनुसार वही हो सकता है जो विरक्त वैरागी तथा ब्राह्मण हो। महाबीर शरण भूमिहार हैं, इसलिये मठ का महंथ होने के योग्य नहीं हैं। क्योंकि भूमिहार ब्राह्मण नहीं होते। उन्होंने मठ पर अवैध अधिकार कर लिया है। उन्हें वहाँ से हटा दिया जाय। किन्तु सब जज श्री राम कुमार सक्सेना ने मूल वाद संख्या २२ सन् १९६२ में ३१-३-६४ को अपने पारित निर्णय में स्पष्ट रूप से कहा कि महाबीर शरण भूमिहार ब्राह्मण हैं और उनकी शपथ के अनुसार मैं यह मानता हूँ कि उनकी जाति ब्राह्मण मानी जाती है। मैं उन्हें ब्राह्मण मानता हूँ और वे अहदनामे के अनुसार मन्दिर के सरबराहकार बनने के लिये सर्वथा योग्य हैं। महाबीर शरण सियावर शरण के पुराने चेला हैं। निर्माणकर्त्ता द्वारा निर्मित सभी योग्यताएँ महाबीर शरण में विराजमान हैं। अतः मैं राम दुलारे शरण का दावा खारिज करता हुँ।

इसके बाद रामदुलारे शरण उसकी अपील की तत्कालीन जिला जज श्री आर० पी० दीक्षित ने पुनर्विचार के लिए मुकदमे को उसी न्यायपीठ में लौट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया उस समय श्री सक्सेना साहब का स्थानान्तरण हो चुका था और उनकी जगह पर श्री जी० डी० चतुर्वेदी आ चुके थे। उन्होंने बिना सोचे समझे अपने निर्णय में लिखा कि भूमिहार लोग ब्राह्मण नहीं होते और उस वंश से संबन्धित महाराज बनारस, महाराज हथुआ और तमकुही भी ब्राह्मण नहीं हैं।

तत्पश्चात् कुछ विद्वानों एवं संतों ने महावीर शरण की ओर से जी० डी० चतुर्वेदी महोदय के निर्णय के प्रतिकूल जिला जज के पास अपील दाखिल किया।

जब साहब ने पुनः सुनवाई के लिए मुकदमें को एडिसनल जिला जज श्री 'एस० ए० अब्बासी' महोदय के न्यायपीठ में भेज दिया। विद्वान्, अनुभवी और कुशाग्र बुद्धि वाले न्यायमूर्ति 'अब्बासी' महोदय ने पुनः नये सिरे से अभियोग का परीक्षण किया और बड़े मनोयोग से ग्रन्थों तथा अभिलेखों का अध्ययन एवं गवाहियाँ ली। सारे परीक्षण के बाद वे इस निर्णय पर पहुँचे कि भूमिहार ब्राह्मण उत्तम ब्राह्मण इस प्रकार उक्त मुकदमों में महन्थ महावीर शरण की विजय हुई।

इसके बाद विपक्ष की ओर से जिला जज फैजाबाद के यहाँ अपील की गयी। किन्तु एडिसनल अतिरिक्त जज (न्यायधीश ने अब्बासी महोदय के फैसले को बर-करार रखा। तब अंत में विपक्ष की ओर से उच्च न्यायालय के लखनऊ पीठ में अपील की गयी। किन्तु उच्च न्यायालय ने भी नीचे के न्यायाधीशों के फैसलों को पूर्ण समर्थन के साथ बहाल रखा।

अब इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन है कि जैसे अन्य ब्राह्मणों के विषय के 'जाति विलास', 'जाति भास्कर' एवं 'जाति निर्णय' आदि संकलित ग्रन्थ ही प्रमाण माने जाते है, वेदादि शास्त्र नहीं। क्योंकि उनमें तो ब्राह्मण मात्र का उल्लेख हैं न कि देशोपाधि विशिष्ट ब्राह्मण जाति का। उसी प्रकार भूमिहार ब्राह्मण के विषय में महर्षि 'मरीचि प्रणीत' जाति विलास को क्यों न प्रमाण माना जाय? जाति विलास ग्रन्थ के १५२वे अध्याय में भूमिहार ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है, जो कि संक्षेप में इस प्रकार है—

"पुराणों में यह बात प्रसिद्ध है कि भगवान परशुराम ने इक्कीस बार दुष्ट राजाओं का विनाश करके देश, काल, पात्र के अनुसार ब्राह्मणों के लिए पृथ्वी दान कर दी और स्वयं तप करने के लिए वन में चले गये। इस-लिए 'श्रीमद्‌भागवत' में लिखा है कि—'सर्वस्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किञ्च जगतीतले' अर्थात् इस संसार में जो कुछ है, वह ब्राह्मण का ही धन है। कालान्तर में में ब्राह्मण ने ही धन वितरित करके संसार का व्यवहार चलाया। अस्तु प्रस्तुत प्रसंग में जब परशुराम जी ने ब्राह्मणों को पृथ्वी दे दी तब शान्ति प्रिय ब्राह्मणों ने उनसे निवेदन किया—"प्रभो! आप तो वन में जा रहे हैं। यदि दुष्ट लोग युद्ध की इच्छा से हम पर आक्रमण करेंगे तो हमारी रक्षा कौन करेगा? इस पर परशुराम जी ने ब्राह्मणों को एक शंख देते हुए कहा—'जब भी कभी कोई तुम पर आक्रमण करे तो यह शंख बजा देना', मैं तुरन्त आकर दुष्टों को दण्ड दूँगा। यह पाकर ब्राह्मण निश्चिन्त हो बड़ी निपुणता से संसार का पालन करने लगे। कुछ समय के उपरान्त एक बार ब्राह्मण परिषद में कुछ खल प्रकृति के ब्राह्मणों ने यह भाव प्रकट किया कि इस शंख की परीक्षा ली जाय। इसको हममें से कोई बजावे। यदि इसकी ध्वनि सुनकर परशुराम जी आ जाते हैं तो हमें विश्वास हो जायेगा कि समय पर परशुराम जी हमारी रक्षा अवश्य करेंगे, अन्यथा हमें राजनीति के चक्कर में पड़ना अच्छा नहीं। यद्यपि इस विचार को उत्तम प्रकृति के ब्राह्मणो ने पसन्द नहीं किया, किन्तु अश्रद्धलुओं ने बहुमत से इसको पास करके शंख-ध्वनि कर डाली। ध्वनि सुनते ही भगवान परशुराम आ पहुँचे और ब्राह्मणों से कहने लगे कि शीघ्र बतलाओ तुम्हारा शत्रु कहाँ है? मैं क्षण भर में उसका विनाश करूँगा। ब्राह्मण भय से काँपने लगे और बोले—प्रभो! अपराध क्षमा हो, हम लोगो ने आपके पुण्य दर्शन की अभिलाषा से शंख बजा दिया था। अब हम लोग आपके दर्शन से कृतार्थ हो गये। किन्तु अन्तर्यामी भगवान का क्रोध शान्त नहीं हुआ। उन्होंने ब्राह्मणों को शाप दे दिया कि तुम लोग राज्य करने के योग्य नहीं हो। तुम्हें दरिद्रता से कष्ट भोगना पड़ेगा। फिर जो ब्राह्मण शंख-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्वनि की परीक्षा लेने के पक्ष लेने के पक्ष में नहीं थे, उनसे कहा कि तुम लोग भूमिपति होंगो, तुम्हें दरिद्रता का सामना नहीं करना पड़ेगा" यह कहकर भगवान चले गये। जो ब्राह्मण परीक्षा लेने के पक्ष में नहीं थे, वे विश्वामित्र के पक्षधर थे, इसलिये कौशिक गोत्र में उनकी जीविका वृत्ति की उपकल्पना की गयी। जिस वंश से जिसका रक्षण होता है उसके उसी वंश से गोत्र का व्यवहार होता है। यही कारण है कि कौशिक गोत्रोत्पन्न भूमिहार ब्राह्मणों की संख्या अधिक है। किन्तु सावर्ण्ण, वत्स, शांडिल्य आदि गोत्र भी भूमिहारों के होते हैं। सम्भवतः ये ऋषि भी कौशिक के समर्थक रहे होंगे।

यहाँ हम जाति विलास के कुछ अन्तिम श्लोकों को उद्धृत कर रहे हैं—

तथा कालेन चारम्भस्सद्भावो भावमावृतः।
एतस्मात्मात्कौशिके गोत्रे भूमिहारः समन्वयः ॥९९॥
एवं प्रयोज्यमानत्वात्तत्त्वधर्मा निराकृतः।
भानुदप्रो महासौम्यः सर्वमूलमनुस्मृतम् ॥१००॥
अजीतगर्तस्त्रयोपुत्रः भानुदत्तस्य पञ्चकाः।
जयद्रथस्यषट् पुत्राः सोमसिन्धुर्दशाव्रतः ॥१०१॥
भूमिहाराः प्रजायन्ते परशुरामप्रभावतः।
एतस्मात् शाश्वतोधर्मोब्राह्मवृत्तर्व्य वस्थिता ॥१०२॥
ब्राह्मकालं विजानीयाद्ब्राह्मतत्वव्यवस्थितम्।
ब्राह्मदेशं तथाकार्यं तथावृत्तिः तथा क्रिया ॥१०३॥

अर्थ - इस प्रकार भगवान परशुराम जी के सम्बन्ध से भूमिहार जाति भेद से नियुक्त हुए और कौशिकादि गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मणों का वंश प्रवृत्त हुआ। जिनके आदि पुरुष महासौम्य भानुदत्त हुए। तथा अजीतगर्त और उनके तीन पुत्र हुए। भानुदत्त के पाँच पुत्र हुए, जयद्रथ के छह पुत्र हुए। इस प्रकार सोम, सिन्धु और दस वंशज अन्य।

इस प्रकार शाष्वत् धर्म और व्यवस्थित ब्राह्म वृत्ति के पालक भूमिहार ब्राह्मग परशुराम जी के प्रभाव से ब्राह्मकाल, ब्राह्मतत्व तथा तत्तदेशादि व्यवहार-वृत्ति में कुशल हुए ॥९९-१०३॥

उपर्युक्त प्रकार से जाति विलास में भूमिहार ब्राह्मण की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। इस प्रकार 'कान्यकुब्ज वंशावली' पुस्यक में भी भूमिहार को ब्राह्मण प्रतिपादित किया गया है—

मदारादिपुराख्यस्य भूमिहारा द्विजास्तु ये।
तेभ्यश्च यवनेन्द्रैश्च महद्युद्धमभूत् पुरा॥

अर्थात् मदारपुर (कानपुर जिले में गंगा तट पर अवस्थित) के भूमिहार ब्राह्मण से यवनेन्द्रों का महान् युद्ध हुआ था। आधुनिक युग के महामनीषी डा० राजेन्द्र लाल मित्र ने भूमिहार ब्राह्मण के सम्बन्ध में अपने 'बंगला मासिक' पत्र के पर्व ४, खण्ड ४७, पृष्ठ ७३, शकाब्द १७१९ में लिखा है– "कान्यकुब्ज ब्राह्मण दीगेर ५ ठो दल आछे, यथा सरवरिया, सनौढ़ा या सनाढ्य, जिझौतिया भूमिहार एवं प्रकृत कनौजिया"।

इसी मन्तव्य का रूपान्तर करते हुए लिखित श्लोक में कान्यकुब्ज के पाँच भेद बतलाये गये हैं—

सरयूपारी सनाढ्यश्च भूमिहारो जिझौतयः।
प्राकृताश्च इति पञ्चभेदास्तस्य प्रकीर्तिताः॥

यही आजकल के निष्पक्ष विद्वानों की भी धारणा है कि भूमिहार ब्राह्मण कान्यकुब्ज ब्राह्मण का ही एक भेद है जैसे सरयूपारी, सनाढ्य आदि कान्यकुब्ज के भेद हैं।

अब प्रश्न उठता है कि भूमिहार ब्राह्मण में भूमिहार विशेषण क्यों लगा? इसका उत्तर इतिहास आदि के उद्भट विद्वान योगेन्द्र नाथ भट्टाचार्य के शब्दों में यह है—ये ब्राह्मण, 'जायगीर' इत्यादिरूपे भूमि प्राप्त हइया छेन से भूमिहारः। 'भूमिहार' शब्द है– भूमिं हरति केनचित् उपायेन स्वीकारोति गृहृणाति इति भूमिहारः भूमि हृ+अण्। अर्थात् भूमि को स्वीकार करने या ग्रहण करने वाला 'हृ, हरणो' धातु से बना है। हरण का अर्थ स्वीकार भी होता—'हरणा पापणं स्वीकारः स्तेयं नाशनं च इति चत्वारः अर्थाः।"

योगेन्द्र भट्टाचार्य ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक "हिन्दू कास्ट एन्ड सेक्ट्स' में इस बात को और भी स्पष्ट किया है जिसका सारांश इस प्रकार है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण की सामाजिक स्थिति का पता तो सिर्फ उनके नाम से ही मिल जाता है। इसका शब्दार्थ है—"भूमि ग्राही ब्राह्मण"। राजपुताना गजेटियर के अनुसार भूम एक प्रकार का ज़मीन में हक़ था जो पुश्त दर-पुश्त तक चलता रहता था। इस भूमि का लगान नहीं देना पड़ता था, यह छीनी नहीं जाती थी इत्यादि।

इस प्रकार विद्वानों ने जो 'भूमिहार' शब्द का विश्लेषण-विवेचन किया है, उससे जिन ब्राह्मणों को भगवान् परशुराम द्वारा भूमि दी गयी थी, उनका सम्बंध स्पष्ट रूप से जुड़ जाता है, जो अपने आप में साक्षात् इतिहास हैं।

प्राचीन काल से लेकर आज तक से बड़े-बड़े विद्वानों की भी यही सम्मति है कि भूमिहार ब्राह्मण ही हैं। जैसे मैथिल मनीषी महामहोपाध्याय चित्रधर मिश्र, महामहोपाध्याय बालकृष्ण मिश्र आदि। सरयूपारी विद्वान महामहोपाध्याय द्विवेदी, महोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि। कान्यकुब्ज विद्वान सम्पादकाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० लक्ष्मी नारायण दीक्षित शास्त्री, पं० वेंकटेशनारायण तिवारी आदि। इस प्रकार अन्य ब्राह्मणों तथा ब्राह्मणेतर जातियों के विद्वानों ने भी इस सत्य को स्वीकारा है कि भूमिहार ब्राह्मण ही है।

अध्यक्ष पुराण इतिहास विभाग
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
इलाहाबाद

ब्रह्मर्षि सन्देश कानपुर के प्रति
हमारी शुभकामनायें

पी० आर० पंजवानी
ठेकेदार, 'केसा' कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ओ३म् नमः शिवाय ॥

ब्राह्मण समाज का दायित्व

— चन्द्रमाल राय

वर्णाश्रम-व्यवस्था सनातन हिन्दू या आर्य धर्म की सदैव से अविच्छिन्न अंग रही है भले ही कालक्रम से उसके रूप में परिवर्तन हुआ हो। वस्तुतः हिन्दू या आर्य सनातनी होने पर ही दूसरा प्रश्न वर्ण-विशेष का उठता है। उस वर्ण-व्यवस्था में ब्राह्मण सदैव से शीर्षस्थ, श्रेष्ठतम, स्थान का अधिकारी माना जाता रहा है। आधुनिक विदेशी इतिहासकार तो हिन्दू धर्म का दूसरा नाम ही ब्राह्मण धर्म (ब्राह्मणिज्म) कहते हैं। यद्यपि प्रखरतम भगवदवतार क्षत्रिय कुलोद्भव ही हुए हैं और महान् राजनीतिज्ञ ब्राह्मण कौटिल्य ने भी "शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते" कहकर क्षात्रधर्म की महानता प्रतिपादित करने की चेष्टा की है। पर सुविख्यात वेदमंत्र **"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत बाहू राजन्यः कृतः ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत"** शुक्ल यजुर्वेद अ० ३२, मं० १२, की दुहाई देकर ब्राह्मण की श्रेष्ठता मानी जाती रही है, हालाँकि इस विशेष मंत्र में श्रेष्ठ कनिष्ठ आदि की कोई बात नहीं की गई हैं। संभवतः 'मुखिया मुख सों चाहिए' के जैसे आधार पर ब्राह्मण की श्रेष्ठता प्रतिष्ठित हो ऐसी शंका तब तक उठती है जब तक ब्राह्मण के दायित्व और सामाजिक सुव्यवस्था की पूरी विवेचना नहीं हो लेती।

अति प्राचीनकाल से हिन्दू-समाज में ब्राह्मण को सम्पूर्ण समाज का धार्मिक, नैतिक नेता माना जाता रहा है और ब्राह्मण की व्यवस्था ही सर्वमान्य होती थी। ब्राह्मण हर युग में आचार का नियामक स्वीकार किया गया। बात तो यहाँ तक हो गई कि पृथ्वी के सम्पूर्ण मानव इनके चरित्र से सीखें।

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवाः॥

मनुस्मृति

ब्राह्मण का चरित्र इतना श्रेष्ठ, उत्तम होना अपेक्षित था कि सम्पूर्ण संसार के मानव समाज के लिए अनुकरणीय माना गया। समाज की सुव्यवस्थिति के लिए चरित्र की उत्तमता न सिर्फ वांछित है बल्कि अनिवार्य है। इसी प्रकार के लक्ष्य को दृष्टि में रखकर आधुनिक राजनीति की भाषा में नागरिक के कर्त्तव्य और अधिकार की अवधारणा है। प्राचीनकाल से ही ब्राह्मणत्व चरित्र की श्रेष्ठता में ही केन्द्रित था। भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है—

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः" ४/१३

गुण और कर्म दोनों ही श्रेष्ठ होना आवश्यक है। कर्म अर्थात् आचरण के अभाव में गुण वस्तुतः दुर्गुण बन जाता है। अतः सब जगह आचरण को ही श्रेष्ठ और करणीय माना गया है।

"आचारहीनाः न पुनन्ति वेदाः
यद्यप्यधीता सहषड्भिरङ्गैः।
शिल्पं हि वेदाध्ययनं द्विजानां
वृतं स्मृतं ब्राह्मण लक्षणं तु॥" मनु०

षडंग वेदों का अध्ययन भी आचारहीन को पवित्र नहीं कर सकता मात्र शिल्प होता है। सिर्फ आचरण की श्रेष्ठता ही ब्राह्मणत्व है। महाभारत वन पर्व में या और अनेक स्थानों में भी इसी आचरण की श्रेष्ठता की पुष्टि की गई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सत्यं-दानं क्षमाशीलं आनृशंस्यं तपोऽघृणा ।
दृश्यन्ते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥"

—महाभारत, वन पर्व

इसी प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में भी ब्राह्मण के लिए स्वाभाविक गुण बताये हैं—

"शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ।"

जयशंकर 'प्रसाद' के चाणक्य ने भी स्वीकार किया है—"...मैं ब्राह्मण हूँ। मेरा साम्राज्य करुणा का था, मेरा धर्म प्रेम का था। आनन्द-समुद्र में शान्ति-द्वीपका अधिवासी ब्राह्मण— मैं, चन्द्र—सूर्य—नक्षत्र मेरे दीप थे, अनन्त आकाश वितान था, शस्य श्यामला कोमला विश्वं भरा मेरी शय्या थी। बौद्धिक विनोद कर्म था, सन्तोष धन था।" ..."हम भारतीय ब्राह्मणों के पास सबकी कल्याण कामना के अतिरिक्त और है क्या ?"

इस प्रकार ब्राह्मतत्व एक ऐसी सार्वभौम सत्ता थी जिसका नेतृत्व, अनुकरण सम्पूर्ण समाज ने ही उसे श्रेष्ठतम घोषित किया और राज्य द्वारा अवध्य था क्योंकि उसके किसी भूल के बावजूद भी उनकी उपस्थिति से समाज को आदर्श प्राप्त होता था, समाज का सार्वजनिक हित में नियमन होता था, राज्य को सुबुद्ध निःस्वार्थी और सबके हित में पथ प्रदर्शन मिलता था। ब्राह्मण को समाज स्वत. सिरमौर मानता था क्योंकि उसके सद्गुण, सदाचरण समाज की जीवन शक्ति के लिए सम्बल थे। समाज का समस्त वर्ग अपने अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए एक दूसरे का हित साधक होता था। फलस्वरूप सुख, शान्ति, सम्पन्नता, संतोष, सदाचरण का साम्राज्य था। इन्हीं सब कारणों से सनातन भारतीय व्यवस्था, सामाजिक सुव्यवस्थिति विश्व में सर्वाधिक स्थायी हो सकी। अज्ञान को समाज से दूर करना ब्राह्मण का दायित्व था जैसे कि क्षत्रिय का दायित्व अन्याय को दूर करना और वैश्य का दायित्व अभाव को दूर करना था। आश्रम की व्यवस्था भी ज्ञानार्जन द्वारा सुबुद्ध उत्तरदायी नागरिक बनकर आयु के उत्तरार्द्ध में "सर्वभूतहितेरताः" होने की प्रेरणा देती थी। हमारे समस्त शास्त्र भौतिकता की अतिशयता के विरोधी थे। अतएव कुत्सित स्वार्थपरता को घृण्य मानते थे। इसलिये चरित्र और सहिष्णुता थी, एक दूसरे को समझने और सम्मान करने की प्रवृत्ति थी। ज्ञान की गहराई में गंभीरता, धीरता और उदारता होती है। दुर्भाग्य से आज शम, दम, ज्ञान—विज्ञान आस्तिक्य आदि के अभाव से सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज कर्त्तव्याच्युत होकर दिशाविहीन पथभ्रष्ट हो गया है जिससे समाज को उचित नेतृत्व, पथ-प्रदर्शन नहीं मिल रहा है जिससे बहुत विश्रृंखलता आ गई है और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता मात्र पाशविक जीवन जीने को प्रेरित करती है। आज सम्पूर्ण समाज अदूरदर्शी अप्रत्यक्षदर्शी होकर सिर्फ आहार-निद्रा-भय-मैथुन की तृप्ति या प्रतिकार के लिए कार्यरत हो रहा है जिससे अशान्ति, दुःख और क्षोभ सर्वत्र व्याप्त है। पूर्वजों के दीर्घकाल से अनुभूत सत्य से मुँह मोड़कर हम भौतिकता, घनघोर भौतिकता, पाशविक वृत्तियों की तृप्ति से ही सुखी होने का निष्फल प्रयास कर रहे हैं हम भूल गये हैं कि

न जातुकामः कामानां उपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्द्धते ॥
विहाय कामान्यः सवान् पुमांश्चरति निस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधि गच्छति ॥

— श्रीमद्भागवत गीता

यहाँ एक महत्त्वपूर्ण बात स्मरणीय है। भगवान तीन कामों के लिए अवतार ग्रहण करते हैं। साधुजनों का परित्राण, दुष्कृतों का विनाश और धर्म की संस्थापना ही उनका मुख्य उद्देश्य होता है। हिन्दू, आर्यधर्म वर्ण व्यवस्था भी कुछ ऐसी है कि भगवान के इन उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। वैसे तो सभी वर्णों के लिए इनका पूरा किया जाना वांछनीय है पर ब्राह्मण तो धर्म के संरक्षण और वेदों की रक्षा के लिए ही ब्रह्मा द्वारा तप किये जाने के बाद रचा गया। वेदों और धर्म की रक्षा तथा पितरों की तृप्ति मुख्य धर्म हैं।

तपस्तप्त्वा सृजद्ब्रह्मा ब्राह्मणान वेदगोप्तये ।
तृप्त्यर्थं पितृदेवानां धर्मं संरक्षणाय च ॥

धारण से धर्म का सम्बन्ध होने से यह आचरण या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरित्र से अविच्छिन्न है जिसके कारण इसका संरक्षण ब्राह्मण का साक्षात प्रत्यक्ष दायित्व हो जाता है। इसी कारण से ब्रह्मत्व और क्षत्रत्व निर्भय और अक्षीण माने गये हैं।

"यथा ब्रह्मं च क्षत्रं च न विभीतो,
नरिष्यतः एवामे प्राण मा विभेः ॥ —अथर्व०

ब्राह्मण से सम्बन्धित कुछ उक्तियों का उल्लेख कर देना समासतः सम्पूर्ण धारणा को अधिक स्पष्ट कर देगा।

"श्रुति-स्मृति उभे नेत्रे ब्राह्मणस्य प्रकीर्तितः।
एकया रहितो काणः द्वाभ्यां अन्ध उदाहृतः ॥" — महा०

वेद और स्मृति ब्राह्मण के नेत्र हैं। एक के अभाव में काना दोनों के अभाव से अंधा है।

"वेदभ्यास ब्राह्मणस्यो क्षत्रियस्य च रक्षणभ।
वाता वैश्यस्य कर्मांगि विशिष्ठानि स्वकर्मस ॥"
— मनुस्मृति

वेदाभ्यास ब्राह्मण का, रक्षण क्षत्रिय का, कृषि गौरक्षवाणिज्य वैश्य के कर्म हैं जिनमें विशिष्ठता अपेक्षित है। ऐसा मनुस्मृति में कहा है।

"ब्राह्मणाः द्विविधाः प्रोक्ता धर्मश्च द्विविधः स्मृतः।
प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहं प्रतिग्रहात् ॥"
— महाभारत

ब्राह्मण और धर्म दो प्रकार के होते हैं, प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी। प्रतिग्रह या दान से निवृत्त या दान-प्रतिग्रह न लेने वाला ब्राह्मण वक्ता अपने को बताता है।

"सावित्री मात्र सरोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रित।
नायंत्रितः त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रमी ॥" —मनुस्मृति

सदाचरण करने वाला ब्राह्मण सिर्फ गायत्री के अनुरक्त रहने पर भी असंयमी सदाचरण रहित त्रिवेदाध्यायी से श्रेष्ठ कहा गया है।

"विप्राणां ज्ञान तो ज्येष्ठः क्षत्रियाणां तुवीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शुद्राणामेव जन्मतः ।"
— मनुस्मृति

ब्राह्मणों में ज्ञान से, क्षत्रियों में बल से, वैश्यों में धन-धान्य से और शूद्रों में जन्म से बड़ा-बड़ा माना जाता है।

"नित्यव्रती सत्यपरः स वै ब्राह्मण उच्यते।"
ब्राह्मण नित्यवृती ओर सत्य परायण होता है।

"वेदमेव सदाभ्यसेत तपस्तपस्यत द्विजन्मना।
वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य तपः परमिहोच्यते।"

तपस्वी होता हुआ ब्राह्मण सदा वेदाभ्यासी हो क्योंकि वेदाभ्यास ही ब्राह्मण का परज तप कहा है।

"ब्राह्मणस्त्वनधीयान स्तृणाग्निरिव शाम्यति।"

वेद का अध्ययन न करने वाला ब्राह्मण तृण रहित अग्नि की तरह शान्त और तेजहीन हो जाता है।

"न विषया केवलया तपसा वापि पात्रता।
यत्रवृत्तिमिमेचो भे तद्धि पात्रं प्रकीर्तितम् ॥"

ऊपर की कुछ सूक्तियों से ब्राह्मण के कर्त्तव्य और दायित्व का बोध हो जाता है।

अब प्रश्न है कि क्या आज का ब्राह्मण समाज अपने कर्त्तव्य और दायित्व का पालन करने में सक्षम है। स्पष्ट है कि सम्पूर्ण समाज, इस अगुआ प्रबुद्ध वर्ग के दोष से समुचित दिशा दर्शन मार्ग-प्रदर्शन न पाकर दिग्भ्रमित और किंकर्त्तव्यविमूढ़ बन रहा है। अपने महान पूर्वजों की सन्तान होने के कारण बीज रूप में शक्ति के विद्यमान रहने पर भी उद्योग के अभाव में सफलता नहीं है।

"ब्राह्मणों जायमानो हि पृथिव्यामधिजायते।
ईश्वरः सर्वभूतानां धर्म कोशस्य गुप्तये ॥" —मनुस्मृति

सब प्राणियों के धर्मकोष के रक्षक को व्यापक दृष्टि कोण वाला परमोदार, उदारामना होना अपेक्षित है। अज्ञान को दूर करने वाले को स्वयं ज्ञान के प्रकाश में सदैव भासित रहना आवश्यक है अन्यथा कथनी करनी के भेद से वांक्षित फल नहीं मिलेगा। सिर्फ आत्म प्रवंचना, जन-मानस की प्रवंचना ही हाथ लगेगी। स्वयं परिग्रह करने वाले और अपरिग्रह की शिक्षा मात्र देते रहने वाले से समाज का कितना अनिष्ट हो सकता है यह यथार्थ का अवलोकन और उर्वर कल्पना से ही जाना जा सकता है। इन्हीं सबको ध्यान में रखते हुए ब्राह्मण के लिए षट्कर्मा होने के (वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञ-करना यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना) विधान के बावजूद महाभारत में त्रिकर्मा के उत्तममता की अधिक प्रशंसा की गई।

"अवदातेषु संजातस्त्रिसंदेहस्त्रि कर्मकृत।
तस्मादुन्मज्जने तिष्ठेत् प्रज्ञया निस्तरेत् यथा ॥'

उत्तम कुल में उत्पन्न ब्राह्मण अध्यापन, याजेन और और प्रतिग्रह को संदेह की दृष्टि से देखते हुए अध्ययन, भजन और दान करते हुए प्रज्ञाद्वारा अपना उद्धार करे। संभवतः ऐसे ही महत्त्वपूर्ण वचनों से प्रेरित होकर आज के अयाचक ब्राह्मणों महियाल, त्यागी, भूमिहार आदि के पूर्वजों ने दान लेने आदि से अपने को दूर कर लिया होगा। पर आज प्रश्न सम्पूर्ण समाज बल्कि विश्व के कल्याण का है। आज के भौतिक विज्ञान का दानव सम्पूर्ण विश्व का विनाश कर डालना चाहता है। भगवान चरक के सुविख्यात वचन "धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यंमूलमुत्तमम्" के अनुसार मूल आरोग्य असंभव बनने वाला है अतएव किसी का भी उद्धार, मोक्ष, कल्याण संभव नहीं प्रतीत होता। यह सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज को एकजुट होकर विश्व-कल्याण के निमित्त लग जाने की घड़ी है जिससे अज्ञानान्धकार दूर किया जा सके और यथार्थ ज्ञान की ज्योति की सहायता से विनाश को टाला जा सके। आज विश्व अज्ञानवश आत्मनाश की ओर प्रेरित हो रहा है। सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज की संगठित सामूहिक शक्ति से इस विनाश से बचा जा सकता है। विशेषणों के प्रयोग से विशेष सीमित होता है। सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज विशेषणों जैसे कान्य-कुब्ज, गौड़, द्रविड़, मैथिल, भूमिहार, जुझौतिया, त्यागी, महियाल आदिका परित्याग कर एक मंच पर आकर सामूहिक दायित्व का योजना बद्ध वहन करे।

"परस्परः भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ" भगवान श्रीकृष्ण का आदेश है। वेद का आदेश अनेकों मंत्रों में बिखरा पड़ा है—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जायताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते॥
समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन हविषा जुहोमि॥

अपने महान् पूर्वजों, ब्रह्मर्षियों को याद रखते हुए उनके आदेशों का पालन करने के लिए संगठित हों, यह सर्वप्रथम आवश्यकता है। संगठन की शक्ति का लाभ मिलने पर कोई भी काम असम्भव या दुष्कर नहीं रह जायगा। व्यक्तिगत स्तर पर सादगी, सरलता और सदाचरण हमारा जातीय चिन्ह रहा है। इसकी पुनः सुप्रतिष्ठा करके खोये हुए गौरव को प्राप्त किया जा सकता है। ब्राह्मण समाज के रक्षण के लिए क्षत्रिय भरणपोषण के लिए वैश्य का नियमन करता रहा है। उसके लिए प्रखर ब्रह्म तेज की अपेक्षा होती है जिसके अनुसार 'स्व' की सीमा में सम्पूर्ण विश्व आत्म सात हो जाता है। तभी विश्व को वेद उपनिषद, पुराण, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन आदि की अमर निधियाँ प्राप्त हो सकी हैं। विश्व को आर्य या श्रेष्ठ बनाने का आदेश तभी हम पालन कर सकेंगे जब अपने महान पूर्वजों को स्मरण रखते हुए उदारमना होकर नयी उद्भावनाएँ, कल्याणकारी उपलब्धियाँ, करने के लिए सतत प्रयत्नशील हों। "अग्रतः चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः" के योग्य बनें।

"तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयस्कर परे।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥" —मनु०

अतएव तप से किल्विषका नाशकर विद्या से अमृत, अमरता प्राप्त करें।

यहाँ विद्या से सम्बन्धित देववाणी संस्कृत का उल्लेख भी आवश्यक है। इसकी पूर्णता और विश्व भाषा के रूप में अनिवार्यता तो कम्प्यूटर भी स्वीकार कर चुका है। यह हमारे महान् पूर्वजों की धरोहर, विश्व के सदैव नवीन रहने वाले प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान वाङ्मय की आधार शिला है। यह हमारा पावन जन्म-जात धार्मिक कर्त्तव्य है कि हम चाहे जहाँ रहें, जो करें ज्ञान-विज्ञान के जिस क्षेत्र से भी सम्बन्धित हों यह सदैव हमारे गले का हार रहे, इसका अर्जन, उन्नयन, विकास, प्रसार हमारा लक्ष्य रहे। इसकी सेवा से ही हमारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच्चा पितर-पूजन हो सकता है। विश्व की यह प्राचीनतम भाषा इस राष्ट्र में जन्म से पहले से लेकर मरणोपरान्त तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनादिकाल से व्यवहृत इतनी अधिक मात्रा में होती आ रही है जितनी कि विश्व की कोई भी दूसरी भाषा नहीं हुई। इसका ज्ञान, इसमें प्रणयन हमारी स्वाभाविक रुचि (हॉबी) बने। देव भाषा का सान्निध्य, देवभाषा से सम्पर्क दैवी सद्गुण देकर दिव्य बना देगा। पीढ़ीदर पीढ़ी सुनकर, स्मरण कर श्रुतियों-स्मृतियों को अविकल रूप से हजारों वर्षों तक सुरक्षित रखने वाले की सन्तान होकर भी हम प्रमादवश अपनी पैतृक क्षमता को अप्रयोग द्वारा विनष्ट कर रहे है, इससे अधिक शोक की बात क्या हो सकती है। उल्लेख्य हैं कि हम क्या है, क्या हमारा दायित्व है, इसे भी संस्कृत के बिना नहीं जाना जा सकता क्योंकि इस लेख में भी न्यूनतम मात्रा में संस्कृत के प्रयोग का प्रयास करने पर भी इतने अधिक श्लोकों, सूक्तियों का प्रयोग करना पड़ गया है। वस्तुतः अत्यन्त संक्षेप में कहा जाय तो यही पर्याप्त होगा कि विश्व में सुख शान्ति की संस्कृति के लिए संस्कृत की, देववाणी की आत्मा को धारण करना ही अलं होगा। वेद में अन्यतम उद्घोष किया गया है, जैसा कहीं भी अन्यत्र नहीं कहा गया—

"जनं बिभ्रती बहुधा विवाचस नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसं सहस्त्रं धारा द्रविणस्य में दुहां ध्रुवेव धेनुरपस्फुरन्ति ॥"

—अथर्ववेद

बहुत प्रकार की भाषायें बोलने वाले, बहुत धर्मों को पालन करने वाले एक परिवार की तरह मिलकर रहें तो पृथ्वी बहुत दूध देने वाली गाय की तरह सदैव धन-धान्य से परिपूर्ण रखेगी। सहिष्णुता, प्रेम का यह मंत्र सनातन धर्म का प्रकृत जन-तंत्र विश्व का प्राचीनतम विचार स्वातंत्र्य की प्रतिष्ठा है, जन-तंत्र का जनक है।

अब अन्त में, प्रभु से प्रार्थना है —

"कल्पन्तान्ते दिशस्तुभ्यमापः,
शिववमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः।
अन्तरिक्ष, शिवं तुभ्यं,
कल्पन्तान्ते दिशः सर्वाः ॥" —यजुर्वेद

आप के लिए दिशाएँ, नदी–समुद्रादि, अन्तरिक्ष आद्रि समस्त कल्याणप्रद बनें।

इति शम्।

With best compliments from :

V. S. INDUSTRIES

87/6, Hiraganj, Kalpi Road
KANPUR

Manufacturers of :
All types of Square, round and irregular shape of Tin Containers and Steel Drums.

For bussiness enquiry please contact :
Sri Vinod Tyagi

Phones : Factory : 24520
Resi. : 21784

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभ कामनाओं सहित–

मेसर्स तुलसीराम गयाप्रसाद

उच्चकोटि के ऊनी कालीन, दरियों व सूती दरियों
के निर्माता व निर्यातकर्ता

ग्राम–बाबूसरॉय, पो०–महराजगंज,
जि०–वाराणसी-२२१ ३१४
यू० पी० (इण्डिया)

फोन नं० : महराजगंज, इक्सचेंज ४२
खमहरिया

साझीदारों के नाम –

(१) श्री दया प्रसाद बसवाल
(२) श्री गया प्रसाद बसवाल
(३) श्री अनिल कुमार बसवाल
(४) श्रीमती दुर्गावती देवी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी तुलसीदास की जाति

— कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि के विषय में इस समय चार पक्ष हैं —

१. वे राजापुर (बाँदा) में उत्पन्न हुए थे।

२. वे पसका (गोंडा) में उत्पन्न हुए थे।

३. वे सोरों (एटा) में उत्पन्न हुए थे।

४. वे राजपुर (बलिया) में उत्पन्न हुए थे।

राजापुर में तुलसीदास की जन्मभूमि होने का खण्डन बाँदा गजेटियर ही कर देता है।[1] पसका का पक्ष वेनी माधव दास कृत 'गोसाईं चरित' पर आधारित है, लो पूर्णतया जाली ग्रन्थ सिद्ध हो चुका है।[2] सोरों के पक्ष में भी जो सामग्री प्रस्तुत की गई है, वह भी विद्वानों की जाँच पड़ताल से पूर्णतः अविश्वसनीय हैं।[3] अन्तर्साक्ष्य से विदित होता है कि तुलसीदास जी गंगातट वासी और भोजपुरी क्षेत्र के निवासी थे। इससे ऊपर के तीनों पक्षों का निराकरण हो जाता है, यथा गँगातट—

'बरु बारहिं' बार सरीर धरौं,
रघुवीर को ह्वै तब तीर रहौंगो।
देवसरी विनवों कर जोरि,
बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो॥

भोजपुरी क्षेत्र—

१. उनकी रचनाओं में प्रायः भोजपुरी क्षेत्र के रीतिरिवाज का वर्णन पाया जाता है जैसे—दही भात और दही-चिउरा खाना, वंशी लगना, विवाह में अगवानी लहकौरि, पाँवधोना आदि।

२. उनकी पहली रचना 'नहछू' भोजपरी में है। अन्य रचनाओं पर भी भोजपुरी की स्पष्ट छाप है, जैसे-

'हमहुँ कहव अब ठकुर सोहाती।
नाहित मौन रहव दिनराती॥
फोरे जौग कपार अभागा।
भलो कहत दुख रोरेहु लागा॥ (ए-च.मा·)

राम कहत चलु राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे-
वि० प०

कहें एक एकन ते–कहा बाई का करी— क०

३. उन्होंने कई बातें इस प्रकार व्यक्त की हैं, जिससे सिद्ध होता है कि वे बक्सर से पूरब के गंगातट वासी थे। गौतम चन्द्रिका से भी यह बात प्रकट होती है।[4] मलिया नगर से पूरब हल्दी में उनकी माता हुलसी सती और कर्ण छपरा में उनके गुरु नरहर्यानन्द के स्थान हैं। अयोध्या में जहाँ रहते थे, वह स्थान 'बगसरिया (बाबा का) टोला' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन सारी बातों से उनके बोलिया वासी होने की पुष्टि होती है।

गोस्वामी जी ने–'दियो सुकुल जन्म सरीर सुन्दर हेतु जो फल चारि को' कहकर अपने विषय में यह स्पष्ट कर दिया है कि वे श्रेष्ठ ब्राम्हण कुल में उत्पन्न हुए थे।

---

१. बाँदा गजेटियर सन् १८६५

२. श्री प्रभुदयाल मित्तल—मानस वार्तामाला
डा० भगीरथ मिश्र—राम रसायन पृ० ५२
आ० रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ १२५
कुलदीप नारायण राय 'झड़प'–गो० तुलसीदास : जीवनवृत्त और व्यक्तित्व पृ० ६१-६४

३. डा० माता प्रसाद गुप्त—तुलसीदास पृ० १६४
आ० रामचन्द्र शुक्ल–हिन्दी हाहित्य का इतिहास पृ० १२९
आ० चन्द्रबली पाण्डेय—तुलसीदास पृ० ११

४. आ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—गो० तुलसीदास, पुरोवाक् पृ० १३

४. आ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—गो० तुलसीदास परिशिष्ट गौतम चन्द्रिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु वे किस ब्राम्हण कुल में उत्पन्न हुए थे, यह खोज का विषय है।

गोस्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में अपने जन्म, कुल, परिस्थिति तथा गुण-स्वभाव के विषय में जो थोड़ा-बहुत परिचय दिया है, वह इस प्रकार है—

१. जायो कुल मंगन बधावनों बजायो सुनि,
भयो परिताप पाप जननी जनक को। (वि०)

२. ररत ररत लट्यो जाति पाँति भाँति घटयो-वि २६०

३. महिमा मान प्रिय प्रान ते अधिक, वि० २७०
खोलि खल न आगे खिनु खिनु पेट खलायो॥

४. जो पै होतो तू राम प्रिय, तोहिं राम सोहातो।
काल कर्म कुल कारनी कोऊ न कोंहातो॥

५. हौं सुबरन कुबरन कियो, नृप ते भिखारि करि,
सुमति ते कुमति कर्यों हैं—

६. धूत कहो, अवधूत कहो,
रजपूत कहो जोलहा कहो कोऊ।
काहु की वेटी से वेटा न व्याहब,
काहु की जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को,
जोको रुचै सो कहै कुछ ओऊ॥
माँगि के खइवे मसीत को सोइवे,
लेवे को एक न देवे को दोऊ॥

७. मध्य बयस धन हेतु गँवाई, कृषी बनिज नाना उपाय।

८. कृस घन सरवहिं न देव दुख,
मुयहुन माँगव नीच। ३३५

९. तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओड़िए।

१०. जग जाँचिय कोउ न, जाँचिय जो,
जिय जाँचिय जानकि जाहिं रे।

११. नाथ पुरोहिती कर्म अति मन्दा।
वेद पुरान स्मृति कर निन्दा॥

१२. तुलसीदास जो देत हैं जल में हाथ उठाय।
प्रति ग्राही जी वे नही, दाता नरके जाय॥

इनमें से पहिले उद्धरण का अर्थ बिना पूर्वा पर विचार किए, इस प्रकार किया गया कि तुलसीदास जी का जन्म मंगनकुल अर्थात् सरयूपारी ब्राह्मण में हुआ था। यद्यपि तुलसीदास का आशय इसके बिल्कुल विपरीत है। वे कहते हैं—

मेरा जन्म ऐसे उच्च कुल में हुआ कि मेरे जन्म की बात सुनकर ही बहुत से मंगन कुल वाले बधावा बजाने आये, पर हा पाप! मैं जन्म लेते ही अपने माता पिता के लिए परितापकारी सिद्ध हुआ?

इस कथन में विचारणीय प्रश्न यह है कि केवल पुत्र जन्म की बात सुनकर बहुत से बधावा बजाने वाले जमीदारों के ही यहाँ जाते थे। दूसरे उद्धरण में यह स्पष्ट संकेत है कि किसी से कुछ माँगना उनके जातीय स्तर को घटाने वाला था। तीसरा उद्धरण भी इसी अर्थ का द्योतक है। चौथे उद्धरण से विदित होता है कि कारनी (जमीदारी का यहाँ लिखने वाला) के रुष्ट हो जाने से उन्हें कष्ट उठाना पड़ा और पाँचवें उद्धरण में वे कहते हैं कि वे अप्रतिग्र ही सामन्त ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। आठवें, नवें और दसवें उद्धरणों द्वारा भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है। ग्यारहवें तथा बारहवें उद्धरण द्वारा स्पष्ट रूप पुरोहिती कर्म की निन्दा की गयी है, जैसा कि भोजपुरी-प्रदेश के भूमिहार ब्राह्मण ही करते हैं और याचना एवं दान-दक्षिणा लेने को नीच कर्म मानते हैं। सातवें उद्धरण के अनुसार तुलसीदास का वंशगत व्यवसाय कृषि एवं कृषि से उत्पन्न वस्तुओं का वाणिज्य सिद्ध होता है, पुरोहिती नहीं। छठें उदाहरण से भी उनके भूमिहार ब्राह्मण होने की ही झलक मिलती है। प्रायः आज भी देखा जाता है कि भूमिहार ब्राह्मणों के महत्व से द्वेष रखने वाले उन्हें ऐसी उपाधियाँ दे डालते हैं।

पुरोहित वर्ग के ब्राह्मण जो उन दिनों भी आत्म-हीनता की भावना से ग्रस्त होने के कारण अपने ही भाइयों की निन्दा करते और छुआछूत आदि ढोंग के बल पर बड़ा बनते थे[1] वे तुलसीदास जी की भी निन्दा करने में क्यों चूकने लगे? गोसाईं जी ने उन्हीं के विषय में कहा है—

1. कुलदीप नारायण 'झड़प—अयाचक ब्राह्मण काशी ब्राह्मण-सम्बन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम हमार आचार बड़, भूरि भार धरि सीस।
हठि सठ परबस परत जिमि, करी कोस कृमि कीस।२४३

१७ वीं शताब्दी के लेखक 'वेंकटाध्वरि' रचित 'विश्वगुणादर्श चम्पू' से ज्ञात होता है कि उस समय काशी के ब्राह्मण शास्त्र धारण से अपनी जीविका-निर्वाह करते थे वे शूद्रों द्वारा लाए गए जल से देवताओं को स्नान कराते तथा आचमन करते थे एवं मुसलमानों से छू जाने पर नहाते नहीं थे। ढोंगी ब्राह्मण इसके निन्दक थे, किन्तु वेंकटाध्वरि ने उनकी निन्दा का उत्तर देते हुए अपने एक पात्र से कहलाया है—

'शस्त्रधारी ब्राह्मण यत्न पूर्वक निर्दय और नीरस मुसलमानों की सेवा करते हुए देवता-ब्राम्हण की रक्षा करते हैं, इसीसे वे धन्य हैं।

अवश्य ही यह वर्णन काशी के भूमिहार ब्राम्हणों के सम्बन्ध में है जो दास-दासी से युक्त मुसलमान शासकों के सम्पर्क में रहने वाले सामन्त थे। गोस्वामी तुलसीदास का जन्म इसी वर्ग में हुआ था। उनके निन्दक उनके भू-स्वामी वंश का होने के कारण धूर्त, छुआछूत की शिथिलता के कारण अवधूत, शास्त्रधारी कुल का होने के कारण राजपूत और मुसलमानों से सम्पर्क रखने वालों की परम्परा में होने के कारण उन्हें 'जोलहा' कहकर निन्दा करते थे, जिसकी स्पष्ट से अलक छटे उदाहरण में है। प्राय: बस्ती, गोरखपुर, गोंडा, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फैजाबाद, इलाहाबाद आदि के तीन और तेरह घरों के सरयूपारी जो सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं, परम्परा से अपनी कन्याओं का विवाह भूमिहार ब्राम्हणों से करने आ रहे हैं।[2] इसी रहस्य का उद्घाघन 'काहु की बेटी से बेटा न ब्याहब' द्वारा हुआ है।

श्री एम० ए० शेरिंग ने अपने ट्राइबस एण्ड कास्टस' में श्री इलियट द्वारा 'सप्लीमेण्टल ग्लासरी' में उद्धृत श्री बीम्स के निम्नांकित कथन का उल्लेख किया हैं—

'ये लोग (भूमिहार ब्राह्मण) बहुत ही सुन्दर मनुष्य जाति के हैं' और इनकी शरीर रचना पूर्णतया सुन्दर और आर्यों की शारीरिक बनावट जैसी है। ये लोग साहसी और जल्दी ही उबल पड़ने वाले होते हैं।''

महाभारत में भी कहा गया है कि ब्राह्मण की वाणी क्षुरे की धार के समान तीक्ष्ण पर हृदय कोमल होता है। महाभारत के इस कथन से भी बीम्स के कथन की पुष्टि होती है। जल्दी ही उबल पड़ने का भूमिहार ब्राह्मण स्वभाव तुलसीदास में भी देखा जा सकता है। यथा श्रीरामचन्द्र जी के प्रति—

'अब तुलसी पूतरो बांधि है, मोपै सहि न जात परिहास एते। अलखिया साधु के प्रति—

हम लखि, हमहि हमार लखि, हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहिं का लखै, राम नाम जपु नीच॥

जैन श्रावक के प्रति—

ईस सीस बिलसत सलिल तुलसी तरल तरंग।
स्वान सरावगि के कहे, लघुता लहै न गंग॥

भूमिहार ब्राम्हण दान लेते नहीं पर दान देना अपना धर्म मानते हैं। दूसरा गुण यह है उनका सैनिक स्वभाव। भिड़न्त होने पर भागना नहीं जानते। गोस्वामी तुलसी दास द्वारा स्थापित आदर्श जीवन भी कुछ इसी प्रकार का है, जैसे—

,रामहि' सुमिरत, रनभिरत, देत, परत गुरु पांय।
तुलसी जिनहि न पुलक तन, ते जग जीवत जाय॥४२

गोस्वामी जी ने वैष्णव होकर भी श्रीरामचन्द्र जी के साथ मृगया-विहार में सम्मिलित होने की जो अभिरुचि प्रकट की है, उसमें भी उनका भूमिहारी स्वभाव ही झलकता है।

तुलसी दास जी अपने विषय में एक स्थान पर कहते हैं—

---

२. जो मनुष्य अपने भीतरी मन में किसी प्रकार की आत्महीनता का भाव रखता है, वही दूसरे लोगों से घ्रणाक रना है। वह उन्हें अपने से नीचा सिद्ध करने की चेष्टा करना है। दूसरों को नीचा सिद्ध करने की चेष्टा करना अपनी हीनता के भाव को भुलाने का एक उपाय है।×× हम अपने ही दोषों को दूसरों कोदेखने लगते हैं। (लालजी राम शुक्ल मनोविज्ञान और जीवन पृ० २२८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाति के, सुजाति के, कुजाति के पेटागि बस,
खाये अन्न सबके विदित बात दुनी सो।

इस कथन में विचारणीय बात यह है—कुजाति का अन्त खाने से तो ग्लानि हो सकती है, परन्तु सुजाति और जाति का अन्न खाने से ग्लानि क्यों ? वे अवश्य ही ऐसे ब्राम्हण वंश में उत्पन्न हुए थे, जिनके सदस्य पराया अन्न खाने में ही ग्लानि का अनुभव करते थे। चाहे वह सुजाति और जाति का ही क्यों न हो। ऐसी ब्राम्हण जाति भूमिहार ब्राम्हणों की ही है जो दूसरों को खिलाते तो थे, परन्तु किसी का खाते न थे, जैसा कि गाजीपुर गजेटियर में श्री फिशर लिखते हैं-'वे (भूमिहार ब्राम्हण) अन्य ब्राम्हणों के साथ स्वयं खान-पान नहीं कर सकते।'

तुलसी के कथन में एक बात और अवलोकनीय है वह है--सुजाति के पहले जाति का नाम। जिसका अभिप्राय यह है कि तुलसी दास जिस ब्राम्हण जाति में उत्पन्न हुए थे, उसकी पद-प्रतिष्ठा सुजाति कहलाने वाली अन्य ब्राम्हण जातियों से अधिक थी। शास्त्र-पुराण, ऐतिहासिक-पुरातात्विक अभिलेख और परंपरागत व्यवहार से भी प्रकट है कि भूमिहार ब्राम्हणों की प्रतिष्ठा अन्य ब्राम्हणों से ऊँची रही है। उनसे पुरोहित ब्राम्हणों के द्वेष का एक प्रधान कारण यह भी है

तुलसी काल में पुरोहित वर्ग की भाषा नीति यह थी—'न पठेत् यावनी भाषां प्राणा कण्ठ गतैरपि' किन्तु भूमिहार ब्राम्हण राजकार्य में लगे रहने के कारण फारसी पढ़ते थे। इसी कारण तथा मुसलमान शासकों के सम्पर्क में रहने के कारण भी उनकी भाषा में अरबी-फारसी के शब्दों का व्यवहार निःसंकोच भाव से किया जाता था। यदि तुलसी दास की भाषा का अवलोकन किया जाय तो यह विशेषता उसमें भी मिलेगी। उन्होंने अरबी-फारसी सैकड़ों शब्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। उनकी रचना में ब्राम्हण जाति का जो आदर्श चित्र प्रस्तुत किया गया है, वह प्रायः भूमिहार ब्राम्हणों का ही है, पुरोहित वर्ग का नहीं। इतना ही नहीं, उनकी रचना में प्रायः भूमिहार ब्राम्हणों के यहां प्रचलित आचार-व्यवहार का भी वर्णन है।[1]

वाराणसी के वरिष्ठ लेखक और पत्रकार गौरीशंकर 'गुप्त अपने एक पत्र में लिखते हैं—"सामान्यतः गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) को सरयू पारीण कान्यकुब्ज आदि बताया जाता है किन्तु ऐसा लगता है कि वे भूमिहार ब्राम्हण थे। गोस्वामी जी ने स्पष्ट परिचय अपनी रचनाओं में दिया है, किन्तु उस ओर ध्यान नहीं दिया गया। उस पर विचार नहीं किया गया।[2]

तुलसीदास ने टोडर के निधन पर जिस प्रकार शोकोद्गार व्यक्त किया है तथा टोडर द्वारा अपने को कँधा देने की बात कही है, उसमें भी उनका टोडर वर्गीय ब्राम्हण होना सिद्ध है। क्योंकि भूमिहार ब्राम्हणों का मृतक भूमिहार ब्राम्हणों के अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं छूने पाते। ये भी दूसरे का मृतक प्रायः नहीं छूते।

'गौतम-चन्द्रिका' से विदित होता है कि तुलसीदास का ननिहाल काशीवार गौतम ब्राम्हणों में था। एक अनुसंधायक ने उनकी ससुराल की खोज निकाली है, जो पनासा (इलाहाबाद) के हीरापुरी पाण्डेय वंश-परंपरा में थी। गौतम चन्द्रिका से ज्ञात होता है कि काशीवार गौतम विहार और उत्तर प्रदेश के भूमिहार ब्राम्हणों से नाते-रिश्ते द्वारा सम्बद्ध थे। तुलसीदास जी के गुरु नरहर्यानन्द जी शाँडिल्य गोत्र के नैंनी जोरा ब्राम्हण थे। इन सम्पूर्ण वंश परम्पराओं के लोग इस समय भूमिहार-ब्राम्हण कहलाते हैं, अस्तु तुलसी दास जी किस ब्राम्हण वर्ग में उत्पन्न हुए थे, यह स्वयं स्पष्ट हो जाता है।

अब बिचारने की बात यह रह जाती है कि तुलसी दास जी ने किस भूमिहार ब्राम्हण कुल को जन्म लेकर धन्य बनाया था ? वे किस गोत्र के थे ? उनका आस्पद और मूल क्या था ?

अन्तर्साक्ष्य के आधार पर यह झलक मिलती है कि तुलसीदास वसिष्ठ कुल के थे।+ भोजपुरी प्रदेश में वसिष्ठ

१. कुलदीप नारायण राय 'झड़प'—गोस्वामी तुलसीदास
२. स्वामी विमलानन्द सरस्वती—ब्राम्हण कौन थे ? (परिशिष्ट)

+ कुलदीप नारायण राय 'झड़प' —गो०तुलसीदास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुल के दो मूल (निकास, डीह) के भूमिहार ब्राम्हण मिलते हैं—

१. एक सरिया—ये मूलतः कान्यकुब्ज हैं। इनके पूर्वज अज दीक्षित को सम्राट महेन्द्रपाल ने बंगाल-बिहार नेपाल विजय के उपलक्ष्य में बलिया और सारन में कई गाँवों का अग्रहार दिया था। अंग्रेजी शासन के प्रारम्भ में इस वंश परम्परा के लोग सारन सरकार के १३ परगनों के भूस्वाधिकारी थे। यह भू-भाग उनके अधिकार में प्रायः जमीदारी टूटने तक रहा है। इस वंश परम्परा के लोग शाही, सिंह, राय, मिश्र और दीक्षित उपाधिधारी हैं।

२. कस्तुवार—इस वंश परम्परा के पूर्वज सम्राट जयचन्द के भाई राजा मान्धाता के मन्त्री थे। मान्धाता ने उन्हें वर्तमान गाजीपुर जिले में अग्रहार और जागीर दी थी।[1] इनका गोत्र वाशिष्ठ है और उपाधि ठाकुर, प्रधान तथा राय। इस वंश परम्परा के लोग गाजीपुर बलिया और भोजपुर जिले में बसे हुए हैं।

कस्तुवार ब्राम्हण हुलासो सती के आस-पास कई गाँवों में हैं, जैसे—राजापुर, मंगौली (जिला-भोजपुर) और गोपालपुर (बलिया) आदि में। इस बात की ही सम्भावना अधिक है कि तुलसीदास जी कस्तुवार वंश के ही बालक थे। जनश्रुति आदि से भी इसका समर्थन होता है। (विशेष विवरण के लिए देखिए कुलदीप नारायण 'झड़प' कृत—गोस्वामी तुलसीदास जीवन वृत्त और व्यक्तित्व (पृ० २४५ से ३५६)। ***

[1] गाजीपुर संस्मरण पृ० ४

With best compliments from :

M/s. PIONTAN EXPORTS
"Export House"
Jajmau Road, Kanpur-208010.

Members :
Pioneer Tenneries & Glue Works, Kanpur.
Pioneer Leather Finishers Pvt. Ltd., Kanpur.
Bhopal Glue & Chemi cals Pvt. Ltd., Kanpur.
Bhopal Tenneries & Glue Works, Bhopal & Kanpur.

Our Products :
Finished Sole Leather, Finished Shoe Upper, Leather Upprolostry, Soflies, Linning Saddlery & Industrial Leathers, Boot & Shoe Uppers, Cut Soles, Glue & Gelatines.

With best Compliments from :

Agia Singh Tarlochan Singh
68/143, Canal Road, Kanpur.

Associate Concern :

Technical Traders,
82/3, Cooper Ganj, Kanpur.

The City Ice & Oil Mills,
82/3, Cooper Ganj,
Kanpur.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best Compliments from :

MIRZAPUR ELECTRICAL INDUSTRIES

Dankeenganj,
Mirzapur (U.P.) 231001

Manufacturers of Power and Distribution Transformers

Gram : TRANSFORMR

Phones : Office 2551
2894
Works– 2821

Branch :

40, STRAND ROAD, ROOM No. 15, (1st Floor)
CALCUTTA–700 001

Phone No. : 25-2678
25-8452

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस के मुहावरे

— विवेकी राय

तुलसी के कालयजी महाकाव्य रामचरितमानस का भारतीय लोकमानस में सीमातीत अवतरण एक विस्मयजनक सचाई है। संसार का कोई और जन-काव्य इस गहराई के साथ जन-जीवन में प्रवेश कर, उसके लिए बात-बात में, पग-पग पर और प्रत्येक सुखात्मक-दुखात्मक परिस्थितियों में सहारे का काम करता है, मुझे ज्ञात नहीं। जो निरक्षर हैं तथा जिन्हें 'रामायन' के प्रति श्रद्धा भाव तो है, परन्तु उसके साहित्यिक स्वरूप से सर्वथा अपरिचित हैं उनमें मुख से भी समय-समय पर तुलसी की चौपाइयाँ सुनने को मिलती हैं। जन सामान्य के मुख पर चढ़ते-चढ़ते ये चौपाइयाँ कहावत, मुहावरे अथवा लोकोक्तियों का काम करने लगीं हैं। इनमें से कितनी तो अपना प्रसंग और अर्थ छोड़कर स्वतन्त्र हो जाती हैं। शब्दों की ही भक्ति अर्थ-विस्तार और अर्थ संकोच आदि की भाषा-वैज्ञानिक स्थितियाँ इन व्यवहारिक चौपाइयों में लक्षित होती हैं। कितने सद्गृहस्थ मिलते हैं जो प्रत्येक क्षण प्रसंगानुसार इनका प्रयोग करते हैं और इनका कोष इतना विशाल है कि रीतने वाला नहीं। अपनी सरलता, सुबोधता और सटीकता के कारण ये बैठती भी अच्छी तरह हैं। इस प्रकार मुहावरों के रूप में इनके प्रयोग से बातचीत में अद्भुत प्रभाव और रंग आ जाता है। रामायण भक्त ही नहीं, उसके प्रति उदासीन भाव रखने वाले या उसे आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में पिछड़े युग का काव्य कहने वाले, किंचित् उपेक्षा भाव भी प्रदर्शित करने वाले आधुनिकतावादी वार्ता की धारा में मानस की चौपाइयाँ बोल जाते हैं। ऐसा लगता है कि यह हिन्दी भाषा-भाषी जनता के अन्तर्मन की भाषा हो गयी है और अनायास-अनियन्त्रित व्यक्त होती रहती है।

अत्यन्त प्रसिद्ध : कुछ चौपाइयाँ अथवा दोहे तो अत्यन्त लोकप्रिय और प्रसिद्धि के सर्वोच्च शिखर पर हैं। हिन्दी प्रान्त का प्रत्येक व्यक्ति, नर हो अथवा नारी, विद्वान हो या निरक्षर, गंवार हो या नागरिक, बच्चा हो या बूढ़ा इनका अवश्य प्रयोग करता पाया जाता है। अवश्य ही उस समय वह यह जानकर नहीं बोलता है कि मानस की पंक्तियाँ बोल रहा है। इस प्रकार की अति प्रसिद्ध चौपाइयों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। इनका प्रसार मौखिक परम्परा से होता है। किसी न किसी के द्वारा प्रयुक्त कोई पंक्ति सुनी, हृदय में तुरन्त धंस गयी और स्मृति-पटल पर अंकित होकर अपनी हो गयी। यह भाषागत सरलता और साधुता का चमत्कार होता है: नीचे इस प्रकार की कुछ ऐसी चौपाइयाँ और अर्द्धालियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति कहता-सुनता है और जो व्यवहार में अत्यन्त व्यापक रूप से मुहावरों, कहावतों, कथनों, अन्योक्तियों, दृष्टान्तों और प्रतीकात्मक निष्कर्ष-संकेतों के रूप में उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं—

(१) भइ गति साँप छछुन्दरि केरी।
(२) इहाँ न लागिहिं राउरि माया।
(३) तजहु आस निज-निज गृह जाहू।
(४) होइहिं सोइ जा राम रचि राखा।
(५) इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।
(६) हरि इच्छा भावी बलवाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७) प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ।
(८) पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं ।
(९) हरि इच्छा बलवान ।
(१०) परम स्वतन्त्र न सिर पर कोई ।
भावइ मनहिं करहु तुम्ह सोई ।।
(११) का बरखा जब कृषी सुखाने ।
(१२) इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ।
जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।
(१३) मूंदे आंखि कतहूँ कोउ नाहीं ।
(१४) कोऊ नृप होउ हमहिं का हानी ।
चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी ।।
(१५) करम प्रधान विश्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फल चाखा ।।
(१६) ढोल गंवार सूद्र पशु नारी ।।
सकल ताड़ना के अधिकारी ।
(१७) छुद्र नदी भरि चली तोराई ।।
जस थोरेहु धन खल इतराई ।
(१८) समुझइ खग खग ही कै भाषा ।
(१९) नर-बारनहिं संग कहु कैसे ?
(२०) सूझ जुआंरिहि आपन दाँऊ ।।
(२१) नारि मुई गृह सम्पति नासी ।
मूड़ मुड़ाइ होहिं सन्यासीं ।
(२२) मैं बैरी सुग्रीव पिआरा ।।
अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ।
(२३) सुर नर मुनि सब के यह रीती ।।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ।
(२४) बर कन्या अनेक जग माहीं ।।

मुहावरों पर आधारित : मानस की कुछ चौपाइयाँ हिन्दी मुहावरों पर आधारित हैं, किन्तु छन्द की अतिरिक्त भंगिमा और संगीतात्मकता के कारण उनका आकर्षक बढ़ जाता है, कुछ चौपाइयां मुहावरों का कार्य करती हैं, कुछ मुहावरों के पर्याय के रूप में सामने आती हैं और कुछ का अर्थ मुहावरा हो जाता है और बोला जाता है ।

'बांझ कि जान प्रसव कै पीरा' एक मुहावरा है। इसी अर्थ का मुहावरा है, जाके पैर न फटी बिवाई ....। बिना दवा के ही रोग अच्छा होना • 'बिनु औषध बिश्रा... बिधि खोई वैसा ही है जैसे साँप मरा न लाठी टूटी ! 'सकल सभा कै मति भै भोरी' मानो 'कुएँ में भाँग प... गयी !' 'दुइ कि होइ एक समय भुआला, हंसब ठठा... फुलाउब गाला' के समान्तर एक मुहावरा जन सामा... में प्रचलित है—'भर बाँह चूड़ी कि चटपट राँड़ ! दोनों हाथ लड्डू होना एक मुहावरा है। तुलसी ने लिखा 'दुहूँ हाथ मुद मोदिक मोरे ।' इससे मिलता-जुलता है आम के आम और गुठलियों के दाम । इसी प्रकार क... जाता है कि भागे भूत की लंगोटी भली । मानस... आया, 'अरध तजहिं बुध सरबस जाता ।' संस्कृत में ए... सूत्र है, शठे शाठयम् समाचरेत । इससे कम प्रसिद्ध न... है, 'तसि पूजा चाहिअ जस देवता ।' दूसरों को तो उपदे... सभी देते हैं अर्थात् 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचर... ते नर न घनेरे !' (आप न जावे सासुरो औरन को सि... देइ) । छोटे मुंह बड़ी बात, छोटे बदन कहउँ ब... बाता' । अरहर की टट्टी गुजराती ताला-'सियनि सुहाव... टाट पटोरे' । इस प्रकार के प्रयोग मानस में भरे पड़े हैं

उक्त लोकोक्ति अथवा मुहावरों के परिप्रेक्ष्य में निम्न... कित चौपाइयाँ भी द्रष्टव्य हैं—

(१) तृन ते कुलिस तृन करई ।
(२) उघरहिं अन्त न होइ निबाहू ।
(३) चहिअ अमिय जग जुरइ न छाछी ।
(४) काक कहहिं कलकंठ कठोरा ।
(५) करतब बायस वेष मराला ।
(६) समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं ।
(७) मनमोदकन्हि कि भूख बुताई ।
(८) गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।
(९) टेढ़ जानि सब बन्दई काहू ।
(१०) चोरहिं चाँदनि राति न भावां ।
(११ मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ।
(१२) तुम तो कालु हाँकि जनु लावा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१३) कान करें अबला प्रवल।
(१४) लिखत सुधाकर गा लिखि राहू।
(१५) जगु भल भलेहि पोच कहु पोचू।
(१६) ऊँच निवास नीच करतूती।
(१७) हित अनहित पशु पच्छिउ जाना।
(१८) चरइ हरित तून बलि पसु जैसे।
(१९) केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा।
(२०) नवनि नीच की अति दुखदायी।
(२१) जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी।

नीति निर्देशक : वार्ताक्रम में स्वपक्ष को सुदृढ़ करने के लिए, किसी कथन की पुष्टि के लिए, किसी आचरण के समर्थन में अथवा नीति निर्देश के लिए रामचरितमानस की पंक्तियाँ व्यवहार में आती हैं। इनका प्रयोग इस सहजता-सरलता अथवा सहजाभ्यास के साथ होता है कि प्रयोक्ता-श्रोता दोनों प्रभावित होते हैं। चौपाइयाँ व्यवहार में घुलमिल कर हृदय की भाषा, भावों की वाणी और धड़कनों का स्वर बन गयी हैं।

जो जिसे पसन्द पड़ गया उसके लिए वही अच्छा है—'जो जेहि भाव नीक तेहि सोई।' कुछ बातों में जनता का दृष्टिकोण प्रधान है, जैसे कीर्ति, कविता और ऐश्वर्य। इन्हें गंगाधार की भाँति होना आपेक्षित है ताकि समस्त लोग समान रूपेण लाभान्वित हो सकें। तुलसी के स्वर हवा में उड़ते हैं, 'कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कंह हित होई।' इसी प्रकार विना पूरी पहचान अथवा परिचय हुए न तो किसी को साथ लिया जा सकता है और न परित्याग किया जा सकता है—'संग्रह त्याग न विनु पहचाने।' कहाँ जाना और कहाँ नहीं जाना चाहिए की सीमाओं के सन्दर्भ में—

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा
जाइज बिनु बोलेहु न संदेहा।
तदपि विरोध मान जहं कोई।
तहां गए कल्यानु न होई॥

व्यक्ति मनचाहे से ही सरोकार रखता है—'जेहि कर मनु रम जाहि सन, तेहि तेही सन काम।' ठोस कार्य करने वाला ही कृतकार्य होता है. दिवा स्वप्नी केवल डहकता रहता है—'मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ?' सच्चे प्रेमी और उत्कट लगनशील अपना अभीष्ट प्राप्त कर लेते हैं—'जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलइ न कछु सन्देहू।' दुष्टों से भयभीत होने का एक दर्शन है—'टेढ़ जानि सब वंदहिं काहू।' क्रोध की नीति—'क्रोध पाप कर मूल' और बैर-प्रेम के आयाम—'बैर-प्रीति नहिं दुरइं दुराएं।' अथवा 'भय बिनु होइ न प्रीति'। आर्त्त व्यक्तियों की प्रकृति कैसी होती है ? 'आरत काह न करइ कुकरमू' अथवा 'रहत न आरत के चित चेतू।' विपत्ति पड़ने पर किन-किन की परख हो जाती है—'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परिखिअहिं चारी।' सेवक, भिखारी व्यसनी, व्यभिचारी, साधु और राजा आदि विषयक व्यवहार-नीति तुलसी प्रस्तुत करते हैं—

[क] सेवक सुख चह मान भिखारी,
व्यसनी धन, शुभ गति विभिचारी।
लोभी जसु चह, चार गुमानी,
नभ - दुहि दूध चहत ए प्रानी॥'

[ख] 'संग ते जती कुमंत्र ते राजा,
मान ते ग्यान, पान ते लाजा।'

यदि कहीं कोई ऐसा है जो विषय वासनाओं में लिप्त रहते हुए भी मुक्ति-कामी है तो तुलसी के सहारे उसे टोकते हैं, 'छूटइ मल कि मलहि के धोएं, घृत कि पाव कोइ वारि बिलोए !' अति सर्वत्र वर्जयेत की नीति प्रमाण सहित प्रस्तुत है, 'अति संघरषन करै जो कोई, अनल प्रगत चन्दन ते होई।'

उपदेश सन्दर्भ :

कोरे उपदेशकों की खबर लेने में रामायणी लोग नहीं चूकते, 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।' परन्तु रामचरित मानस' उपदेश के मुहाबरों से अत्यधिक परिपूर्ण है। आज्ञा पालन का अनुशासन है कि 'मातु-पिता गुर प्रभु कै बानी, बिनहिं विचार करिअ सुभ जानी।' कुछ बातों में छिपाव श्रेयस्कर है—'जोग जुगुति तप मन्त्र प्रभाऊ, फलई तबहिं जब करिअ दुराऊ।' फल भोग के सम्बन्ध में—'काहु न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोउ सुख दुख कर दाता, निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।' धर्मशील लोगों की भिन्न स्थिति—'तिमि सुख सम्पति बिनुहि बोलाये, धरमशील पहिं जाहिं सुभाएं।' गुरु-कृपा से सफलता —'जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं, ते जनु सकल विभव बस करहीं।' माता-पिता की महिमा भी कम नहीं—'चारि पदारथ करतल ताकें, प्रिय पितु-मातु प्रान सम जाके।' सुमति भी आवश्यक है—'जहां सुमति तहं सम्पति नाना, जहां कुमति तहं विपत्ति निदाना।' सफलता के लिए प्रेम और विरोध के सम्बन्ध में—'प्रीति विरोध समान सन करिअ नीतिअसि आहि।' सामान्य जनों के अतिरिक्त राजन्य वर्ग को कैसी शिक्षायें और कैसे सलाहकार वर्जित हैं।—

'सचिव वैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ वेगिहीं नास।'

बात व्यवहार में चमत्कार उत्पन्न करने वाली :

बात-बात में फूल सी उगी मानस की चौपाइयों का चमत्कार दैनिक व्यवहार को अद्भुत प्राणवान बना देता है। उनका अपना प्रसंग छूट जाता है, स्थान छूट जाता है, अर्थ छूट जाता है और वे कहां-कहां काम करने लगती हैं। चौपाइयां मानस के पात्रों के ही व्यवहार, शील, भाव, चरित्र, द्वन्द्व, निश्चय उल्लास अथवा शारीरिक-मानसिक क्रियाओं को नहीं प्रकट करती हैं अपितु वे जनता की जबान पर चढ़कर उसके प्रयोक्ताओं के अपने-अपने व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रकाशित करने लगती हैं।

किसे बड़ा कहा जाय और किसे छोटा? 'को बड़ छोट कहत अपराधू' में किस प्रकार स्वतन्त्र स्थितियों का निर्वचन होने लगता है? इसी प्रकार निम्नांकित चौपाइयों में यह स्थिति मिलती है—

१. कहत सो मोहिं लगत भय लाजा,
जो न कहउं बड़ होइ अकाजा।
२. गृह कारज नाना जंजाला।
३. सांसति कर पुनि करहिं पसाऊ,
नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ।
४. कुपथ मांग रुज व्याकुल रोगी,
वैद न देह सुनहु मुनि जोगी।
५. जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई।
६. जेहि पितु देह सो पावइ टीका।

इस प्रकार से मानस–मुहावरे बहुत सधे ढंग से का[म] करते हैं। कहीं कुछ बहुत आकर्षक और द्रष्टव्य है चट कहेंगे 'अवसि देखिअहि देखन जोगू।' कहां खिस[क] जाता है अयोध्याकाण्ड और सीता-स्वयंवर? प्रयोक्ता [को] वह याद भी नहीं रहता। अर्द्धाली स्वतन्त्र बात-वास[्ता] हो जाती है। किसी को कुछ आगे महत्वपूर्ण बात कहनी है, 'आगिल कथा सुनहु मन लाई।' किसी को अवस[र] चूक जाने का खेद है, 'कहहु काहु यह लाभ न भावा' और कहीं किसी को कुछ एक बार कहने के बाद दुबार[ा] कहने का साहस नहीं है, 'एकहिं बार आस सब पूजी।' कर्म–फलवाद का निष्कर्ष निकलता है, 'बवा सो लुनि[अ] लहिअ जो दीन्हा।' समय की परिवर्तनशीलता– 'दिव[स] जात नहिं लागहिं बारा।' कुछ चटपट कर डालने [के] सन्दर्भ में, 'अब बिलम्ब केहि कारन कीजै?' कहीं कु[छ] अपूर्व है—'भयउ न अहइ न अब होनिहारा।' कहीं भविष्यवाणी की जा रही है–'यह सपना मैं कहहुं पुकारी होइहि सत्य गएं दिन चारी।' भविष्य वक्ता अथ[वा] अनुमन्ता त्रिजटा बन जाता है, परवा नहीं बात पर ए[क] पक्की मुहर लग जानी चाहिए, मानस की मुहर [से] प्रामाणिक दूसरा कुछ नहीं। इस प्रकार व्यवहार [में] चौपाइयों के सिक्के जन-साधारण के बीच चल[ते] रहते हैं।

व्यंग्य विनोद-योजना : वार्तान्तर्गत व्यंग्य-विनोद [की] योजना में मानस की चौपाइयां बहुत धारदार सि[द्ध] होती हैं। अपने मूल प्रसंग और अर्थ को सुरक्षित रखते हुए भी चौपाइयां अन्योक्ति बन जाती हैं। एक चौपाई है—'महिमा जासु जान गनराऊ, प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।' इसमें भगवान राम के नाम की महिमा का वर्णन है और कहा गया है कि इसे गणेश जी अच्छी तरह से जानते हैं? क्योंकि राम-प्रताप से ही वे अग्रपूज्य हुए। गणेश-चर्चा में तो इसे कहते ही हैं, परन्तु कि[सी] सुनाम व्यक्ति की प्रशंसा अथवा बदनाम व्यक्ति [की] निन्दा में भी यह अपना मूल अर्थ-प्रशंग छोड़ कर व्यं[ग्य]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो जाती है। तब इसका अर्थ हो जाता है कि 'अमुक व्यक्ति अपने नाम के प्रभाव से सर्व पूजित होता है।'

यही स्थिति निम्न प्रसंगों में भी है—

अपनी वस्तु और विशेषकर अपनी कृति लोगों को बहुत अच्छी लगती है, चाहे उसके भीतर कुछ मूल्यवत्ता हो चाहे न हो। कहेंगे, निज कवित्त केहि लाग न नीका, सरस होउ अथवा अति फीका।' जब कोई व्यक्ति अपनी किसी वस्तु की प्रशंसा करने लगता है तब इसे अचूक भाव से लोग कहते हैं। इसी प्रकार कोई कृशकाय हो गया है, अथवा किसी ने अन्न-जल छोड़ दिया है, कोइ अनुष्ठान कर रहा है, मौका देखकर एक तीर छोड़ दिया जाता है—'कछु दिन भोजनु बारि बतासा।' कोई अभीष्ट मार्ग पर नहीं आ रहा है, नेक शिक्षायें और उपदेश व्यर्थ हो जाते हैं। तब खेद प्रकट किया जाता है—'आवत एहिं सर अति कठिनाई।' किसी के चित्र-विचित्र या नंगे-भूखे साथी गण हैं, लोग छींटाकशी करने में नहीं चूकते हैं—'कोउ मुख हीन विपुल मुख काहू' अथवा 'नाना बाहन नाना वेषा' जैसे शंकर की बारात। किसी की बातों को, उसके कहे दुवाक्यों को बातों-बातों में ही उड़ा देने के लिये चौपाई तैयार है। अजी पागलों की बात कोई मानता है? 'बातुल भूत विवस मतवारे, ते नहिं बोलहिं बचन सम्हारे।' ऐसे लोगों का कुछ ठिकाना नहीं। इनके लिए हितकारक तत्व भी कष्टकर है, क्योंकि 'चोरहिं चांदिनी राति न भावा।' किसी का वृद्धावस्था के सन्दर्भ में टोकना है—'श्रवण समीप भये सितकेसा' किसी को उसकी गफलता की ओर ध्यान दिलाना है, 'चरइ हरित तिन बलिपशु जैसे।' किसी जीवन्मृत व्यक्ति को संकेतित करना है, 'जीवत सब सम चौदह प्रानी।' कोई मौके पर कन्नी कटाकर भगा। लगा दी पीछे चौपाई— 'सर्वसु खाइ भोग करि नाना, समर भूमि भए वल्लभ प्राना।' अन्ततः समय पर ही तो व्यक्ति की परीक्षा होती है? 'कसें कनकु मनि पारिखि पाएं।' लेकिन मोटी चमड़ी वाले ऐसे भी अलज्ज समाज में कम नहीं जिनके 'परम प्रबल रिपु सीस पर, तदपि सोच नहिं त्रास।' इस प्रकार अपने सन्दर्भ से कट कर मानव समाज की स्थितियों की छाया बन कर मुहावरों के रूप में अभिव्यक्त मानस की पंक्तियाँ समाज-जीवन को अत्यधिक अनुरंजित करता है।

दुष्ट प्रकरण : समाज के प्रणम्य दुष्टों को तुलसी के शब्दों में स्मरण करना बहुत सरल है। हे दुष्टो, तुम्हारा स्वभाव है—'जे बिनु काज दाहिनेहु बाएं।' कभी-कभी तुम ऐसा कपटवेश बनाते हो कि पहचान कठिन हो जाती है, किन्तु—'उघरहिं अन्त न होइ निबाहू, कालनेमि जिमि रावन राहू।' तुम्हारे वेश और कार्य-कलाप में अन्तरविरोध है। 'करतब वायस वेष मराला।' तू प्रकृत्या भयग्रस्त है क्योंकि 'जे कामी लोलुप जग मांही, कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं। तू उच्च पदस्थ होकर भी कर्त्तव्यच्युत ईर्ष्यालु है— ऊंच निवास नीच करतूती देखि न सकहिं पराइ विभती।' तुम परम अविश्वसनीय हो—'आगे कहि मृदु बचन बनाई, पाछे अनहित मन कुटिलाई।' तुम्हारा स्वभाव टेढ़ा है—'चलइ जोंकि जल बक्रगति जद्यपि सलिल समान।' तुम्हारी माया दुस्तर है—'जानि न जाय निसाचर माया।' तुम परम मिथ्याचार हो—'झूठइ लेना, झूठइ देना, झूठइ भोजन, झूठ चबेना।' तुम लोभी हो—'लोभइ ओढ़न लोभइ डासन।' तुम्हारा स्वभाव—'काहूकी जो सुनहिं बड़ाई, स्वास लेहिं जनु जूड़ी आयी।' अतः दुष्ट की सुगति कहाँ? 'निज अध गयउ कुमारग गामी।' चमगादड़ बनना पड़ा—सबकी निन्दा जे जड़ करहीं, ते चमगादर होइ अवतरहीं।' खल-परित्याग, 'खल परिहरिअ स्वान की नाई।' खल-उपेक्षा : 'खल सन कलह न भल नहिं प्रीति।' खल-आशंका : 'नवीन नीचि की अति दुखदायी।' खल-दमन : 'सठ सन विनय कुटिल-सन प्रीती, सहज कृपन सन सुन्दर नीती' अथवा—

काटे पइ कदरी फरइ,
कोटि जतन कोउ सींच।
विनय न मान. खगेस सुनु,
डाटेहि पइ नव नींच।

अवसर विशेष के लिए सुरक्षित : सदा-सदा के लिए वियुक्त होने की गंभीर धमकी है—'एहि तन सतिहि भेंट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहि नाहीं ।' अपमान पर एक उबाल रूप में—'सब ते कठिन जाति अपमाना । महान् संकट से कोई बच गया । ईश्वर के सिवा कौन बचा सकता है—'जे राखे रघुबीर, ते उबरे तेहिं काल महुं ।' सत्य कहने पर अच्छा नहीं लगता है, ठीक है, हमहु कहबि अब ठकुरसोहाती···।' किसी आकर्षण में या किसी कारण किसी के मन में उभरी चंचलता परिलक्षित नहीं हुई कि किसी ने टोका, यह देखा, 'पीपर पात सरिस मन डोला ।' समय के फेर और हितैषियों की बदलती नजरों पर—'रहा प्रथम अब ते दिन बीते, समउ फिरे रिपु होंहि पिरीते ।' कहीं कोई-कुछ संयोग से मिल गया, कितनी सुखी-यह संजोग विधि रचा विचारी ।' कोई किसी स्थान-विशेष का पर्ण विशेषज्ञ है । क्या कहना ? 'सब हमार प्रभु पग-पग जोहा ।' अकल्पित विषम स्थिति में स्वाभाविक है कि 'धीरज भागा ।' किसी का वंश विनष्ट हो गया था उस विनाश की कल्पना से किसी को महित किया जा रहा है—रहा न कुल कोउ रोंवनिहारा ।' मन्त्री को चापलूस नहीं होना चाहिये । यदि वह ऐसा है तो खैरियत नहीं—

'कहहिं सचिव सब ठकुर सोहाती ।
नाथ न पूर आव एहि भाँती ।'

श्रद्धालुओं के बीच भक्ति-भाव-प्रसंग पर : मुख्यतः भक्ति-ग्रन्थ होने के कारण इस सन्दर्भ में कितनी पंक्तियाँ किन-किन संदर्भों पर कही-सुनी जातीं हैं इसकी सीमा नहीं । श्रद्धालु लोग बारम्बार चौपाइयों का सहारा लेते हैं । भगवान की व्यापकता–'सियाराममय सब जग जानी', उनकी मंगलमयता-'मंगल भवन अमंगल हारी', नाम जप-प्रभाव, 'भायं कुभायं अनख आलसहू नाम जपत मंगल दिसि दसहू', अधर्म बढ़ने पर औतार—'जब जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी । तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा, हरहिं कृपा-निधि सज्जन पीरा,' और सर्वव्यापी प्रभु-प्राप्ति की शर्त—'हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना ।' ऐसे बहु प्रचलित कथनों से समाज के कान अत्यन्त परिचित हो चुके हैं । निष्कपट भाव से भजन की चर्चा छिड़ते तुलसी हाजिर हैं—

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई ।
भजत कृपा करिहहिं रघुराई ।।

शरीरधारी के लिए रामभजन अनिवार्य है—'देह धरे कर यह फलु भाई, भजिअ राम सब काम बिहाई।' यहाँ तक कि 'पुत्रवती जुवती जग सोई, रघुपति भगतु जासु सुत होई ।' प्रभु-सेवा-रहित जीवन को धिक्कार है—'धिग् जीवन रघुबीर विहीना ।' भगवान जिसे न बड़ा बना दे—'जो बड़ होत सो राम बड़ाई ।' उसकी आज्ञा सर्वोपरि है—'ईस रजाइ सीस सबही के ।' राम-प्रेम अन्तिम लक्ष्य है—'साधन सिद्धि राम पग नेहू ।' राम-विमुख धन कैसा है ! 'राम बिमुख सम्पत्ति प्रभुताई, जाइ रही पाई बिनु पाई ।' उस इष्ट देव का सर्वाधिक रम्य रूप कौन सा है—'इष्ट देव मम बालक रामा ।' वास्तव में जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है भक्ति-सन्दर्भ की उ‍द्धृताई चौपाइयों की कोई सीमा नहीं है । प्रमुख धर्म ग्रन्थ के रूप में रामचरित मानस की जन समाज में स्वीकृति के कारण उसकी पंक्तियों में जादू की शक्ति निहित है । यह वह जादू ही है कि विरोधी अथवा नास्तिक भी जाने-अनजाने उनका प्रयोग करते हैं । सर्वजन सुलभ प्रमाणों का ऐसा प्रामाणिक कोष कहाँ मिलेगा ? एक उदाहरण लें । जहाँ भी धर्म की चर्चा आएगी निम्न चार पंक्तियाँ अवश्य सुनी जायेंगी—

१– धरमु न दूसर सत्य समाना ।
२– श्रद्धा बिना धर्म नहीं होई ।
३– सिव दधीचि हरिचन्द नरेसा,
सहे धरम हित कोटि कलेसा ।
४– खल मंडली बसहु दिन राती,
सखा धर्म निबहइ केहि भाँती ।

बिधिवाद और भाग्यवाद : ईश्वर संसार का मालिक है । इसका प्रमाण यह है कि लोग बात-बात में उनके ऊपर दोषारोपण करते हैं अथवा उसकी दुहाई देते हैं जरा सा कहीं कुछ नकशा ढीला हुआ कि बस मढ़ दिया विधि के मत्थे : 'विधि अब संवरी बात बिगारी ।' कहीं कुछ उल्टा या अप्रत्याशित हुआ, पुकारने लगे—

'का सुनाइ विधि काह सुनावा,
का देखाइ चह काह देखावा !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु कुल मिलाकर असफलता का कारण विधि की टेढ़ी ही सोचते हैं—'लिखत सुधाकर लिखि गा राहू, विधि गति वाम सदा सब काहू।' संसार में कहीं कुछ अटपटा दिखाई पड़ रहा है, उसे सामान्य लोग मानस के मुहावरों में समझने का आग्रह दिखाते हैं—

'और करै अपराध कोउ, और पाँव फल भोगु।
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जानै जोगु॥'

भाग्यवाद की अभिव्यक्ति के लिए पग पग पर मानस की जिन पंक्तियों की प्रायः चर्चा होती है वे कुछ ये हैं—

(क) कह मुनीस हिमवन्त सुनु,
जो विधि लिखा लिलार।
देव दनुज, नर-नाग मुनि,
कोउ न मेटन हार॥

(ख) सो न टरइ जो रचइ बिधाता

(ग) हानि लाभ जीवन-मरण,
जस-अपजस विधि हाथ।

(घ) जीव करम बस सुख-दुख भागी।

(ङ) सिय रघुबीर कि कानन जागू,
करम प्रधान सत्य कह लोगू।

(च) कठिन करम गति जान विधाता,
जो सुभ-अशुभ सकल फल दाता।

(छ) जेहि विरंचि रचिसीय संवारी,
सोइ स्यामल वर रचेउ विचारी।

(ज) विधि विपरीत भलाई नाहीं।

(झ) भए विधि विमुख विमुख सबु काऊ।

इन पंक्तियों में भाग्यवाद की जड़ बहुत गहराई में है। 'विधि' और 'करम' यहाँ विशेष अर्थ के द्योतक हो जाते हैं। हर कहने वाला जैसे मुनीस और सुनने वाला जैसे हिमवन्त सदृश हो जाता है। निस्सन्देह ये जन-सामान्य के जीवन से जुड़े हुए मुहावरे हैं। इनमें सान्त्वना का वड़ा बल है। सिद्धान्त, रूप से तुलसी भी इसी भाग्य-वाद, करमवाद या विधिवाद के पोषक थे, ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इनका एक जबर दस्त विरोधी मुहावरा भी तैयार रहता है—

कादर मन कर एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा।

सत्संग :

सत्संग सम्बन्धी मानस की पंक्तियाँ बहुत प्रभाव-शाली और प्रेरणापद हैं। 'रामचरित मानस' के प्रसंग-विशेष से छिटक कर जन-सामान्य के विशाल मानस का स्वतंत्र भाव से ये सतत् उद्‌बोधन करती रहती है। कहते हैं, यह सत्संग ही है जो दुष्टों को भी सज्जन बना देता है- सठ सुधरहिं सत संगति पाई।' कौए कोयल हो जाते हैं और वगुला हंस हो जाता है—काक होंहि पिक बकउ मराला।' कहते हैं, पान के साथ महुए का पत्ता भी महान् लोगों तक पहुंच जाता है-केहिं न सुसंग बड़प्पन पावा।' बिना सत्संग के ज्ञान नही होता है—'विनु सतसंग विवेक न होई।' समूची जीवन-सफलता सत्संग में ही निहित है—

मति कीरति गति भूति भलाई,
जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई।
सो जानब सतसंग प्रभाऊ,
लोकहु वेद न आन उपाऊ।

इसी प्रकार कुसंग-चर्चा में निम्नांकित को समेटते हैं-

(१) विधिवश सुजन कुसंगति परहीं, फनि मनि सम निज अनुसरहीं।

(२) को न कुसंगति पाइ नसाई

(३) बरु भल बास नरक कर ताता, दुष्टसंग जनि देइ विधाता।

(४) इमि कुपंथ पग धरत खगेसा, रह न तेज तन बुधि लवलेसा।

इस संदर्भ में आत्म प्रशंसा पूर्वक दूसरों को सत्संग-प्रेरणा देते भी देखते हैं कभी-कभी कहने वाला स्वंय काक-भुशुंडि होकर सामने वाले व्यक्ति को गरुड़ समझ मुहावरा मारता है—

मिलेउ गरूड़ मारग मंह मोही,
कवन भांति समुझावउं तोंही।
तबहि होइ तब संसय मंगा
जब कछु काल करिअ सतसंगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक-साधु: सेवक कौन है? 'सेवक सो जो करै सेवकाई।' पर यह कार्य कठिन है-सबते सेवक धरम कठोरा।' अथवा 'सेवा धरमु कठिन जग जाना।' इसी लिए सेवक का पद भी बहुत ऊँचा है-'राम ते अधिक राम कर दासा' साधु जनों में कुछ इस तरह की पंक्तियों से अपनी महत्ता का ज्ञापन भी करते हैं। उनकी विश्वसनीयता के संदर्भ में कहते हैं-साधु ते होइ न कारज हानी।' उनकी महत्ता पर मुहर लगाते हैं-'बिधि हरि हर कवि कोबिद बानी, कहतु साधु महिमा सकुचानी।' जहां असाधु-जनों की चर्चा होगी, मानस की निम्न पंक्तियां अवतरित होंगी-

(क) जाके नख अरु जटा बिसाला।
साइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥
(ख) नारि मुई गृह सम्पति नासी।
मूड़ मुड़ाइ होहि सन्यासी॥

अन्य विविध प्रसंग :

१—विनम्रता-प्रदर्शन-सन्दर्भ
(क) हमहिं तुमहिं सरवरि कस नाथा।
कहहु न चरन कहा कंह माथा॥
(ख) यह हमारि अति बड़ि सेवकाई।
लेहिं न वासन वसन चोराई॥

२—आत्म प्रशंसा-सन्दर्भ
(क) भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्हीं।
(ख) रहा प्रथम दिन ते अब बीते।
(प) कबहुं न मिल भरि उदर अहारा।
(घ) जिमि दसनन मंह जीभ विचारी।

३—असमर्थता-प्रदर्शन
(क) चहिअ अमिय जग जुरइ न छाछी।
(ख) रहा प्रथम दिन ते अब बीते।
(ग) कबहुं न मिल भरि उदर अहारा।
(घ) जिमि दसनन मंह जीभ बिचारी।

४—बढ़ावा
(क) तुम बिनु अस ब्रत को निरवाहा।
(ख) का-चुप साधि रहहु बलवाना।
(ग) अब सुरकाज भरत के हाथा।

५—धमकी
(क) भले भवन अब बायन दीन्हा।
(ख) राखि को सकइ राम कर द्रोही।
(ग) या कर फल पावहुगे आगे।
वानर भालु चपेटन लागे।

६—प्रतिज्ञा
(क) रघुकुल रीति सदा चलि आई
प्रान जाहिं पर वचनु न जाई।
(ख) जौ नहिं दण्ड करौं खल तोरा।
भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा।

७—स्वार्थ-सन्दर्भ
(क) सुर नर मुनि सब के यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सबप्रीती।
(ख) कहहिं वचन सब स्वारथ हेतु।
रहत न आरत के चित चेतू।

८—ब्राह्मण
(क) तप बल विप्र सदा वरिआरा।
(ख) पूजिअ विप्र सील गुन हीना।
(ग) गुरु वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे।

९—अभ्यागत सत्कार
(क) तुम्हारे दरस आस सब पूजी।
(ख) हमारे कुशल तुम्हारिहिं दाया।

१०—चिन्ता
(क) चिन्ता सांपिनि को नहिं खाया।
(ख) सो किमि सोव सोच अधिकाई।

११—विवाह-सन्दर्भ
(क) वर कन्या अनेक जग मांही।
(ख) जस दूलह तस बनी बराता।

१२—अन्यान्य
(क) लंका निसिचर निकर निवासा।
इहां कहां सज्जन कर वासा।
(ख) छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई।
(ग) मुखिया मुख सो चाहिए।
(घ) उलटि पलटि लंका सब जारी।
(ङ) अवध तहां जंह राम निवासू।
(च) करब सदा लरिकन पर छोहू।
(छ) जो लरिका कछु अगचरि करहीं।
गुरू पितु मातु मोद मन भरहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण समाज

–चौधरी राजनारायण शर्मा विशारद

वैदिक काल से तथा मनु के समय तक ब्राह्मण अविभक्त थे। महाभारत काल में प्रवृत्त और निवृत्त के आधार पर उनके दो भेद हो गये थे:—

ब्राह्मणाः द्विविधा राजन् धर्मश्च द्विविधः स्मृतः।
प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहम् प्रतिग्रहात् ॥
(महाभारत शान्ति पर्व)

दो भेद हो जाने पर भी कोई अलग नाम नहीं पड़ा था। बाद में देश परक दस भेद ब्राह्मणों के हुए जो कृत्रिम और आधुनिक हैं। दस भेदों में पाँच द्रविड़ (कर्णाटक तैलंग, द्रविड़, महाराष्ट्र और गुर्जर) तथा पांच गौड़ (मैथिल, उत्कल, सारस्वत, गौड़ तथा कान्यकुब्ज) के भेद हैं। इन्हीं गौड़ के एक भेद कान्यकुब्ज ब्राह्मण है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक दल जो जमीन और जमीन्दारी में संबद्ध थे मदारपुर तथा उसके आस पास भूमिहार ब्राह्मण नाम से प्रचलित होने लगा था। १५२७ ई० के पहले यह नाम पड़ चुका था जिसका सर्व प्रथम वर्णन कान्यकुब्ज वंशावलियों के कश्यप गोत्र के वर्णन में मिलता है। भूमिहार ब्राह्मण नामक मदारपुर के अधिपति से १५२७ ई० में यवनों ने भारी लड़ाई की। जिसमें ब्राह्मण परास्त हुए और कुछ मारे गये। परास्त होकर उन्होंने अन्यत्र निवास किया। मरने वालों में एक भूमिहार नामधारी ब्राह्मण पं० अमलराय की गर्भवती पत्नी यवनों के उपद्रव के भय से स्योनानाई के ससुराल में जाकर बस गयी। समय पाकर उसे पुत्र उत्पन्न हुआ गर्भू–तिवारी। इसी गर्भू–तिवारी के वंशज फिर कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहलाने लगे। कान्यकुब्ज से भूमिहार और भूमिहार से फिर कान्यकुब्ज कोई असंगत नहीं है।

१५२७ ई० के पूर्व भूमिहार ब्राम्हण नाम पड़ जाने पर भी उसका व्यवहार सरकारी कागजों में बंगाल में १७९३ ई० में तथा बिहार और उत्तर प्रदेश में १८६० के बाद इसका प्रयोग मिलता है। १८१२ ई० की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की रिपोर्ट में तथा राजा जमीन्दारों की सनदों में सिर्फ ब्राह्मण शब्द का ही प्रयोग मिलता है। वर्तमान में भी कहीं ब्राह्मण, कहीं भूमिहार ब्राह्मण और संक्षेप के लिए भूमिहार शब्द का भी प्रयोग मिलता है जैसे अन्य ब्राह्मणों के लिए भी ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, सरयूपारीण ब्राम्हण के साथ ही मैथिल, कान्यकुब्ज, सरयूपारीण आदि का व्यवहार होता है।

भूमिहार का सीधा अर्थ भूमिहार ब्राह्मण है। यह भूसुर महीसुर, महीपाल आदि का पर्यायवाची भी है।

भूमिहार शब्द की विवेचना पूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती, पं० लक्ष्मी नारायण शास्त्री (कान्यकुब्ज नवम्बर १९३४ के अंक में), पं० तारणीश का व्याकरणाचार्य (दारागंज प्रयाग) ने भूमि शब्द के आगे हृ धातु से अण् प्रत्यय लगाकर भूमि पर अधिकार करने वाला ब्राह्मण बताया है।

पं० सूर्यनारायण शर्मा भू० पू० विधायक भूमिसुर से और प्रो० जगमोहनराम शर्मा (बाँस गाँव, गोरखपुर) ने भूमिहार से इसकी व्युत्पत्ति की है। काशी के एक पत्रकार श्री गौरीशंकर गुप्त (माड़वाड़ी अग्रवाल) और पं० राघव शर्मा एम० ए० (द्वय) नारायणपुर गया ने भू० मि, ट् धातु से व्युत्पत्ति करते हुए उसका अर्थ अनेक सन्देहों का नाश करने वाला बताया है।

सर हेनरी इलियट, डा० राजेन्द्रलाल मित्र आदि विद्वान भी कान्यकुब्ज ब्राह्मण की ही शाखा इन्हें मानते हैं। डा० योगेन्द्र नाथ भट्टाचार्य जागीर पाने वाला ब्राह्मण और पं० शिव सम्पत्ति सुजाग मिश्र (भूमिहार भूसुर भूषण के लेखक) तथा पं० तारणीश का इन्हें भगवान परशुराम द्वारा दान में प्रदत्त भूमि पाने वाले ब्राह्मणों की परम्परा में मानते है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मणों में बाद में मैथिल, कान्यकुब्ज सरयूपारीण, जिझौतिया, मालवीय तथा महाराष्ट्रीय आदि ब्राह्मणों का भी कुछ दल मिलता गया जो सब के सब भूमिहार ब्राह्मणों में ही गिने जाते हैं।

जैतवार, ओइनवार, सुरगणे, कोदरिए, दिघवे सन्दइपुर, सोवार, वेलौंचे, मरें आदि मूल के ब्राहम्ण कहीं मैथिल और कहीं भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं। इमी प्रकार क्यूना के दीक्षित (क्यूनादार), मनोहिया के शुक्ल (मनोहिया) बरुआ के तिवारी आदि कहीं कान्यकुब्ज तो कहीं भूमिहार ब्राह्मण कहलाते है। हस्तगामे के पाण्डेय, हीरापुरी पांडेय आदि कहीं सरयूपारीण और कहीं भूमिहार ब्राह्मण में गिने जाते है। कहीं कहीं दो भाई में एक भाई के वंशज भूमिहार ब्राह्मण तो दूसरे भाई के वंशज मैथिल, सरयूपारीण आदि में गिने जाते हैं—जैसे सनैवार मूल के ब्राह्मण श्री गोपाल राम और श्री केसरीराय में एक के भू० ब्रा० और एक के मैथिल ब्राह्मण कहलाते है। बड़हिया (मुंगेर) में पं० पृथुठणपुर के वंशज भूमिहार ब्राह्मण और उनके भाई पं० जय जय ठाकुर के वंशज (दिघवे सन्दहपुर मूल के) मैथिस ब्राह्मण कहलाते हैं। काशी नरेश के पूर्व पुरुष पं० श्री कृष्ण मिश्र के भाई श्री विष्णु मिश्र के वंशज सरयूपारीण ब्राह्मण कहलाते हैं। काशी राज्य के भू० पू० चीफ सेक्रेट्री कर्नल विन्ध्येश्वरी प्र० सिंह के पुरुष पं० हरीनाथ मिश्र (भारसी के मिश्र मूल के ब्राम्हण) को दो पुत्रों में श्री देवांग मिश्र के वंशज भूमिहार ब्राम्हण और श्री देवशरण मिश्र के वंशज सरयुपारीण ब्राम्हण में गिने जाते हैं। इसी तरह मांझखोर के शुक्ल कौनी जोर के तिवारी भी कहीं सरयूपारीण और कहीं भू० बा० कहलाते है। भूमिहार ब्राह्मणों का विवाह सम्बन्ध भूमिहार ब्राम्हणों के अतिरिक्त मैथिल सरयूपारीण कान्यकुब्ज, त्यागी, बंगाली आदि ब्राह्मणों से भी होते आ रहे हैं। अब महिष ब्राहम्णों और सारस्वत ब्राह्मणों से भी संवन्ध हुए हैं। पुराने सम्बन्ध तो हजारों की संख्या में हैं ही वर्तमान में भी बड़े बड़े लोग वैवाहिक सम्बन्धों से सम्बन्धित रहे है। जिनमें राष्ट्र कवि दिनकर, श्री महेश्वर प्र० ना० सिंह, पं० जानकी रमण मिश्र (काशी नरेश के के मामू) राजा धीरेन्द्र ना० राय राजा हरिहर प्र० ना० सिंह, राजा महेश्वरी प्र० ना० देव (धमदार), सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह, श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह (भू० पू० सांसद तथा लेखक), श्री दिग्विजय ना० सिंह (भू० प० सांसद तथा बाबू लंगर सिंह के पौत्र) श्री ललित विजय सिंह (रांची प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक) डा० कृष्ण स्वरूप शर्मा (सिविल सर्जन), श्री राधेश्याम ठाकुर (अधीक्षक भूगर्भ रेलवे कलकत्ता निवासी मालीनगर, समस्तीपुर) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अन्य ब्राह्मण जो भूमिहार ब्राह्मणों से सम्बद्ध हैं उनमें प्रमुख हैं—विद्याधर तिवारी (इटावा), विद्याचरण शुक्ल (म० प्र०), डा० शिवसम्पत्ति सुजान मिश्र, सर हरगोविन्द मिश्र (कानपुर), राजा पशुपतिनाथ मल्लिया, राधिका रंजन चक्रवर्ती, श्री एन० सी० चटर्जी (भू० पू० सांसद, भू० पू० अध्यक्ष हिन्दू महा सभा), श्री यामिनी मोहन मजुमदार, श्री गोविन्द मिश्र, स्व० ललित नारायण मिश्र, सर गिरजा शंकर वाजपेई, श्री यशवंत कुमार चौधरी भू० पू० विधायक, श्री बालेश्वर चौधरी आदि का परिवार।

इस प्रकार भूमिहार ब्राह्मण, ब्राह्मणों की एकता के प्रतीक हैं जो सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं।

इनके सम्बन्ध में विशेष जानने के लिए ब्रह्मर्षिवंश विस्तर, दशविध ब्राह्मण संहिता, सैनिक ब्राह्मण, ब्राह्मण वंश विवेक, भूमिहार ब्राह्मण समाज, ब्रह्मर्षिवंश आदि पुस्तकें पठनीय हैं।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्व संस्कृति में दीपक

—हरिशंकर

प्राचीन काल में जब मनुष्य जंगलों में रहता था, उस समय रात का भयानक अंधेरा उसके लिए एक बड़ी समस्या होती थी. रात के उस अँधेरे में विषैल और हिंसक जीव जन्तुओं का भय उसे सदा बना रहता. पहली बार जब उसे अग्नि प्राप्त हुई, तब वह बहुत प्रसन्न हुआ. उस समय अग्नि को दैवी शक्ति या ईश्वरीय वरदान मान कर उसने उसकी पूजा ही नहीं की, बल्कि 'अक्षय कुण्ड' की स्थापना कर, उसे निरन्तर प्रज्वलित रखने का आयोजन भी किया. इस ईश्वरीय देन को वह खोना नहीं चाहता था.

रात के घने अंधेरे में उस अग्नि से अलाव जलाकर वह अपनी गुफाओं को-जहाँ वह रहता था, प्रकाशित रखने लगा. तब से उसे अपनी जीवन में प्रकाश का महत्व ज्ञात हुआ. और वह लगातार प्रकाश की खोज में आगे बढ़ता रहा. यह प्रकाश मनुष्य की चेतना, बुद्धि, विवेक और ज्ञान का प्रतीक बन गया.

अलाव से आगे बढ़कर मनुष्य ने मशाल, दीपक और अब बिजली का प्रकाश प्राप्त कर लिया है. अलाव से बिजली तक की यात्रा में उसे हजारों वर्ष लगे. मशाल और दीपक ने बड़-बड़े लम्बे समय तक उसका साथ दिया. यही कारण है कि दुनियाँ भर की सम्पूर्ण 'संस्कृति में 'दीपक' का एक विशिष्ट स्थान बन गया. तेल भरे एक नन्हें से दीपक ने अनेक प्रकार से मानव जीवन को आलोकित किया. उसके जगमगाते प्रकाश में दिन भर के काम से थके हारे मनुष्य ने रात के समय बच्चों को कहानियाँ सुनाकर, नाच-गाकर, पूजा, अर्चा, भजन का आयोजन कर अपने मन को हल्का करना चाहा यहीं से उसके जीवन में साहित्य, कला और संस्कृति का उदय हुआ और इन सबके मूल में रहा, वह नन्हा सा प्रज्वलित दीपक.

आध्यात्मिक प्रतीक

अपनी इस विशेषता के कारण यह दीपक केवल भारतीय संस्कृति और जीवन में ही नहीं, बल्कि विश्व के सभी देशों में अनवरत साधना, तपस्या, ज्ञान, उल्लास आदि का प्रतीक बन गया वह अग्नि का अंश और ईश्वरीय आलोक का पर्याय माना गया. अनेक ऋषि, मुनियों, विद्वान भाष्यकारों ने 'दीपक' के रूप में 'आत्म ज्योति स्वरूप' 'ब्रह्म' की कल्पना की है.

हमारे समस्त आध्यात्मिक साहित्य में 'दीपक' का सदा गौरवपूर्ण स्थान रहा है. मीरा बाई ने कहा था— "ज्योति से ज्योति मिला जा." कबीर की रहस्य साधना का आधार भी 'दीपक' है—'अपने घर दियना बारी लं' और इसके बाद अज्ञान का अंधकार नष्ट होते ही साधक को अनुभूति होती है कि 'सब अंधियारा मिट गया, जब दीपक देख्या माहि' फिर तो इसी मन्दिर में परब्रह्म के रूप का दर्शन होता है—जगमग जात निहार मन्दिर में.'

महाकवि तुलसीदास तो 'दीपक' को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों 'संपदा' का प्रतीक मानते हैं. उन्होंने भीतर और बाहर दोनों और प्रकाश करने वाले 'दीपक' के विषय में कहा है—

राम नाम मणि दीप धरू, जीह देहरी द्वार,

तुलसी भीतर बाहर हूँ, जो चाहसि उजियार ।।

श्रीमती महादेवी वर्मा ने भी अपनी आध्यात्मिक रहस्य साधना में कहा है—

मधुर मधुर मेरे दीपक जल,

प्रियतम का पथ आलोकित कर ।

भारतीय लोक जीवन का अंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय लोक जीवन में 'दीपक' आध्यात्मिक और भौतिक आनन्द तथा विकास का प्रतीक बन चुका है. भगवान तथा समस्त देवी देवताओं की पूजा से लेकर हर उत्सव आनन्द और मंगल कार्य के आयोजन में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है. मन्दिरों से लेकर घरों तक में 'बिना दीपक के देवपूजा' सम्पन्न नहीं हो सकती. जन्म विवाहोत्सवों में उसका विशेष स्थान माना गया है. सौर (सज्ज गृह) और विवाह-मंडप में 'अक्षय दीप' प्रस्थापित करने की प्रथा आज भी प्रचलित है. धन वैभव की देवी 'लक्ष्मी' की पूजा के दिन दीवाली पर तो विशेष रूप से दीपक जलाकर लक्ष्मी का अवाहन किया जाता है.

अन्य देशों एवं संप्रदायों में

भारत की तरह ही विश्व के अन्य सभी देशों और संप्रदायों में भी दीपक को इसी प्रकार का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है. ईसाई समाज में प्रत्येक त्योहारों, विवाहोत्सव, जन्म दिन आदि के सभी समारोहों पर मोमबत्ती (यानि दीपक) जलाने की परम्परा आज भी इस विजली तथा नियोन लाइट के युग में प्रचलित है. मोमबत्ती की ज्योति लौकिक और पारलौकिक दोनों 'प्रकाश' का प्रतीक है. जन्म दिवस की संख्या के अनुरूप उतनी ही सख्या में प्रज्वलित मोमबत्तियाँ (दीपकों) के प्रकाश के बिना 'जन्म दिवस' के 'सेक काटने' का कार्यालय अधूरा ही रहता है.

ईसाइयों का मुख्य त्योहार 'क्रिसमस' यानी बड़ा दिन का उत्सव सारे विश्व में दीपावली के समान ही दीपों के प्रकाश में मनाया जाता है।

मुस्लिम समाज में भी कब्रों, मजारों पर दीपक जलाने की प्रथा आज भी है.

मुस्लिम समाज में भी कब्रों, मजारों पर दीपक जलाने की प्रथा आज भी है, विवाहोत्सव आदि के अवसरों पर इन लोगों में भी दीपक जलाकर सजावट की प्रथा है, इतना ही नहीं हिन्दुओं की दीपावली के समान ही दीपक जलाकर 'शवेरात' का त्योहार मनाने का रिवाज भी है, इनके धर्मगुरु मुहम्मद साहब ने तो प्रातःकालीन प्रकाश को विश्व की प्रेरणा का स्रोत माना है, जो सर्वकालीन अंधकार और निराशा के विनाश का प्रमाण है.

बौद्ध धर्म भारत से ही दुनिया के तमाम देशों में पहुँचा अतः बौद्ध धर्म में भी दीपक को उतना ही महत्व प्राप्त है, जितना कि भारतीय सनातन हिन्दू धर्म में है, बौद्ध मन्दिरों में 'अखण्ड दीपक' प्रज्वलित रहता है, विशेष उत्सवों और पर्वो पर घरों और देवस्थानों को दीपक जलाकर सजाया जाता है, बौद्ध दर्शन में 'दीपक' ज्ञान, विवेक, साधना-तपस्या और त्याग का प्रतीक माना गया है ।

पारसी धर्म में अग्नि का विशेष महत्व है, ये लोग अग्नि के उपासक ही हैं, इनके देवस्थानों–'अग्यारी' में 'अक्षय अग्नि' प्रज्वलित रहती है, कहा जाता है कि यह आदि अग्नि कभी बुझी नहीं, इस समाज के लोग जहाँ भी गये, अपने मन्दिरों के लिए उसी आदि अग्नि से 'अक्षय अग्नि' अपने साथ ले गये, इनके धर्म ग्रन्थो में यह उल्लेख मिलता है कि परमात्मा 'वहुमज्म' अमर ज्योति में अन्तर्निहित रहता है ईश्वर 'परम ज्योति का पर्याय है.

यहूदी समाज में भी 'सवाय' पर्व का स्वागत मोमबत्तियाँ जलाकर किया जाता है । आठ दिनों तक मनाया जाने वाला धार्मिक त्योहार 'हनुकाह' पहले दिन एक, दूसरे दिन दो । तीसरे तीन दिन इस प्रकार प्रत्येक दिन एक एक मोमबत्ती की संख्या बढ़ाकर अंतिम दिन सारा घर मोमबत्तियों के प्रकाश से आलोकित कर, मनाया जाता है । इन लोगों में भी यह मान्यता है कि मोमबत्ती की जलती 'ज्योति' अंधकार पर प्रकाश की, अन्याय पर न्याय की और असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक हे, इसीलिए सभी सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों में यहूदियों ने 'दीपक' को गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पूरे विश्व की सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों में 'दीपक' का एक सा गौरवपूर्ण स्थान है वह हमारे लौकिक और पारलौकिक दोनों जीवन के सुख समृद्धि का प्रतीक है, जो प्रति वर्ष 'दीपावली' के पर्व पर हम भारतीयों में नई चेतना, स्फूर्ति और नव जीवन प्रदान करने के लिए आ जाता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण

—अर्जुन सिंह
भू० पू० अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

आर्य-संस्कृति में ज्ञान एवं अध्यात्म की साधना का दायित्व वहन करने वाला ब्राह्मण कहलाया। आरम्भ में वेद (ज्ञान) की शाखा-प्रशाखा के विस्तार के दायित्व को लेकर वे चतुर्वेदी, त्रिवेदी या द्विवेदी हुए; किन्तु कालान्तर में किसी शाखा विशेष की वेदज्ञता से भी उनकी विशिष्टता स्वीकृत हुई—यथा—सामवेदी, अथर्वेदी आदि। उनके षड् कर्मो में यज्ञ करना और कराना समान रूप से था; किन्तु ज्ञान की एकान्तिक उपासना करने वाले ब्राह्मण पौरोहित्य का क्रमशः त्याग करने लगे। कर्मकाण्ड से अधिक महत्व ज्ञानकाण्ड को मिलने लगा। फलतः धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वों में उनकी रुचि ज्यादा हुई—ये लोग क्रमशः अयाचक वृत्ति के होने लगे। अयाचकों ने क्रमशः धर्माचार्य, राजगुरु, आयुर्वेद, धनुर्वेद, कृषि आदि में अधिक संलग्नता दिखलायी; फलतः प्रवृत्ति और वृत्ति को लेकर ब्राह्मणों में समुदाय बने।

सामान्यतः सारे देश के ब्राह्मण सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से एक ही थे। सुविधा के लिए देश-भेद से उनका परिचय दिया जाता था। भारत के उत्तरी तथा दक्षिणी क्षेत्र के ब्राह्मण पाँच पाँच अंचलों में वर्गीकृत हो गए थे। पंच गौड़ तथा पंच द्रविड़ ब्राह्मण। सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल एवं मैथिल उत्तर के हुए तो कर्नाट, तैलंग, द्राविड़ महाराष्ट्री और गुर्जर दक्षिण के।

दिल्ली और उससे पश्चिम तथा उत्तरी क्षेत्र के काश्मीरी, पंजाबी, सिन्धी, मोहियाल, पोकरने सारस्वत हैं। उससे पूर्व कान्यकुब्ज थे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के अनेक ब्राह्मण गौड़ हैं; यों, इनका विस्तार बंगाल तक है। उत्कल ब्राह्मण असम, बंगाल तथा उड़ीसा में हैं। इनमें एरुआ और मस्तान कृषक हैं; महन्थी, सेनाकांति, जाजपुरी आदि इनकी शाखायें हैं। बिहार में गंगा के उत्तरी झयड़े ब्राह्मण मैथिल हैं। ये मूलतः सौराष्ट्र निवासी हैं।

दक्षिणात्यों में कर्नाट, ब्राह्मण कर्नाटक निवासी हैं। पल्लव, कादम्ब, किनवार, नम्बूदरी ब्राह्मण इसी दल के हैं। तैलंग ब्राह्मण आन्ध्र प्रदेश के हैं। द्राविड़ ब्राह्मण तमिल क्षेत्र के हैं। इसी तरह महाराष्ट्र प्रदेश के निवासी महाराष्ट्री एवं गुजरात के निवासी गुर्जर ब्राह्मण कहलाये। देश-भेद से महाराष्ट्री ब्राह्मण देशस्थ और कोंकणस्थ भी कहे जाते है। कोंकणस्थ ही चित पावन हैं—जो अपने को परशुराम की संतति मानते हैं। इसी तरह गुर्जरों में औदीच्य, अनाविल, श्रीमाली, श्री गौड़, नागर, पालीवाल, गिरनार, भार्गव और गुग्गुलिये आते हैं।

"कान्यकुब्जाः द्विजाः श्रेष्ठाः;" सूक्त से मदारपुर क्षेत्रके ब्राह्मणों का ज्ञान और पौरुष सिद्धि का बोध होता है। ये संख्या में भीं बहुल थे और भारत के हृदय-केन्द्र के निवासी थे। सभी मुख्य तीर्थों तथा विद्यापीठों के स्वामी भी ये।

मदारपुर को धर्मारण्य भी कहा जाता था। त्रेता-युग से हाल तक यहाँ के ब्राह्मणों को सारे भारत में बुलाया जाता था और अग्रहार देकर सम्मानित किया जाता था। डा० राजेन्द्र लाल मिश्र ने कान्यकुब्जों की पाँच शाखाओं का उल्लेख किया है—सरवरिया, सनाढ्य, जुझौतिया, भूमिहार और कान्यकुब्ज प्रकृत कान्यकुब्ज फर्रुखाबाद से फतेहपुर और इटावा से रायबरेली तक फैले हुए हैं। इनके गोत्र ७२ हैं। षटकुल में कात्यायन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपमन्यु, भारद्वाज, कश्यप, शांडिल्य तथा सांकृत हैं। दशकुल में धंनजय, कौशिक, वशिष्ठ, गौतम, गर्ग, काविस्त, वत्स, पराशर, कौण्डिन्य, एवं भारद्वाज हैं। शेष छप्पन गोत्रों में अत्रि, असित अवस्थी, अत्यवान, अगस्त, अवत्सार, अवदुबुक, इन्दोदर' इन्दुप्रमद, आंगिरस और्व, कपित, कृष्णत्रि कोलव, कोसत्य, गांगेयमोरव, च्यवन, चान्द्रायण, जातूकण, जैमिनि, देवल, ध्रुवनैन, नितुन्दपुलस्त्य, प्रोहित, वाशल, बाल्मीकि,, वामदेव. विश्वामित्र, विष्णु वर्धन, वैहल, भद्वशील, भागीर मुंगल, मैत्रेतृख, कौकत्य, जमदग्नि, याज्ञवल्क्य, लोमश, शारदवन, भवित्तसार, शौनकते, सिंहल, सावर्ण्य, लोहित, मास्को, देवराज, दालम्ग, बाभ्रव्य, मौनस, मरीचि, मिहरख और निन्नपुव।

इसी तरह, कन्यकुब्जों से अलग जा बसने वाले भूमिहार ब्राह्मण मुख्यतः तटिहा, पिलिछवार, नोकह उलिया, किनवार, बसवार, संकरवार, पाहितीपुर पांडे, हीरापुरी पाण्डे, मचैया, मसीन पोरवरिया, एकसरिया आदि उत्तर प्रदेश से बंगाल तक फैले हुए हैं।

इस विशाल देश में खान-पान, रहन-सहन, भाषा तथा सामाजिक संस्कारों में थोड़ा-बहुत अन्तर स्वाभावि[क] हैं, किन्तु इस अन्तर को मध्यकाल में बहुत महत्व मि[ल] गया। पहले ब्राह्मणों में रोटी-वेटी का व्यवहार क्षेत्री[य] होता हुआ भी संकीर्ण कभी नहीं था। रक्त और संस्का[र] का मूल्य इनकी दृष्टि में सर्वोपरि था। यही कारण [है] गोरी से औरंगजेब तक इन्होंने तलवार को आरा[म] नहीं दिया और न मुसलमानों से कभी रोटी बेटी [का] सम्बन्ध किया। डोला नहीं देने के कारण ये सर्व[स्व] पैमाल किए गए; किन्तु समझौता के लिए कभी हा[थ] नहीं बढ़ाया।

आज के युग में उसी दृढ़ता पर अधिक जोर दे[ना] है; क्योंकि पाश्चात्य संस्कार और आधुनिकता नाम प[र] हम वंश-परम्परा से छूटते जा रहे हैं। हम अपने बच्चों को सामाजिक एवं आध्यात्मिक दायित्व से परिचित नहीं होने देते; फलस्वरूप आये दिन उनकी विकृतियाँ भोगनी पड़ रही हैं। हमें समयानुसार सचेत हो जाना चाहिए –

पटना विश्वविद्यालय
पथ ३, राजेन्द्र नगर

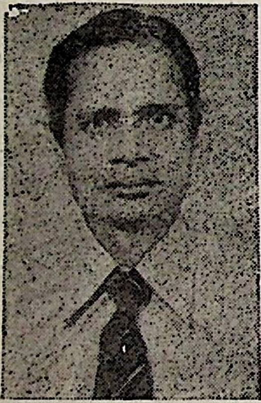

"प्रिय बन्धुवर"

–ब्रज भूषण शर्मा

ब्रह्मर्षि समाज के सभी बन्धुओं, है आज तुम्हारा अभिनन्दन।
तन से वंदन मन से वंदन, करे सभी का अभिनन्दन।
त्याग पथिक तुम सहज भाव से, अयाचक हो कहलाते।
गुरुता – लघुता माप दण्ड से, सहजानन्द रोज बताते।
मानव जाति के हो उन्नायक, करूँ तुम्हारा कैसे वंदन ॥१॥
है आज तुम्हारा अभिनन्दन।

पंजाब की धरती पुलक के बोले, दत्ता और मोहियाल।
महाराष्ट्र के कोंकणस्थ में, सावरकर खुशहाल।
सौराष्ट्र में तिलक मान्यता, राजस्थानी नागर।
त्यागी बनकर राय कहाते, सिंह मालवे ठाकर।
इस धरती के परोपकार हित, करे सभी जन तुम्हें नमन।
है आज तुम्हारा अभिनन्दन।

मध्य देश भूपाल कहाते, यू० पी० में भूमिहार
शर्मा, पाण्डेय, मिश्र, तिवारी, सिनहा, सिंह बरियार
सभी प्रांत में तेरी वाणी, आंध्र कहाते राव
तमिल शास्त्री, केरल नम्बूदरी, फरसा धरती चाव
अपनों से मिलजुल के रहना, लगे माथ में सबके चंदन
है आज तुम्हारा अभिनन्दन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज—एक कड़ी

—गिरिजा सिंह,

किसी भी समाज की स्थापना किसी महत्तर लक्ष्य की पूर्ति के लिए कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा की जाती है। व्यक्ति परिवार की सीमा से आगे बढ़कर अपने आत्म-स्वरूप लोगों की सेवा करने का विचार करता है। हमारे देश में अग्रवाल समाज, कश्मीरी समाज, ब्राह्मण समाज, मारवाड़ी समाज जैसी अनेक संस्थाएँ इसी दिशा में कार्यरत हैं। इसी श्रृंखला की एक कड़ी है ब्रह्मर्षिसमाज।

परिवार के सदस्य पारिवारिक समस्याओं को मिलकर सुलझाते हैं। कुछ समस्यायें ऐसी होती हैं जिनका समाधान समाज करता है। समाजों की संरचना इसीलिए होती है कि वह अपने समाज के दुर्गुणों, कुरीतियों दुर्नीतियों, को दूर करने का मिल-बैठकर उपाय निकालें। दहेज की समस्या को ही लें। भूमिहार ब्राह्मण-समाज सबसे अधिक इस अभिशाप से ग्रस्त है। एक सामान्य आमदनी वाला सम्मानित सदस्य है। वह वैदिक आचार विचार का पालन करने वाला है। हमारे महर्षियों ने आचार सहिता दी जिसके आधार पर स्वस्थ समाज निर्माण हो सकता है। उस व्यक्ति ने अपरिग्रह धर्म का पालन किया। आज के विकृत समाज में दहेज की बढ़ती हुई मांग के कारण ऐसी संकटपूर्ण स्थिति सामने आ खड़ी होती है कि अपनी बेटी के अविवाहित रह जाने की आशंका उसे स्पष्ट दिखाई देने लगती है। ब्रम्हर्षि समाज का ऐसी घड़ी में क्या कर्तव्य है, यहविचारणीय है। उसके सदस्यों के कान खड़े होने चाहिए क्यों कि यह चिन्ता आज के पिता को है, कल दूसरे को होगी।

इस समाज ने निश्चित रूप से भूमिहार ब्राह्मण समाज के कल्याण के लिए कुछ नियम बनाये होंगे। इन नियमों का पालन सर्वप्रथम अपने सदस्यों द्वारा होता है या नहीं। यदि होता है तो किस अंश तक होता है, इसका परीक्षण उनके व्यवहार द्वारा ही हो सकता है। शब्दों में तो सभी अच्छी-अच्छी बातें करते हैं। किसी इस प्रकार के भले कार्य के लिए उस व्यक्ति की प्रशंसा की जानी चाहिए। जो भूमिहार समाज को हानि पहुँचाने वाला कार्य करता है। उसे समाज द्वारा दण्ड स्वरूप कुछ समय के लिए बहिष्कृत किया जाना भी अपेक्षित है। इस प्रकार भले कृत्य के प्रति इच्छा और बुरे के प्रति अनिच्छा का भाव जगेगा। किसी सत्प्रेरणा से स्थापित समाज का लक्ष्य तभी सिद्ध होगा जब उसके सदस्य अपना दायित्व पूरा करेंगे और अन्य लोगों को जाग्रत करेंगे।

दहेज की हानियों को हम प्रकाश में लायेंगे। हम लोगों को बतायेंगे कि दहेज लेने वाले और देने वाले दोनों की हानि होती है। लेने वाला अपनी पुत्र-वधू के साथ ही पुत्र को भी खो देता है प्रायः ऐसे लड़के ससुराल को ही अधिक महत्व देने लगते हैं और माता-पिता उनकी शिकायत करने लगते हैं। जो कुछ कहते नहीं, वे अन्दर ही अन्दर घुटते हैं। देने वाले की जो नौबत दहेज जुटाने में हुई, उसकी आप कल्पना कर सकते हैं। भूमिहार-ब्राह्मण-समाज अन्य समाजों की तरह आधुनिकता की आंधी दौड़ में किसी से पीछे नहीं जिसके दुष्परिणामों से हम सभी परिचित हैं। दूसरी ओर गांवों में पर्दा, अशिक्षा आदि अभी भी प्रचलित हैं।

ब्रह्मर्षि समाज के सदस्यों की संख्या अधिकाधिक बढ़ाई जाये, गांव-गांव तक पहुँचे। यदि हो सके तो भारत ही नहीं विश्व स्तर तक बढ़ाने का प्रयास हो जिससे अपने समाज में फैली कुरीतियों को एक साथ विशाल परिवेश में सुधारने की संभावना बने। अच्छे कार्य में सत्यागी होना हर मानव का धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, निर्धन, धनी, आदि का भाव देश को खोखला कर रहा है। एक को दूसरे से अलग कर रहा है परिवार में बढ़ कर भूमिहार समाज पर अटकना नहीं है अन्यथा सडांध पैदा हो जायेगी। तटबन्ध तो इस लिए बनाये जाते हैं कि ऊर्जा का उपयोग हो सके। ऊर्जा बिखर कर न रह जाये। अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। सीमा को असीम से जोड़ देना ही उसकी सार्थकता है।

भूमिहार समाज को सुसंस्कृत बनाने का उत्तरदायित्व ब्रह्मर्षि समाज ने लिया, यह शुभ है। हर समाज अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को झांककर देखें, उस पर विचार करें, दूर करने का उपाय करें तो बुराइयों का अस्तित्व कहाँ रह जाएगा। एक समाज दूसरे समाज से कटुता का भाव न रखे बल्कि एक दूसरे की अच्छाइयों से कुछ सीखें और परस्पर पूरक बनें। स्वस्थ समाज की अवधारणा पूरी करें।

कितने ही अनाथ–असहाय, निर्धन बालक शिक्षा तथा नौकरी के अभाव में हीन भाव से ग्रस्त होकर पीछे छूट जाते हैं। इनकी शिक्षा की व्यवस्था जहां तक हो सके, समाज करे। सदस्यता शुल्क के द्वारा धन संग्रह करके, सम्पन्न लोगों द्वारा उनकी शिक्षा व्यवस्था करके उन्हें राहत दी जा सकती है। रुचि के अनुसार औद्योगिक शिक्षा, अभावग्रस्त लड़कियों, महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई आदि की शिक्षा,के साथ ही सुसंस्कार–डालने वाली बातों, व्यवहारों से भी इनका परिचित होना आवश्यक है।

समाज का उद्देश्य राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है, किसी भी प्रकार अलगाव को महत्व नहीं देना है। समष्टि भाव ही इसका गन्तव्य है। राष्ट्र सर्वोपरि है। भारत हमारी मातृभूमि, पितृभूमि, कर्मभूमि, धर्मभूमि ही नहीं पुण्यभूमि भी है। हमारे ऋषि-मुनियों, वीरों, बलिदानियों, जौहरव्रती महिलाओं, त्यागमयी माताओं, के आदर्श ने इसे सुशोभित किया। 'ब्रह्मर्षि समाज अपने कार्यों, विचारों तथा व्यवहार द्वारा राष्ट्र को गौरवान्वित करे, यही हमारी अभिलाषा है, शुभकाकना है। –जय भारत।

पता :– ४, महर्षि दयानन्द मार्ग, प्रयाग

फोन निवास : २१६०८९

स० गुरदयाल सिंह एण्ड सन्स

१२४/२०एम, निकट नटराज सिनेमा
गोविन्द नगर, कानपुर

शुभकामनाओं सहित :

भरतदास एण्ड संस

बिल्डर्स एण्ड कान्ट्रैक्टर्स

१०४ए/३०७, रामबाग, कानपुर

फोन नं० : २४६४३५
२४२९४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

—डा० श्रीमती कालिन्दी राय

धधकता हुआ आग का गोला, चिरकाल तक निरंतर शान्त होता हुआ मातृरूप में पृथ्वी के नाम से जाना जाता व पहचाना जाने लगा। जीव का विकास सर्वप्रथम जल में हुआ या थल में, यह आधुनिक विज्ञान के विवाद का विषय हो सकता है परन्तु जल और थल का पृथ्वी से अलग अस्तित्व स्वीकारा नहीं जा सकता। अनेकानेक परीक्षणों के बाद भी किसी वस्तु विशेष की पवित्रता पर सन्देह हो सकता है पर सम्पूर्ण स्वाहा हेतु अवतरित ज्वाला और ज्वाला रूप पृथ्वी की पवित्रता पर शंका का का स्थान कहां रह जाता है।

पृथ्वी की पावन गोद में जीव का प्रादुर्भाव कब और कैसे हुआ यह विवाद का विषय हो सकता है पर उसकी संरचना एवं विकास का क्रम पृथ्वी के इतिहास का अभिन्न अंग है इसे नकारा कैसे जा सकता है। भारतीय दर्शन में पंचमहाभूत सिद्धान्त को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह तत्व पृथ्वी, जल, तेज वायु और आकाश हैं। इन पांचों तत्वों का विकास भी एक ही मूल तत्व से हुआ है एवं सम्पूर्ण दृश्यमान जगत उसी का विकास मात्र है ऐसी मान्यता है। आधुनिक विज्ञान में परिभाषित तत्व एवं यौगिक की सीमायें पूर्ण वर्णित सीमाओं से संगत नहीं रखतीं पर पदार्थों की निर्जीवता से सजीवता में परिणित होने की ओर इंगित अवश्य करती हैं। आज का मानव जीवधारियों के विकास के क्रम की उत्कृष्ट उपलब्धि है। यह अरबों खरबों वर्षों के विकास का ईतिहास अपने में संजोये है। इस सत्य का सिंघावलोकन सूक्ष्म से सूक्ष्मतर में जाने पर ही सम्भव है। आज का विज्ञान जड़ को चेतन में परिवर्तित करने के प्रयोग में आंशिक रूप से सफल भी हुआ है। जहां स्पष्ट दिखता है कि अजीवधारी एडीनिन, गुआनिन, थाईमिन एवं साइटोसिन आदि के सूक्ष्मकण शर्करा एवं फास्फेट से जुड़ते हुये लड़ियों के रूप में विभिन्न क्रमों में व्यवस्थित होकर 'जीन को जन्य देते हैं और ये ही 'जीन' गुण सूत्रों के रूप में विश्व के समस्त प्राणियों का गुण–दोष निर्धारित करते हैं। जीव में वाह्य रूप से दिखने वाले गुण–दोष इन्हीं सूक्ष्मतम 'जीनों' में निहित हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के परिपेक्ष में यह प्रश्न उठता है कि हम कौन हैं, क्या कल नहीं थे, आज नहीं हैं या कल नहीं रहेंगे ? क्या दैहिक एवं गुण रूप में सृष्टि के आदि में नहीं थे या अनन्त में नहीं रहेंगे ? उत्तर स्पष्ट है हम विश्व मानव के अभिन्न अंग रहे हैं और रहेंगे। मनु-सतरूपा अथवा आदम-इव के रूप भी हमी हैं। या तब से चली आ रही अब तक के वशावलियों में एक हैं इसी सत्य का उद्बोधक है (वसुधैवकुटुम्बकम्) इन तथ्यों से स्पष्ट है कि आरम्भ में कोई वर्ण व्यवस्था नहीं थी। ऐसी मान्यता है कि राजा रघु के शासनकाल में गुण-कर्म के अनुसार जातियों का विभाजन हुआ। जो परम सत्य की खोज एवम् आध्यात्म चिन्तन में रत रहते थे, वे ब्राह्मण कहलाये। शासन की व्यवस्था करने वाले क्षत्रिय, व्यवसायी वैश्य और सबकी सेवा करने वाले शूद्र कहे गये। बाद में परम्परा एवं उत्तराधिकार की भावना के कारण ये जातियां स्थायित्व ग्रहण करने लगीं।

मानव ही नहीं स्वयं भगवान ने भी विभिन्न कालों में उस समय की परिस्थितियों के अनुसार जन्म लिया है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाहरणार्थ जब जल ही जल था तब मत्स्यावतार, आधा जल आधा थल तब कच्छपावतार, दलदली पृथवी पर वाराहावतार, मनुष्य एवं पशु के सम्मिलित रूप में नर-सिंहावतार, छोटा मानव एवं आदिमानव के रूप में वामनावतासर, शक्ति की प्रभुता बढ़ने पर परशुरामावतार, आदर्शरूप में पुरोषोत्तम् रामावतार एवं आध्यात्मिक विवेचनाओं के बढ़ने पर श्री कृष्ण का अवतार हुआ ।

इन्हीं अवतारों में परशुराम ने पृथवी को आध्यात्मचिंतन में संलग्न ब्राम्हणों के पूर्वज कश्यप ऋषि को दान में दी जिससे उनके वंशज आध्यात्म के साथ-साथ भौतिकता से भी जुड़े और पृथवी तथा कृषिकर्म उनके जीवन के अभिन्न अंग बन गये । इस परम पुनीत पृथ्वी माँ के निर्माण एवं संरक्षण में देवों ने भी असीम सहयोग दिया । अश्विनों ने इसे मापा, विष्णु ने अपने तीन पद-प्रक्षेणो को रखा और शचीपति इन्द्र ने इसे शत्रुओं से विहीन किया । देवों से संरक्षित पृथवी हमारी समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है ऐसा अनुभव किया जाने लगा और यहीं से कृषि का वृत्ति के रूप में विकास हुआ जिसमें सूर्य की गर्मी का सदुपयोग आधार भूत सिद्धान्त बना ।

इसीलिए आज भी सम्पूर्ण कृषि, मात्र सौर उर्जा का सद्पयोग है ऐसा परिभाषित है ।

वेदों में भी कहा गया है कि (अग्निसोमात्मकं जगत) अग्नि को अत्ता 'अन्न खाने वाला' बताया गया है और सोम को अन्न । ये दोनों तत्व व्यापक हैं । अग्नि निरन्तर सोम को खाता रहता है एवं अपने रुप में परिणत करता रहता है अर्थात जठराग्नि पर निरन्तर सोम (अन्न) की आहुति पड़ती रहती है । श्रुतियां तो यहां तक कहती हैं– "सोमेनादित्या बलिन:" अर्थात सोम "अन्न" से आदित्य बली बना है । तात्पर्य यह कि अनन्त सोम "अन्न" की आहुति सूर्य पर पड़ती रहती है और सोम सतत अग्नि रूप में परिवर्तित होता रहता है । इस तरह से सम्पूर्ण विश्व में फैलने से सूर्य की उष्णता क्षीण तो होती है पर सोम की आहुति से पुन: नई उर्जा "अग्नि" उत्पन्न होती रहती है । आदान-प्रदान की यही प्रक्रिया विश्व के समस्त पदार्थों में निरन्तर चलती रहती है और विश्व में उर्जा का समन्वय बना रहता है जो सम्पूर्ण विश्व के लिये अत्यन्त आवश्यक है ।

"अन्न वे प्राण:" अर्थात अन्न ही जीवन आधार है और इसी आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु पृथवी के गर्भ में छिपी गर्मी अन्न, फल, फूल औषधि आदि आदि रूपों में परिवर्तित होती हुई सम्पूर्ण प्राणी जगत का पालन पोषण करती रहती है । इसीलिए पृथवी को माँ कहा गया है और "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" में जननी और जन्मभूमि दोनों ही मां के रुप में पूज्यनीय बन जाते है ।

DIAL - 243067
242+67

MICO

Authorised Representation

DISEL INJECTION
&
ELECTRICALS

111-A/417, Ashok Nagar
Kanpur-208 012

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

– कैलाश गौतम

सिर पर आग
पीठ पर पर्वत
पाँव में जूते काठके
क्या कहने इस ठाट के ।।
यह तस्वीर नयी है भाई
आजादी के बाद की
जितनी कीमत खेत की प्यारे
उतनी कीमत खाद की
सब धोबी के कुत्ते निकले
घर के हुए न घाट के ।।

बिना रीढ़ के लोग हैं शामिल
झूठे जय जय कार मे
गूंगो की फरियाद खड़ी है
बहरों के दरबार में
भैया तरस गये सोने को
खटमल मालिक खाट के ।।
मुखिया महतो और चौधरी
ये मौसमी दलाल हैं
आज गांव के यही महाजन
यही आज खुशहाल हैं
रोज भात का रोना रोते
टुकड़े साटे टाट के ।।

सिर पर आश
पीठ पर पर्वत
पांव में जूते काठके
क्या कहने इस ठाट के ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दि एलगिन मिल्स कम्पनी लिमिटेड

(भारत सरकार की कम्पनी)

मिल नं० १
पार्वती बागला रोड

मिल नं० २
कूपरगंज

मिल नं० १		मिल नं० २
एलगिन	तार :	यानवीव
०३२५–२५९	टेलेक्स :	६४१·२, ६४१२३
२४३१९९, २४३२९९ २४६८९९, २४३६९९ २४३८९९	दूरभाष	६४१२४, ६४१२५ ६४१२६

राष्ट्र की सेवा में सतत् संलग्न

- मिनरल खाकी ड्रिल्स एवं जाली शर्टिंग्स
- प्रीश्रृंक धुली एवं रंगीन ड्रिल्स
- आलिव ग्रीन जाली शर्टिंग्स
- 'एलगिन' पालियेस्टर शर्टिंग एवं सूटिंग्स
- कोरो एवं धुली मारकीनें
- धुला लाँगक्लाथ
- मनोहारी वस्त्र एवं बिछौने की चादरें
- पर्दे के कपड़े
- तौलिए, तौलिए के कपड़े इत्यादि
- तिरपाल एवं फिल्टर्स
- तम्बू एवं शामियाने
- छपेवस्त्र
- सिले हुए वस्त्र

यदि यह ✲ एलगिन है ✧ यह उत्तम है

हमारी दुकानों पर पधारें :– १–श्रीमती पार्वती बागला रोड, कानपुर
२–एलगिन मि नं० २ कूपरगंज, कानपुर
३–११८/३३१, बी. एस. एस. मार्केट, गुमटी नं० ५ कानपुर।
४–३१/६७, फर्स्ट फ्लोर, हजरतगंज, लखनऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभ कामनाओं सहित –

"गदा छाप तम्बाकू" (रजि०)

निर्माता– यतीन्द्र नाथ शुक्ल कम्पनी

७, विश्वनाथ धाम, गदा रोड, ग्वालटोली

का न पु र

फोन : २४६५२१, २४०११४, ६०६४२

CHARAN METAL CORP.

Works : 101-A, Udyog Nagar, Kanpur

Dealers : CINE TRADERS,
24/168, Birhana Road,
Kanpur.

Manufacturers of steel Furnitures for
House, offices and Room Air-Coolers
on Central & U.P. Govt. Rate-contract
Associate Member of ISI.

With best Compliments from :

MIDLANDS

14/122, The Mall,
KANPUR

Phone : 62596
64391

Dealers– Lohia Scooters

VESPA XE

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best Compliments from :

POWER TOOLS & INDUSTRIAL CORPORATION

80/89, Latouche Road,

Kanpur-208001

Phone : Offi. 64054
Resi. 243574

Gram : Power Tools

Authorised Stockists :

(1) Supreme Electric Motors & Grinders

(2) "MASTER" Dog Chucks & Drill Machines

HINDUSTAN
BALL
BEARING
HOSE

DEALERS IN ALL KIND OF BEARINGS etc.

LATOUCHE ROAD
KANPUR.

U P.S.T. KR-0170788

Phones : Show Room : 53540
Residence : 241980

K. K. SANITATION

Wholesale & Retail Dealers in :

SANITARY GOODS, GLAZED TILES, C. I., A. C. PIRES & FITTINGS AND MILLS STORES ETC.

Independent Wholesellers :

PERFECT STONEWARE PIPES
JABALPUR

Office :
3/247, Vishnupuri,
Kanpur.

S. Offi.
Bagia Maniram
Kanpur

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

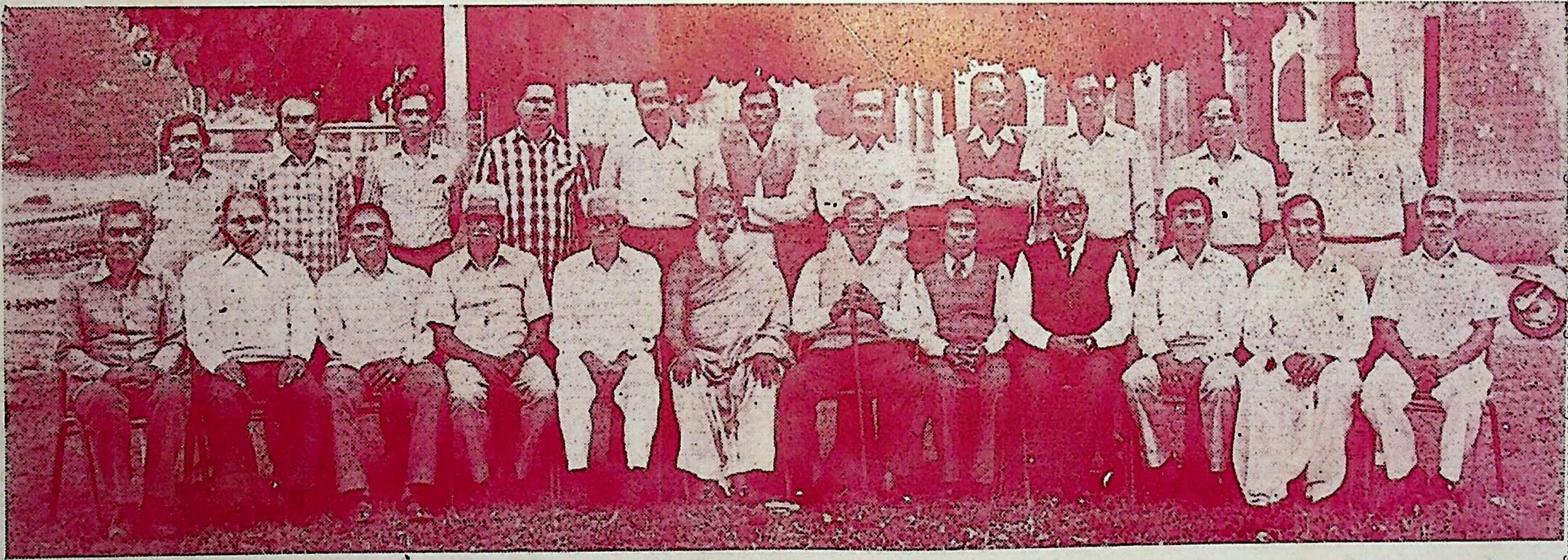

पत्रिका समितिः- ब्रह्मर्षि-समाज कानपुर के अध्यक्ष एव "ब्रह्मर्षि सन्देश" पत्रिका सम्पादन समिति के सदस्यों के साथ डा० शौनक ब्रह्मचारी एवं वरिष्ठ सदस्य ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

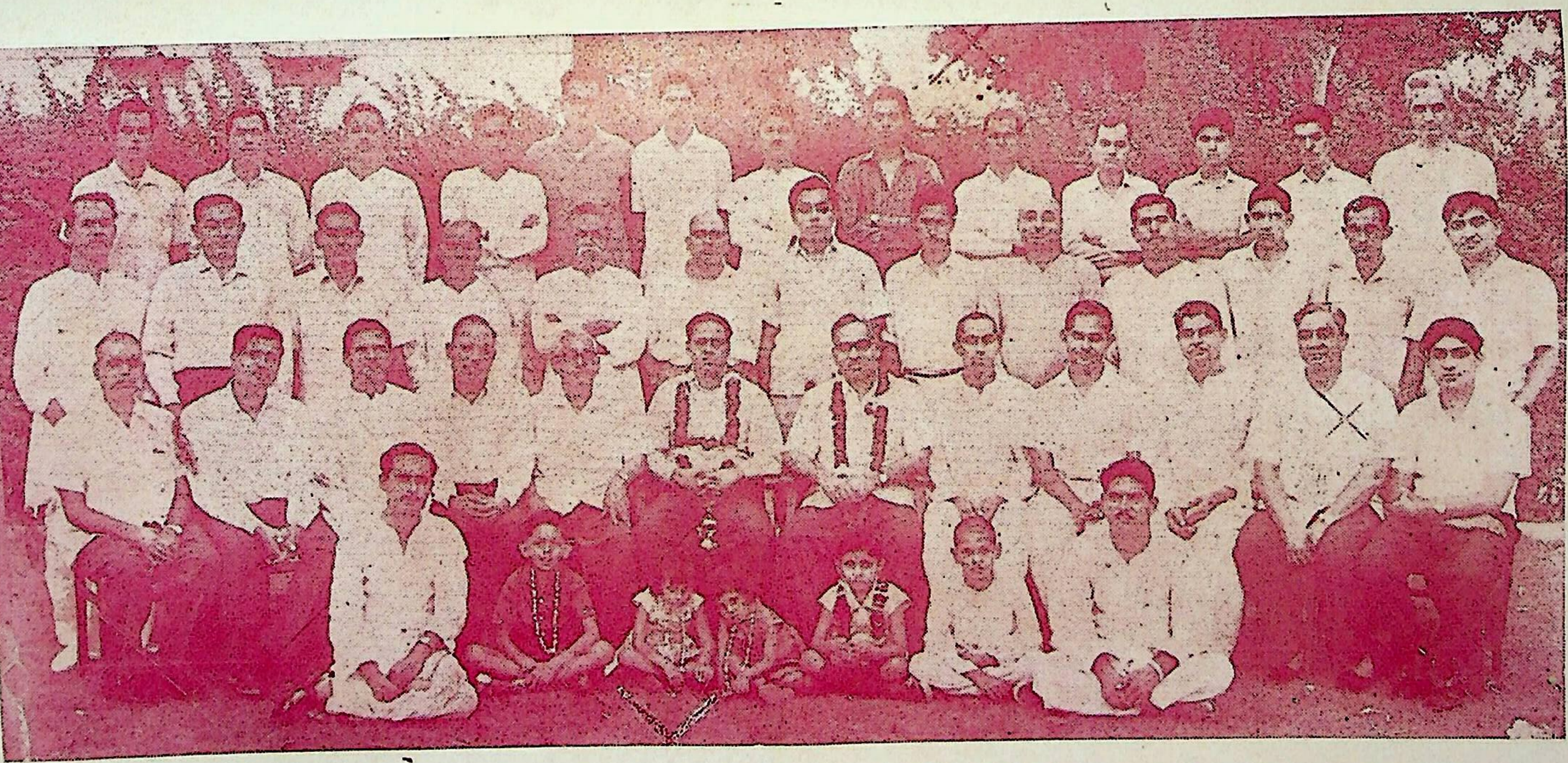

१९६७–६८ में श्री मूर्तिनारायण राय सहायक बिक्रीकर आयुक्त के विदाई समारोह पर ब्रह्मर्षि-समाज कानपुर के पदाधिकारी एवं कतिपय सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-समाज

ब्रह्मर्षि-सन्देश

परिशिष्ट

(आजीवन एवं साधारण सदस्य सूची)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृति पत्र

१. संस्था का नाम : ब्रम्हर्षि समाज

२. संस्था का पूरा पता : ५८/५२ बिरहाना रोड, कानपुर २०८०० १

३. संस्था के उद्देश्य :

(१) देश के अलग–अलग प्रान्तों के भिन्न–भिन्न भागों में बिखरे हुए समाज के सदस्यों के बीच एक–बध्यता लाकर पारस्परिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करते हुए राष्ट्रीय एक-बध्यता लाना।

(२) समय-समय पर बैठक करके एक दूसरे को अतिनिकट से अच्छी तरह जानना समझना और परिवारों के पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा आपस में अधिकाधिक प्रेम भाव पैदा करना।

(३) एक दूसरे के सुख, दुःख, शादी, व्याह आदि में सम्मिलित होना तथा लड़के लड़कियों के उपयुक्त वैवाहिक सम्बन्ध तय कराना व समाज में प्रचलित कुरीतियों को मिटाने का प्रयास करना।

(४) समाज के असहाय एवं आर्थिक रूप से पिछड़े सदस्यों के मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करना तथा उनके उच्चाध्यन का मार्ग प्रसस्त करना।

(५) समाज की उत्पत्ति विकास तथा संस्कृति विषयक साहित्य का अर्धवार्षिक या वार्षिक पत्रिका द्वारा प्रचार करना।

(६) समाज के सदस्यों के हृदय में समाज के प्रति प्रेम जाग्रत करना और समाज के उत्थान के कार्यों के लिए रुचि व उत्साह उत्पन्न करना।

(७) समाज के सदस्यों के हितों एवं अधिकारों की रक्षा करना, मानव कल्याण एवं विश्व बन्धुत्व की भावना पैदा करना।

४. प्रबन्ध कारिणी समिति के सदस्यों के नाम, पता, पद, तथा व्यवसाय जिनको संस्था के नियमों के अनुसार कार्य भार सौंपा गया है।

क्रम संख्या	नाम	पता	पद	व्यवसाय
१.	श्री चन्द्र भान त्यागी	५८/५२ बिरहाना रोड कानपुर पिन २०८००१	अध्यक्ष	निजी व्यवसाय
२.	श्री रामसुख शर्मा	साइट नं० १ ब्लाक ३/५ किदवई नगर, कानपुर	उपाध्यक्ष	निजी व्यवसाय
३.	श्री राम जी राय	एस० एस० आई. कानपुर	महामन्त्री	सरकारी सेवा
४.	श्री आर. एन. सिंह	१९०/२ शंकर नगर. कानपुर	मंत्री	सरकारी सेवा
५.	श्री एम० पी० सिंह	२१५/५, जे० के० कालोनी कानपर।	कोषाध्यक्ष	सरकारी सेवा
६.	श्री पी० एन० ओझा	९८/६ जे० के० कालोनी कानपुर।	सदस्य	सरकारी सेवा
७.	श्री बालेश्वर सिंह	२४/६ एच० ए. एल० कालोनी कानपुर।	सदस्य	सरकारी सेवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियमावली

१. **संस्था का नाम :** इस सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्था का नाम ब्रम्हर्षि समाज है अतएव इस नियमावली में जहां-जहाँ वह समाज शब्द आया है उसका तात्पर्य ब्रम्हर्षि समाज है।

२. **संस्था का पूरा पता :** ५८/२२ बिरहाना रोड, कानपुर पिन कोड २०८००१

३. **सदस्यता :** (१) अयाचक ब्राम्हण, भूमिहार, त्यागी, मोहियाल चित पावन, नम्बरी तथा अन्य साभान रक्त वाले उसजाति के व्यक्ति ही समाज के सदस्य होंगे। यदि वे :—

(क) वयस्क हो।

(ख) सामाजिक व राष्ट्र विरोधी तत्व न हों

(ग) आवेदन पत्र सदस्यता शुल्क सहित दिया हो एवं उसे संस्था द्वारा स्वीकृत किया जा चुका हो।

(२) सदस्य निम्नलिखित प्रकार के होंगे:—

(क) **आजीवन सदस्य :** जो व्यक्ति समाज को एक बार रु० १०१—०० देंगे वे समाज के आजीवन सदस्य कहे जायेंगे।

(ख) **सामान्य सदस्य :** जो व्यक्ति समाज को २४ रु० सालाना चन्दा देंगे वे समाज के साधारण सदस्य होंगे।

४ **प्रबन्ध कारिणी समिति का संगठन :** (१) प्रबन्ध कारिणी समिति का निर्वाचन समाज के सदस्यों द्वारा साधारण सभा में किया जायेगा।

(२) प्रबन्ध कारिणी समिति का कार्यकाल ३ वर्ष का होगा।

(३) प्रबन्ध कारिणी समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे।

(क) अध्यक्ष (ख) उपाध्यक्ष (ग) महामन्त्री (घ) संयुक्त मंत्री (ङ) कोषाध्यक्ष (च) सदस्य कम से कम ९

५. **प्रबन्ध कारिणी समिति के कर्त्तव्य एवं अधिकार :** प्रत्येक कार्यवाही का निर्णय समाज के नियमानुकूल करना आम सदस्यों के हितों का विरोध न करते हुए समिति के निम्नलिखित अधिकार होंगे।

(१) सदस्यता के लिए आवेदन पत्र स्वीकृत या अस्वीकृत करना।

(२) समाज के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जो भी वैधानिक कार्य आवश्यक एवं हितकर प्रतीत हों उसे करना।

(३) सदस्यों के प्रति अनुशासनात्मक कार्यवाही करना।

(४) समाज के संचालन एवं उनकी सम्पत्ति का उत्तरदायित्व लेना।

(५) उप समिति का गठन करना तथा समाज की शाखायें खोलना एवं उनकी देखभाल करना।

६. **पदाधिकारियों के कर्त्तव्य एवं अधिकार :** (१) अध्यक्ष।

(क) बैठक में उपस्थित होकर बाध्यता करना तथा अनिवार्य कार्यवाहियों पर हस्ताक्षर करना।

(ख) समाज के नियम के प्रतिकूल कार्यवाही को रोकना।

(ग) विशेष परिस्थितियों में अपने निर्णायक मत द्वारा किसी विषय पर निर्णय लेना।

(घ) समाज के किसी एक मद पर रु० १००—०० तक व्यय करने की स्वीकृति का अधिकार होगा किन्तु इस प्रकार की स्वीकृति या व्यय किसी भी दशा में एक माह में रु० २००—०० से अधिक नहीं होगा।

(२) **उपाध्यक्ष :** (क) कार्यालय के नित्य प्रति के कार्यो से रुचि रखते हुए क्रियाशील रहना तथा अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उसका कार्य करना।

(३) **महामन्त्री :** (क) संस्था का संचालन प्रबन्ध कारिणी समिति के सदस्यों से करना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) समाज की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये सुझाव तथा योजना प्रबन्ध कारिणी समिति के समक्ष प्रस्तुत करना।

(ग) कर्मचारियों की नियुक्ति प्रबन्ध कारिणी समिति की अनुमति से करना।

(घ) संस्था के रुपयों की बैंक में संस्था के नाम जमा करना तथा उनका निष्कासन महामन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से करना।

(ङ) सस्था की ओर से पत्राचार करना।

(च) अपने किसी प्रतिनिधि द्वारा कानूनी कार्यवाही या अन्य अदालती कार्यो के स्वयं पैरवी करना।

(छ) समाज के किसी मद पर रु० ५०–०० तक व्यय करने का अधिकार होगा जो एक माह में रु० १००–०० से अधिक नहीं होगा।

(४) संयुक्त मंत्री : (क) कार्यालय के नित्य प्रति के कार्यों में रुचि रखते हुए क्रियाशील रहना एवं सारे कागजात तैयार करना।

(ख) संस्था की प्रबन्ध कारिणी समिति की एवं साधारण सभा की बैठक का आयोजन करना।

(ग) दिन के काम में महामन्त्री की मदद करना एवं उनकी अनुपस्थिति में दिन प्रति में कार्य भार सँभालना।

(५) कोषाध्यक्ष : (क) संस्था के कोष का हिसाब एवं लेखा बहियों को तैयार करना तथा महामन्त्री के द्वारा बैठक में रखना।

(ख) आय व्यय का निरीक्षण करके प्रबन्ध कारिणी समिति द्वारा समय समय पर मनोनीत परीक्षण कराना।

(ग) सदस्य से आये हुये चन्दा एवं अनुदान की रसीद आदि देना।

(घ) दैनिक खर्चे इत्यादि के लिए अधिकतम राशि रु० २००–०० नगद कोष में रखना।

७. साधारण सभा के कर्तव्य एवं अधिकार : (१) वार्षिक विवरण, बजट एवं निरीक्षण किए गए लेखों पर विचार करना तथा स्वीकृत देना।

(२) प्रबन्ध समिति के सदस्य एवं पदाधिकारियों का चुनाव करना।

(३) समाज की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना।

(४) समाज के संविधान में आवश्यकतानुसार परिवर्तन तथा संशोधन पर विचार करना।

(५) समाज के संचालन हेतु उपनियमावली का निर्माण करना।

(६) समाज की समस्त चल-अचल सम्पत्ति का क्रय-विक्रय एवं संरक्षण साधारण सभा के निर्णयों के अनुरूप करना।

(७) प्रबन्ध कारिणी : समिति के रिक्त स्थानों की पूर्ति चनाव द्वारा करना।

८. बैठक : (१) प्रबन्धकारिणी समिति की एक बैठक प्रत्येक माह में अवश्य होगी।

(२) बैठक की तिथि अध्यक्ष एवं महामन्त्री तय करेंगे।

(३) प्रबन्ध समिति की बैठक की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जायेगी।

(४) साधारण सभा की बैठक कम से कम चार चार बार होगी। तथा इसकी सूचना १५ दिन पूर्व दी जाएगी।

(५) आवश्यक बैठक चौबीस घन्टे की पूर्व सूचना पर बुलाई जायेगी।

(६) वार्षिक आवश्यक बैठक प्रतिवर्ष मार्च के प्रथम रविवार की सालाना जलसे के साथ होगी।

९. बैठकों का कोरम : साधारण सभा एवं प्रबन्ध कारिणी समिति के बैठकों में उनकी कुल सदस्यता का २/३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदस्यों की उपस्थिति गण पूर्ति मानी जाएगी। गणपूर्ति के अभाव में बैठक स्थगित कर दी जायेगी। और १/२ घन्टे बाद स्थगित बैठक दुबारा बुलाने पर गणपूर्ति का प्रतिबन्ध नहीं होगा।

१०. **आय के स्रोत :** (१) सदस्यों से चन्दा एवं अनुदान

(२) सरकारी अर्द्ध सरकारी संस्थाओं से अनुदान।

(३) सामाजिक संस्थाओं या व्यक्ति विशेष द्वारा अनुदान।

११. **निधि का अंकेक्षण :** समाज के आय व्यय का लेखा नियमित रूप से देखा जाएगा एवं प्रबन्ध समिति द्वारा नियुक्त अंकेक्षण से प्रतिवर्ष संरक्षण कराया जाएगा।

१२. **पंजीका निरीक्षण :** सदस्य पंजीका एवं अन्य कागजात समाज के कार्यालय में रहेगा और सदस्य, महामन्त्री की अनुमति से उसे देख सकते हैं।

१३. नियमावली में संशोधन इत्यादि आम सभा के २/३ उपस्थित सदस्यों द्वारा प्रस्ताव पारित करने पर ही किया जायगा।

१४. **समाज का विघटन एवं उसकी सम्पत्ति की व्यवस्था :** (क) समाज विघटन आम सभा के २/३ उपस्थित सदस्यों द्वारा प्रस्ताव प्राप्ति करने पर ही किया जाएगा।

(ख) विघटन के उपरान्त जो सम्पत्ति ऋण इत्यादि चुकाने के बाद बचेगी उसे सदस्यों या गैर सदस्यों में नहीं बाँटी जाएगी अपितु उसे समान उद्देश्य वाली संस्था को या सरकार को आम सभा के २/३ सदस्यों की सहमति से दे दी जाएगी।

(ग) विघटन सम्बन्धित सभी कार्यवाही सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा १३ व १४ के अन्तर्गत जाएगी।

१५. **संरक्षक मन्डल :** समाज का एक संरक्षक मण्डल होगा जिसका निर्वाचन आम सभा द्वारा होगा। और उनका कार्यकाल ३ वर्ष का होगा। संरक्षक मन्डल समाज कार्यकारिणी का समाज कल्याण एवं उत्थान हेतु मार्गदर्शन करेगा। कार्यकारिणी के आन्तरिक मतभेदों के समय संरक्षक मण्डल के निर्णय सर्वोपरि होंगे।

१६. समाज का अन्य कार्य जिसके विषय में नियमावली व उबन्ध नहीं हो पाया है सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट १८६० के उबन्धों के अनुसार किया जाएगा।

१७ यह संविधान दिनांक १९.९ ८२ को आम सभा में सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

प्रधान कार्यालय :

५८/५२, बिरहाना रोड, कानपुर

रजिस्ट्रेशन संख्या—३२१३/८३

भूमिहार, मोहियाल, त्यागी, चितपावन, नम्बूद्री, गालब, अनाविल, जमींदार, ब्राह्मण और समान रक्त वाली जातियों का केन्द्रीय संगठन

व्यक्तिगत विवरण

१ पूरा नाम

२ जन्म तिथि

३ पिता का नाम

४ पिता का व्यवसाय

५ गोत्र

६ स्थायी घर का पता

७ स्थानीय निवास का पता

८ व्यवसाय

९ पद एवं विभाग

१० कार्यालय का पता

११ अभिरुचियाँ

१२ शैक्षिक/व्यावसायिक योग्यता

१३ पत्नी का नाम

१४ बच्चों का विवरण

क्रम सं०	नाम	जन्म तिथि	योग्कता	विवाहित/अविवाहित
१				
२				
३				
४				
५				

१५ जीवन की महत्वपूर्ण सफलता

मैं ब्रह्मपि समाज के विधान एवं निर्धारित नियमों से भलीभाँति परिचित हूँ। कृपया मुझे समाज का सदस्य बनायें। इस पत्र के साथ मैं रु० ……………………………………सदस्यता के लिए प्रेषित कर रहा हूँ।

दिनांक……………………………

हस्ताक्षर

नोट :—ब्रह्मर्षि समाज का सदस्यता शुल्क निम्न है :—

१ रु० १०१/—आजीवन सदस्यता शुल्क।

२ रु० २४/—वार्षिक सदस्यता शुल्क।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रम्हर्षि समाज कानपुर की आजीवन सदस्य सूची

नं०	नाम व व्यापार	स्थायी पता	स्थानीय पता
१	अक्षयवर सिंह व्यापार	ग्राम पोस्ट-फुलबरिया, वाराणसी	२ ए/२२७ आजाद नगर, कानपुर
२	अवधेश कुमार राय सेल टैक्स विभाग	ग्राम-खेमपुर पो० बालापुर, जि० गाजीपुर	
३	अर्जुन पाण्डेय डिप्टी सुपरिटेण्डेन्ट, आई. ई. एल.	ग्राम-धर्मकन्धा पो०-सेमरी जि०-रोहतास, बिहार	१७४/३, जूही, लालकालोनी, कानपुर
४	अनिल कुमार राय सहायक-क्वालिटी कन्ट्रोल, लोहिया फाईबर्स, कानपुर	ग्राम,पो-कोटवाँ नरायनपुर जि-बलिया	ई-४, एन० एस० आई० कालोनी, कल्यानपुर, कानपुर
५	आद्याशंकर राय प्रबन्धक-जिला उद्योग केन्द्र,गाजीपुर	ग्राम, पो०-सहरोज जि० आजमगढ़	८१/१३, गोविन्द नगर, कानपुर
६	उपेन्द्र नारायण ठाकुर डिप्टी कलेक्टर, कानपुर	ग्रा-मम्भौर पो०जनकपुर रोड, जि०-सीतामढ़ी, बिहार	बी-२, सरकिट हाउस, कालोनी-कानपुर
७	कैलाश नारायण राय प्रोफेसर-मेटालर्जी आई० आई० टी०, कानपुर	ग्राम-मलिकपुरा मलसा पो.-तरनाडीह जिला- गाजीपुर	आई० आई० टी०, कानपुर
८	कृपा नारायण राय	ग्राम-चरियांव खास पो०-सोहसा वाया गौरी बाजर, जि०-देवरिया	११७/२३७, 'ओ' ब्लाक, गीतानगर कानपुर
९	गणेश प्रसाद सिंह प्रोसेस टेक्नीशियन, आई. इ. एल.	ग्राम पो० बेरैनी, जि७-मिर्जापुर	१२८/५८ सेक्टर २, यशोदा नगर कानपुर
१०	डा० गुलाब नाथ सिंह कृषि अर्थशास्त्री, कृषी वि.,कानपुर	ग्राम, पो०-मरूई, जिला-वाराणसी	३ ए/७, आजाद नगर, कानपुर
११	गणेश प्रसाद चौधरी स्टोर अधिकारी, एच. ए. एल.	ग्राम-कलबारी, थाना-कान्ती जि०–मुजफ्फरपुर, बिहार	२०८/६, जे० के० कालोनी, कानपुर
१२	गोरख प्रसाद राय आई० जी० एस०	ग्राम-तामा, तहसील-खलीलाबाद जिला-बस्ती	१३/५७, परमट घाट कानपुर
१३	चन्द्रभान त्यागी व्यवसायी	ग्राम, पो. दिनकरपुर. जि.मुजफ्फरनगर	५८/५२, बिरहाना रोड,कानपुर
१४	त्रिभुवन राय टेफ्को	ग्राम, पोस्ट-सोढ़री, जि..आजमगढ़	३१/९, विष्णुपुरी कालोनी, नवाबगंज कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५ दामोदर राय से. नि. क्षेत्रीय. प्रबन्धक इलाहाबाद बैंक	ग्राम, पो०-रेवतीपुर जि० गाजीपुर	
१६ प्रभुनाथ ओझा लोहिया स्कूटर, पनकी	ग्राम- कुम्हउला, पो-सीकटी जि.-छपरा	९८/६, जे० के० कालोनी, कानपुर
१७ बालेश्वर सिंह एच. ए. एल.	ग्राम-महम्मदपुर पो.-पईनल जि.-पटना	२१/७, एच. ए. एल. कालोनी, जी. टी. रोड, कानपुर
१८ बलदेव सिंह अवकाश प्राप्त डी. एस. पी.	ग्राम-अनन्तापुर, थाना-मेजा जि०—इलाहाबाद	७३ए 'एन' ब्लाक, किदवई नगर कानपुर
१९ डा० बलजीत सिंह त्यागी ऐसो. प्रोफेसर-कृषि वि. वि. कानपुर	C-७, शास्त्रीनगर, मेरठ, २५०००२	२ए/१७९, आजाद नगर, कानपुर
२० बटुक राय तार बाबू से० स्टेशन, कानपुर	ग्राम, पोस्ट-सहरोज, आजमगढ़	८२/११, गोबिन्द नगर, कानपुर
२१ बहादुर राय टेलीफोन विभाग	धनवली, दोहरीघाट, जिला-आजमगढ़	३३२/१, बाबूपुरवा कालोनी, किदवई नगर कानपुर
२२ बिधुभूषण राय निदेशक-निरीक्षण, पूर्ति विभाग भारत सरकार	ग्राम, पो० लउवाडीह, जिला- गाजीपुर	३/२०९, विष्णुपुरी, कानपुर
२३ भागवत प्रसाद शर्मा आयकर अधिकारी	ग्राम-उसरापुर, पो.-पिण्डरा, वाराणसी	७/११२, स्वरूप नगर, कानपुर
२४ मलिक राय अवर अभियन्ता, जल निगम	ग्राम-कैथवली, पो०-चौरा जि.-बलिया	६१६ 'बी' ब्लाक पनकी, कानपुर
२५ महेन्द्र प्रसाद सिंह औद्योगिक अभियन्ता, एच.ए.एल.	ग्राम पो.- बरुआने, जि.-पटना, बिहार	२१५/५ जे.के. कालोनी, कानपुर-१०
२६ मूलचन्द्र त्यागी स्वदेशी काटन मिल	ग्राम, पो०-खरखण्डा, जि-मेरठ	बंगला नं. २, अथर्टन मिल, कानपुर
२७ डा० मंगला राय परियोजना समन्वयक, कृषि वि०	ग्राम-छपरी, पो०-सिखरी, गाजीपुर	२/४४८ ए, आजाद नगर, कानपुर
२८ धीरेन्द्र कुमार राय वरिष्ठ सहायक-लेखा	ग्राम-टडवा श्रीराम, पो-वरियारमाफी जिला-गोरखपुर	६१/२०३, कैनाल रोड, कानपुर
२९ राधेश्याम सिंह एच० ए० एल०	ग्राम-टिचारी, पो.-नाइपुरा, वाराणसी	१९/६, एच. ए. एल. कालोनी, कानपुर
३० रामेन्द्र नाथ सिंह त्यागी चिकित्सक	ग्राम-पोला गोकरननाथ, लखीमपुर खीरी	३८०, किदवई नगर, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३१ रमेश कुमार सिंह सहायक परीक्षक, एच. ए. एल.	ग्रा०, पो०-अनन्तापुर जि.-इलाहाबाद	२६४/३, जूही लाल कालोनी, का
३२ रामनिवास राय सहायक अभियन्ता उ. रे.	ग्राम–करनई, जिला–बलिया	३ ए, रेलवे कालोनी, जी. टी. रो कान
३३ राम जी राय एन. एस. आई.	ग्राम, पो०-कोटवाँ नरायनपुर, बलिया	एन. एस. आई. कालोनी, कल्याण कान
३४ रामनारायण सिंह एच० ए० एल०	ग्राम, पो० कोरेरा, जि०-पटना, बिहार	१९० शंकर नगर, कानपुर
३५ मेजर रामायण राय भारतीय थल सेना	ग्राम, पो०-चरिआंव बुजुर्ग, दवरिया	७१७ बी, नेपियर रोड, कानपुर
३६ राजकुमार सिंह अवकाश प्राप्त, बिक्रीकर अधिकारी	ग्राम-अचनापुर, पो-शुक्लपुर, जि-इलाहाबाद	६/४१, पुराना कानपुर, रानीघाट
३७ विन्ध्यबासिनी सिंह से नि. आयकर अधिकारी, अधिवक्ता, प्रत्यक्ष कर-विशेषज्ञ	एस० १७/२५६, नदेसर, वाराणसी-कैंट	२/४९२, आजाद नगर, कानपुर
३८ आर० एन० सिंह श्रम कल्याण-अधिकारी आई.ई.एल.	ग्राम, पो०- दिब, बेगूसराय, बिहार	११७/२६२, शारदा नगर, गुमटी नं कान
३९ रामदरस राय कर सलाहकार	ग्राम, पो०-गोठा, घोषी जि. आजमगढ़	३८०/७ लेवर कालोनी, शास्त्री कान
४० डा० रवीन्द्र नाथ राय प्रवक्ता पी. पी० एन० कालेज	ग्राम-शेरपुर खूर्द, पो०- शेरपुर कला जि०-गाजीपुर	९६/१२, पी. पी. एन. छात्राव परेड, का
४१ शैलेन्द्र चन्द्र राय डिप्टी सुपरिटेण्डेण्ट, आई.ई.एल.	ग्राम, पो० केशवापार, जि० गोरखपुर	११७/३८७ क्यू, शारदा नगर, गुमटी नं. ९, कानपुर
४२ शिवशंकर सिंह आई० आई० टी०, कानपुर	ग्राम-सुहपुर पो.-चोरमा (बसंतपुर) जि० सिवान, बिहार	३४६, नानकारी, आई. आई. टी. कान
४३ शिवशंकर तिवारी वायु सेना	ग्राम, पो०-बरीसबान, जि०भोजपुर, बिहार	२५३, विमान नगर हरजेन्दर नगर कान
४४ शिवाश्रय सिंह एच० ए० एल०	ग्राम- जलालपुर जि०-पटना. बिहार	३२/६, एच. ए. एल. कालोनी, कान
४५ शिवचन्द्र सिंह एच० ए० एल०	ग्राम-कोचारी पो०-सुरेरी, जौनपुर	बी/३२, एच. ए. एल. टाउन शिप, कानपु
४६ शिव नन्दन पाण्डेय केसा	ग्राम- महुलानी पो- टिक्कू (वासी) जि०—बस्ती	६२/१ केसा कालोनी, कानपुर
४७ साँवलिया राय	ग्राम पो. मानिकपुर, छपरा	४/१, केसा कालोनी, कानपुर
४८ सत्यनारायण राय व्यवसायी	ग्राम-छितवलिया, पो० एकमा जि० छपरा, बिहार	११९/३ जे. के. कालोनी, कानपु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४९ हरीशंकर शर्मा उ० प्र० वित्तीय विभाग	ग्राम-मरुआबाद, पो.-महसी जि.-चम्पारन, बिहार	८५/६, शास्त्री नगर, कानपुर
५० हरिद्वार सिंह केसा, कानपुर	ग्राम-रेवसाँ, पो.-सैय्यद राजा जि.-वाराणसी	१६/; श्रमिक बस्ती, आजाद नगर कानपुर
५१ इन्दु प्रकाश शर्मा रिटायर्ड अध्यापक	ग्राम-अछेजा पो.-हापुड़ जि०-गाजियाबाद	३/२१२, विष्णुपुरी, कानपुर

साधारण सदस्य सूची

१ डा० अरविन्द कुमार सिन्हा सामाजिक विज्ञान आई.आई.टी. कानपुर	ग्राम–पो०–बरही लौज, छज्जा चौक मुजफ्फरपुर, बिहार	३३३ आई०आई०टी० कैम्पस, कानपुर फोन–२४००६६
२ झमलाराय पाण्डे एच०बी०टी०आई० कानपुर	ग्राम–पो०–भागवत परसा जिला–गोपाल गंज बिहार	२/:१४ फैलू कुम्हार का हाता नवाबगंज कानपुर
३ अश्वनीकुमार राय न्यू विक्टोरिया मिल कानपुर	ग्राम–गहुनी मेहनगर पो०–लालगंज जिला–आजमगढ़	८३ए/१२ जूही हमीरपुर रोड कानपुर
४ अनिरुद्ध प्रसाद सिंह एन०आई०बी०आर०डी० कानपुर	ग्राम–सब्वी पो०–मालदह जिला–मुंगेर, बिहार	३४/1 जे० के० कालोनी जाजमऊ कानपुर
५ अवधेश शर्मा मेट्रालाजी विभाग आई०आई०टी० कानपुर	ग्राम–नोनार उमैना दाउद नगर औरंगाबाद, बिहार	५११, नानकारी आई० आई० टी० कानपुर
६ अवधेश कुमार मिश्र एन०एस०आई० कल्यानपुर कानपुर	ग्राम–पो०–सिंहो जि० मुज्जाफरपुर बिहार	५ वाई० जी० क्वाटर नवाबगंज कानपुर
७ अनिलकुमार राय गनफैक्टरी, अर्मापुर, कानपुर	ग्राम–चौकी पो०–वरदह जिला–आजमगढ़	१२७/११, विजयनगर कालोनी कानपुर
८ अवधराज राय कानपुर टेक्सटाइल मिल.	ग्राम–भैंसकुर पो०–ठेकमा जिला–आजमगढ़	९८ बासन्ती नगर जूही कानपुर
९ असीम राय	ग्राम–चरियांव खास पोस्ट–सोहसा, गौरीबाजार, देवरिया	११७/२३७ गीतानगर कानपुर
१० अरविन्द कुमार त्यागी एन.सी.सी.एफ.	ग्राम–बछौली (खरखोदा) जिला–मेरठ	१२०/२६१ लाजपत नगर कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११ आदित्य कुमार वशिष्ठ निदेशक-एच.बी.टी.आई.कानपुर	ग्राम-पोस्ट-सिसौना जि०-बिजनौर	बंगला न० ७ लक्ष्मणबाग कालोनी नवाबगंज, कानपुर
१२ आदित्य राय गनफैक्टरी अर्मापुर स्टेट, कानपुर	ग्राम-चौकी पोस्ट-बरदह जिला-आजमगढ़	गनफैक्ट्री, अरमापुर, स्टेट कानपुर
१३ आई० डी० शर्मा एस.ए.एफ.	ग्राम-पैनाल थाना-बिहटा जिला पटना	एफ.टी० १८६ अर्मापुर स्टेट कानपुर
१४ डा० इन्द्रदत्त त्यागी कृषिविश्वविद्यालय, कानपुर	ग्राम—धामपुर जि०—बिजनौर	सी — ३८ रावतपुर कालोनी कानपुर
१५ इन्द्रदेव सिंह अध्यापक	ग्राम—आड़ेबिगहा पो० पोन्दिल जिला — गया, बिहार	११०/१३४, जवाहर नगर कानपुर
१६ उमाशंकर राय आई.ई.एल. कानपुर	ग्राम-पोस्ट-सैदाबाद जिला-गाजीपुर	१११/३२९ अशोक नगर कानपुर
१७ उमाशंकर राय बिक्रीकर विभाग	ग्राम-गहुनी पो० मेहनगर जिला-आजमगढ़	८३/२६३ए, जूही, कानपुर
१८ ओमप्रकाश पाण्डे उ०प्र० परिवहन कानपुर	ग्राम-हुमायूँपुर गोरखनाथ रोड, गोरखपुर	४१५/४ शास्त्री नगर कानपुर
१९ ओमप्रकाश त्यागी टी०टी०आई० कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन	ग्राम—पोस्ट—वदहा वजीदपुर जिला—बुलन्द शहर	९/१ साइट न० १, किदवई नगर कानपुर
२० ओमप्रकाश त्यागी राजकीय पाली टेकनिक कानपुर	ग्राम—मुबारिकपुर जिला—मेरठ	राजकीय पाली टेकनिक कालोनी जी० टी० रोड, कानपुर
२१ ओमदत्त त्यागी आयुद्ध निर्माण फैक्टरी, कानपुर	ग्राम—काकड़ा जिला—गाजियाबाद	टाइप ती १५५ अरमापुर कानपुर
२२ ओमदत्त त्यागी जी० ई० प्लाई (प्रोजेक्ट) कालपी रोड, कानपुर	ग्राम—पोस्ट—काँलदा जि० मेरठ	१२७/१३५ 'यू ब्लाक निराला कानपुर
२३ आनन्द राय जेलर कानपुर	ग्राम—पोस्ट सुहवल जिला—गाजीपुर (उ० प्र०)	जेल—कैम्पस कानपुर कारागार कानपुर
२४ श्री कोमल सिंह त्यागी स्वदेशी काटन मिल कानपुर	ग्राम—पो०—तौली जि०-बुलन्द शहर	सी-१६ स्वदेशी काटन मिल बंगला जूही कानपुर
२५ कान्ती प्रसाद त्यागी एस०ए०एफ० कानपुर	ग्राम—पीरनगर जि० गाजियावाद	टी० III/१३२ अर्मापुर, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ कैलाशनारायण सिंह टेफ्को कानपुर	ग्राम—पोस्ट—फुलवरिया जिला—वाराणसी	२ए/२२७, आजादनगर कानपुर
२७ कवीन्द्र नारायण सिंह रेलवे विभाग कानपुर	ग्राम पो० फुलवरिया जि० वाराणसी	२ए/९३, आजादनगर कानपुर
२८ कमलाकान्त पाण्डे एन०एस०आई० फैक्टी, कानपुर	ग्राम—पोस्ट—भगवत परसा गोपालगंज बिहार	२/१८९, नवाबगंज कानपुर
२९ के० पी० सिंह गन फैक्टरी, अर्मापुर स्टेट	ग्राम—देवचन्दपुर, वाराणसी	जी—१/१७ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
३० कमला प्रसाद राय आई०इ०एल०	ग्राम—पोस्ट—मतसा, जिला—गाजीपुर	१२७/२४३ जी ब्लाक निराला नगर कानपुर
३१ के० एन० पाण्डे ग्रिंडलेज् बैंक कानपुर	ग्राम—भोजापुर जिला—बलिया	१३/९ परमट कानपुर
३२ के० के० राय गृह निरीक्षक लेबर विभाग शास्त्रीनगर कानपुर	ग्राम—हाटा, पोस्ट—मुहमदाबाद जिला—गाजीपुर	१०९/१४६ जवाहर नगर कानपुर
३३ कृष्ण देवराय मुशी—कानपुर कचहरी	ग्राम—चौकी, पोस्ट—वरदह जिला—आजमगढ़	१२७/११ विजयनगर कालोनी कानपुर
३४ कपिलदेव राय भारतीय वायु सेना	ग्राम—पोस्ट—कनुआन जिला— गाजीपुर	३३/४ जे० के० कालोनी कानपुर
३५ कैलाश नाथ पाण्डे चिड़ियाघर कानपुर	ग्राम—सरहरी पोस्ट—मेंहदावल जिला—बस्ती	जूही कालोनी, कानपुर
३६ कौशल किशोर राय एस०ए०एफ कानपुर	ग्राम—विसुनपुर पोस्ट—विसुनपुर जिला—गोरखपुर	जी०आई०/टी० २३३ अर्मापुर स्टेट कानपुर
३७ के० के० मिश्रा सुरक्षा विभाग आई.ई.एल.कानपुर	ग्राम-अनन्तापुर—जि० इलाहाबाद	११९/२१३,ओमनगर दर्शनपुरवा कानपुर
३८ के० डी० सिंह इन्सपेक्टर न. महा.पा., कानपुर	ग्राम—पोस्ट-जक्खिनी, वाराणसी	१४३/१२ शास्त्री नगर कानपुर
३९ कृष्ण शरण राय अवर अभियन्ता पनकी पावर हाउस, कानपुर	गाम—पोस्ट अमरपुर जिला—सिवान, बिहार	१९/८२ न्यू कालोनी, पनकी, कानपुर
४० गोविन्द जी राय आपरेटर वाटर ट्रीटमेन्ट प्लान्ट पनकी	ग्राम व पोस्ट—अमरपुर जि० सिवान बिहार	१९/८२ पनकी पावर हाउस कालोनी कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४१ गणपति सिंह भारतीय वायुसेना	ग्राम—रहाटपुर पोस्ट—रामचन्दरपुर जिला—मुगेर, बिहार	१०३/१ पिन्टूनगर, चकेरी, कानपु
४२ चन्द्र भान राय पुलिस विभाग	ग्राम—खरार पो०— परदह जि०— आजमगढ़	पुलिस चौकी वेना झावर कानपुर
४३ चन्द्र भूषण सिंह एयर फोर्स चकेरी कानपुर	ग्राम—राहतपुर पोस्ट—रामचन्द्रपुर लखी सराय, मुगेर बिहार	६९/३ जे. के. कालोनी कानपुर
४४ चन्द्रिका पाण्डे सेन्ट्रल रोडवेज	ग्राम भैरोपट्टी पो०—शिसवनिया मीरगंज गोपालगंज, बिहार	२/२१४, फैलू कहार का हाता नवाबगंज, कानपुर
४५ चन्देश्वर सिंह जे० के० काटटन मिल्स	ग्राम—अमरपुर पोस्ट—विशुनपुर जिला—गया बिहार	८४/४८ जे० के० क्वाटर हाता जरीब चौकी
४६ श्री चन्द्रदेव तिवारी गृह निरीक्षक हाउसिंह विभाग	ग्राम—मानिकपुरा पोस्ट—मझउवा जिला—बलिया	१६/१२ दादानगर कालोनी दादा कानपुर
४७ जगदेव राय उद्योग निदेशालय, कानपुर	ग्राम—सेरपुर कलाँ गाजीपुर	८५/९ शास्त्री नगर, कानपुर
४८ जय राम राय व्यापार व ठेकेदारी	ग्राम—वेला सुल्तानपुर, आजमगढ़	सी०—२० राजकीय आवास कालो रावतपुर
४९ जय प्रसाद सिंह ठेकेदार	ग्राम—पोस्ट—डिग्घी वाराणसी	१०६/४०० गांधीनगर कानपुर
५० जगदम्बा राय, टेलीफोन विभाग	ग्राम—चौकी पोस्ट—वरदह, आजमगढ़	१९ फेथफुलगंज कैन्ट कानपुर
५१ जगदीश प्रसाद, नौकरी	ग्राम—महुलानी पोस्ट—टिल्लू जिला—बस्ती	४५/७ केरा कालोनी कानपुर
५२ जे० टी० राय, ओ. एफ. सी.	ग्राम—शेरपुर जिला—गाजीपुर	एफ० टी० ८६ अर्मापुर स्टेट, का
५३ ज्वाला सिंह, टेफको कानपुर	ग्राम—पोस्ट—जखन्नी वाराणसी	१/९५ नवाबगंज, कानपुर
५४ देवेन्द्र त्यागी, अवर अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण मोतीझील, कानपुर	ग्राम, पोस्ट—महलवाला जिला—मेरठ	एल/११७/१४३ नवीन नगर, कान
५५ देवेन्द्र सिंह त्यागी, जे०के० काटन मिल, कानपुर	ग्राम—जौलचाना जि०—बुलंद शहर	बंगला नं० ५ जे. के. काटन मिल कानपुर
५६ दरोगा राय, जीवन बीमानिगम कानपुर	ग्राम, पोस्ट—मानिकपुर जिला— छपरा, बिहार	३२४ए, नानकारी आई०आई०टी० कानपुर
५७ देवता प्रसाद पाण्डे अध्यापक	ग्राम—सरौली चट्टासिन पोस्ट—भूनैनी जिला—बस्ती	पटेलगगर चकेरी, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Våranasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५८	देवशरण राय, ओ०एफ०सी० कानपुर	ग्राम—खुटौली पोस्ट—बीबीपुर जिला—आजमगढ़	२०२/८ विजयनगर कालोनी, कानपुर
५९	देव नारायण राय, पुलिस निरीक्षक	ग्राम-तमल पुरा पोस्ट-मुहमदाबाद जिला—गाजीपुर	२८६/२ जूही लाल कालोनी, कानपुर
६०	दारोगा सिंह, रोडवेज निगम केन्द्रीय कार्यशाला कानपुर	ग्राम—मुजहना रहीम पोस्ट—हाटा जिला— देवरिया	एस २/९ रोडवेज कालोनी आजाद नगर कानपुर
६१	देवधारी राय, नार्दन रेलवे इक्लेट्रिक लोको शेड, जूही	ग्राम-पहाड़पुर पोस्ट-गोटा रसूलपुर जिला— देवरिया	९४/३ ब्लाक नं० १० गोविन्द नगर कानपुर
६२	दीनानाथ शर्मा, एयर फोर्स आई. बी आर. डी. चकेरी	ग्राम—सरासत पोस्ट—नौवतपुर जिला—पटना, बिहार	५३/२ पिन्टूनगर चकेरी, कानपुर
६३	ध्रुवदेव शर्मा, एच०ए०एल० चकेरी, कानपुर	ग्राम—हरिहर पुर जिला—छपरा, विहार	प्लाट नं० ४८ परदेवनपुर चकेरी, कानपुर
६४	धर्मवीर सिंह त्यागी म्योर मिल कानपुर	ग्राम पोस्ट—निवाड़ी जिला— जिला—गाजियावाद	५ ए जोहन्सन स्कापर लाल इमली के सामने कानपुर
६५	नागेन्द्र राय आई०ई०एल० कानपुर	ग्राम, पोस्ट—मानिकपुर जिला-छपरा, बिहार	३२४ ए नानकारी आई०आई० टी कानपुर
६६	नन्दलाल शर्मा, अध्यापक केन्द्रीय विद्यालय आई आई.टी	ग्राम, पोस्ट — रेवतीपुर जि-गाजीपुर	३५५ नानकारी आई.आई.टी. कानपुर
६७	नारद राय, ओ. पी. एफ. कानपुर	ग्राम-दमदाशपुर पोस्ट-पंडितपुर जिला-छपरा, विहार	१३०/२३८ वगाही कानपुर
६८	नरेन्द्र कुमार ओझा, अध्यपन	ग्राम-गोसाखाव पोस्ट-रसूलपुर जिला—छपरा, बिहार	१२८/४४५ एच-२ किदवई नगर कानपुर
६९	नरेन्द्र सिंह शर्मा, कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर	ग्राम, पोस्ट-मिहावा जि—आगरा	३/११= विष्णुपुरी कानपुर
७०	प्रमोद कुमार सिन्हा प्राविधिक अधिकारी उद्योग निदेशालय, कानपुर	ग्राम-अखतीपारपुर पोस्ट- पालीगंज जिला-पटना, बिहार	८५/७ जे.के. क्वाटर्स कानपुर
७१	परमानन्द चौधरी भारतीय वायुसेना	ग्राम-इमनसराय पोस्ट-पटोरी जिला-समस्ती पुर (बिहार)	१९०/२ शंकर नगर कानपुर
७२	प्रेमनारायन राय आई. ई. एल. कानपुर	ग्राम-पोस्ट-केशवापार तहसील-बाँसगांव जिला- गोरखपुर	प्लाट नं० ६७७/२ रावतपुर गाँव नाले के किनारे
७३	प्रेम प्रकाश राय आई०ई०एल० कानपुर	ग्राम-जमुआवाँ पोस्ट-ठेकमाबाजार जिला-आजमगढ़	३/२०४ विष्णुपुरी नवाबगंज, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७४ प्रह्लाद तिवारी आई. आई. टी. कानपुर	ग्राम-मानिकपुर पोस्ट-वरुराज जिला-मुजफ्फरपुर बिहार	४०५५/टाइप ४ आई.आई.टी. कम्प कानपुर
७५ प्रभुनाथ राय श्री गांधी आश्रम भण्डार कानपुर-७	ग्राम-किशुनदेव पट्टी पो०-किशुन देवपुर जिला-देवरिया	२२१ शिवकटरा कानपुर
७६ प्रभाकर राय गन फैक्ट्री कानपुर	ग्राम-चौकी पोस्ट-बरदह जिला-आजमगढ़	१२७/१२ विजय नगर, कानपुर
७७ प्रदीप कुमार राय प्लास्टिक रोजगार	ग्राम, पोस्ट- नरही बलिया	एन. एस. आई. कालोनी कल्यानपुर कानपुर
७८ ब्रह्मदेव राय मिडलैण्ड कम्पनी मेस्टन रोड कानपुर	ग्राम-तिलवाँ पोस्ट-रेवतीपुर जिला-गाजीपुर	५/५३, ऋषि नगर शुक्लागंज, उन्नाव
७९ बबुआ प्रसाद राय व्यपार	ग्राम-सिलाइच पोस्ट-बालापुर जिला-गाजीपुर	४५/४ किदवई नगर कालोनी, साइट नं०-१ कानपुर
८० ब्रह्मप्रकाश त्यागी अथर्ट नामिल कानपुर	ग्राम-विहंग, मुरादनगर गाजियाबाद	२ ए अथर्टनामिल अनवर गंज, कानपुर
८१ ब्रह्मदेव सिंह हिन्दी अनुवादक आई.आई.टी कानपुर	ग्राम-पो०-जक्खिनी वाराणसी	१२५ टाइप १ ओल्ड आई. आई टी. कानपुर
८२ डा० बद्री राय भौतिकी विभाग आई आई.टी. कानपुर	ग्राम-कुतुबपुर पोस्ट- बारा जिला-गाजीपुर	एस बी. आर. ए. I आई. आई. टी कानपुर
८३ विनायक ओझा एस० ए० एफ०	ग्राम- [illegible]टसा पोस्ट-बनियाँपुर जिला-छपरा बिहार,	२०३/२ शास्त्रीनगर, कानपुर
८४ बी० बी० सिंह एयर फोर्स	ग्राम-सारी पट्टी पोस्ट-भगवानपुर जिला-सिवान, बिहार	११६/४ एन-४ चकेरी, कानपुर
८५ बजरंगी राय एस० ए० एफ० कानपुर	ग्राम पोस्ट—खेटा, महुली खलीलाबाद, बस्ती	२९२/९ शास्त्री नगर कालोनी, कान
८६ नामदेव पाण्डेय गनफैक्ट्री	ग्राम-पाण्डेय टोला पो-परसाज गनी जि.-छपरा, बिहार	२५/६ शास्त्री नगर, कानपुर
८७ बाँकेलाल राय सरस्वती शिशु मन्दिर, गोविन्द नगर, कानपुर	ग्रा. पो.-उदिगवा, वरदह, आजमगढ़	१२८/७२३, 'के' किदवई नगर, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८८ विश्राम सिंह एच. ए. एल., कानपुर	ग्राम-सठीयाँ पो. सिकारगंज, वाराणसी	२१०/३ जे. के. कालोनी, कानपुर
८९ बृज विहारी राय रेल डाक व्यवस्था, कानपुर	ग्राम-अमरहट पो.-खुरहर, आजमगढ़	१२८/८०५. किदवई नगर, कानपुर
९० बीरबहादुर राय सी. आई. जी. एस.	घसिया, पो.-मधसिया, आजमगढ़	९/१३, एफ. एम. कालोनी, सिविल लाइन, कानपुर
९१ विशम्भर पाण्डे भविष्यनिधि विभाग, कानपुर	ग्राम, पो.-भोजापुर, बलिया	१३/९, परमट, कानपुर
९२ बी. एन. पाण्डे डिफेन्स विभाग		१३/६१, परमट, कानपुर
९३ बैकुण्ठ पाण्डे कानपुर टेक्सटाइल, कानपुर		परमट, कानपुर
९४ विक्रमा राय टेलीफोन विभाग	ग्राम-पो.-मालराड़ी, जि.-आजमगढ़	४१, सुभाष नगर, शुक्लागंज, उन्नाव
९५ वासुदेव राय इलाहाबाद बैंक, बड़ा चौराहा, कानपुर	ग्राम-पो.-रेवतीपर, गाजीपुर	१५/४५ए, सिविल लाइन, कानपुर
९६ विजय नारायन राय नेशनल गन हाउस, मेस्टन रोड, कानपुर	ग्राम-मंदुरी, पो.- बी. बी. पुर, जि०-आजमगढ़	३, चन्द्र नगर,लाल बंगला, कानपुर
९७ डा० भारत सिंह त्यागी इकोनामिक बाटनिस्ट (आयलसीड्स) कृषि वि. कानपुर	ग्राम-महमूदपुर, धामपुर, बिजनौर	सी-४५, राजकीय आवास कालोनी, कानपुर
९८ भगवत राय ओ.ई.एफ.सी., किला-कानपुर	ग्राम-पो.-अवधषट्टी, गाजीपुर	३१०४/, जूही लाल कालोनी, कानपुर
९९ भुनेश्वर प्रसाद ठाकुर आई.वी.आर.डी. एयरफोर्स, कानपुर	ग्राम-पपोतिया, फरहरा, वैशाली	१४२/१२, जे. के. कालोनी, कानपुर
१०० भूवनेश्वर शर्मा ए. सी. एम. एस., आई.आई.टी., कानपुर	ग्राम-नोनार पो--अमौना जि.- औरंगाबाद, बिहार	२४४, आई.आई.टी. कैम्पस, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०१ भवानी राय पुलिस विभाग	ग्राम-शेरपुर कलाँ, जि० गाजीपुर	२४/२६१, पटकापुर, कानपुर
१०२ मथुरा राय पेंशनर	ग्राम-मानिकपुर, छपरा, बिहार	४/१, केसा श्रमिक बस्ती, आजादनगर कानपुर
१०३ महावीर राय इलेकिट्रीशियन	ग्राम-मिश्रौली, पो. छाता, बलिया	शक्ति इलेक्ट्रिकल्स, आई.आई.टी. के कानपुर
१०४ मदन मोहन चौधरी शोध छात्र	ग्राम-गढ़िया, पो. बिठुआर (लौहर) जि.-मधुबनी, बिहार	सी-१, एस.बी.आर.ए., आई.आई.टी कानपुर
१०५ महेन्द्रसिंह त्यागी अधीक्षक, बी. आर.-II एम.ई.एस.,चकेरी, कानपुर	ग्राम, पो.-निनाडी, गाजियाबाद	टी/१९/१, गोल्ड फर्नीचर यार्ड, लाल बंगला, कानपुर
१०६ डा० एम. एस. त्यागी प्रोफेसर, विद्युत विभाग, आई आई. टी., कानपुर	ग्राम-पो.-रोहना कला, मुजफ्फर नगर	बंगला नं.-४०६२ आई. आई. टी कैम्पस, कानपुर
१०७ डा० मुनेश्वर राय स. प्रोफेसर कृषि वि. वि.,कानपुर	ग्राम-बेला पो -बेला सुलतानपुर, जि०-आजमगढ़	सी-२०, राजकीय आवास कालोनी रावतपुर
१०८ मुनेश्वर राय आलेख स० आयुक्त न्याय, कानपुर	ग्राम-चुली पो -चौसा जि.-भोजपुर, बिहार	६३/३, विजय नगर कालोनी, कानपुर
१०९ श्री महेश्वर प्रसाद सिंह अवकाश प्राप्त	ग्राम-बजलपुरा पो.-टेंघरा जि.-बेगुसराय, बिहार	प्लाट नं· १३४ बंगाली कालोनी हरजिन्द्र नगर कानपुर
११० श्री मुरारी शर्मा एयर फोर्स	ग्राम-विक्रम जि.-पटना, बिहार	१२२/३, एन-४ एरिया चकेरी
१११ श्री एम. एस. त्यागी उपनिदेशक (अभियन्त्रण)	ग्राम-पो -सबली जि -गाजियाबाद	रीजनललेवर इन्टीटयूट कैम्पस, सर्वोदय नगर कानपुर
११२ श्री महेन्द्र सिंह ग्रेजुएट स्टूडिओ पी. रोड कानपुर	ग्राम-श्रीकान्तपुर जि.-आजमगढ़	११६/३२ एन मार्केट काकादेव, कानपुर
११३ श्री मुनेश्वर सिंह गन फैक्ट्री अर्मापुर	ग्राम-चैनपुर पो.-मुस्ताफाबाद जि.-सिवान, बिहार	जी. २ टी/८२ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
११४ श्री मंलाप्रसाद सिंह कृषि विश्वविद्यालय कानपुर	ग्राम-पो.-बरैनी जि-मिर्जापुर	७०/१२ लेवर कालोनी पुराना कानपुर कानपुर
११५ श्री एम. के मिश्र सेल्स टैक्स कार्यालय, स्वरूप नगर कानपुर	सिहो मुजफ्फरपुर, बिहार	५ वाई. जी क्वाटर नवाबगंज, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११६ श्री यशपाल सिंह त्यागी उप-प्रबन्धक उ० प्र० रा. औ. विकास निगम	ग्राम-मुकारी जि.-मेरठ	सी–२५, सर्वोदय नगर कानपुर
११७ श्री राम नायक राय ए. एस. सी. सप्लाई कानपुर कैन्ट	ग्राम-पो.-अमरूपुर जि-गाजीपुर	४६ कम्पनी ए. एस. सी. कानपुर
११८ श्री राम आसरे सिंह आई. ई. एल कानपुर	ग्राम-रामपुर नगर पो. जलालपुर मजार जि.छपरा	१६८/५, विजय नगर कानपुर
११९ श्री रमाशंकर राय आई. जी. एस. सी. आई. कानपुर कैन्ट	ग्राम-महुला पो.दोहरीघाट जि.आजमगढ़	२९०/३ जुही लाल कालोनी कानपुर
१२० श्री रमाशंकर राय एयर फोर्स	ग्राम-लरई पो.आ-करहसी जि-भोजपुर	५८/६ जे. के. कालोनी कानपुर
१२१ श्री राजेन्द्र तिवारी उ० प्र० परिवहन विभाग आजदनगर कानपुर	ग्रा-पो.सिपाया जि. गोपालगंज, बिहार	७/१८ एच. बी. टी. आई. वेस्ट कैम्पस कालोनी कानपुर
१२२ श्रीराम कुमार मिश्रा से० वर्कशाप गुटैया, कानपुर	ग्राम-करतार वाजीतपुर पो-कुमई वाजीतपुर जि.बैसाली (बिहार)	नवाबगंज वाई. जी. क्वाटर कानपुर
२२३ श्री रामकिशोर राय ओ. एफ. सी	ग्रा-बड़गों पो. सिकारी गंज बाजार जि.बस्ती, उ० प्र०	जी. वन टी ९३ अरमापुर स्टेट कानपुर
१२४ डा० राजकुमार दीक्षित प्रोफेसर कृषि विश्वविद्यालय	ग्राम-पोस्ट-मोरता जि० गाजियाबाद	२/४९६ आजाद नगर कानपुर
१२५ राजनारायन राय बिजली पावर हाउस रिवर साइड कानपुर	ग्राम-पोस्ट—जमुंई जि० बलिया	६/३९ रानीघाट पुराना कानपुर
१२६ रमाशंकर पाण्डे एच०ए०एल० कानपुर	ग्राम-पो.-काशीपुर जिला-बलिया	४ एच०ए०एल० क्वाटर्स शंकर नगर चकेरी, कानपुर
१२७ राजगृह सिंह अभियंता एच. ए. एल. कानपुर	ग्राम, राजपुर पो.-पचखण्डा जिला-छपरा	४० ए तिवारीपुर आदर्श नगर कानपुर
१२८ राम सरनागत सिन्हा एच०ए०एल० कानपुर	ग्राम-कोरलहिया पो०-ससुआगढ़ जिला-सीतामढ़ी, बिहार	प्लाट नं० १२६ आदर्श नगर तिवारीपुर-II कानपुर
१२९ राम एकबाल शर्मा एच०ए० एल० कानपुर	ग्राम-पो०-नरमा जिला-मुजफ्फरपुर बिहार	१५९/५ जे. के. कालोनी कानपुर
१३० राजनीति प्रसाद एच०ए०एल० कानपुर	ग्राम-परनामा पो०-गोपालवाद जि०-नालन्दा, बिहार	२३५/५ जे०के० कालोनी, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३१ रामवचन ओझा	ग्राम- घनघड़हा पो०-बनियापुर जिला—छपरा, बिहार	म नं० ३०८ आदर्श नगर, कानपुर
१३२ राम बदन राय जे०के० रेयान कानपुर	ग्राम पो०-कनुआन जि०-गाजीपुर	१०६/९ जे० के० कालोनी, कानपुर
१३३ राजनाथ ओझा	ग्राम-कुम्हइला पोस्ट-सिकती जिला-छपरा, बिहार	११०१ आदर्श नगर तिवारीपुर कानपुर
१३४ रामाश्रय राय कानपुर टेक्सटाइल मिल लिमिटेड कानपुर	ग्राम-डोरा पोस्ट-सादात जिला—गाजीपुर	म नं. ८६/१५५ रायपुरवा, कानपुर
१३५ राजेन्द्र प्रसाद राय	ग्राम पो०-सिखड़ी जि०-गाजीपुर	३७१ काजी खेड़ा, कानपुर
१३६ रविन्द्र मोहन सिंह चौधरी आयुध निरीक्षणालय कानपुर	ग्रान-भाजीपुर पोस्ट-मिर्जापुर जिला-प्रतापगढ़	१२४/१०३ 'सी' ब्लाक गोबिन्द नगर कानपुर
१३७ रामपलट राय सी. वाई. एम. कार्यालय कानपुर	ग्राम पो०-माधोपुर धारंग जिला-आजमगढ़	म नं०२९६/१ सी पी सी. रेलवे कालोनी कलक्टर गंज
१३ राम लाल पनकी पावर हाउस कानपुर	ग्राम पो०-नीबी ३ सदर, आजमगढ़	१५/४१ पनकी पावर हाउस कालोनी कानपुर
१३९ रामसुख शर्मा गोपाल आटो० कोपरगंज	ग्राम-सहरोज जिला-आजमगढ़	साइट न० १ ३/५ किदवई नगर कानपुर
१४० राजेन्द्र प्रसाद राय लिपिक रिर्जव बैंक कानपुर	ग्राम-पोस्ट-थलईपुर जि० बलिया	प्लाट न०-१४/२ रतनलाल नगर
१४१ राजवीर सिंह त्यागी अध्यापक केन्द्रीय विद्यालय एयर फोर्स, चकेरी	ग्राम पो०-लक्खवाला जि० बिजनौर	१८१ बी सुभाष रोड लाल बगला कानपुर
१४२ रामचरन त्यागी ४ बी.आर.डी· एयर फोर्स	ग्राम-मगलाधीर पो० वरहन जिला-आगरा	१६०/१ एन-४ एयरफोर्स क्वार्टर्स कानपुर
१४३ रामअवध राय सेल्स टैक्स कार्यालय कानपुर	ग्राम-फरसरा बुजु ंग पो० गोठा जि० आजमगढ़	साइट न० २ ३६/६ श्रमिक बस्ती किदवई नगर, कानपुर
१४४ रामसागर सिंह	ग्राम-पो० साहपुर जि० मुजफ्फरपुर बिहार	३०२/१ शास्त्री नगर कालोनी कानपुर
१४५ राजेन्द्र पाण्डे अभियंत्रण विभाग	ग्राम-मानिकपुर पो० कमलपुर विथाउल जि० मुजफ्फरपुर बिहार	म० न०-२८६ नानकारी आई.आई.टी. कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४६ रामप्रवेश सिंह एच·ए.एल. कानपुर	ग्राम-रेवसा पो० सैयदराजा जि० वाराणसी	३/१४२ विष्णुपुरी कानपुर
१४७ रबिन्द्रराय गनफैक्टरी कानपुर	ग्राम-चौकी पो० लालगंज जि० आजमगढ़	पनकी आवास विकास क्वाटर कानपुर
१४८ रमाशंकर सिंह ई.एस.आई. ग्वालटोली	ग्राम-पो० बरैनी जि० मिर्जापुर	डी-१५, ई.एस.ई. कालोनी, सर्वोदय नगर कानपुर
१४९ रमेश चन्द्र राय रोडवेज	ग्राम-पो० कोटवाँ नारायनपुर जि० बलिया	३७०/५ शास्त्री नगर कानपुर
१५० रामसेवक सिंह जे०के० काटन मिल	ग्राम-अखतियारपुर पो० पालीगंज जि० पटना	१/२६ कमला नगर कानपुर
१५१ राम आधार सिंह जल संस्थान		
१५२ रामआसरे राय अध्यापक सुपर बाजार	ग्राम-हाँस नगर पो० हल्दी जि० बलिया	एल.आई. जी. इन्द्रा नगर कानपुर
१५३ आर.डी.राय अवकाश प्राप्त मुख्य अभियन्ता	ग्राम–पो० बीरपुर जि० गाजीपुर	टाइप ४/८१ अधिकारी आवास कालोनी पनकी
१५४ आर. एन· राय अधिषाशी अभियन्ता पनकी पावर हाउस		
१५५ राजेश्वर प्रसाद राय श्रम कल्याण अधिकारी	ग्राम-पो० सहरोज आजमगढ़	३६१ 'वाई' ब्लाक किदवई नगर कानपुर
१५६ राजबली सिंह त्यागी आर्डिनेंस फैक्टरी	ग्राम-पो० मोरटा जि० गाजियाबाद	१२८/९ जो ब्लाक किदवई नगर कानपुर
१५७ डा० आर.एन. सिंह प्राइवेट मेडिकल प्रैक्टिस	शहर-गोला गोकरनाथ जि० लखीमपुर खीरी	एच–२/१३३ किदवई नगर कानपुर
१५८ राजेन्द्र प्रसाद त्यागी गन फैक्ट्री	ग्राम-मोहम्मदपुर पो० आमद बागवत जि० गाजियाबाद	२६०/६ जूही लाल कालोनी कानपुर
१५९ डा० (कैप्टन) आर.एन· शर्मा प्राइवेट मेडिकल आफिसर	ग्राम-पो० इमलिया जि० विजनौर	८७/२०० आचार्य नगर कानपुर
१६० रमेश चन्द्र त्यागी फील्डगन फैक्टरी कानपुर	ग्राम-पो० भनेडा जि० गाजियाबाद	३३४/८ शास्त्री नगर कानपुर
१६१ राममूर्ति राय टेलीफोन विभाग	ग्राम-डोरा पो० सादात जिला-गाजीपुर	२ए/३६ पी.एण्ड टी. कालोनी कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३१ रामवचन ओझा	ग्राम- घनघड़हा पो०-बनियापुर जिला—छपरा, बिहार	म नं० ३०८ आदर्श नगर, कानपुर
१३२ राम बदन राय जे०के० रेयान कानपुर	ग्राम पो०-कनुआन जि०-गाजीपुर	१०६/९ जे० के० कालोनी, कानपुर
१३३ राजनाथ ओझा	ग्राम-कुम्हइला पोस्ट-सिकती जिला-छपरा, बिहार	११०१ आदर्श नगर तिवारीपुर कानपुर
१३४ रामाश्रय राय कानपुर टेक्सटाइल मिल लिमिटेड कानपुर	ग्राम-डोरा पोस्ट-सादात जिला— गाजीपुर	म नं. ८६/१५५ रायपुरवा, कानपुर
१३५ राजेन्द्र प्रसाद राय	ग्राम पो०-सिखड़ी जि०-गाजीपुर	३७१ काजी खेड़ा, कानपुर
१३६ रविन्द्र मोहन सिंह चौधरी आयुध निरीक्षणालय कानपुर	ग्रान-भाजीपुर पोस्ट-मिर्जापुर जिला-प्रतापगढ़	१२४/१०३ 'सी' ब्लाक गोबिन्द नगर कानपुर
१३७ रामपलट राय सी. वाई. एम. कार्यालय कानपुर	ग्राम पो०-माधोपुर धारंग जिला-आजमगढ़	म नं०२९६/१ सी पी सी. रेलवे कालोनी कलक्टर गंज
१३ राम लाल पनकी पावर हाउस कानपुर	ग्राम पो०-नीबी ३ सदर, आजमगढ़	१५/४१ पनकी पावर हाउस कालोनी कानपुर
१३९ रामसुख शर्मा गोपाल आटो० कोपरगंज	ग्राम-सहरोज जिला-आजमगढ़	साइट न० १ ३/५ किदवई नगर कानपुर
१४० राजेन्द्र प्रसाद राय लिपिक रिर्जव बैंक कानपुर	ग्राम-पोस्ट-थलईपुर जि० बलिया	प्लाट न०-१४/२ रतनलाल नगर
१४१ राजवीर सिंह त्यागी अध्यापक केन्द्रीय विद्यालय एयर फोर्स, चकेरी	ग्राम पो०-लक्खवाला जि० बिजनौर	१८१ बी सुभाष रोड लाल बगला कानपुर
१४२ रामचरन त्यागी ४ बी.आर.डी. एयर फोर्स	ग्राम-मगलाधीर पो० वरहन जिला-आगरा	१६०/१ एन-४ एयरफोर्स क्वार्टर्स कानपुर
१४३ रामअवध राय सेल्स टैक्स कार्यालय कानपुर	ग्राम-फरसरा बुजुंग पो० गोठा जि० आजमगढ़	साइट न० २ ३६/६ श्रमिक बस्ती किदवई नगर, कानपुर
१४४ रामसागर सिंह	ग्राम-पो० साहपुर जि० मुजफ्फरपुर बिहार	३०२/१ शास्त्री नगर कालोनी कानपुर
१४५ राजेन्द्र पाण्डे अभियंत्रण विभाग	ग्राम-मानिकपुर पो० कमलपुर विथाउल जि० मुजफ्फरपुर बिहार	म० न०-२८६ नानकारी आई.आई.टी. कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४६ रामप्रवेश सिंह एच.ए.एल. कानपुर	ग्राम-रेवसा पो० सैयदराजा जि० वाराणसी	३/१४२ विष्णुपुरी कानपुर
१४७ रबिन्द्रराय गनफैक्टरी कानपुर	ग्राम-चौकी पो० लालगंज जि० आजमगढ़	पनकी आवास विकास क्वाटर कानपुर
१४८ रमाशंकर सिंह ई.एस.आई. ग्वालटोली	ग्राम-पो० बरैनी जि० मिर्जापुर	डी-१५, ई.एस-ई. कालोनी, सर्वोदय नगर कानपुर
१४९ रमेश चन्द्र राय रोडवेज	ग्राम-पो० कोटवाँ नारायनपुर जि० बलिया	३७०/५ शास्त्री नगर कानपुर
१५० रामसेवक सिंह जे०के० काटन मिल	ग्राम-अखतियारपुर पो० पालीगंज लि० पटना	१/२६ कमला नगर कानपुर
१५१ राम आधार सिंह जल संस्थान		
१५२ रामआसरे राय अध्यापक सुपर बाजार	ग्राम-हाँस नगर पो० हल्दी जि० बलिया	एल.आई. जी. इन्द्रा नगर कानपुर
१५३ आर.डी.राय अवकाश प्राप्त मुख्य अभियन्ता	ग्राम–पो० बीरपुर जि० गाजीपुर	टाइप ४/८१ अधिकारी आवास कालोनी पनकी
१५४ आर. एन. राय अधिषाशी अभियन्ता पनकी पावर हाउस		
१५५ राजेश्वर प्रसाद राय श्रम कल्याण अधिकारी	ग्राम-पो० सहरोज आजमगढ़	३६१ 'वाई' ब्लाक किदवई नगर कानपुर
१५६ राजबली सिंह त्यागी आर्डिनेंस फैक्टरी	ग्राम-पो० मोरटा जि० गाजियाबाद	१२८/९ जो ब्लाक किदवई नगर कानपुर
१५७ डा० आर.एन. सिंह प्राइवेट मेडिकल प्रैक्टिस	शहर-गोला गोकरनाथ जि० लखीमपुर खीरी	एच–२/१३३ किदवई नगर कानपुर
१५८ राजेन्द्र प्रसाद त्यागी गन फैक्ट्री	ग्राम-मोहम्मदपुर पो० आमद बागवत जि० गाजियाबाद	२६०/६ जूही लाल कालोनी कानपुर
१५९ डा० (कैप्टन) आर.एन. शर्मा प्राइवेट मेडिकल आफिसर	ग्राम-पो० इमलिया जि० विजनौर	८७/२०० आचार्य नगर कानपुर
१६० रमेश चन्द्र त्यागी फील्डगन फैक्टरी कानपुर	ग्राम-पो० भनेडा जि० गाजियाबाद	३३४/८ शास्त्री नगर कानपुर
१६१ राममूर्ति राय टेलीफोन विभाग	ग्राम-डोरा पो० सादात जिला-गाजीपुर	२९/३६ पी.एण्ड टी. कालोनी कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१६२ राम राय मुख्य शंटिंग यार्ड कार्यालय	ग्राम–पो० कोटवा नारायनपुर जिला–बलिया	निरालानगर
१६३ रामबहादुर सिंह कानपुर टेक्सटाइल	ग्राम–पो० अनन्तापुर जिला–इलाहाबाद	२६४/३ जूही लाल कालोनी कानपुर
१६४ रामदेव तिवारी एच.ए.एल		८/४ एच.ए.एल. कालोनी, कानपुर
१६५ रमाशंकर पाण्डे		शंकर नगर कानपुर
१६६[a] राजेश्वरप्रसाद त्यागी		परमिया पुरवा कानपुर
१६६[b] कै० आर. एन. राय स्थानान्तरित	ग्राम–कथराई जि० भोजपुर बिहार	१२ सिखाली द्वारा ५६ ए.पी.ओ.
१६७ आर. के. राय		म न. ३१६ हरिजन्दर नगर–१ पूनम टाकिज के पास कानपुर–७
१६८ राजेन्द्र प्रसाद राय		टी/२९/५ ओल्ड एम.एच. एरिया कानपुर
१६९ लालता राय एलगिन मिल कानपुर	ग्राम–मसीना सगड़ी, आजमगढ़	३२२/९ शास्त्री नगर कानपुर
१७० लक्ष्मी शंकर सिंह		४३३ सी.पी.पी. कालोनी
१७१ लल्लन राय वर्कशाप रोवर साइड	ग्राम—बसावनापुर पोस्ट–ढेणवा जिला–गोपालगंज, बिहार	११७/८७, काकादेव कानपुद
१७२ लल्लन राय उत्तर रेलवे इन्सपेक्टर	ग्राम—पोस्ट–मुरेरा जिला–गाजीपुर	
१७३ ललित प्रसाद	खोचवा वाराणसी	२९८/५ जूही लाल कालोनी कानपुर
१७४ विनोद राय सहायक अभियन्ता पनकी	ग्राम–पोस्ट–भीमवर आजमगढ़	टाइप ४–६३ अधिकारी आवास कालोनी, पनकी
१७५ वशिष्ठ प्रसाद सिंह एलिम्को कानपुर	ग्राम–कचनार पोस्ट—सिवान जिला—बिहार	न० ३२४ ए नानकारी, आई.आई.टी कानपुर
१७६ विन्ध्याचल राय यू० पी० पुलिस	ग्राम–पोस्ट–एमौना थाना सेमरी जिला—आरा बिहार	कृष्ण नगर थाना चकेरी कानपुर
१७७ विनोद त्यागी आडिट एकाउन्ट आफिस	ग्राम पो०—नावला जि० मुजफ्फरनगर	११२/२२४ स्वरूप नगर कानपुर
१७८ सर्वदेव राय आर्डिनेन्स फैक्टरी	ग्राम–शेरपुर खुर्द पोस्ट–शेरपूर जिला—गाजीपुर	१६१/३ जूही लाल कालोनी, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७९ सुरेन्द्र प्रसाद राय आई.आई.टी.	ग्राम पोस्ट—बड़गों जिला—बस्ती	२०३३ टाइप.३ आई.आई.टी. कानपुर
१८० सुरेन्द्र सिह ग्रेजुएट टेलर	ग्रा० पोस्ट—श्रीकान्तपुर आजमगढ़	११७/३२ एन मार्केट काकादेव कानपुर
१८१ सिया शरण सिंह एयर फोर्स कानपुर	ग्राम—पो० भदौर जि० पटना विहाग	लक्ष्मी निवास न० २५४ आदर्श नगर जाजमऊ, कानपुर
१८२ सुरेन्द्र प्रताप मिश्र सहायक संख्याधिकारी	ग्राम—देवहल पो० दुवेपुर जिला—इलाहाबाद	३/२०५ ए विष्णुपुरी, नवावगंज कानपुर
१८३ सुरेन्द्र सिंह सर्वेपर	ग्राम—छोटा नवादा पो० खुशरुपुर जि० पटना	१२९/७ जे० के० कालोनी जाजमऊ, कानपुर
१८४ सूरज सिंह त्यागी कल्याण अधिकारी	ग्राम—पो० नगटौर जिला—बिजनौर	बंगला न० १३ स्वदेशी काटन मिल कानपुर
१८५ सुरेन्द्रनाथ शर्मा रेलवे टेलीग्राफ आफिस	ग्राम पो०—खाई जिला इलाहाबाद	२२७ फेथफुल गंज कानपुर
१८६ सुरेशचन्द्र शर्मा सहायक स्टेशन मास्टर	ग्राम—जलालपुर पो— कछवा जिला—मिर्जापुर	५३/६ ब्लाक '६' गोविन्द नगर कानपुर
१८७ सतीश चन्द्र राय डाक व तार विभाग	ग्राम —पटखोली, पोस्ठ—घुघली जिला—गोरखपुर	६४ वासन्ती नगर जूही. कानपुर
१८८ एस० डी० त्यागी आई० जी० एस० कानपुर	ग्राम—जडौदा पान्डा, जिला—सहारनपुर	ई. टी—४ मध्यरोड अर्मापुर स्टेट कानपुर
१८९ सत्यपाल त्यागी कार्यालय उपनिदेशक	ग्राम —रोहाना, जि०—मुजफ्फर नगर	१/१४२ नबाब गंज कानपुर
१९० एस० बी० राय गन फैक्टरी	ग्राम—पोस्ट—विसुन पुर जिला—गोरखपुर	जी. आई/टी—२३३ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
१९१ श्रीपति राय जें० के० काटन मिल	ग्राम—पोस्ट—कोटवाना नारायनपुर जिला—बलिया	३७५/४ शास्त्री नगर कालोनी, कानपुर
१९२ एस. एन. राय	ग्राम—पोस्ट—ढ़ढ़नी, जिला—गाजीपुर	८६/८ जे. के. क्वाटर, जरीब चौकी कानपुर
१९३ शिवदत्त राय ओ० ई० एफ फूलवाग	ग्राम—पोस्ट—अवघट्टी, जि०—गाजीपुर	३०५/५ जूही लाल कालोनी, कानपुर
१९४ शिवकुमार राय स्वास्थ्य विभाग	ग्राम—पोस्ट गौसपुर, जिला—गाजीपुर	२५ एम. आई. जी सेक्टर-I क्वार्टर्स हेमन्त बिहार, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९५	श्यामलाल राय प्राध्यपक	ग्राम–पोस्ट–सहरोज जिला—आजमगढ़	सा० नं० १ ब्लाक ३/५ किदवई नगर कानपुर
१९६	शिवचन्द सिंह रोडवेज	ग्राम—सेमरी (गगनपुर पोस्ट—कछवाँ जिला—मिर्जापुर	५३/१९ ब्लाक ६, गोविन्द नगर कानपुर
१९७	शिवचरन त्यागी एच० ए० एल	ग्राम—पोस्ट—चौकड़ा जिला–मुजफ्फर नगर	३४ बी गाँधी ग्राम जी. टी. रोड कानपुर
१९८	हनुमान राय सुरक्षा-बल विभाग	ग्रामा—इटौंआ पोस्ट—महऊल जिला–गोरखपुर	अनवर गंज स्टेशन कानपुर
१९९	हीरा राय पनकी पावर हाउस कानपुर	ग्राम—सहनुडीह पोस्ट —वड़गहन जिला—आजमगढ़	२०/३१ न्यू कालोनी पनकी पावर
२००	हरदयाल राय स्वदेशी मिल	ग्राम–बंशीपुर पोस्ट—ईश्वरपुरा जिला—भोजपुर, बिहार	२५०/८ वावू पुरवा लेवर कालोनी कानपुर
२०१	हनुमान प्रसाद राय	ग्राम रेवटा पोस्ट—खलीलावाद जिला—वस्ती	११७/१८४ एल ब्लाक नवीन नगर काकादेव कानपुर
२०२	हरीशंकर सिंह आई० आई० टी० कानपुर	ग्राम—चोरमा पोस्ट–बसन्तपुर जिला—सिवान (विहार)	३२४ ए नानकारी आई० आई० टी० कानपुर
२०३	हंसलाल राय लोहिया, कानपुर	ग्राम—रेवती पुर जिला—गाजीपुर	३५५ नानकारी आई. आई, टी कानपुर
२०४	हरेन्द्रनाथ राय एयर फोर्स	ग्राम–पोस्ट–कोटवाँ नारायनपुर जिला—वलिया	२६/३ जे० के० कालोनी, कानपुर
२०५	एच० के० त्यागी एफ० सी० आई० कानपुर	ग्राम–पोस्ट–भलपूरा जिला–मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)	बी २७८ श्याम नगर कानपुर
२०६	त्रिभुवन राय टेलीफोन माल रोड	ग्राम—डोरा पो०–सादात जिला–गाजीपुर	१/१३ वेगम पुरवा कालोनी कानपुर
२०७	त्रिवेणी राय टेलीफोन	ग्राम–पोस्ट—तलवल जिला–गाजीपुर	एच–११ अनवर गंज पोस्ट आफिस कैम्पस कानपुर
२०८	त्रिलोकी नाथ राय टी० टी०	ग्राम—गड़ुआ मकसूद पुर त्रिलो—गाजीपुर	२१० ए रेलवे क्वाटर कानपुर सेन्ट्रल
२०९	डा० धीरेन्द्र नारायण शर्मा एसोसिएट प्रोफैसर, कृषि रसा.	ग्राम–रामनगर पोस्ट—सिरसा, जिला—इलाहाबाद	२/४९ आजाद नगर कानपुर
२१०	डा० नन्दराम सिंह एसोसिएट प्रोफेसर कृषि रसा०	ग्राम–डेहरी पोस्ट—केराकत जिला–जौनपुर	३/२०४ विष्णपुरी, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२११ विनोद त्यागी बी० एस० इन्डस्ट्रीज	२५ डिप्टी गंज मोरादाबाद	४७/६, हीरागंज, कालपी रोड कानपुर
२१२ रामजी पाण्डे सहायक प्राचार्य (रसा० वि०)	ग्राम–पोस्ट–रेवती जिला–बलिया	३३/८ लेवर कालोनी विष्णुपुरी कानपुर

नाम	पता
२१३ अमर नाथ शर्मा अवकाश प्राप्त भंडार अधिकारी, एच० ए० एल०	२३३/६ जे० के० कालोनी जाजमऊ, कानपुर
२१४ अवध किशोर राय सहायक स्टेशन मास्टर उ० रे०	ग्राम — विसवा सरकारी पोस्ट—पकड़ी बुजुर्ग जि०—देवरिया
२१५ अजय कुमार राय	जी–१/टी० २३३ अर्मापुर स्टेट कानपुर
२१६ अनिल कुमार राय न्यू विक्टोरिया मिल ग्वाल टोली कानपुर	८/१ फोर्ड मैकडानल कालोनी कानपुर
२१७ अशोक कुमार शर्मा टी० टी० उ० रे० सेन्ट्रल स्टेशन कानपुर	रेलवे क्वाटर, कानपुर सेंट्रल कानपुर
२१८ अवधेश कुमार राय तारघर सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन कानपुर	भाटिया भवन गोविन्द नगर कानपुर
२१९ अनिल कुमार ओझा	१२८/३१७ एच–२ किदवई नगर कानपुर
२२० अमर देव राय उद्योग विभाग	शास्त्री नगर कालोनी कानपुर
२२१ अनिल कुमार राय दलहन निर्देशालय कल्यानपुर कानपुर	मसवानपुर कानपुर
२२२ अम्बिका राय कृषि विश्व विद्यालय कानपुर	ई—९, राजकीय आवास कालोनी रावतपुर कानपुर
२२३ आजादवीर त्यागी आई० ई० एल० कानपुर	के–४१, सर्वोदय नगर कानपुर
२२४ उमाशंकर सिंह	१०६/९, जे० के० कालोनी कानपुर
२२५ उदय शंकर शर्मा	४८५/६, शास्त्री नगर कालोनी कानपुर
२२६ उमेश चन्द्र त्यागी	१०९/२५२राम कृष्ण नगर कानपुर
२२७ ओम प्रकाश राय टी० टी० उत्तर रेलवे	रेलवे क्वाटर्स सेन्ट्रल स्टेशन कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२२८ कृष्ण कान्त त्यागी जूडीसीयल मजिस्ट्रेट कानपुर	टी–४/३१ सरकिट-हाउस कालोनी कानपुर
२२९ कल्पनाथ राय रोडवेज वर्कशाप कानपुर	डब्लू० बी० २६, आर० सी० डब्लू कालोनी रावतपुर कानपुर
२३० कमलेश्वर प्रसाद सिन्हा ओ० पी० एफ० कानपुर	३९८, यशोदानगर कानपुर
२३१ डा० कपिल कुमार त्यागी	१२४/४८९, ब्लाक 'ए' गोविन्द नगर कानपुर
२३२ कल्प दत्त त्यागी अथर्टन वेस्ट मिल्स	बी० २ए/८४/४८ अर्थटन मिल अनवर गंज कानपुर
२३३ के० पी० सिंह एयर फोर्स स्टेशन चकेरी कानपुर	१०३/१ पिन्टू नगर चकेरी कानपुर
२३४ खरहन सिंह टलीफोन आपरेटर	२ ए/३४ पी० एण्ड टी कालोनी १९/८२ पनकी पावर हाउस कालोनी कानपुर
२३५ गोपाल जी चौधरी सी० आई० टी एण्ड सी० के० पी०	ब्लाक २६८/२ बाबू पुरवा कालोनी कानपुर
२३६ गोरख नाथ ओझा	१२८/४४५ एच–२ किदवई नगर कानपूर
२३७ चन्द्र कान्त त्यागी	७७/६० कुली बाजार कानपुर
२३८ चन्द्र शेखर नाथ त्यागी अध्यापक	८७/२०० आचार्य नगर कानपुर
२३९ चन्द्र पति राय मेडिकल स्टोर	विजय मेडिकल स्टोर ब्रह्म नगर चौराहा नेहरू नगर कानपुर
२४० चन्द्र भूषण सिंह आई० ए० एफ०	आई० ए० एफ० जे० के० कालोनी कानपुर
२४१ जगदीश प्रसाद त्यागी	३/२ डब्लू एस. कालोनी ५ ब्लाक गोविन्द नगर कानपुर
२४२ जय नारायन ठाकुर	साइड नं० १ '७७/३ किदवई नगर कानपुर
२४३ जगन्नाथ सिंह	२५२/९ बाबू पुरवा कालोनी कानपुर
२४४ जै शंकर राय पनकी पावर हाउस	२०/३२ न्यु कालोनी पनकी पावर हाउस कानपुर
२४५ जगदम्बा राय	१२२/१० विजय नगर कालोनी कानपुर
२४६ जितेन्द्र नाथ सिंह सेन्ट्रल वर्कशाप कानपुर	एल ११७/२३० नवीन नगर दादानगर कानपुर
२४७ जे० के०राय	जे० के० कालोनी कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४८	जयप्रकाश राय टेलीफोन विभाग	ए३६ पी. एण्ड टी. कालोनी कानपुर
२४९	जानकी शरण सिन्हा गनफैक्ट्री, कानपुर	जी १/११८ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
२५०	देवेन्द्र नाथ राय सचिव, उ०प्र० लोक सेवा संघ	ग्राम–रामपुर पो०—रेवती पुर जिला–गाजीपुर
२५१	दिनेश कुमार त्यागी भारतीय पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ विभाग	ग्राम-घीसू-खेरा पो०–चरथावल जिला-मुजफ्फर नगर
२५२	धर्मपाल त्यागी ऊँचाहार थर्मल पावरस्टेशन रायबरेली	ग्राम पोस्ट–नीमीणा जिला–मुजफ्फर नगर
२५३	धर्मराज सिंह गन फैक्ट्री, कानपुर	जी १/१७ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
२५४	एन. एन. राय बाल चिकित्सालय मेडिकल कालेज, कानपुर	७/३७ मेडिकल कालेज कैम्पस
२५५	पूरण सिंह त्यागी सेन्ट्रल एक्साइज	२ए/१०७ आजाद नगर, कानपुर
२५६	पी० एस० तिवारी	न्यू टाइप/III-४१ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
२५७	फुल्लन राय अवर अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण कानपुर	ग्राम- कमचरी पो०- कमरवा जिला-आजमगढ़
२५८	फलेना राय गनफैक्ट्री	ब्लाक नं० १० म० नं० ९४/१९ गोविन्द नगर, कानपुर
२५९	बृजराज शर्मा एयरफोर्स	६१ एफ शिवकटरा हरिजन्दर नगर, कानपुर
२६०	बद्री प्रसाद राय अधीक्षक सहायक निदेशक कार्यालय हैण्डलूम, अलीगढ़	ग्राम-सहरोज पो०-कोपागंज आजमगढ़
२६१	बी० एन० सिंह	ई० एस० आई० विक्टोरिया मिल
२६२	विजय शंकर सिंह	मिश्रा कालोनी गंगाघाट, उन्नाव
२६३	बैजनाथ राय कोर्ट इन्सपेक्टर कानपुर	ट्राफिक पुलिस लाइन क्वाटर्स पुलिस लाइन कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	गीतानगर, कानपुर
२६४ बी० पी० सिंह जनरल मैनेजन (परसनल) आई० सी० आई० हाउस, कलकत्ता	
२६५ बी० शर्मा आई० आई० टी० कानपुर	५११ नानकारी आई० आई० टी० कानपुर
२६६ बिजय कुमार सिंह	नानकारी आई० आई० टी० कानपुर
२६७ बीरेन्द्र पाल त्यागी अपर अभियन्ता पनकी पावर हाउस, कानपुर	१९/४२ नई कालोनी, पनकी कानपुर
२६८ बिनोद राय अभियन्ता पनकी पावर हाउस, कानपुर	IV ६३ अधिकारी आवास कालोनी
२६९ बालेश्वर राय	९१ ब्लाक किदवई नगर, कानपुर
२७० बंशूराय टेलीफोन	१०७/२८१ ब्रह्मनगर, कानपुर
२७१ बिनोद कुमार त्यागी	११२/२२४ स्वरूपनगर, कानपुर
१७२ विरेन्द्र सिंह त्यागी	८६/३५७ देवनगर, कानपुर
२७३ बी० एन० राय	१११/ए२७४ अशोक नगर, कानपुर
२७४ भमिनाथ राय पुलिस विभाग	बजरिया थाना कानपुर
२७५ भारत सिंह ठेकेदार	१११/३२४ अशोक नगर कानपुर
२७६ मंगल राय एफ० पी० ओ० डीपार्ट आई० ई० एल० पनकी कानपुर	ग्राम—कानाराइन पोस्ट—मसूर चक जि० — समस्तीपुर विहार
२७७ महेन्द्र सिंह त्यागी	टी १९/१ रामगली लाल बंगला कानपुर
२७८ महेश प्रधान दरोगा जी० आर० पी० कानपुर सेन्ट्रल	ग्रा० पो०—भड़माडीह जि०—गाजीपुर
२७९ मधुसूदन चौधरी आई० आई० टी० कानपुर	नानकारी आई० आई० टी० कानपुर
२८० महातम राय	५ इन्डस्ट्रियल स्टेट कालपी रोड कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२८१	राजकिशोर राय इण्डिया कोटिंग कम्पनी फजलगंज कानपुर	ग्रा० पो०—मानिकपुर जि० — छपरा विहार
२८२	राजेश्वर प्रसाद त्यागी यू० डी० सी० टेक्सटाइल मिल रायबरेली	ग्राम पोस्ट—नावला जिला—मुजफ्फर नगर
२८३	राम प्रीत सिंह रोडवेज वर्क शाप रावतपुर	८/७ लेवर कालोनी पुराना कानपुर
२८४	रामचन्द्र सिंह रोडवेज वर्क शाप रावतपुर	८/७ लेवर कालोनी पुराना कानपुर
२८५	राम नारायण शर्मा	६/३९ रानी घाट पुराना कानपुर
२८६	रामजी पाण्डे कृषि विश्व विद्यालय, कानपुर	विष्णुपुरी, कानपुर
२८७	राम एकबाल पाण्डे	६३८ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
२८८	राम किशोर राय	जी० आई० टी०/९३ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
२८९	राजेन्द्र प्रसाद त्यागी पुलिस विभाग	थाना ग्वालटोली, कानपुर
२९०	राम पाल त्यागी	भार्गव स्टेट मालरोड, कानपुर
२९१	रविन्द्र कुमार राय	जे० के० कालोनी, कानपुर
२९२	रमा शकर राय	२८/६ जे० के० कालोनी कानपुर
२९३	रामेश्वर प्रसाद मिश्र यू. पी. एस एस. आई-सी सर्वोदय नगर, कानपुर	१५ बी० सर्वोदय नगर कानपुर
२९४	राजा राम कुँवर	१२५/५ विजय नगर कालोनी, कानपुर
२९५	आर. एस. शर्मा बिजली कार्यालय	१५/४ केसा कालोनी आजाद नगर कानपुर
२९६	रामनेवाज सिंह अध्यापक	नानकारी, कानपुर
२९७	आर० पी० सिंह	अधिकारी आवास पनकी
२९८	आर० सी० राय	९०४ बी. ट्रैक्सन कालोनी नया पुल ट्रान्सपोर्टनगर कानपुर
२९९	रामसेवक प्रसाद सिंह जीवन बीमा निगम	१२८/१०६ 'वाई' ब्लाक किदवई नगर, कानपुर
३००	राम चन्द्र राय दरोगा, पुलिस	ग्राम-विशुनपुर, पो०-धनौड़ा जिला-गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३०१ राम औतार राय	७५/७ सफेद, कालोनी जूही, कानपुर
३०२ रामाश्रय राय	८३/२६३ ए जूही कानपुर,
३०३ सुरेन्द्र पाल त्यागी आई. आई. टी. रायबरेली	ग्रा. पो. बरला, जि०—मुजफ्फर नगर
३०४ सुरेश कुमार त्यागी	ग्रा.—केन्दुकी, डा—गोगाली, जि०—सहारनपुर
३०५ सुनील कुमार त्यागी	ग्रा.—डा.—भूनी, जि.—मेरठ
३०६ सुरेन्द्र नाथ राय सम्प्रति सामान्य प्रबन्धक जि. उ. केन्द्र वाराणसी	ग्रा. पो.—देवारिया, जि.—गाजीपुर
३०७ सूरज कुमार राय सी आई. डी·	२ए/१३३, आजाद नगर. कानपुर
३०८ सत्य प्रकाश त्यागी एस. ए, एफ.	न्यू टाइप ३/१६९, अर्मापुर स्टेट
३०९ एस पी. सिंह गनफैक्ट्री	न्यू टाइप ३-५९, अर्मापुर स्टेट, कानपुर
३१० एस. एन. शाही ओ. एफ· सी.	जी. आई./टी. १६४, अर्मापुर, कानपुर
३११ सत्येन्द्र कुमार त्यागी सेन्ट्रल बैंक कानपुर	
३१२ एस. के. सिंह स्थानान्तरित पटना	यूनाइटेड इन्डस्ट्रीयल बैंक पी. पी. एन. मार्केट
३१३ सुधीर कुमार	१५९/५ जे. के. कालोनी
३१४ सुरेन्द्र कुमार त्यागी सेन्ट्रल वर्कशाप	एफ—२ सेन्ट्रल वर्कशाप कालोनी, रावतपुर, कानपुर
३१५ सतेन्द्र नारायण सिन्हा टेकनिशियन ब्लड बैंक	टाइप—II १४८, मेडिकल कालेज कैम्पस
३१६ सीताराम राय एस. ए. एफ.	१२५/४ विजय नगर कालोनी कानपुर
३१७ संजय कुमार राय	१२३/८ विजय नगर कालोनी
३१८ सुखवीर सिंह त्यागी	२८/४ सेवाग्राम कालोनी गोबिन्द नगर, कानपुर
३१९ शम्भू नाथ राय जिला होम गार्ड कार्यालय	१२५/८१ गोविन्दनगर, कानपुर
३२० एस. के. राय	८३/ए/६ जूही, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३२१	सतीश चन्द्र राय	६४/वासन्ती नगर, जूही
३२२	सुभाष राय टी.टी.	रेलवे क्वार्टर्स कानपुर सेन्ट्रल, कानपुर
३२३	सर्वदेव राय	जूही लालकालोनी, कानपुर
३२४	शिवचरण त्यागी	८/६२ कृष्णनगर, कानपुर
३२५	शिवशंकर शर्मा एच. ए. एल.	२९/१० एच. ए. एल, कालोनी, कानपुर
३२६	शिवपाल त्यागी	३ ए/२५ आजाद नगर, कानपुर
३२७	शिवनाथ पाण्डे	नवाबगंज, कानपुर
३२८	शम्भू शाही एस. ए. एफ.	जी–१–टी/१७४ अर्मापुर स्टेट, कानपुर
३२९	शिवनाथ सिंह त्यागी	ई. टी.–४६ अर्मापुर स्टेट
३३०	शिवदत्त त्यागी	
३३१	शिवप्यारे राय एलगिन मिल	८/१ फोर्ड मैकडानल कालोनी, कानपुर
३३२	एस. पाण्डे	१३ डी. डिफेन्स कालोनी, सरस्वती शिशु मन्दिर के पास कानपुर
३३३	शिवजी राय एच. ए. एल कानपुर	२२९/३ जे. के. कालोनी, कानपुर
३३४	श्याम सुन्दर सिंह आई. ए. एफ.	आदर्श नगर, कानपुर
३३५	शम्भूनाथ राय	साइट नं० २ ब्लाक नं० [४३/२ किदवई नगर, कानपुर
३३६	हेमन्त कुमार त्यागी	बी. २७८ श्याम नगर, कानपुर
३३७	हरी प्रकाश त्यागी	७४/१५ बी० ब्लाक गोविन्द. कानपुर
३३८	हृदय नारायन सिंह टेलीफोन	२ ए/४४ पी. एण्ड टी. कालोनी, कानपुर
३३९	सुभाषचन्द्र राय, प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक	ग्रा. पो० वेटावर, जि–०गाजीपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३४०	राम नगीना राय अभियंता सिंचाई विभाग	ग्रा. पो. सुहवल जि.–गाजीपुर
३४१	देवनाथ राय से. नि. शाखा प्रबन्धक बड़ौदा बैंक	ग्रा.–बीबीपुर जि०–आजमगढ़
३४२	मूर्तिनारायण राय से० नि० मेम्बर सेल्स टैक्स ट्रिब्यनल, (उ० प्र०)	ग्रा. पो.–सुहवल जि.–गाजीपुर (उ० प्र०)
३४३	चन्द्रमाल राय सहायक आयकर आयुक्त (वाराणसी)	ग्रा. पो.–सिमरी, जि·–भोजपुर (बिहार)
३४४	कमलनारायण राय पुलिस अधीक्षक उ० प्र०	ग्रा. पो.–सुहवल, जि –गाजीपुर उ. प्र.
३४५	प्रेम नारायण राय उप–आयुक्त विक्रीकर उ. प्र.	ग्रा.–गहुनी, पो.–मेहनगर, जि.–आजमगढ़
३४६	जयशंकर प्रसाद राय प्रवक्ता, एच. वी. टी. आई., कानपुर	एच. बी. टी. आई. कैम्पस आजाद नगर, कानपुर
	इन्द्रदेव नारायन राय से. नि. जिलाधीश	ग्रा. पो.–सुहवल जि.–गाजीपुर
३५०	अशोककुमार मोहन	१२५/४ ब्लाक नं० 'के' गोबिन्द नगर, कानपुर
३५१	अजीतसिंह मोहन	६२५ काजीखेड़ा, हरजेन्द्र नगर, कानपुर
३५२	आनन्द स्वरूप बक्शी (छिब्बर)	१२६/४६, 'एच' ब्लाक गोबिन्द नगर, कानपुर
३५३	इन्द्रपाल मोहन	३८१, ब्लाक १३ गोविंद नगर, कानपुर
३५४	ईश्वरदास वैद्य	२२/१९ ब्लाक नं० १३, गोबिन्द नगर, कानपुर
३५५	ओंकार नाथ वाली	११८/२१०-ए, कौशलपुरी गुमटी नं० ५, कानपुर
३५६	ओ० पी० लव	१४७/६ बाबूपुरवा कालोनी, किदवई नगर, कानपुर
३५७	ओम प्रकाश छिब्बर	१२५/२० ब्लाक 'के' गोबिन्द नगर, कानपुर
३५८	इकबाल चन्द्र दत्ता	११७/४८ ब्लाक 'के' सर्वोदय नगर, कानपुर
३५९	कुलदीप लाल छिब्बर	१२०/१२५ लाजपत नगर, कानपुर
३६०	कृष्ण लाल दत्ता	११८/५४६, सुन्दर नगर, कानपुर
३६१	कैलाश चन्द्र वमवाल	१२२/७३ सरोजनी नगर, कानपुर
३६२	के० जी० छिब्बर	२६३, एन-२ रोड, लाल बगला हरजेन्द्रनगर, कानपुर
३६३	के० सी० वाली	२०२ बी-२ हरजेन्दर नगर, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३६४ कैलाशचन्द्र मोहन	कबाड़ी मार्केट, गुमटी नं० ५.
३६५ के० सी० छिब्बर	२१/३, चरनसिंह, कालोनी
३६६ खेमराज मोहन	१२५/२५ ब्लाक नं० २ 'के' गोविन्द नगर, कानपुर
३६७ चमन लाल बमवाल	१२६/११ ब्लाक नं० 'जी' गोविन्दनगर, कानपुर
३६८ जोगेन्दर सिंह दत्ता	१२४/१८५ ब्लाक नं० 'बी'
३६९ जोगेन्दर कुमार दत्ता	२३८/४, बाबूपुरवा कालोनी, किदवई नगर
३७० तारा चन्द्र दत्ता	६७/१७ ब्लाक नं० ७ गोविन्द नगर, कानपुर
३७१ टेकचन्द्र बमवाल	डी-५४, बीडी क्वाटर, नटराज के पास गोविन्द नगर कानपुर
३७२ श्रीमती पुष्पा छिब्बर	१८/४६ महात्मा गांधी रोड, फूलबाग
३७३ पुरष्कार राजवाली	५९/२३ ब्लाक नं० 'ओ' गोबिन्द नगर, कानपुर
३७४ प्रेमनाथ लव	१८/१० पान्डुनगर, कानपुर
३७५ प्रेम नाथ दत्ता	मैनेजर, कैनिको ड्राई क्लीनर्स गुमटी नं०-५ कानपुर
३७६ प्रेमनाथ वैद्य	४/७ अहाता रूकमनी देबी बकर मन्डी, कानपुर
३७७ पी० बक्सी	८/२ कृष्णा नगर, कानपुर
३७८ पी० सी० दत्ता	
३७९ पदम कान्त वैद्य	९४ ए, कृष्णा नगर, नारायण ताला बिल्डिंग
३८० बी० के० बाली रीजनल डाइरेक्टर, डाइरेक्टोरेट आफ एपेरेन्टीस सीप ट्रेनिंग, कानपुर	सी. टी. आई. कैम्पस गोबिन्द नगर,
३८१ बी० एल० बाली	१०/८०३, कृष्णा नगर, कानपुर
भुवनेश्वर दत्ता	१४९, लाल क्वाटर, नटराज के पास गोविन्द नगर, कानपुर
३८२ भाई कस्तूरी लाल छिब्बर	१३/१ चरनसिंह कालोनी कानपुर
३८३ मेहता बृज बिहारी लाल छिब्बर मेडिकल प्रेक्टिशनर रामनारायन-बाजार कानपुर	२/२२ द्वारिकाधीस रोड, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३८३ मेहता विश्वम्भर नाथ निरीक्षक नगर महापालिका कानपुर	३७० ब्लाक १३ गोबिन्द नगर, कानपुर
३८४ मेहता चुन्नीला वैद्य मोहन मीकिन ब्रुअरीज लखनऊ,	१२५/४७ के ब्लाक गोबिन्द नगर, कानपुर
३८५ मेहता चुन्नी लालमोहन रिवर साइड पावर हाउस, कानपुर	१२/१० नरायन दर्जी का हाता ग्वाल टोली, कानपुर
३८६ मेहता दौलत राम दत्त मेहता बीपारिंग हाउस, गुरु द्वारा जी.टी. रोड	११८/९९१ हनुमान पार्क, कौशलपुरी, कानपुर
३८७ मेहता द्वारिकानाथ छिब्बर एच० ए० एल०	लेवर कालोनी गोबिन्द नगर
३८८ मेहता योगेन्द्र कुमार दत्त प्रो० पंजाब डीजल आयल इन्जन्स अशोक नगर, कानपुर	२३८/४ बाबु पुरवा लेवर कालोनी कापुर
३८९ मेहता मनोहर लाल लव बी. आर. डी. चकेरी कानपुर	१११ए/२८ अशोक नगर, कानपुर
३९० मेहता खेम राज मोहन प्रो० आटो वर्क शाप	के/१२५ गोविन्द नगर, कानपुर
३९१ मेहता भैया दास मोहन प्रो० डेरी फार्म, गोबिन्द नगर कानपुर	७०/१२ ब्लाक नं०७ गोबिन्द नगर कानपुर
३९२ मेहता मोहन वेद प्रो. करतारपुर फर्नीचर हाउस, पी. रोड	१०६/३७५ पी. रोड, कानपुर
३९३ मेहता एम. एल. दत्त कैशियर मिलिटरी डेरी फार्मा	रेजी डेन्सियल क्वार्टस मिलिटरी डेरी फार्म
३९४ मेहताप्राण नाथ लव सी. पी. डब्लू. डी. इलेक्ट्रीसियन	११७/६२४ पाण्डुनगर
३९५ मेहताराम प्रकाश दत्त न. १ वी. आई. डी. आई. आर. एस.	१४८/६ लेवर कालोनी डबल रुम जूही कला, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३९६	मेहता ताराचन्द्र दत्त आफिस सुपरिनटेन्डेन्ट मकराबर्टर अस्पताल	६७/१७-१८ गोविन्द नगर, कानपुर
३९७	मेहता विश्वमित्र वमवाल कस्टम इन्सपेक्टर सेन्ट्रल इक्साइज	११३/२१८ मास्टर पाण्डे का मकान स्वरुप नगर, कानपुर
३९८	मेहता सतीश दत्त एस. ए. एफ. कानपुर	११३/३०९ स्वरुप नगर, कानपुर
३९९	मेहता युधिष्ठिर राजदत्त आई जी. एस.	३/८ कृष्णानगर, कानपुर
४०१	मेहता विजयकुमार दत्त आटो के मिक्लस, कानपुर	१११ ए/४१०, अशोक नगर
४०२	मेहता प्राणनाथ वैद्य रिटेल शाप एलगिन मिल न० १	४१७ अहाता रुकमनो देवी बकरमण्डी, कानपुर
४०३	मेहता के. सी. वाली मैनेजर स्टेशन कैंटीन	बंगला न टी/२ एम. ई. एस. कालोनी, कानपुर
४०५	मेहता मेलाराम छिब्बर टी. टी ई. उत्तर रेलवे	बी.-४ मिलिटरी कैम्प, जूही, कानपुर
४०६	मेहता रामलाल दत्त सी० ओ० डी, कानपुर	२८८/१ बाबूपुरवा, कानपुर
४०७	मेहता कैलाश छिब्बर व्यापार मोटर पार्ट	१२७/७३ सरोजनी नगर, कानपुर
४०८	मेहता शांति देव जी. ई. एम. ई एस.कानपुर कैन्ट	टी २९ एम. ई. एस. कालोनी कैन्ट, कानपुर
४०९	मेहता कृष्णलाल दत्त कोमिको साइकिल इन्डस्ट्रीज फजलगंज कानपुर	११८/५४६ सुन्दर नगर, कानपुर
४१०	मेंहता वंसीलाल मोहन हेड पोस्ट आफिस	२२/२ ब्लाक नं० ३ गोविन्द नगर कानपुर
४११	मेहताके ० डी० दत्त ट्रैफिक ब्रांच, सी० ओ० डी० कानपुर	२२०/१२ बाबू पुरवा लेबर कालोनी कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४१२ मेहता बाल्देव राजलव ब्राच एण्ड वार्ड एयर फोर्स चयरी	६०/३ ब्लाक ५ गोबिन्द नगर
४१३ मेहता मनोहर लाल मोहन एयरफोर्स चकेरी	
४१४ रायजादा ईश्वर दास वैद्य टीचर. खालसा हाई स्कुल कानपुर	२२/१९ ब्लाक नं० ३ गोविन्द नगर कानपुर
४१५ रामजादा मदन मोहन वाली १ बी० आर० डी० एयर फोर्स आफिस, कानपुर	३/२० कृष्णा नगर, कानपुर
४१६ रामजी दास दत्त एस० ए० एफ०, कानपुर	२२७/९ शास्त्री नगर, कानपुर
४१७ रवीन्द्र नाथ वैद्य करतरापुर फर्नीचर हाउस पी० रोड कानपुर	१०६/३७५ पी० रोड, कानपुर
४१८ कैप्टन रामलाल दत्त सेक्योरिटी आफीसर म्योर मिल्स, कानपुर	म्योर मिल्स बँगला, परेड, कानपुर
४१९ रायजादा ओकारनाथ वाली बी० आर० डी० हैंगर नं० ५ चकेरी, कानपुर	११८/२१०ए कौशलपुरी कानपुर
४२० रायजादा रोशनवाली एयरफोर्स चकेरो	३/१८, कृष्णा नगर कानपुर
४२१ राय जादा मोती राम वाली पैरासूट फैक्टरी, कानपुर	
४२२ सत्यपाल दत्त मिनर्वा इन्जीनियरिंग, कानपुर	१०/१ शास्त्री नगर, कानपुर
४२३ शंकर लाल वम वाल	ब्लाक नं० एच १२६/१० गोविन्द नगर, कानपुर
४२४ रमेश चन्द्र वैद्य	ब्लाक ८, ७५/१३ गोविन्द नगर,कानपुर
४२५ ए० पी० छिब्बर	११८/२१०ए कौशल पुरी गूमटी नं० ५
४२६ स्व० एस० आर० दत्त	१५/२९३ सिविल लाइन कानपुर
४२७ एस० सी० वैद्य	११७/११३ 'एल'ब्लाक काकादेव, कानपुर
४२८ श्यामलाल वाली	कृष्णानगर, कानपुर
४२९ सी० आर० वाली	७३/१ बी० बी० हरजन्दिर नगर, कानपुर
४३० शशीकरन गोस्वामी (छिब्बर)	कबाढ़ी मार्केट, गुमटी नं० ५, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

KHANNA GROUP OF INDUSTRIES

Gram : VARNISH

Estd. 1934

Phones { Offi. : 221596, 221806
Resi. : 242093, 249938

The Punjab Paint Colour & Varnish Works

123/529, Fazalganj, KANPUR-12

Manufacturers of

ENAMELS, PAINTS & VARNISHES ETC.

Contractors to : D. G. S. & D., P. W. Ds., All Indian Railways, Defence Dept. Etc.

ASSOCIATES :

Kromium & Chemicals Pvt. Ltd.

Manufacturers of :

Gram : KROCHEM

Low Carbon Ferro alloys & Non Ferrous Metals Etc.

Jai Chemical Industries

Manufacturers of :

Gram : THALAMIDE

Dye-Stuff Intermediates, Naphthalene Balls Industrial Chemicals, Pharmaceuticals, Foot Powder etc. etc.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

LALIMLI
&
DHARIWAL

The two Names in Woollens that have braught warmth and cheer to you and to your family through winters for over hundred Years

Specialists in :

Woollen, Worsted, Polyester/Wool Fabrics, Rugs Blankets, Knitting Yarn & Knitwear.

Recently introduced for the first time in India

"BRUSH & WEAR"

Stainless all weather suitings

For details please contact :

The Cawnpore Wollen Mills [Limited]
KANPUR
&
The New Egerton Woollen Mills
[Dhariwal]
Dhariwal (Punjab)

Printed at : ELLORA PRINTERS, Soutergnnj, Kanpur-1 Ph. 240527

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-सन्देश

द्वितीय पुष्प   महा शिवरात्रि सं० २०४२   मार्च, १९८६

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

"स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृति अंक"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवतार :
जन्म–शिवरात्रि, सम्वत् १९४५

महाप्रयाण :
सम्वत् २००७ (२६ जून १९५०)

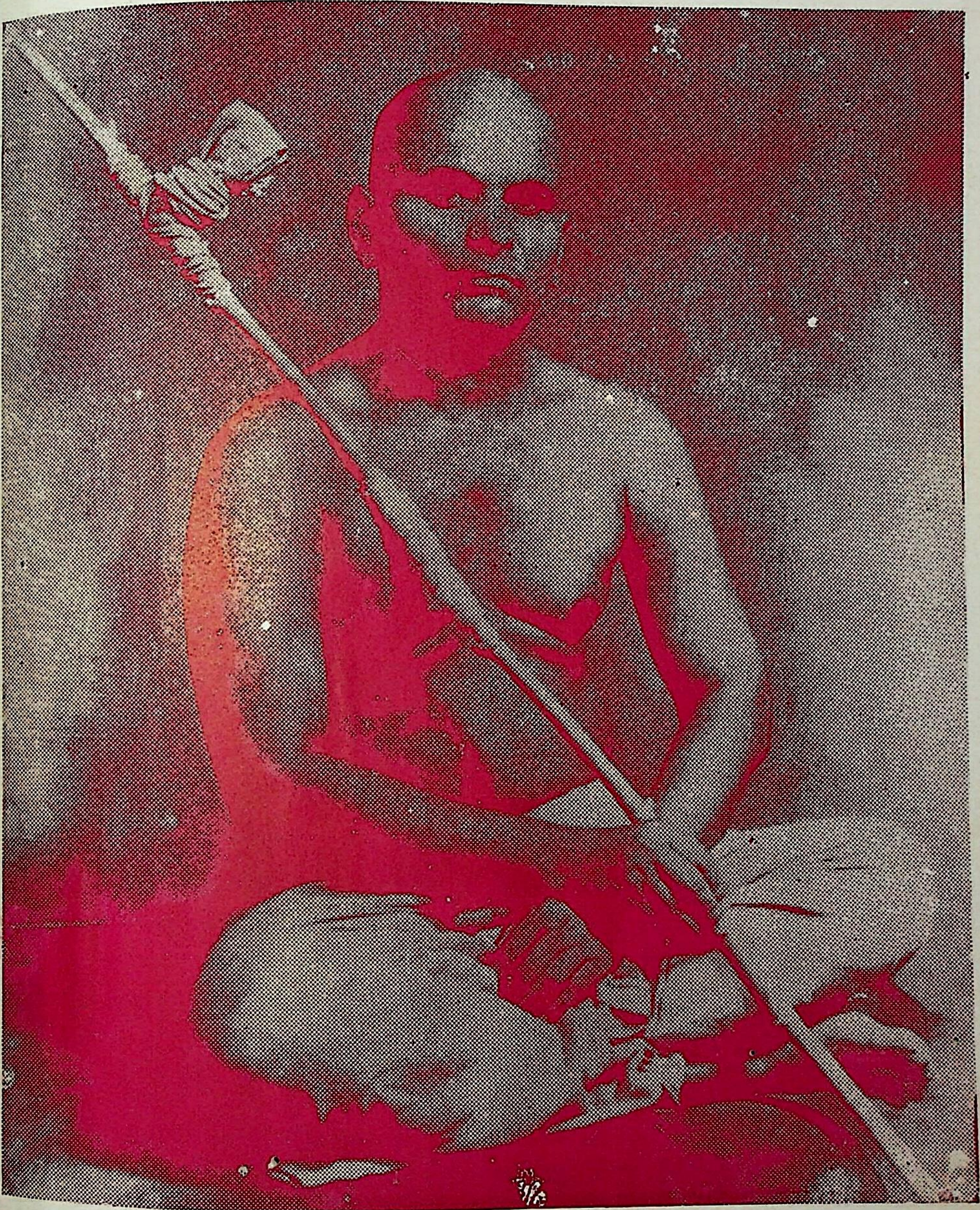

(स्वामी सहजानन्द सरस्वती)

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-समाज

निवेदन

राज कुमार सिंह
अध्यक्ष
ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

समाज के संविधान के अनुसार वैधानिक दायित्वों की पूर्ति हेतु समाज की १९/१/८६ की आमसभा की बैठक में त्रयवार्षिक चुनाव सदा की भाँति निर्विरोध निर्वाचन के साथ संपन्न कर हमारे समाज के बन्धुओं ने जिस सद्भाव, सहानुभूति, सदाशयता और एकता का परिचय दिया है वह निःसन्देह स्पृहणीय है। सभी बन्धुओं ने मेरे बूढ़े एवं अशक्त कंधों को अनुभवी एवं सशक्त की संज्ञा देकर 'जिन्हिं मोरबल निजबल ताहीं" में निहित भावना और सौहाद्र का जो संबल दिया है तथा मुझ में जो विश्वास व्यक्त किया है उनके लिए मैं सविनय आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। अपने समाज के सभी सहयोगियों एवं सुयोग्य सदस्यों की शुभकामना तथा परमपिता की अहेतुकी कृपा का आश्रय ही मुझे इस गुरुतर भार को वहन करने की शक्ति प्रदान करेगा। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं अपना कर्त्तव्य निर्बाह करने का भरसक प्रयत्न करता रहूँगा।

पूर्वाधिकारी अध्यक्ष श्री चन्द्रभान त्यागी ने अपने गरिमामय कार्यकाल में समाज का सफल संचालन करते हुये चिरप्रतीक्षित समाज की पत्रिका के प्रकाशन का जो कार्य आरम्भ किया है वह सुचारु रूप से अनियतकालीन से नियतकालीन अर्धवार्षिक स्वरूप ले सके यह मेरा प्रथम प्रयास होगा। अन्य योजनायें यथा समाज का स्वभवन निर्माणादि का स्वप्न भी साकार कर सका तो अपने आप को धन्य समझूँगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इन सभी प्रयासों में स्थानीय बन्धुओं के साथ साथ मुझे समाज को एक राष्ट्रीय मान्य स्वरूप देने के प्रयास में सक्रिय समाज की अन्य इकाइयों के सम्माननीय उत्साही बन्धुओं, पत्रिका के पाठकों तथा वरिष्ठ. चिन्तकों एव लेखकों का सहयोग भी निश्चित रूप से मिलेगा।

पत्रिका का प्रस्तुत द्वितीय पुष्प पूज्यपाद् शिव स्वरूप स्वनाम-धन्य "दण्डी स्वामी सहजानन्द स्मृति अंक" के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुये जिस अवर्णनीय हर्ष की अनुभूति हो रही है उसे शब्दों में बाँध पाना मेरे लिये संभव नहीं है। स्वामी जी का बहु-आयामी व्यक्तित्व को जो उनके विरक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

सन्यासी, निष्काम कर्म योगी, कर्म काण्ड के धुरन्धर विद्वान, समाज सुधारक, लेखक पत्रकार एवं ज[illegible] प्रिय किसान नेता जैसे विविध स्वरूपों का एक शरीर में अद्भुत सम्मिश्रण था, एक सीमित संसाधनों तथा पृष्ठों वाली पत्रिका में पूर्ण रूपेण चित्रित तो नहीं किया जा सकता फिर भी हमारे सुयोग्य सम्पादक मण्डल ने जो प्रयास किया है उसका मूल्यांकन तो विज्ञ पाठक ही करेंगे।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि युगान्तर कारी अवतारी पूज्यपाद स्वामी जी की स्मृति [illegible] उनकी जन्म तिथि, शिवरात्रि, पर समाज द्वारा प्रदत्त यह श्रद्धांजलि समाज के बन्धुओं तथा सुधी पाठकों को आराधना साधना तथा तपस्या की मूर्ति स्वामी सहजानन्द की स्मृति के माध्यम से "परहि[illegible] सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधभाई।।" का पाठ याद कराने में समर्थ होगी।

सम्पूर्ण सत्प्रयास के बाद भी पूर्णता का दावा दंभ मात्र होता है। अतः आप के सुझाव त[illegible] सम्मतियाँ भविष्य में भी हमारा उत्साह वर्धन एवं मार्ग दर्शन करेगीं।

सद्भावनाओं सहित

स्नेहाधीन
राज कुमार सिंह

"लक्ष्य एवं ईश्वर" (एक परिभाषा)

हमारा तो पवित्र लक्ष्य है। वह लक्ष्य भी महान है। शोषितों एवं पीड़ितों [illegible] उद्धार ही हमारा लक्ष्य है। यही सबसे बड़ा धर्म, सबसे बड़ी अहिंसा, सबसे बड़ा [illegible] है। इन्हीं गरीबों की सेवा करते करते मरना होगा। उन्हें छोड़ मेरे दिल में दू[illegible] भगवान कहाँ ? मेरे भगवान तो वे ही हैं। यद्यपि भगवान तो सभी जगह है, फिर [illegible] उसे विशेष रुप से शोषितों में ही पाता हूँ, और वहीं ढूढ़ने से वह मिलता भी है। [illegible] प्रकार फोड़े वाले के सारे शरीर में दवा न लगाकर दर्द की ही जगह दवा लगाने [illegible] उसे विशेष आराम मिलता है, क्यों कि उसका मन वहीं केन्द्रीभूत होता है। उसका [illegible] उसकी आत्मा वहीं मिलती है, पकड़ी जाती है। हालांकि वह है दरअसल सारे शरीर में। यही ह[illegible] भगवान की है।

जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो, उसका हक वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आजादी [illegible] लड़ाई और असली समाज सेवा का रहस्य है। समष्टि रुप में समस्त समाज को ऊँचा उठाने को ही मैं समाज [illegible] और सामाजिक कार्य मानता हूँ और यही मैंने शुरु में किया। श्री सीतारामाश्रम बिहटा (पटना) मेरी इसी [illegible] का प्रतीक है। अतः क्रांति का वह प्रतीक बराबर कायम रहे, वह झण्डा बराबर उड़ता रहे, यह तो चाहता हूँ [illegible]

—सहजानन्द सरस्[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

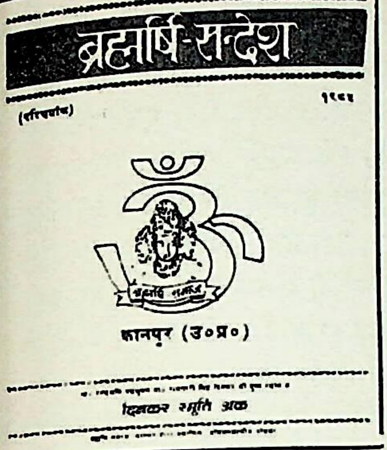

प्रतिक्रियायें

सम्पादन का कार्य बहुत दूरूह, कष्टकर और पारखी दृष्टि की अपेक्षा रखता है। मैंने मास्को के अन्वेषण केन्द्र में देखा है कि मार्क्स या लेनिन के किसी सम सामयिक विषय पर विचार, ढेरों मोटी मोटी पोथियों एवं लेखों में से छाँटकर, उन्हें सजाकर ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से सजोना मन और बुद्धि को थका देने वाला कार्य होता है। अपने इस कार्य में पत्रिका का सम्पादक मण्डल पूर्णरूपेण सफल हुआ है। मेरे अपने सन्देश के अधिकाँश भाग निकाल दिए गए हैं फिर भी प्रसन्नता की बात है कि उसका सार तत्व पूर्णतया सुरक्षित दिखाई पड़ता है।

ऐसी जातीय संस्कृति की उद्घाटक पत्रिका में लिखते समय मेरे मन में डर था कि ऐसी पत्रिकायें प्रायः अलगाववाद को प्रश्रय देती हैं। पर हर्ष का विषय है कि पूरी पत्रिका में कहीं एक लाइन भी ऐसी नहीं है जो राष्ट्रीय अखण्डता एवं एकता पर भूले भटके या अप्रत्यक्ष रूप से भी प्रहार करतीं हो। मैं ऐसी पत्रिका का कम्युनिष्ट दृष्टि से भी स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि ब्रह्मर्षि समाज कानपुर इसे अपने क्रिया कलाप में साकार करेगा। इसी में समाज एवं राष्ट्र का हित है।

झारखण्डे राय
भू० पू० विधायक मन्त्री (संविद सरकार)
एवं भू० पू० संसद-सदस्य

जी ५/३, पेपर मिल कालोनी
लखनऊ, उ० प्र०

卐

पत्रिका प्राप्त कर अनुगृहीत हुआ। आप एवं साथी जो इस पुनीत एवं महत्वपूर्ण कार्य में लगे हैं, स्वयं अपना मूल्याँकन नहीं कर सकेंगे। उपलब्धियाँ इसका माप बनेगी। आपकी महान कृपा है जो आपने अपने आपको भूल रहे, 'स्व' के ध्यान से हट रहे सज्जनों एवं स्वजनों को ज्ञान का दान देकर संगठित होने का आह्वान किया। हमें जगाया। हमारे गौरवशाली अतीत की स्मृति के माध्यम से हमें हमारे उत्तर दायित्व का बोध कराया। वाराणसी जो भारत की साँस्कृतिक राजधानी है वहाँ इसके प्रचार प्रसार से हमारी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इसके लिये हम आपका तथा आपके सहयोगियों का अभिनन्दन करते हैं।

ईश्वर शरण सिंह (भाई जी)
सदस्य, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
एवं भू० पू० महामन्त्री उ० प्र० विधान मण्डल
(काँग्रेस दल)

डी०-३७/१२१ बड़ादेव, वाराणसी।

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप द्वारा सम्पादित "ब्रह्मर्षि सन्देश प्राप्त हुआ। आपके प्रयास को देखकर मुझे हर्ष है।

ब्राह्मण आकृति की जगह पर अगर आप लोगों ने भूमिहार आकृति गढ़ने का प्रयास और उसे पकड़े रहने के दुराग्रह का परित्याग न किया तो संगठन आप चला न सकेंगे। संगठन की बात तो दूर उसको समूल नाश से भी आप लोग बचा न पायेंगे। आज जितनी संस्थायें इस श्रेणी के कल्याणार्थ संस्थापित एवं संचालित हो रही हैं, उनका नाम चाहें भूमिहार ब्राह्मण समाज रखें या भूमेश्वर समाज, या ब्रह्मर्षि परिषद या ब्रह्मर्षि समाज, सभी का परिणाम एक ही होना है। ब्राह्मण से अलग आपकी आकृति जो मूढ़ाग्रह के सहित संस्थापित है इन प्रयासों के द्वारा बड़े वेग के साथ समाज को सर्वनाश के मुख में पहुँचा रही है। जिस समाज का अपने इतिहास से सम्बन्ध टूट जाता है वह शिव का आराधक नहीं 'भव का आराधक है। वह गांठ पर पानी देकर उसे मजबूत कर रहा है। मैं किसी को चिढ़ाने की नियत से कुछ नहीं कह रहा हूँ। मेरी मान्यता है कि भूमिहार शब्द ब्राह्मण शब्द का पूर्णरूप से भक्षण कर गया है। उसे पेट से पूर्ण रीति से निकालना होगा तभी हमारा इतिहास दुरुस्त होगा। दीपक के तल के अंधेरे को दूर करने के लिए दूसरा दिया प्रज्वलित करने के स्थान पर उस दीप का ही स्थान निश्चित कर उसके प्रकाश को को प्रदीप्त करने की आवश्यकता है।

पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा
भू० पू० विधायक,

ग्राम-पोस्ट सिमरी
जिला भोजपुर। (बिहार)

卐

आपकी उपयोगी एवं आकर्षक पत्रिका का परिचयांक मिला। आपकी पत्रिका में प्रकाशित लेख बड़े उच्च विचारों एवं मंतव्यों से परिपूर्ण हैं। आशा है ब्रह्मर्षि समाज कानपुर का सुरुचिपूर्ण, सुव्यवस्थित एवं प्रशंसनीय कार्यक्रम अन्य समान संस्थाओं के संचालकों के लिए प्रेरणा दायक होगा।

कृष्ण मुरारी शर्मा
संयोजक "ब्रह्मर्षि-विकास संघ"

आनन्दपुरी, खगौल, पटना।
PIN. Co.—801105

डा० विवेकी राय के निवास स्थान पर आप द्वारा प्रकाशित परिचयांक देखने को मिला। बड़े मनोयोग पूर्वक पढ़ गया। अंक अत्यन्त सुरुचि सम्पन्न एवं आकर्षक लगा। समाज के सफल संचालन एवं ब्रह्मर्षि-सन्देश के प्रशस्त प्रकाशन के लिये अशेष धन्यवाद। यह जानकर कि पत्रिका का अगला अंक "स्वामी सहजानन्द स्मृति अंक" होगा, हार्दिक प्रसन्नता हुई। मैं स्वामीजी का वंशज और स्थानीय सहजानन्द महाविद्यालय में प्राध्यापक हूँ। क्या एक प्रति मुझे उपलब्ध करा सकेंगे। योग्य सेवा के लिए निर्देश की प्रतीक्षा करूँगा।

रामचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक,

विवेकी राय मार्ग
बड़ी बाग, गाजीपुर।

卐

आपके यहां से 'ब्रह्मर्षि-सन्देश" नामक पत्रिका के दिनकर-स्मृति अंक के प्रकाशन की सूचना मुझे इलाहाबाद से प्रो० गोवर्धन राय शर्मा के माध्यम से मिली है। मैं पूज्य स्व० दिनकर जी का पौत्र हूँ। अंक देखने की जिज्ञासा है। एक प्रति उपलब्ध करा सकें तो कृपा होगी।

अरविन्द कुमार सिंह

दिनकर भवन, आर्य कुमार रोड
पटना। ८०० ००४

卐

आपका परिचयांक प्राप्त हुआ। प्रयास निश्चय ही उत्तम एवं सार्थक है। "दिनकर जी" जैसे राष्ट्रवादी कवि के बारे में बहुत कुछ काम किया जा सकता है। ऐसे व्यक्तियों की सम्भावनायें एक दैशिक नहीं होतीं, वे किसी सीमा में बंधे नहीं होते और शायद इसी लिए उनपर बहुत कुछ लिखने के बाद भी बहुत सारा बचा रह जाता है। आपकी भावी योजनाओं के प्रति मेरी शुभकामनायें।

सुभाष राय
वरिष्ठ उप-सम्पादक

'अमृत-प्रभात' इलाहाबाद।

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि सन्देश का दिनकर-स्मृति अंक मिला। सफल प्रकाशन के लिए धन्यवाद। पत्रिका में दिनकर जी पर संगृहीत सामग्री अच्छी है। डा० अनिल कुमार आँजनेय तो अपने विद्यालय, बक्सर से भी दिनकर-स्मृति अंक निकाल चुके हैं। इसलिए उनका संकलन उचित और महत्वपूर्ण है। प्रकाशित सन्देशों में श्री झारखण्डे राय जी का सन्देश भी अन्य राजनेताओं के लिए मार्गदर्शक है, क्योंकि अन्य राजनेता जातीयता के आरोप के भय से सामाजिक बात नहीं करते और समाज विषयक सामाजिक अपमान लिखे जाने पर भी नहीं बोल पाते। चन्द्रभाल राय का "ब्राह्मण समाज का दायित्व" बहुत उत्तम है जिसमें उन्होंने भेदों को त्याग एक मंच पर आकर सामूहिक दायित्व वहन करने का आह्वान किया है। मेरा भी यही विचार है। झड़प जी तो महान अनुसंधाता हैं। उनका "तुलसीदास की जाति भी अन्वेषात्मक है। अर्जुनसिंह का ब्राह्मण भी अच्छा है। मिलाजुलाकर आपका "ब्रह्मर्षि सन्देश" अच्छी सामग्री युक्त रहा। इसमें आपका परिश्रम सफल रहा है।

ग्राम–श्रीरामपुर अयोध्या
पोस्ट–वैनी, जि०–समस्तीपुर (बिहार)

चौधरी राजनारायण शर्मा "विशारद"
मंत्री "अखिल भारतीय ब्राह्मण परिषद"

卐

"ब्रह्मर्षि सन्देश" की प्रति मिली। स्व० रामाधारी सिंह "दिनकर" की स्मृति में प्रकाशित यह अङ्क काफी अच्छा निकला है। आपने काफी परिश्रम से इसे सम्पादित किया है। शिवसागर मिश्र हिन्दी के एक अच्छे लेखक होने के साथ दिनकर जी के दामाद भी हैं। मेरे नाम का उल्लेख कर उन्हें पत्र तथा पत्रिका की एक प्रति अवश्य भेजने की कृपा करें।

हिन्दी शिक्षक कार्यालय, महराजा विल्डिंग
१२५, गिरगाँव रोड बम्बई–४०००0४

हरिशंकर शर्मा

卐

"ब्रह्मर्षि-संदेश" का "दिनकर स्मृति अंक" प्राप्त हुआ। पत्रिका हर दृष्टि से स्तरीय है। ब्रह्मर्षि-समाज को स्वस्थ दिशा निर्देश की आवश्यकता है। आशा है आपका सन्देश यह कार्य पूरा करेगा तथा सामाजिक चेतना की जागृति में सहायक सिद्ध होगा। मेरी शुभकामना है कि "ब्रह्मर्षि-सन्देश" समाज के संगठन एवं संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करे।

भूमिहार ब्राह्मण इण्टर कालेज
बक्सर, भोजपुर (विहार)

केशव प्रसाद राय, प्रधानाचार्य

卐

पत्रिका के कुशल एवं सफल सम्पादन हेतु बधाई। आपने जिस सामाजिक एवं सांस्कृतिक चौखटे में ब्रह्मर्षि-समाज का एक सूक्ष्म एवं लघुचित्र प्रस्तुत किया है वह निःसन्देह स्तुत्य, स्पृहणीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका का मुखौटा विवादस्पद नहीं, अपितु स्वीकारात्मक है। इसे प्रशस्तिगान न समझें, वरन् यह मेरे अन्तर की संवेदनात्मक स्नेहिल अनुभूति है। मेरा सुझाव है कि बिहार राज्य के भूमिहार ब्राह्मणों और बाभनों से प्रभावित शैक्षणिक संगठनों में इसके प्रचार एवं प्रसार की व्यवस्था के लिये सम्पर्क स्थापित किया जाय। इसमें डा० आंजनेय, आदरणीय भइया जी तथा अन्य उदात्त विचार वालों की सहायता आपको सहज ही उपलब्ध हो सकती है। समयानुकूल इस प्रकार की पत्रिकाओं का प्रचार एवं प्रसार अभिहित है, जातीय गौरव को उद्दीप्त करने वाली पत्रिका के सम्पादन का दायित्व बहन करने से लिए एक बार पुनः आपके प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

पूर्व प्राचार्य शिव प्रसाद विद्या मन्दिर इन्टर कालेज
वक्सर, भोजपुर (बिहार)

उमा शंकर राय
एम० ए, बी. एल., बी. एड.

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई कि गत् १७ दिसम्बर १९८५ को ब्रह्मर्षि-सन्देश, विद्वत् प्रवर डा० रामकर्ण शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा श्री एस. एन. सिंह भू० पू० न्यायाधीश इलाहाबाद उच्चन्यायालय की अध्यक्षता में डा० शौनक ब्रह्मचारी के उद्बोधन मंच पर ससमारोह विमोचित हुआ। विमोचन कर्त्ता, अध्यक्ष और उद्बोधक तीनों ही विशिष्ट विद्वान, महान एवं श्रद्धास्पद हैं। यह सुयोग पत्रिका के उज्वल भविष्य की ओर संकेत करता है। आपका अग्रलेख क्रमवद्ध और विद्वतापूर्ण है उसमें पतनोन्मुख समाज के उत्थान तथा राष्ट्रहित चिन्तन की भावना झाँक रही है आशा है आपकी संवेदन शीलवाणी और संगठनात्मक प्रयास से सामाजिक कुंठादूर होगी वह स्वस्थ, संजीवन एवं सशक्त बनेगा।

पत्रिका का मोटो (प्रतीक चिन्ह) संस्था के गठन तथा उद्देश्य के अनुकूल झलक देने वाला, सारगर्भित और उत्कृष्ट है। वह अपने आप में रचनात्मक चेतना संजोंये हुये है उसके उरेहने वाले कलाकार को मेरा धन्यवाद कहें। दिनकर खण्ड के गिने चुने पन्नों में जो महत्वपूर्ण सामग्री भर दी गई है, वह सम्पादक के सुलझे मस्तिष्क और योग्यता का जीता जागता प्रमाण है। परिचयांक में जो अन्य आलेख उपलब्ध कराये गये हैं प्राय: सभी पठनीय एवं माननीय हैं। इस संग्रहणीय उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु आप सहित आपके सभी सहयोगी बन्धुओं को बधाई।

जिन विद्वान महानुभावों ने अपने सुविचारित, गवेषणापूर्ण आलेख तथा मधुसंचय द्वारा उक्त अंक को मधुरिम अमृतत्व प्रदान किया है, उनतक मेरी ओर से साधुवाद प्रेषित करने की कृपा करें। इस अंक का प्रत्येक लेख हृदय में धारण करने योग्य, भारतीय संस्कृति तथा लोक हित का पोषक है। सांस्कृतिक चेतना से ही समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। कृपया ब्रह्मर्षि-सन्देश की एक प्रति, स्वामी विद्यानन्द गिरि, महामण्डलेश्वर, कैलाश का आश्रम, मुनि की रेती, ऋषिकेश की सेवा में भेजने की कृपा करें।

ग्राम, पो०-लिलकर, जिला बलिया — आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प'
पिन-२७७३०२ — प्र० सम्पादक 'चतुर्मुख'

卐

"ब्रह्मर्षि-संदेश" का परिचयांक उज्जवल भविष्य के प्रति आशा और विश्वास जगाने वाला है। इसका "दिनकर-स्मृति अंक" आपकी सम्पादन कला का साक्षी तथा आपके सहयोगियों के उत्साह और निष्ठा का पुष्ट प्रमाण है। आपके यशस्वी कार्य की हृदय से सराहना करता हूँ। पूज्यवर भाई झड़पजी" ने आपके महनीय-माननीय कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये मुझे स्नेह-विह्वल होकर एक हार्दिकतापूर्ण पत्र लिखा है। पूज्य भाई डा० विवेकी राय ने मेरे यहाँ ही परिचयांक देखा और उन्होंने मुक्तकंठ से आपके इस गौरव-पूर्ण कार्य की सराहना की। पूज्य भाई आचार्य कुलदीप नारायण झड़प और डा० विवेकी राय का मुग्ध होना स्वाभाविक ही है। गुणी ही गुण को पहचानता है। पर श्री कातर व्यक्ति गुण को सराहने में अपनी कृपणता का ही परिचय नहीं देता, वह छिद्रान्वेषण कर निन्दातत्पर भी होता है। ब्रह्मर्षि-सन्देश की छवि ऐसे ईर्षालु और पर श्री-कातर व्यक्तियों का मुख मलिन करने के लिये पर्याप्त है।

दिनकर जी का गोत्र तथा वंशवृक्ष भी प्रकाशित होना चाहिये था। इसका अभाव खलता है। प्रूफ रीडिंग की अनवधानता से मुद्रण संम्बन्धी कुछ भयंकर त्रुटियां एवं अप्रत्याशित स्खलन हुये हैं। आशा है भविष्य में इसके सुधार पर विशेष ध्यान देंगे।

"दिनकर स्मृति अंक" में योग सहयोग की दिशा में मुझसे जो यत्किंचित सेवा बन पड़ी है उसे आपने विशेषता के साथ रेखांकित किया है आपकी इस सदाशयता और औदार्य के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। प्रणति स्वीकारें।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन — डा० अनिलकुमार 'आंजनेय'
उजियार, बलिया (उ० प्र०) Pin. 277 501 — प्रकाशन मन्त्री

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दिनकर स्मृति अंक' सत्य ही पावन सुन्दर भव्य।
श्रद्धांजति देना स्वजाति का उचित परम कर्तव्य ॥
मैंने पढ़ी सभी रचनायें, लेख और कविताई।
सम्पादन के लियें आपको सौ-सौ बार बधाई॥
पुनः जा रहें हैं करने को नूतन अंक प्रकाश।
"स्वामी सहजानन्द स्मृति" में, उर उमगा उल्लास॥
अखिल राष्ट्र में आजादी का मंत्र जिन्होंने फूंका।
कृषकों का आह्वान किया श्रृंगार किया इस भू का॥
बने प्रेरणा श्रोत अंक यह, जाति देश का भाई।
शुभकामना करूँ मैं कितनी, कितनी करूँ बड़ाई॥
फैलाये आलोक, आपको प्रभु दें शक्ति विशेष।
शुभाकाँक्षी - योगेश्वर प्रसाद सिंह "योगेश" ॥

आशुकवि एवं सम्पादक "मागधी"
विक्रम, पटना ८०११०४

卐

योगेश्वर प्रसाद सिंह "योगेश"
एम० ए० डिप०इन० एड०

दिनकर मेरे प्रिय राष्ट्रकवि रहे हैं। उनका लगभग एक चौथाई काव्य मुझे कण्ठस्थ रहा है। पत्रिका में 'स्मृति अंक" के रूप में सामान्य सामग्री भले ही रही पर जो है वह स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। पत्रिका के मात्र तेरह पृष्ठों में ही आपने सबकुछ समाहित कर दिया है।

अयाचक ब्राह्मणों के सम्बन्ध में काफी कुछ नवीन जानकारी इससे मिली। ऐसी जानकारी एकत्र कहीं अन्यत्र पढ़ने को नहीं मिली। यह और भी शुभ रहा। अनियत कालीन ही सही, पत्रिका की भावी संभावनायें काफी उज्जवल लगती हैं। देश में ब्रह्मर्षि-समाज जागेगा। तो कल्याण होगा।

है एक हाथ में परशु एक में कुश है। आ रहा चला भारत का भाग्य पुरुष है॥
सगच्छध्वं–संवदध्वम्

२५ कृष्णापुरी, (मथुरा)

卐

भगवान सहाय पचौरी
सम्पादक–"व्रजभारती"

ब्रह्मर्षि सन्देश का दिनकर-स्मृति अङ्क के रूप में प्रकाशित परिचयांक हर दृष्टि से सुन्दर एवं सफल रहा। समाज के विशिष्ट विचारकों तथा चिन्तकों के सुन्दर बिचार तथा अनुसंधान पूर्ण "तुलसी को जाति" जैसे निवंध बड़े ही ज्ञानवर्धक तथा विद्वतापूर्ण लगे। सम्पादक की ',अपनी बात" में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का रक्षा करते हुए भी जातीय संगठन का राष्ट्रहित में जो औचित्य प्रतिपादित है वह निःशन्देह विद्वतापूर्ण और सराहनीय है। पत्रिका का प्रतीक चिन्ह बड़ा सारगर्भित एवं प्रेरणा दायी है। आपने पत्रिका के माध्यम से समाज को जाग्रत करने एवं एक सूत्र में पिरोने का जो प्रयास आरंभ किया है, वह प्रशंसनीय है।

C. K. 66/536 वेनियाबाग,
वाराणसी। उ० प्र०

卐

जितेन्द्र नारायण सिंह
एडवोकेट

यह दिनकर-स्मारिका सचमुच बड़ी उत्तम सजधज के साथ बन पायी है। आप लोगों का प्रयास निश्चय ही स्तुत्य एवं सराहनीय है। ब्रह्मर्षि-संदेश घर घर में पहुंचाने का ध्येय गौरवपूर्ण ही कहा जायगा। इसके सभी निबंध उच्चकोटि के एवं मनन करने योग्य हैं। आप लोगों को हृदय से साधुवाद देकर आशा करता हूं कि इस पत्रिका के माध्यम से समाज को सतत प्रेरणा मिलती रहेगी।

कुछिला,
रोहतास। बिहार॥

卐

मारकण्डे.राय
भू० पू० प्रधानाध्यापक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज का यह सत्प्रयास वास्तव में अभिनन्दनीय है। दिनकर स्मृति अङ्क के रूप में इसकी समस्त सामग्री स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री कुलदीप नारायण राय "झड़प" जी के आलेख "अयाचक ब्राह्मण" तथा "गोस्वामी तुलसीदास की जाति" निःसंदेह शोधपरक हैं। अन्य सभी अधिकारिक विद्वानों की रचनायें भी उच्चकोटि की हैं।

विश्वास है कि ब्रह्मर्षि–समाज कानपुर का यह साहित्यिक प्रसाद उत्तरोत्तर अपनी गरिमा प्राप्त कर विभिन्न आयाम स्थापित करेगा। इसके समस्त सदस्यों/पदाधिकारियों हेतु साभिवादन हार्दिक शुभ कामनायें सादर प्रस्तुत हैं।

भोला नाथ त्यागी
एडवोकेट

कार्यवाहक प्रबन्धक, आचार्य
पं० पद्मा सिंह शर्मा ग्रामोत्थान विद्यालय
पैजनियाँ। बिजनौर ।। उ० प्र० ।।

卐

श्री रामचन्द्र शर्मा को लिखे आपके पत्र से ज्ञात हुआ कि आपको मेरा पत्र नहीं मिला। पिछले महीने आपको और मंगलाराय को साथ ही लिखा था। खैर, अब आप मेरी बधाई स्वीकारें कि एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य हो गया। ब्रह्मर्षि समाज कानपुर द्वारा किया गया यह प्रकाशन प्रत्येक दृष्टि से स्तरीय है। आशा है इसका स्तर बना रहेगा इसके प्रकाशन के पीछे समाज सेवा का जो उदात्त संकल्प है वह बहुत व्यापक है। पत्रिका की सामग्री को कुछ और बहु आयामी स्वरूप प्रदान किया जाना चाहिये। प्रयास रहेगा कि मैं भी कुछ भेजूं।

शुभ कामनाओं सहित
डा० विवेकी राय

बड़ी बाग, गाजीपुर ।। उ० प्र० ।।

卐

ब्रह्मर्षि सन्देश का "दिनकर-स्मृति अंक" पाकर सच्ची प्रसन्नता हुई। डा० अनिलकुमार "आंजनेय" द्वारा संकलित "दिनकर"–"जीवन झांकी" तथा "रचना संसार" उपयोगी है। इसी तरह कुलदीप नारायण "झड़प" के निबन्ध "अयाचक ब्राह्मण" और "तुलसीदास की जाति", आचार्य तारीणीश झां का निबन्ध "भूमिहार ब्राह्मण" तथा अर्जुन सिंह का "ब्राह्मण" भी शोधपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हैं। इसके कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है। प्रूफ रीडिंग में सावधानी होती तो और सुन्दर होता। पत्रिका बराबर निकलती रहे, यही शुभ कामना है।

डा० सियाराम तिवारी
पी. एच. डी. डी. लिट.
प्रोफ़ेसर – हिन्दी

हिन्दी भवन, विश्व भारती,
शान्ति निकेतन। प० वि० ।।
७३१२३५

卐

ब्रह्मर्षि सन्देश का "दिनकर–स्मृति अंक" प्राप्त हुआ अंक की छपाई बहुत सुन्दर और स्वच्छ है। प्रकाशित सामग्री भी उपादेय, उपयोगी और महत्वपूर्ण है। बालकवि वैरागी की कविता से विशेष रूप से प्रभावित हुआ। यह बिलकुल दिनकर जी की शैली एवं शब्दावली में मौलिक रचना है। निबंन्ध बहुत ही अच्छे और उपयोगी हैं। इसके लिये बधाई।

सद्भावना के साथ
डा० गंगाशरण सिंह
डी० लिट०
अध्यक्ष – अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ

रोड नं० १२, राजेन्द्र नगर
पटना, बिहार-१८०००१६११

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-संदेश परिचयाँक (१९८५) का "दिनकर स्मृति-अंक" डा० जगदीश्वर प्रसाद राय के यहां देखने को मिला। पत्रिका की उत्तम छपाई, अनुपम रेखाचित्र, उत्कृष्ट सम्पादकीय, सुरुचिपूर्ण सम्पादन तथा सबसे बढ़कर समाज एवं संगठन के प्रति आपकी अटूट निष्ठा के लिए हार्दिक बधाई।

आपने अपने सम्पादकीय लेख में पाखण्डियों द्वारा समाज में वर्ग भेद पैदा करने के लिये विष वमन स्वरुप किये गये घृणित प्रयासों के प्रति जो छटपटाहट व्यक्त की है और उसके मार्जन हेतु जो अकाट्य तर्क दिया है, वैसी ही छटपटाहट के कारण स्वामी सहजानन्द सरस्वती विरक्त होकर भी जातीय गौरव के रक्षा अभियान में कूदने को विवश हुए थे। उनके गम्भीर शोध और शास्त्र मंथन का परिणाम है "ब्रह्मर्षि–बंश–बिस्तर"। उसकी भूमिका में उन्होंने विस्तार पूर्वक ऐसे कुत्सित प्रयासों का सप्रमाण खण्डन किया है। वैसे यह अंक स्वामी सहजानन्द स्मृति अंक के रूप में निकला होता तो इसके माध्यम से उनकी जलायी मशाल आगे बढ़ाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती थी।

अयाचक ब्राह्मण समाज के सम्बन्ध में सर्वश्री "झड़प जी", तारिणीश झा, चन्द्रभाल राय, चौ० राजनरायण शर्मा तथा अर्जुन सिंह के लेखों से नई जानकारी मिली है। डा० विवेकी राय का शोधपूर्ण निबंध अप्रासंगिक होकर भी मानस की लोकोक्तियों के कारण लोक जीवन से जुड़ा होने के कारण पत्रिका की उद्देश्य सीमा के अन्दर आ जाता है। किन्तु दीपक तथा मातृभूमि सम्बन्धी लेख विषय की दृष्टि से अलग-अलग पड़ गये हैं।

सदस्यों की सूची की तरह ही उच्च पदासीन व्यक्तियों आदि की सूची भी प्रकाशित करें तो परिचय एवं सम्पर्क में सहायक होगी। विवाहादि सम्बन्धी जानकारी भी लोगों को लाभान्वित करेगी।

नई बस्ती सकलेनाबाद
गाजीपुर। उ० प्र०॥

डा० मान्धाता राय
एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट०
रीडर, हिन्दी विभाग स० म० वि० गाजीपुर

卐

ब्रह्मर्षि-संदेश देखा। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आपने इस अंक की सामग्री के संकलन में काफी परिश्रम किया है। इस अंक की पहली रचना जिसे आपने भूमिका का रूप दिया है अत्यधिक सूचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक है। इसकी भाषा प्रांजल और प्रवाहमय है। सबसे अच्छी बात यह है कि आपने इसे जातिगत संकीर्णता के दायरे से अलग रखा है। स्वामी सहजानन्द के बाद किसी ने इस दिशा में रचनात्मक कार्य नहीं किया। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से आप ब्रह्मर्षि-वंश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों को उजागर करने का प्रयत्न करते रहेंगे।

ब्रह्मर्षिवंश इस समय अपनी अस्मिता और अस्तित्व खोने की स्थिति में आ गया है। सद्भाव, समझदारी, सहानुभूति और एकता की जगह कुभाव, जड़ता, अदुरदर्शिता, रुढ़िवादिता, रागद्वेष तथा संकीर्णता ले रही है। कभी इसके पास विद्या थी, वुद्धि और विवेक था, उदारता और अप्रतिम प्रतिभा का ऐश्वर्य था, किन्तु आज अतीत का अहंकार मात्र शेष है। दहेज, फूट, इर्ष्या और अविवेक जैसे इसका संबल हो गया है। वह सब लिखकर मैं किसी गैर को अपमानित नही कर रहा हु बल्कि स्वयं को कोस रहा हं। मेरा यह सारा आक्रोश स्वयं पर है। क्या यह संभव है कि सम्पूर्ण ब्रह्मर्षि–वंश अपनी समग्रता के साथ एक जुट होकर उस "ऋत की पुनःस्थापना में संग्लन हो, जिस "ऋत" (सत्य) की स्थापना भगवान परशुराम ने की थी।

C II/73 शाहजहाँ मार्ग
नई दिल्ली ११११००११

आपका
शिव सागर मिश्र
निदेशक : राजभाषा
रेल मंत्रालय० रेल भवन
नई दिल्ली ११०००१

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

पत्रिका के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, कवितायें तथा लेखादि पढ़कर मन मुग्ध हो गया। राष्ट्रकवि स्व० रामधारी सिंह "दिनकर" का ज्वाजल्यमान व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व पूर्णतः उजागर हुआ है। अयाचक ब्राह्मणों के इतिहास सम्बन्धी समर्थ विद्वानों के युक्तिपूर्ण लेखों तथा वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने वाले संदर्भों से समाज के भूत तथा वर्तमान पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

श्री चन्द्रभाल राय का "ब्राह्मण समाज का दायित्व" विषयक लेख बहुत भाया। आपकी "अपनी बात" के माध्यम से तो जैसे इस पत्रिका की आत्मा मुखर हो उठी है। इसमें साहित्य, दर्शन तथा ज्योतिष की त्रिवेणी का अद्भुत संगम देखने को मिला। पत्रिका की साज सज्जा तथा मुख पृष्ठ आपकी कलात्मक रुचि के पुष्ट प्रमाण हैं। इस संग्रहणीय तथा उपादेय प्रकाशन के लिये आप तथा आपके समस्त सहयोगी बन्धु बधाई के पात्र हैं। स्थानीय बन्धुओं में वितरण हेतु दस प्रतियां भेज सकें तो कृपा होगी।

पुरुषोत्तम राय
अध्यक्ष,
भूमिहार ब्राह्मण समाज

B-89 सूरज कुण्ड कालोनी,
गोरखपुर। उ० प्र०॥
273001

卐

परिचयांक मिला धन्यवाद। पत्रिका में उच्च स्तर की सामग्री संग्रहीत है। इसके सम्पादन में आपकी निष्ठा और लगन की झलक पढ़ने पर मिलती है। आपका सम्पादकीय लेख प्रेरणा देने वाला है। राष्ट्रकवि दिनकर जी से सम्बन्धित सामग्री से नई जानकारी सामने आई है समाज से सम्बन्धित लेख लोगों के लिए पर्याप्त उपयोगी हैं। परिशिष्ट में छपा परिचय सम्पर्क की दृष्टि से मूल्यवान है।

डा० जगदीश्वर प्रसाद राय,
एम० ए०, पी० एच० डी०
प्रवक्ता, सहजानन्द महाविद्यालय,
गाजीपुर

प्रधान सचिव,
भूमेश्वर समाज गाजीपुर
आम घाट, गाजीपुर।

卐

पत्रिका का परिचयांक काफी सुन्दर एवं आकर्षक लगा। पत्रिका में मात्र जातीय लेखों के कुछ और स्तंभ तथा विविधिता पूर्ण लेख होते तो सभी स्तर एवं आयुवर्ग के लोगों के लोगों की रुचि बनी रहती। दिनकर जी के विषय में संकलित कवितायें तथा जानकारी काफी उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं।

प्रदीप त्यागी

मैन्यूफैक्चरिंग केमिस्ट
अपर गैंजेज सुगर मिल
शिवहरा, बिजनौर (उ० प्र०)

卐

I am delighted to receive the "DINKAR SMRITI-ANKA" of Brahmarshi Sandesh broughtout under your able editorial and management. I, really, don't find suitable words for appreciations and admire the steps taken by Brahmarshi Samaj to create the awareness through the columns of "BRAMARSHI-SANDESH" I do hope that this will bring the desired effects and spread the knowledge and who is who of our fraternity. Please accept our heartiest congratulations for the same.

HARDEV BAKSHI
General Secratary.
Bhumeshwar Samaj
LUCKNOW.

Gramodyoga Khadi Bhandar
Opposite Nishat Cinema
Kaisarbagh, LUCKNOW
226001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बात

ब्रह्मर्षि वंश-भूषण स्व० राष्ट्रकवि डा० रामधारी सिंह "दिनकर" की पुण्य स्मृति में प्रकाशित पत्रिका के परिचयाँक का जो व्यापक स्वागत हुआ है उससे हमारा उत्साह तथा आत्मविश्वास बढ़ना सहज एवं स्वाभाविक है। प्रशंसा सूचक प्रतिक्रियाओं के बाहुल्य से प्राप्य आनन्दानुभूति भी हमारे कर्मठ सहयोगी बन्धुओं तथा समाज के स्थानीय सदस्यों को सामान्यतया प्रतिफल रूप में प्राप्त हुई है। अपने सहृदय पाठकों तथा शुभेच्छु बन्धुओं को तदर्थ धन्यवाद देते हुए हम पत्रिका समिति तथा स्थानीय समाज के सदस्यों की ओर से उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

प्रारम्भिक सत्प्रयासों के संदर्भ में आलोचना जहाँ हतोत्साहित कर आत्मबल तोड़ती है वही अत्यधिक प्रशंसा भी आत्मश्लाघा को भावना को जन्म देकर मिथ्या भिमान से दिग्भ्रमित कर सकती है। आत्म प्रशंसा श्रवण का मधुर तथा आलोचना का कटु स्वाद स्वरूप से भिन्न भले ही हो पर गुण धर्म की तुला पर परिणाम की दृष्टि से समान ही होता है। आत्मश्लाघा (स्व की प्रशंसा) मनुष्य को प्रसन्नता प्रदान कर मान-मोह ग्रस्त एवं पथभ्रष्ट करती है तथा आलोचना कटुता के विष का सृजन कर क्रोध के माध्यम से सद्विवेक का अपहरण कर लेती हैं। संत कबीर की उक्ति :- "माया तजे तो क्या हुआ, मान तजा नहिं जाय।
जा कारण मुनिवर छले मान सबन को खाय।

ऐसे संदर्भों में प्रासंगिक एवं बड़ी ही उपयुक्त सूक्ति सी लगती है। रमन महर्षि ने ठीक इसी भाव को व्यक्त करते हुए कहा है, "सारी दुनिया को तिनके के समान जानना आसान है, सभी शास्त्रों का ज्ञान पाना आसान है, परन्तु आत्मश्लाघा को निकाल बाहर करना बहुत दुष्कर हैं।" ठीक भी है स्वाभाविक प्रक्रिया में उत्पन्न भाव को निकाल फेंकने या उसका संहार करने में अपने अंतःकरण से ही युद्ध जो करना पड़ता है। सारी दुनियाँ को समझाया जा सकता हैं, पराजित किया जा सकता है पर अपने मन को कौन समझा पाता है? कौन विजयी हो पाता है इस अंतर्द्वन्द में सृष्टि के पालक स्वयं भगवान विष्णु को मधुकैटभ से पांच सहस्त्र वर्षों तक अनवरत युद्ध करने के बाद अन्त में थककर उनसे ही उनकी मृत्यु की याचना करनी पड़ी थी, और तब जाकर निवृत्त हो पाये थे महाप्रभु उन दैत्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

युगल से, जिन्हें उनके ही कानों की मैल ने उनकी निद्रालु अवस्था में जन्म दिया था और जो उनकी मानस सृष्टि के प्रतिरूप ब्रह्मा का हीं भक्षण करने को उद्यत थे।

दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में वर्णित मधुकैटभ वध का उपरोक्त प्रसंग अपने प्रतीकात्मक संदेश के सन्दर्भ में निश्चय ही विचारणीय हैं। सांसारिक जीवन में भी हम इस चिरन्तन सत्य की अनुभूति तो करते है पर कभी उस पर गंभीरता से विचार के लिए समय नही निकाल पाते। मनुष्य के जीवन में उसके कृतित्व की प्रशंसा अथवा आलोचना ही उसके कानों में मधुर (मधु) या कटु (कैटभ) रूप में मल का रूप ग्रहण करती है। मानव अपनी प्रशंसा या आलोचना तथा उसके प्रतिदान या प्रतिकार का आकलन अपने रिक्त क्षणों (विश्राम के समय) में हो करता है। कितनी सार्थक हो उठती है उन क्षणों में मधुकैटभ के सृजन, द्वन्द तथा विनाश की प्रतीकात्मक कथा जिसे मेधा मुनि ने राजा सुरथ तथा समाधि वैश्य को सुनाया था। प्रायः सभी पौराणिक कथाओं में तदनुरूप उपदेश प्रसंग भेद से दिए गए हैं। गोस्वामी तुलसी दास ने "निन्दास्तुति उभयसम रूप से स्वीकार करने का सन्देश इसी दृष्टि से भगवान राम के माध्यम से दिया है। आलोचना का दुख तथा प्रशंसा का सुख समान भाव से स्वीकार करने का यही सन्देश "सुख दुःखे समे कृत्वा लाभा लाभौ जयाजयौ" कहकर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में भी दिया गया है। प्रस्तुत अंक भी प्रायः इसी वीतराणी भावना के प्रतीक स्वामी सहजानन्द सरस्वती की स्मृति में प्रकाशित होकर इसी दिव्य भावना का सन्देश सँजोये हैं। इसी शाश्वत सत्य को दृष्टि में रखकर हम प्रस्तुत अंक में उद्धत प्रथम अंक से संबधित प्रतिक्रियाओं को समभाव से स्वीकार करते हुये अपने सुविज्ञ पाठकों तथा प्रवुद्ध लेखकों के प्रति पुनः आभार व्यक्त करते तथा उन्हें धन्यवाद देते हैं"।

हमारा प्रस्तुत अंक "जरत सकल सुरबृन्द विषम गरल जेहि पान क्रिय" उन शिव स्वरूप, वीतराग, दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में उनकी पावन जन्मतिथि महाशिवरात्रि पर प्रकाशित हो रहा है। प्रस्तुत अंक में पूज्यपाद स्वांमी जी को अति निकट से जानने वाले समाज के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान लेखकों तथा उनमें अटूट श्रद्धा रखने वाले प्रबुद्ध विचारकों एवं चिन्तकों के पठनीय निबन्ध तथा सुन्दर संस्मरण संगृहीत करने का यथा साध्य प्रयास किया गया है। स्वामी जी के बहुमुखी व्यक्तित्व के विविध रूपों यथा कोमल हृदय तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृढ़ संकल्प से युक्त वीतराग सन्यासी, निष्काम कर्मयोगी, समाज सुधारक, साहित्य सेवी, प्रवुद्ध राजनीतिज्ञ और अन्ततोगत्वा एक क्रांतिकारी साम्यवादी किसान नेता, की छवि हर क्षेत्र में अद्वितीय रूप में प्रभावित करती है। स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीयस्तर पर पर–पीड़ा निवारणार्थ संघर्ष का इतिहास कहा सकता है। उनका साहित्य स्वयं उनके "भूर्ज तरु सम संत कृपाला। पर हित नित सह विपति विशाला।।" वाले व्यक्तित्व को प्रकट करने के लिये पर्याप्त सामाग्री से युक्त है। दलितों को सुखी देखने का स्वप्न साकार करने की प्रक्रिया में उनका आत्मोत्सर्ग गोस्वामी तुलसीदास के आदर्श वाक्य परहित सरिस धर्म नहिं भाई" को चरितार्थ करता दिखाई पड़ता है। स्वामी जी सदृश पर दुख देख द्रवित होने वाले संत हृदय को ध्यान में रखकर ही संत कवि ने ऐसे हृदय की तुलना नवनीत से करते हुये प्रतीपालंकार का सहारा लेकर लिखा था :–

"संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविन्ह पर कहइ न जाना।
निज परिताप द्रवहि नवनीता। पर दुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता।।"

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि स्वामी जी का जीवन दर्शन तथा उनकी रचनाओं में निहित प्रेरक सन्देश हमारे समाज तथा विज्ञ पाठकों के लिये समान रूप से प्रेरणा दायक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा। किसी विद्वान ने कहा है कि "अच्छा,, साहित्य वही है जो आशा से खोला जाय और लाभ से बन्द किया जाय।" आप की इस पत्रिका से आशा यदि आप के लिये लाभ प्रद प्रमाणित हो सकी तो हमअपने श्रम को सार्थक समझेंगे।

हमारी पत्रिका का आगामो अंक भारतीय स्वतंत्रता दिवस की आगत वर्ष गाँठ के अवसर पर १५।८।८६ तक "भारतीय स्वातत्र्य संग्राम में ब्रह्मर्षि वंश के योगदान" को केन्द्र विन्दु (वर्ण्य विषय) मानकर प्रकाशित होगा। इसके माध्यम से मुक्ति संग्राम में योगदान करने वाले अपने समाज के उन बलिदानी वीरों तथा सेनानियों का कृतित्व प्रकाश में आ सकेगा जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवादी दासता की लौह श्रृंखलाओं को ध्वस्त करने तथा जनतंत्र का तूर्यनाद करने की अथक प्रक्रिया में अपने त्याग तथा बलिदान के गौरवपूर्ण पृष्ठ इतिहास में जोड़ कर पुनर्जागरण का अमिट सन्देश दिया है। आशा है आपका सतत सहयोग हमें निरन्तर प्राप्त होता रहेगा।

प्रधान सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

卐 ब्रह्मर्षि-समाज कानपुर 卐

संरक्षक मण्डल

(१) श्री अक्षयवर सिंह
(२) " चन्द्रभान त्यागी
(३) " दीवान बसन्तप्रकाश दत्त
(४) " ब्रह्मदेव राय
(४) " बलदेव सिंह
(६) श्री विधुभूषण राय
(७) " भागवत प्रसाद शर्मा
(८) " डा० मंगला राय
(९) " मेजर रामायन राय
(१०) " रामसुख शर्मा
(११) " डा० शौनक ब्रह्मचारी

त्रय-वार्षिक १९-१-८६ को नवनिर्वाचित कार्यकारिणी

अध्यक्ष :– श्री राजकुमार सिंह
उपाध्यक्ष :– (१) डा० मुनेश्वर राय
(२) श्री बटुक राय
महामंत्री :– श्री रामजी राय
संयुक्तमंत्री :– श्री सांवलिया राय
कोषाध्यक्ष :– श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह
प्रधान सम्पादक:– श्री विन्ध्यवासिनी सिंह
लेखा परीक्षक :– श्री आनन्द पाण्डेय

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

[१] श्री अजय कुमार राय
[२] ,, अनिल कुमार राय
[३] ,, अवधराज राय
[४] ,, अश्विनी कुमार राय
[५] ,, कमलाकान्त पाण्डेय
[६] ,, कृष्ण शरण राय
[७] ,, कवीन्द्र नारायन सिंह
[८] ,, गणश प्रसाद सिंह
[९] ,, रमा शंकर राय
[१०] श्री आर० के० सिंह (लल्लनजी)
[११] ,, राम नारायन सिंह
[१२] ,, विकास चन्द्र शर्मा
[१३] ,, विश्राम सिंह
[१४] ,, विजय कुमार मिश्र
[१५] ,, शिव प्यारे राय
[१६] ,, शिवशंकर सिंह
[१७] ,, शैलेश राय
[१८] ,, हरि शंकर शर्मा
[१९] ,, हरिद्वार सिंह

(कृपया प्रतिनिधियों का पता तथा उनके क्षेत्र की सूची समाज परिशिष्ट में देखें)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

ब्रह्मर्षि-समाज

त्रय वार्षिक
नवनिर्वाचित पदाधिकारी

१९ जनवरी, १९८६

श्री राजकुमार सिंह
साहित्य रत्न
एम० ए०, एल० एल० बी०, एडवोकेट
(सेवा निवृत्त विक्रीकर अधिकारी)
९/४१ रानीघाट, पुराना कानपुर
कानपुर—२०८००२

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

डा० मुनेश्वर राय
सहायक प्रोफेसर
कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर
G–२० राजकीय आवास कालोनी
रावतपुर, कानपुर।

बटुक राय
मुख्य तार बाबू
(सेन्ट्रल स्टेशन कानपुर)
८२/११ गोविन्द नगर ब्लाक नं० ९
कानपुर २०८००६

उपाध्यक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामंत्री

राम जी राय
E-4 एन. एस. आई कालोनी
कल्यानपुर, कानपुर
२०८०१७

साँवलिया राय
४/९ केसा कालोनी
आज़ाद नगर, कानपुर

संयुक्त मंत्री

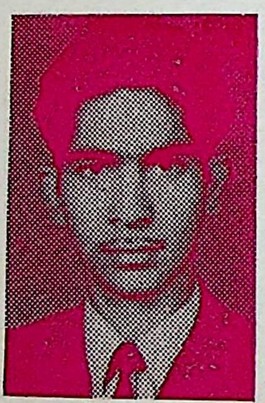

कोषाध्यक्ष

महेन्द्र प्रसाद सिंह
औद्योगिक अभियंता एच. ए. एल.
२१५/५ जे. के. कालोनी
कानपुर २०८०१०.

विन्ध्यबासिनी सिंह
अधिवक्ता (आयकर-सलाहकार)
२/४९२ आज़ाद नगर कानपुर
२०८००२

प्रधान सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

ब्रह्मर्षि-सन्देश

ब्रह्मर्षि समाज कानपुर द्वारा प्रकाशित
सामाजिक एवं सांस्कृतिक
(अनियत–कालीन पत्रिका)

पत्रिका सम्पादन समिति

✧ प्रधान सम्पादक ✧
विन्ध्य बासिनी सिंह

✧ सह–सम्पादक ✧
डा० मंगला राय
डा० रवीन्द्र नाथ राय

✧ प्रबन्ध–व्यवस्थापक ✧
विधुभूषण राय

✧ कोष-संचालक ✧
डा० गुलाब नाथ सिंह

✧प्रचार–प्रसार व्यवस्थापक ✧
राम जी राय

विशिष्ट सहयोगी एवं परामर्शदाता
डा० शौनक ब्रह्मचारी

✧ सम्पर्क सूत्र ✧
२/४९२ आजाद नगर,
कानपुर–२०८००२

अनुक्रम

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के प्रति — पृष्ठ संख्या

१. काव्यांजलि:–सर्वश्री स्व० रामधारी सिंह "दिनकर", कुलदीप नारायण "झड़प", उमानाथ, "प्रलयंकर," योगेश्वर प्रसाद सिंह "योगेश" महावीर प्रसाद शर्मा "विप्लव", मारकण्डेराय, झारखण्डेराय, रामचन्द्र शर्मा तथा प्राध्यापक अंचल कवि जी — १ से ६

२. श्रद्धांजलि:–डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्रीमती गाँधी, प्रो० राजनाथ पान्डेय सूर्यनारायण शर्मा, डा० शिवचरन सिंह, प्रो० जगन्नाथ राय शर्मा, ब्रह्मचारी वसुदेवाचार्य, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन तथा दुर्गाप्रसाद गुप्त । — ७ से १२

आलेख एवं संस्मरण

३. युग पुरुष स्वामी सहजानन्द — दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती — १३
४. स्वामी सहजानन्द सरस्वती ... आ० परमानन्द शर्मा — १६
५. एक संस्मरण — सी० राजेश्वर राव — २५
६. किसानों के लोकप्रिय नेता — योगेन्द्र झा — २७
७. जब स्वामी जी ने साम्यवाद अपनाया ... आचार्य पं० कामेश्वर शर्मा "नयन" — २६
८. सन्यासी की जीवन यात्रा ... ब्रजकिशोर सिंह — ३३
९. वैज्ञानिक समाजवादी ... शीलभद्रयाजी — ३७
१०. अन्त के वे चिर स्मरणीय दिन ... आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री — ३९
११. स्वामी जी की क्रांति का प्रतीक श्री सीताराम आश्रम विहटा ... रामचन्द्र शर्मा — ४१
१२. स्वामी जी की कलम से– (विभिन्न रचनाओं के अंश) ... — ४३
१३. जीवन वृत्त तथा कृतित्व — चौ० राजनारायण शर्मा — ४६

सामाजिक आलेख

१४. महियाल ब्राह्मण का उद्भव ... आचार्य तरणीश झा — ४१
१५. महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण ... हरिशंकर शर्मा — ५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१६ भूमिहार ब्राह्मण एक उत्कृष्ट परम्परा तथा उनका मूल स्थान मदारपुर	आचार्य कुलदीप नारायण "झड़प"	५९
१७ अयाचक ब्राह्मणों के विविध वंश	डा० रघुनाथ सिंह	६९
सांस्कृतिक निबन्ध		
१८. आरक्षण की राजनीति और वर्ण व्यवस्था	श्रीमती सुधाराय	७१
१९. भारतीय ज्योतिष की पृष्ठ भूमि	विन्ध्यबासिनी सिंह	७७
२०. विज्ञान और धर्म	बटुकराय	८३
विविध		
२१. एक समीक्षा		५६
२२. उभरती प्रतिभायें		८६
२३. समाज परिशिष्ट (नये सदस्य)		८९ से ९९

—:०:—

प्रस्तुत अंक के लिये भी पिछले अंक की भाँति प्रकाशन सामग्री बहुतायत से प्राप्त होने के कारण हमें मात्र उपयुक्त सामग्री ही अपने सीमित संसाधनों को ध्यान में रखकर प्रकाशित करनी पड़ रही है। अपने कृपालु लेखक बन्धुओं के प्रति आभार प्रकट करते हुये हम उनसे भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। इस अंक की साज सज्जा तथा विषय वस्तु के चयन में मार्ग दर्शन के लिये हम अपने वरिष्ठ बन्धु **आचार्य कुलदीप नारायण "झड़प"** तथा **चौधरी राजनायण शर्मा जी** के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिन्होंने इस वयोवृद्ध अवस्था में भी हमें सभी संभव सहायता उपलब्ध कराकर अंक को गरिमा प्रदान की है।

दूरस्थ पर निकटस्थ सक्रिय सहयोग द्वारा सामग्री संकलन में सहयोग के लिये हम प्रिय भ्रातृगण सर्व श्री डा० अनिल कुमार "आंजनेय," बलिया रामचन्द्र शर्मा गाजीपुर तथा कृष्णमुरारी शर्मा, खगौल, पटना, के ऋणी हैं जिन्होंने चित्र, प्रकाशित सामग्री आदि समय समय पर उपलब्ध कराकर हमारा श्रम भार वहन किया है। अन्ततः प्रकाशन में प्रेस संबंधी समस्त कार्यों में सतत सहयोग के लिये हम श्री **रामप्रकाश शुक्ल** "शतदल" संयोजक **श्रृंगार संध्या** कानपुर तथा **लोकेश शुक्ल** के प्रति ब्रह्मर्षि सन्देश परिवार की ओर से आभार व्यक्त करते हैं और आशा करते हैं कि सभी बन्धुओं का ऐसा ही आदर्श सहयोग हमें भविष्य में भी सदा कृतार्थ करता रहेगा।

[illegible]

प्रधान सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवतार
जन्म-शिवरात्रि
सम्वत् १९४५

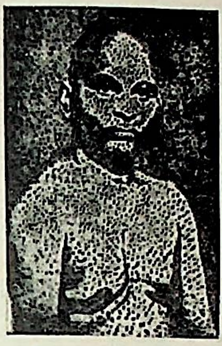

(स्वामी सहजानन्द सरस्वती)

महाप्रयाण
सम्वत् २००७
(२६ जून १९५०)

दलितों का सन्यासी

निज से विरत सकल मानवता के हित में अनुरत वह।
निज कदमों से ठुकराता मणि,–मुक्ता, स्वर्ण, रजत वह ॥
वह आया जैसे जल ऊपर आये फूल कमल का।
वह आया भूपर आये ज्यों सौरभ नभ मण्डल का ॥
लोक भाव अंजलि में सबके लिये, लिये कल्याण।
आया है, वह तेजीगति से धीर वीर गुणवान ॥
आया है, जैसे सावन के आते मेघ गगन में।
आया है, जैसे आता है मलयानिल मधुवन में ॥
हवन पूत कर में सुदण्ड ले मुण्डित भाल विरागी।
आया है नव–पथ दिखलाने दलितों का सन्यासी ॥
आया है शरचाप उठाये राग क्रांति का गाते।
मानवता पर पड़े हुये पर्वत को धूल उड़ाते ॥

राष्ट्र कवि स्व० रामधारी सिंह "दिनकर"
(श्री अनिल कुमार "आंजनेय," के सौजन्य से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द के प्रति

आवाहन

वे अगस्त्य थे सागर सोखा, गिरि का गर्व गिराया।
पचा लिया इल्वल नरभक्षी, झंझा सा लहराया ॥
जो पतझड़ में नववसन्त का, संदेशा ले आया।
परवशता की तमस धरा पर, दिव्य ज्योति बन छाया ॥

जिसकी जीवन-ज्योति आज भी, जीवन पथ दरसाती।
उस प्रेरक आनन्द मूर्ति की, याद सभी को आती ॥
भाव सुमन झड़ रहे वृन्त से, श्रद्धांजलि देने को।
उमड़ रहा श्रद्धा प्रवाह, छलकों से छू लेने को ॥

भूतल छोड़ गयीं गंगा जी, उन्हें यही बतलाने।
धरा प्रदूषण व्याप्त हुई, फिर आओ उसे बचाने ॥
एक बार फिर से आ जाते, क्रांति सफल हो जाती।
गिरि गिर जाते, सागर पटते, सौम्य भूमि सुख पाती ॥

तुम ऋषि थे, तुम शिव विभूति थे, करुणा थे साकार।
दीन-हीन-शोषित-पीड़ित-हित, प्रभु के युगावतार ॥
भारत का बल कृषक वर्ग फिर दलित हो रहा आज।
आओ उतर सहज सन्यासी, रख लो अपनी लाज ॥

•

कुलदीप नारायण 'झड़प'
लिलकर, बलिया (उ० प्र०)

प्रणति-पुष्प

ज्योतिर्धर, ज्योतिष्कर, जन जय के आख्याता।
दलित – दीर्ण – दंशित – दोहित – दाहित – युग त्राता।
अश्रु – आर्द्र अवनी के हेमिल – हास – विधाता।
स्वामी सहजानन्द नव्य नभ के संधाता।

तड़िच्छैल, पावक – झर, वात्या – पुरुष अनाहत।
युगयोद्धा अक्लांत, अजर, अविजेय ध्वजोन्नत।
क्लेश – कुंठ कोटिक कंकालों के कण्ठस्वर।
रुद्ध–चरण सत् के हुंकर्ता तुम विगतज्वर।

क्षुधा – पिपासा – रोग–शोक की शापित भूपर,
तुम रचने आये समता का स्वर्ग ताप हर।
भव से भीत न तुम गिरि–गह्वर के सन्यासी,
अखिल धरा के आशीर्वक्ता, मुक्ति – प्रयासी।

तपः पूत तेजोमय, तमोजयी भू-भूषण।
शत–शत अभिनन्दन, अकलुष युगपुरुष यशोधन।

—प्री० उमाकान्त राय "प्रलयंकर"
"प्रलयंकर"

(स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान, पटना की
१९८२–८३ पत्रिका से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द के प्रति

"श्रद्धा सुमन"

तप कर जिसने आलोक तरुण फैलाया,
उस ऋषि को आज नमन कर पुलकित काया ॥
जकड़ी जंजीरों में जब जननी रोयी
जनता जड़वत अपने ही घर में सोयी
किसने आजादी का सुरम्य स्वर गाया ॥ उस० ॥

धरती—सेवा में रत किसान रहते थे
दारुण शोषण औ' उत्पीड़न सहते थे,
संगठन-सूत्र दे किसने उसे जगाया ॥ उस० ॥

ब्रह्मर्षि-वंश विस्तार किया पथ जिसने
संस्कृत-संस्कृति आधार दिया रथ जिसने
दे करके 'कर्म-कलाप' कर्म सिखलाया ॥ उस० ॥

'गीता में हृदयम्' का रहस्य समझाया
गर्जन से शोषक-सिंहासन थर्राया
सन्यास मार्ग का नवल रूप दिखलाया ॥ उस० ॥

वह देश भक्त, रक्षक था मानवता का,
फहराया निर्भय होकर राष्ट्र-पताका
छू सकी न जिसको पद लिप्सा की छाया ॥ उस० ॥

हो जहाँ सहज आनन्द, कालिमा भागी,
वह क्रान्ति-दूत था दलितों का अनुरागी
कैसे उसको जा सकता कभी भुलाया ॥ उस० ॥

—आशुकवि श्री योगेश्वर प्र० सिंह 'योगेश'
विक्रम—८०११०४ संपादक (मागधी)
पटना (बिहार)

काव्यांजलि

स्वामी सहजानन्द शलाकापुरुष धरा का धन्य;
क्रांतिपथी, युगद्रष्टा, सृष्टा, था वह विरल अनन्य ।
उसकी वाणी में गूंजी थी दलितों की हुंकार ।
उसके क्रिया-कलापों में थी क्रांति हुई साकार ।

चलता रहा कर्म-पथ पर वह अप्रतिहत्, बेरोक ।
और धरा पर रहा बांटता सदा पुण्य आलोक ।
वह दधीचि था, जिसने जग को दिया अस्थि का दान ।
ऋषि-परम्परा का भी उसने किया अमित उत्थान ।

शोषित-दलित-उपेक्षित जन का था वह भाग्य विधाता ।
उसको देकर जन्म, धन्य यह सचमुच भारत माता ।
संस्कृत वाङ्मय का अध्येता, कर्मयोग का ज्ञाता ।
वह था कुशल विचारक-चिंतक नवयुग का निर्माता ।

उसके सिंहनाद से कांपे शोषक-अत्याचारी ।
इस धरती पर था वह सचमुच पुरुष एक अवतारी ।

आज धरा के आर्त्तनाद में उसका ही आवाहन ।
कोटि-कोटि कर बढ़े आज करने को उसका पूजन ।

तपःपूत उस महाप्राण की जय हो, जय हो, जय हो ।
उसके आशीर्वादों से यह धरा मुक्त-निर्भय हो ।

—श्री महावीर प्र० शर्मा 'विप्लव'

卐卐
卐卐

नींद कहाँ इनकी आखों में जो धुन के मतवाले हैं ।
गति की तृषा तभी बढ़ती, पड़ते पग में जब छाले है ॥ "दिनकर"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे जन जन के स्वामी सहजानन्द मेरा ले शतशः प्रणाम

मैं हूँ एक भिखारी शिक्षक, तू है जन-मानस का माली,
मैं हूँ एक अकिंचन सेवक, तुम में है युग-युग की लाली,
मेरे भावों के सुमनों को, लो, यद्यपि हैं खाली खाली,
लेकिन मेरे उर अन्तर से, श्रद्धा की फूटी है लाली।
हे युग-युग के कर्णधार, तू मेरा ले शतशः प्रणाम ॥

तू भारत माँ का सच्चा सेवक, तू युग द्रष्टा, तू युग त्राता,
तेरी वाणी का अमृत-पान, युग-युग मानव करता जाता
तेरे विचार का सुधा-सार, युग युग प्लावित करता जाता,
तेरे विचार का सुधा-पान, जन-जन घर-घर करता आता।
हे जन-जन के सच्चे प्रहरी, तू मेरा ले शतशः प्रणाम ॥

जब राष्ट्र गगन के प्रांगण में, घनघोर कालिमा छायी थी,
जब भारत माँ के आँचल में घनघोर घटाएँ आयी थीं,
तब तेरी ओजस्वी वाणी ने, चिर प्रकाश फैलाया था,
जिसमें माँ का आँचल चमका, भारत माँ बनी सुहागिन थी :
हे जीवन के शाश्वत गायक, तू मेरा ले शतशः प्रणाम ॥

किस भांति करूँ तेरा अर्चन, कुछ समझ नही यह आता है,
भावों के उदधि उद्वेलन में, मन डूब डूब-सा जाता है,
सोचा करता वह चिर प्रकाश, जो अगजग का रखवाला है,
मानवता का सच्चा सेवक, स्वामी आँखों का तारा है।
हे राष्ट्र गगन की अमर ज्योति, तू मेरा ले शतशः प्रणाम ॥

मार्कण्डेय राय एम० ए०

शत शत नमन

शत शत नमन तुम्हे ब्रह्मर्षि, एक बार फिर आ जाओ।
खोये हुए पटल मानस पर, नव प्रवाह फिर भर जाओ ॥
चमक उठे कलुषित धरती फिर, मैला आँचल हट जाये।
जग जीवन की हरीतिमा में, भेदभाव सब छँट जाये ॥
ब्राह्मण—ब्राह्मण की ये दूरी, सदा–सदा को कट जाये।
अन्तर--प्रान्तर की भी खाई, आज यहाँ की पट जाये ॥
ब्रह्मर्षि वंश विस्तार की, फिर से नव रचना कर दो।
पुनर्जागरण की वेदी में, 'ऐक्य' मंत्र का स्वर भर दो ॥
एक बार झंकृत कर दो फिर, शास्त्रार्थ की शहनाई।
ब्रह्मनाद का शंख बजाकर, शुरु करो तुम अगुआई ॥
याद करें अपने स्तर को, एक बार हुँकार करो।
समता की लौ फूट पड़े, ऐसा हममें फिर प्यार भरो ॥
ऐसी सुबुद्धि दो हे स्वामी, हम सब माला के फूल बनें।
मंगल नर्तन का हो विहान, उन्नति का एक वितान तने ॥
हे महामनुज, हे कालजयी, करता मैं तेरा शत वन्दन।
मैं ही क्या, 'ब्रह्मर्षि समाज' करता है शत शत बार नमन् ॥

झारखण्डे राय
चन्द्र शेखर आजाद कृषि वि० वि०, कानपर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द के प्रति

(वंशज के उद्‌गार)

लेखक था पत्रकार था विद्वान, था वक्ता।
योगी था यती था गजब इन्सान सहजानन्द ।।
गीता के निखिल मर्म को हिन्दी में रखा खोल।
गीता हृदय में जिसने वह विद्वान सहजानन्द ।।

आजन्म मरण कर्मकाण्ड के वृहत् संग्रह।
कृति 'कर्मकलाप' का है लिक्खाड़, सहजानन्द ।।
ब्रह्मर्षियों के वंश विस्तार का वेत्ता।
"ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर" कर्तार सहजानन्द ।।

सरकार से चिढ़ता था जमींदार से भिड़ता था।
कृषकों तथा श्रमिकों का था पतवार सहजानन्द ।।
था मानवों का मानवों द्वारा जहाँ शोषण।
वहाँ दुष्टदलन हेतु था हनुमान सहजानन्द ।।

जीवन के समर में जो कभी था नही हारा।
लड़ता रहा शैतान से तूफान सहजानन्द ।।
दलितों के अर्थ जिन्दगी उसकी जुझार थी।
सचमुच जुझौतियों में था सरताज सहजानन्द ।।

कहता था जलें हड्डियाँ मेरी अगरबत्ती।
बन के मगर होवे जगत्कल्याण सहजानन्द ।।
मन में, वचन में कर्म में अद्‌भुत समानता ।।
जिसमें मिली वह था अभय सम्राट सहजानन्द ।।

अपना पराया खत्म हो, सब एक हों प्राणी।
यह चाहता था ईश का अवतार सहजानन्द ।।
शिवरात्रि के शुभ पर्व पर इस वंशज के उर की,
ले भावना के हार का उपहार सहजानन्द ।।

चिरकाल से जो भाव दबे से थे अन्तर में।
पहली बार वे सब हैं बने उद्‌गार सहजानन्द ।।
तन मन वचन सब है शिथिल चहुँ ओर अंधेरा।
मझधार फँसी नाव, कर उद्धार सहजानन्द ।।

—रामचन्द्र शर्मा
बड़ीबाग, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन-नेता नृसिंह स्वामी सहजानन्द सरस्वती

जब यह धरती अश्रु - सलिल - प्लावित हो जाती,
आहों से आकाश सिसकता विह्वल होकर,
पवन सन्न, अवसन्न दिशायें हो जाती हैं,
जब जल - तत्व न प्यास बुझा पाता है,

जग–जीवन की अग्नि - शिखा कुंठित हो जाती,
दिवा - गगन में महाघोर घन उमड़ - घुमड़ कर,
तम बरसा कर, शपाओं की कड़क - कौंध से,
जग में भय, आतंक, निराशा भर जाते हैं ;

तब दैवी सम्पदा लिए नृसिंह आता है ,
होता है वह सदा अग्रसर दृढ़ नर – शंकर,
करके चकनाचूर हिरण्य – कशिपु – दुर्मद नर,
करता है जन – त्राणविश्व – वैभव–भोगी से ।

वह भूखी जनता की करता है अगुवाई,
शोषित जन – वेदना उसे व्याकुल करती है ,
भूखों का भगवान यही रोटी है , यारों ,
कहकर वह शोषक गढ़ पर धावा करता है ।

दुखिया का दुख – दर्द हृदय से सही जानता ,
वह दरिद्र नारायण की करता उपासना ,
सदा कृषक – मजदूरों का जो भाग्य – विधाता ,
बनकर, उनका विजय – लाल – ध्वज फहराता है ।

वह स्वातंत्र्य– समर का मतलब समझाता है—
पतित राष्ट्र को उत्थित करना जोर लगाकर ,
जो अधिकार—च्युत उत्पीड़ित पद—मर्दित हो ,
उसे दिला अधिकार उसे करना संरक्षित ।

ऐसे ही नृसिंह रहे स्वामी सहजानन्द ,
जो रहे जूझते जीवन भर ही 'जुल्मों से,
जिनके पीछे भारत के किसान चलते थे',
जो भारत –सपूत जन — सेवी थे जन – नेता ।

प्राध्यापक–अचल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धांजलियाँ

ब्रह्मर्षि-सन्देश

स्वामी जी (स्वामी सहजानन्द सरस्वती) एक शक्तिशाली व्यक्ति थे। उन्होंने जनता की बड़ी भलाई की। उनकी मृत्यु से बिहार का जनजीवन रिक्त पड़ गया और अब उसकी पूर्ति में पर्याप्त समय लगेगा

—स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद
भू० पू० राष्ट्रपति

स्वामी सहजानन्द सरस्वती भारतीय किसान आन्दोलन के जनक एवं जन नेता थे। भूमि सुधार के लिए जो आंदोलन स्वामी जी ने शुरू किया था, उसे हम लोगों को पूरा करना चाहिए।

—स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी
भू० पू० प्रधानमन्त्री
(स्वामी जी के ८६वें जन्मदिन पर)

सत्य के प्रकाशक महामानव

राजा हरिश्चन्द्र के समान ही १८वीं शदी के हरिश्चन्द्र राजा राम मोहन राय तथा १९वीं शती के भारतीय सुकरात महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा २०वीं शती के भारतीय ईसामसीह स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नाम आधुनिक भारत में सत्त के महान् आग्रहियों में शीर्षस्थ हैं। ×× इन तीनों महापुरुषों के व्यक्तित्व की समष्टि में ही हमें एक उस अलौकिक एवं दैवीरूप छटा का भी दर्शन होता है जो अन्य किसी सम-सामयिक एक या एकाधिक व्यक्तियों की ज्योति में इस हद तक देखने को नहीं मिलती है।

दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती का ही अवतरण हुआ था। इन तीनों के रूप में सत् चित् आनन्द की समष्टि सक्षात् सच्चिदानन्द का नर तन में अवतार था। ×× महर्षि दयानन्द के पश्चात् दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के समान दीप शिखाजैसी प्रखर बुद्धि, प्रचण्ड मेधा, तड़ितवत् अखण्ड ब्रह्मचर्य अग्नि समान प्रज्वलित स्वभाव एवं महा सागर सदृश अगाध पाण्डित्य वाला क्रान्तिकारी समाजवादी तथा मौलिक-चिन्तन वाला संन्यासी दूसरा अबतक भारत में हुआ ही नहीं है।

जय प्रकाश नारायण ही नहीं, स्वयं महात्मा गांधी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, नेताजी सुभाषचन्द्र तथा पं० जवाहर लाल तथा पुरी श्रृंगेरी के शंकराचार्य आदि भी उनकी गुरुता का आदर करते थे।

स्वामी सहजानन्द ने भारतीय संस्कार, चिन्तन और मनीषा को गाँधी वाद से विलग कर उस दिशा की ओर एक नए मोड़पर पहुँचा दिया, जहाँ पहुँचे बिना हम भारत को इसके वर्तमान चक्रव्यूह से न उबार ही सकते हैं और न विश्व में भारतीय गौरव की पुनः स्थापना कर सकते हैं।

भारतीय तत्वदर्शन या ब्रह्म विद्या के पुनःजागरण काल में राजा राम मोहन राय का आविर्भाव यदि ऊषा वेला की अरुणाभा समान था, तो महर्षि स्वामी दयानन्द का अवतरण सुप्रभात था। ×× तथा स्वामी सहजानन्द ने वेदान्त के पुरुषार्थ को अपने जीवन में मध्याह्न कालीन सूर्य की क्रियात्मक-प्रखरता प्रदान की।

—प्रो० राजनाथ पाण्डेय
(त्रिकाल जयी पृ० ७-१०,९८ ९९ से सभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी जब सिमरी आये

स्वामी सहजानन्द सरस्वती सन्यासी होकर भी जन नेता थे। उनका जीवन किसी एकांत कुटी में संसार से निरपेक्ष रहकर नहीं, समाज में रहकर भारत के निवासियों के दुःख-दर्द की समस्या का समाधान ढूँढ़ते हुए बीता। वे समाज को विकृत करने वालों के विरुद्ध सिंह बनकर गर्जना करते थे और स्पष्ट कहने में किसी की परवाह नहीं करते थे, एक बार जब वे पटने में सर गणेशदत्त सिंह के यहाँ ठहरे हुये थे, हथुआ-नरेश ने यह सूचना दी कि 'वे कल स्वामी जी से मिलना चाहते हैं।' यद्यपि स्वामी जी उसी दिन बाहर जाने वाले थे, किन्तु महाराज के अनुरोध पर एक दिन के लिए अपनी यात्रा स्थगित कर दी।

दूसरे दिन जब हथुआ नरेश ने कोई सूचना नहीं दी तो उन्होंने स्वयं टेलीफोन से पुछवाया कि बात क्या है? महाराज ने कहला दिया कि आज फुरसत नहीं है कल मिलूँगा।

इस सूचना से स्वामी जी बिगड़ गए। उन्होंने कहा—'बड़ा बेहूदा है। कल मुझे रोक लिया आज कहता है फुरसत नहीं।'

वहाँ उपस्थित लोगों में बाबू रजनधारी सिंह भी बैठे हुये थे। उन्होने कहा—'स्वामीजी क्या कह रहे हैं? बड़े आदमी के लिए ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिए।'

यह सुन कर स्वामी जी आग बबूला हो गये और बोले—'सुनों रजनधारी! मैं बड़ी तोंद वालों को बड़ा आदमी नही मानता। मैं उसे बड़ा मानता हूँ, जो झोपड़ी में रहता है; पर जिसमें श्रद्धा है।"

यह बात उन दिनों की है, जबकि समाज में राजा महराजाओं की सबसे अधिक प्रतिष्ठा थी और स्वामीजी उन दिनों समाज-सुधार के कामों लगे हुए थे। (चतुर्मुख पृ० ३१ से साभार)

—(पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा)

महान क्रान्तिकारी

स्वामी जी प्रकृतत: क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी "क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा" नामक पुस्तक में लिखा है—"किसी चीज या व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करके कोई नई प्रणाली जारी करने को भी क्रान्तिकारी परिवर्तन कहते हैं, पर हम सिर्फ राज्य-क्रान्ति को क्रान्ति मानेगे। यहाँ राज्यक्रान्ति व्यापक अर्थ में प्रयुक्त है, इस पुस्तक में आगे स्वामी जी ने लिखा है "अब तो क्रान्ति का काम है उसे उस यंत्र को चूर-चूर कर देना।" इसी में यह भी कहा है—"जहाँ क्रान्ति की आग एकाएक धधक उठती है, वहाँ हस्तान्तरण की स्थिति नहीं आ सकेगी। वहाँ तो बल प्रयोग से ही सत्ता हस्तगत की जा सकती है।" स्वामी जी ने भगवद्गीता पर भाष्य लिखा है, जो अब तक के प्रवचनों से सर्वथैव भिन्न प्रकार है। पटना से कई वर्षों तक "लोक-संग्रह" नामक दैनिक समाचार पत्र का सम्पादन भी किया था। अन्तिम जीवन तक किसानों के लिए लड़ते रहे। (मणिमय कलकत्ता से साभार) —आचार्य पं० परमानन्द शर्मा

स्वामी जी अध्ययन के बाद ही सामाजिक क्षेत्र में आए और नई चेतना तथा जागृति का प्रचार एवं प्रसार करने लगे थे। उनके भाषणों में क्रांति की चिनगारी होती थी और क्रियात्मक व्यवहार में विद्रोह। उनका स्वर विद्रोह का अंगार था। उनका क्रियात्मक कार्य-कलाप क्रान्तिकारी था। उनकी व्यवहार-समता थी, निःसंगता का प्रतिरूप। यही कारण है कि उनके तेजोमय व्यवहार को सभी सहन नहीं कर पाते और अलग-अलग जा पड़ते, क्या समाज-सेवी नेता और क्या समाज-नायक। स्वामी जी दो बातों से बहुत नफरत करते थे। प्रथम झूठे आडम्बर से और दूसरे शोषण एवं उत्पीड़न से। आडम्बर देखकर परंपरागत साधु-समाज से अलग रहे और उत्पीड़न देखकर राजनीति में किसान-मजदूर आन्दोलन के अग्रणी नेता बने। ('जय किसान' बक्सर, ३० अप्रैल १९७३)

—श्री ठाकुर शिव वचन सिंह

और मंडल-कांग्रेस, बक्सर।

अध्यक्ष—किसान कांग्रेस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेष्ठ साहित्यकार

स्वामीजी अखिल–विश्व के थे। वे केवल बिहारी या उत्तर प्रदेशीय नहीं कहे जा सकते फिर भी उनके प्रिय-निवास स्थानों में शाहाबाद के सिमरी और सुल्तानपुर ग्राम निःसंकोच रूप से माने जा सकते हैं। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन शाहाबाद के पश्चिमांचल से ही प्रारम्भ किया था और उसी से सटी उनकी जन्मभूमि भी है। वे श्रेष्ठसाहित्यकार, योगी, दार्शनिक, नेता और सिपाही भी थे। हमने अधिकतर उन्हें नेता ही मान लिया है। अतः उनके दार्शनिक और साहित्यिक स्वरूप का प्रायः अवलोकन ही नहीं कर पाते। स्वामीजी का साहित्य में कितना ऊँचा स्थान है इसको समझने के लिए उनकी कृतियाँ अनेक हैं, जैसे—कर्मकलाप, ब्रह्मर्षिवंश-विस्तर, झूठाभय और मिथ्याभिमान, ब्राह्मणसमाज की स्थित, क्रांति और संयुक्त मोर्चा, किसान कैसे लड़ते हैं, महारुद्रका महाताणडव, गीता-हृदय, मेरा जीवन-संघर्ष किसान-सभा के संस्मरण, जमींदारी-प्रथा का खात्मा कैसे हो, खेत-मजदूर, झारखण्ड के किसान, किसान क्या करें इत्यादि। स्वामीजी समाजसुधारक, युगपुरुष, राज-नीतिक-नेता, दार्शनिक और प्रौढ़–साहित्यिक थे। उनकी रचानायें केवल मनोरंजन के लिए नहीं होती थीं। वे साहित्यिक प्रगतिशीलता के प्राण थे। आधुनिक तथा प्राचीन बिहार का कोई भी लेखक स्वामीजी के समकक्ष नहीं रक्खा जा सकता।

गीता-हृदय जैसा अनूठा ग्रन्थ भगवान तिलक के बाद स्वामी सहजानन्द ही लिख सके। वे हिन्दी–साहित्य के गगन में अत्यन्त प्रकाश मान नक्षत्र हैं। स्वामी जी एक सफल संपादक भी थे। अपने जीवन–काल में समय–समय पर उन्होंने कई पत्रों का सफल सम्पादन भी किया था। शाहाबाद की भूमि ऐसे महापुरुष का पालन-पोषण कर अपने हृदय में असीम आह्लाद का अनुभव करती है।

स्वामीजी का गीता-हृदय, लोकमान्य तिलक के गीता-रहस्य का पूरक है। तिलक जी ने अपनी गीता में हीगेल, कान्ट, शोपेनहावर, ग्रीन, हाब्स आदि पाश्चात्य भौतिक–शास्त्रियों के विचारों से गीता की तुलना कर उसका उत्कर्ष प्रदर्शित किया था किन्तु मार्क्सवाद और गीता धर्म की तुलना का अवसर उन्हें प्राप्त न हुआ था। स्वामी जी ने इस विषय पर भी अपनी लेखनी संचालित कर गीता धर्म की सर्व व्यापकता और सुन्दरता प्रतिपादित कर दी है। यह ग्रन्थ इतनी प्रौढ़, परिमार्जित एवं हृदयग्राही शैली में लिखा गया है कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। स्वामीजी ने लेनिन द्वारा व्याख्यात मार्क्स के विचारों को उद्धृत कर यह दिखला देने की कोशिश की है कि मार्क्स तथा उसके अनुयायी गीता में कहे गये धर्म के विरोधी नहीं है। वे वर्तमान धर्म और धर्म–संस्थाओं को मालदारों का हथकंडा बताते हैं और इसीलिए इसका विरोध करते है। यदि धर्म अपने व्यक्ति-गत स्वरूप में आध्यात्मिक-उन्नति के लिए हो तो मार्क्स-वादी उसके विरोधी नहीं होंगे। इस प्रकार गीता और भौतिक मार्क्सवाद की पारस्परिक तुलना करके स्वामी जी ने आधुनिक युवकों के हृदय में गीता का महत्त्व अंकित करने का प्रयत्न किया है। उनकी शैली व्यक्तिगत और अनुपम है। उनका गीता हृदय हिन्दी संसार को एक अनुपम देन है। (चतुर्मुख पृ० १३ से साभार)

—प्रो० जगन्नाथ राय शर्मा, एम० ए०

उदारता की मूर्ति

श्री स्वामीजी ने एक कमरे में मुझे बुलाया। हम दोनों के अतिरिक्त तीसरा व्यक्ति वहाँ पर कोई नहीं था। श्री स्वामी जी ने कहा—'कहिए।' मैंने कहना प्रारम्भ किया। श्री स्वामीजी शांतचित से एक घंटे तक मेरी बातें सुनते रहें। मेरी करुण कहानी मेरा भावी कार्य-क्रम सुनकर श्री स्वामी जी का हृदय ऐसा पिघला कि धारा बह चली। नेत्र सजल हो गये और उसी में एक लाख रूपये की बात भी बह गयी।

श्री स्वामी जी ने कहा–तुम हमारे हो और तुम्हारा विचार हमारे विचारों के अनुकूल है। इस निष्कर्ष पर तुम्हारी करुण कहानी सुनकर मैं पहुँचा हूँ। जाओ मैं निश्चित समय पर अपने छपे भाषण को साथ ही लेता आऊँगा। बिहटा से सफल मनोरथ होकर मैं अयोध्या आया। अधिवेशन हुआ और शानदार रूप में हुआ। गोवर्द्धन मठ के शंकराचार्य जी ने उद्घाटन भाषण किया। श्री स्वामी जी का अध्यक्षीय भाषण हुआ। उसके बाद हरिहर क्षेत्र में बिहार 'विरक्त-मंडल का अधिवेशन नवम्बर सन् ४९ में ही श्री स्वामी जी को अध्यक्षता में हुआ।" ('विरक्त' मंगलवार १८ अक्टूबर १९६६, अयोध्या से साभार)

(श्री ब्रह्मचारी वासुदेवाचार्य, महामंत्री अ० भा० विरक्त-महामंडल अयोध्या।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments

from

Rzd. B. D. BALI
CHAIR-MAN

卐

MOUNT SHIVALIK BREWERIES LTD.

卐

Regd. Office & factory :
MOHANGRAM (Near Chandigarh)
Bhankarpur,
Distt. PATIALA (Punjab)

Head Office :
"PRABHAT-KIRAN"
17, Rajendra Place,
NEW DELHI-110008

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नये भारत के नये नेता—स्वामी सहजानन्द सरस्वती

—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

होश संभालते ही जिसे योग, वैराग्य और वेदान्त ने अपनी ओर खींचा, जिसे मायामय संसार छोड़ अद्वैत ब्रह्म में लीन होने की एक समय बड़ी साध थी, किसको पता था कि वह संसार के सबसे उपेक्षित, शिक्षा-संस्कृति में सबसे पिछड़े भारतीय किसानों को अपने पैरों पर खड़ा करने की प्रतिज्ञा लेगा। वह मेधावी बालक के तौर पर शिक्षा के जिस रास्ते पर जा रहा था, उससे वह विश्वविद्यालय का एक सम्मानित स्नातक बनता, कानून पेशा वकील, सरकारी नौकर या प्रोफेसर बनता; मगर रास्ता एका-एक मुड़ा, और वह दूसरे—भारतीय प्रचीन विद्या के रास्ते पर चला गया। वह विद्वान संन्यासी के तौर पर अपनी प्रौढ़ प्रतिभा और व्यापक ज्ञान से एक सर्वमान्य सन्यासी सैकड़ों छात्रों और शिष्यों का गुरु होता; मगर ब्राह्मणों के मिथ्याभिमान ने व्यक्ति नहीं, एक गौरवपूर्ण जाति को अपमानित करना चाहा; और वह उसे बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने अपने दण्ड को उठाया और कुछ ही सालों में भूमिहारों में वह भाव भर दिया कि ब्राह्मणों को अपनी शेखी छोड़नी पड़ी। लेकिन समय आया, जब उसकी तीक्ष्ण प्रतिभा ने बतलाया कि उसका कार्य-क्षेत्र इतना संकुचित नहीं होना चाहिए, भूमिहार या ब्रह्मणों के मानने या न मानने से देश के आत्म-सम्मान का सवाल हल नहीं हो सकता और उसने असहयोग आन्दोलन में पड़कर एक व्यापक क्षेत्र में अपनी शक्ति लगा दी। फिर एक समय आया; जब कि राजनीति के भीतर भी जात-पाँत के नाम पर एक जाति ने दूसरी जाति को दबाना चाहा, उसके हृदय में भूमिहारों के लिए किए अपने काम की स्मृति से कुछ लोगों ने नाजायज फायदा उठाया, और एक बार फिर उसी संकीर्ण क्षेत्र में वह जाता दिखाई पड़ा। लेकिन, उसका हृदय पीड़ित गरीब जनता की मार्मिक व्यथा को सबसे पहले अनुभव करता और विचलित हो जाता। उसे इस षणयन्त्र का पता लगते देर न लगी कि किस तरह सत्ताधारी धनिक जात-पांत के नाम पर, उसको भ्रम में डाल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। वह फिर विस्तृत क्षेत्र में आया फिर जेल गया। वहां पक्के गाँधी-शिष्यों की करतूतों को देखकर उसके देह में आग लग गई।

राजनीतिक आन्दोलन में उसे कोई भी आशा नहीं रह गयी। जिसने योग साधन, पवित्र जीवन और मोक्ष प्राप्ति के लिए दर-दर ठोकरें खाईं, वर्षों तकलीफें सही, उसके मन में इस तरह का भाव आना जरूरी था। वह सबको संत के रूप में देखने की आशा तो नहीं रखता था, मगर यह आशा जरूर रखता था कि गाँधी जी के विश्वसनीय भक्त कुछ ज्यादा ईमानदार होंगे। उसने अपने जानते राजनीति से सदा के लिए सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। वह नहीं जानता था कि उसके दिल में एक भारी कमजोरी है; वह गरीबों के ऊपर होते अत्याचार को सहन करने की शक्ति नहीं रखता। हुआ वही और तब वह नाव को डुबोकर पहले पार उतर गया। भारत के किसान आन्दोलन को उठाने और आगे बढ़ाने में जो काम उसने किया है, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

वह व्यक्ति है स्वामी सहजानन्द।

('नये भारत के नये नेता' से साभार)

× × ×

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का नाम सुनते ही मेरे स्मृति पटल पर उस महान् व्यक्ति की स्मृति साकार हो उठती है जो अपने जीवन में कभी भी सिद्धांत के प्रश्न पर किसी से कोई समझौता न कर सका जो निरन्तर अडिग तथा अविचल रूप में एकाकी रहते हुए भी करोड़ों मूक किसानों का अन्यतम प्रवक्ता बना रहा।

—दुर्गा प्रसाद गुप्त

(चतुर्मुख, स्वामी सहजानन्द अंक से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

DAL MILLER'S ASSOCIATION

LAL BANGLAW, KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग पुरुष स्वामी सहजानन्द सरस्वती

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, स्वामी सहजानन्द-स्मारक-न्यास
प्राचीन पाण्डे पट्टी, बक्सर (भोजपुर) बिहार।

महापुरुषों का परिचय उनके कार्यों से होता है। चरित्रवान पुरुष ही समाज के प्राण और मस्तिष्क होते हैं। यह सत्य है कि धर्मपयस्विनी का पुनीत प्रवाह सदा एकरस नहीं रहता, उसकी धारा काल क्रमानुसार अवरोध को पाकर किंचित शिथिल होती है, किन्तु समय पाकर सत्य अपनी दिव्य संजीवनी शक्ति के सहारे अपने पथ की विभिन्न रुकावटों को दूर करने में समर्थ होता है। अंधेरी रात के गत होने पर दिव्य अंशुमाली अपनी अलौकिक ज्योति से जिस प्रकार भूमण्डल को दीप्तमान बना देता है, वैसे ही भगवान की दिव्य विभूतियां संस्कृति जान्हवी को स्पन्दनहीन देखकर सहसा मृतप्राय जातीय जीवन को अपनी अलौकिक प्रतिभा से अनुप्राणित कर देती हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, विशेषतः १८५७ की राष्ट्रीय क्रान्ति के बाद कुछ ऐसी दिव्य विभूतियां भारत में अवतरित हुयीं हैं जिनके आविर्भाव से युगान्तर उपस्थित हुआ है और राष्ट्र की सोयी आत्मा जाग उठी है, मानवता ने नई करवटें लीं हैं और नई दिशा पाकर जनता नवयुग के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ी है। हमारे यतिराज स्वनाम धन्य महर्षि प्रवर श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ऐसी ही दिव्य विभूतियों में थे जिनकी प्रतिभा को न काल की धूलि कभी म्लान कर सकती है और न प्रतिकूल परिस्थितियों की बयार जग लगा सकती है। हमारे समाज का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि जो वड़े सिंहासनों पर कुण्डली मारकर बैठे हैं, उनकी पूजा चलती है या जिनके हाथों में सत्ता की नकेल रहती है, उनके पांव पर फूल चढ़ाये जाते हैं। किन्तु, जो अपनी सारी ऊर्जा को जनहित में निर्व्याज लगा डालते हैं, उनकी ओर दृष्टि बहुत कम जाती है।

पूज्यपाद स्वामी जी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद में शादियावाद परगने के देवाग्राम में संवत् १९४५ वि० की महाशिवरात्रि के दिन वुधवार को कश्यप-गोत्रीय जुझौतिया ब्राह्मण कुल में अवतरित हुए थे। इस्लामी शासन के समय आपके पूर्वज बुन्देलखंड के जुझौती क्षेत्र को छोड़कर कभी गाजीपुर में आ बसे थे। यहाँ कालान्तर में भूमिहार कुल के समाजधर्मा द्विजों से आपके परिवार का संबंध हो गया। आरंभ से ही देवा के जुझौतियों का संबंध सरयू पारीण ब्राह्मणों तथा भूमिहार ब्राह्मणों से भी था। विक्रम संवत् १९६८ में आपने काशी जाकर स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती से विधिवत् सन्यास ग्रहण किया। आपने भगवान की खोज में घर बार त्यागा, तीर्थों को ढूंढ़ा, जंगल, गुफा और कंदराओं की खाक छानी। काशी, मिथिला, नदिया-शांति आदि स्थानों में आसन मारकर, वेद, षड्दर्शन एवं शास्त्र पुराणों को हृदयंगम किया-उन्हें चाटा और हजम किया, किन्तु कहीं भगवान के दर्शन नहीं हुए। उन्ही के शब्दों में उनका भगवान किसान-मजदूरों में मिला। उनके निम्नांकित शब्दों से स्पष्ट होता है कि वे असली वेदांती और जनता जनार्दन के सच्चे पुजारी तथा युग प्रवर्तक जन नायक थे।

दर्शन जीवन और जगत के चरमसत्य की खोज है। इसका मूल मनुष्य की प्रकृति में है और इसकी प्रेरणा विश्व के रहस्य में। स्वामी जी केवल एक दार्शनिक या जीवन और जगत् के द्रष्टामात्र नही थे, प्रत्युत् दोनो के उद्धारक थे। वे सत्य के अवतार कहे जा सकते हैं। वे सत्य के प्रतिपादक ही नहीं उसके प्रचारक भी थे। स्वामी जी की आत्मकथा 'मेरा जीवन संघर्ष' से झलकता है कि वे संस्कार सम्पन्न पुजारी और धार्मिक विभूति थे।

पूजा मनुष्य का ब्रह्म (दिव्य) तक पहुंचने का प्रयत्न है। धर्म वह अनुशासन है जो अन्तरात्मा को स्पर्श करता है और हमें बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है, काम क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता है, नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने के महान कार्य के लिए साहस प्रदान करता है। व्यक्ति और शाश्वत के बीच लुप्त हो गये सम्बन्ध को पुनः स्थापित करना ही धर्म का लक्ष्य है। यदि मानव जीवन शाश्वत के साथ संपर्क स्थापित करने की अदम्य लालसा से प्रेरित न हो, तो उस जीवन का कुछ अर्थ नहीं है। धर्म का मूल एक प्रकार की विस्मय की अनुभूति में और स्वयं जीवन के शाश्वत रहस्य में, इसकी चारुता और शक्ति में, जब हम किसी तृप्तिदायक वस्तु को प्राप्त करते हैं, तब होने वाले परम उल्लास के अनुभव में हैं, और इसके अभाव में मनुष्य मृतक सदृश है। "अरी गार्गी! * जो इस अविनश्वर को बिना जाने इस संसार से प्रयाण करता है, वह द्ररिद्र है, दया का पात्र है, दूसरी ओर जो इस अविनश्वर का ज्ञान प्राप्त करके इस संसार से प्रयाण करता है, वह ब्राह्मण है।"

अपनी आत्म कथा के 'योग और श्रमण' प्रकरण पृष्ठ ५४-५५ में स्वामी जी नें अपने प्रारंभिक जीवन की मनो दशा और वैचारिक संघर्ष की जो तस्वीर खीचीं है उससे उनकी अन्तरदृष्टि और उनके निरन्तर प्रगतिशील विलक्षण व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। स्वामी जी लिखते हैं :—

"संन्यास लेने के पूर्व मेरे हृदय में रह रह के यह विचार आता था कि– 'आखिर मेरा यह पढ़ना लिखना सिर्फ इसलिए है न कि धन कमाकर खाऊ, पहनूँ या दूसरों को खिलाऊँ-पहनाऊँ? लेकिन जंगल के जानवरों और पशुओं को कौन खिलाता है? वे तो स्वयं न खेती करते हैं, न खाने पीने की साम्रगी जुटाने की चिन्ता रखते हैं। तो भी अच्छी तरह खाते पीते ही हैं। फिर मैं क्यों इसके लिए फिक्र मंद होकर मरुँ? मुझे तो कोई दूसरा ही खिलाये-पिलायेगा। यही विचार मुझे परेशान कर रहा था और आखिर इसी ने मुझे घर बार सें जुदा किया। मैं तो खाने पीने की चिन्ता कतई छो[ड़] कर भगवान की एक मात्र प्राप्ति के लिए ही दिन-[रात] प्रयत्न करने के विचार से संन्यासी बना और जंगल [की] शरण लेने को उद्यत हुआ। दूसरा कोई भी ख्याल [मेरे] दिल दिमाग में न था। मैं तो इसी में मस्त था।"

"आज जो अर्थ गीता का मैं समझता हू उससे निरा[ला] ही समझता था उन दिनों। नहीं तो वह हालत नहीं [हो]ती ....चाहे कितना ही उच्च कोटि का प[रोप]कारी काम क्यों न हो, उस समय मेरी दृष्टि में [वह] मात्र सांसारिक काम ही था। फर्क इतना ही था [कि] देश सेवा आदि को तब जनता तक न था कि वह [कोई] खास चीज या काम है, जिससे मेरा कोई संबंध [होना] चाहिए। मेरा तो एक मात्र कर्तव्य था भगवान की प्राप्ति। मैं तो पागलों की तरह उसे ही ढूँढ़ने निकला था।"

यह लम्बा उद्धरण देने का तात्पर्य है कि किस प्र[कार] स्वामी जी ने अनुभव के प्रकाश में वेदांत का म[नन] चिन्तन किया और वेदांत का असली अर्थ समझा [और] तदनुसार बाद में उनका समस्त जीवन, एवम् सभी [कार्य] असली वेदांत के प्रतीक बन गये। सर्वात्मदर्शन या यों [कहें] कि भगवान के विराट दर्शन के फलस्वरुप उनका [सबसे] तादात्म्य संबंध स्थापित हो गया। बाद में उनके [जीवन] के अन्तिम दस वर्षो में उनकी सेवा में रहकर मैंने [देखा] कि वे सोऽहं की अखण्ड वृत्ति में सदा मस्त रहते थे। [उनके] वेदांत की प्रचण्ड दीप शिखा उनके हृदय मंदि[र में] अहर्निश जलती रहती थी।

१९४४ ई० अ० भा० किसान सम्मेलन के विजय[वाड़ा] (आन्ध्र) अधिवेसन में अध्यक्ष पद से बोलते हुए [उन्होंने] कहा था— "आज मैं भारत के उन करोड़ों नर नारि[यों] किसानों के प्रति श्रद्धा भक्ति प्रकट करने के लिए ख[ड़ा हूँ] जिन्होंने अपने निःस्वार्थ त्याग से—उन्हीं के लिए [नहीं] कर, जिन्होंने उनका सामाजिक, आर्थिक और राजनै[तिक] तौर पर शोषण किया है और कर रहें हैं और [उनका] खून चूस चुके हैं— मुझे और मेरे जैसे हजारों को [अपना] पुजारी वना लिया है। ये वे ही हैं जो अपने हृ[दय का] पसीना कर शासन व्यवस्था के कामों और उ[...]

*"यो वा एतदक्षरं गार्गि अविदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रेति स कृपणः
अथ एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रेति स ब्राह्मणः।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आराम के लिए जो उन्हें निर्दयता पूर्वक पैरो तले रौंदते हैं, राजमहल, किले और गृह निर्माण करते हैं। सिर्फ एक ही श्रेणी के लोग-किसान ही हैं, जिनके अनन्त त्याग पर यह दुनिया टिकी है।"

स्वामी जी महान क्रान्तिकारी थे। उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन एवं दिव्य आत्मानुभूति के सहारे उपनिषद, गीता तथा षड्दर्शनों को उनके वास्तविक अर्थ में समझा और लोक संग्रह की दृष्टि से ज्ञान पूर्वक कर्म किया। वे कहते हैं कि ज्ञान पूर्वक किये कर्म साधारण कर्मों की श्रेणी में नही आते, वे तो भगवान् की पूजा आराधना हैं। धर्म के संबंध में अपनी भावना व्यक्त करते हुए वे अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन संघर्ष' के पृष्ट ३४६ में 'धर्म की बात' प्रकरण में लिखते हैं:---"यह धर्म का प्रश्न इतना पेंचीदा और खतरनाक है कि लोगों को इससे भ्रम हो सकता है।............... कहते हैं कि आत्मा की भूख की शांति के लिए धर्म का अविष्कार हुआ। फिर उसके दो आकार हुए—एक वैज्ञानिक और दूसरा व्यावहारिक। पहले में दर्शन और दार्शनिक विचार आते हैं उन्ही विचारों को असली जामा पहनाने के सिलसिले में बाहरी तथा व्यावहारिक पूजा-पाठ आदि आते हैं।"

स्वामी जी जीवन मुक्त परम बीतराग संन्यासी थे। मुक्त पुरुषों के लिए भी लोक संग्रह के लिए कर्म करना परम कर्त्तव्य है। उन्होंने ईश्वर को ढूंढ़ने के लिए श्रद्धा भक्ति के साथ घर बार का त्याग किया। त्याग से ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। शास्त्र की इस मर्यादा के अनुसार स्वामी जी ने वस्तुत. अपने जीवल काल में ही जीवन मुक्ति प्राप्त की। ऋषियों के इस आदर्श को हम उनके जीवन में अक्षरस: चरितार्थ होते देखते हैं कि :-

"त्यजेदेकं कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
जनपदस्यार्थे त्यजेद् ग्रामंआत्मार्थं पृथ्वीं त्यजेत्।"

स्वामी जी ने श्रीमद्भागवत् और गीता के विचारों के अनुसार अपने कर्तव्य के पालन को ही भगवान् की पूजा माना है। श्रीमद्भागवत् में राजा रहूक्षण और जड़भरत के संवाद में कहा गया है कि- स्वधर्म आराधनमच्युतस्य यदीहमानो विजहात्यघौघम" (५/१०/२३)। इसका आशय यह है कि "अपने कर्तव्यों का पालन करना ही भगवान की पूजा है, जिसके चलते पाप का पहाड़ भी खत्म हो जाता और नजदीक नहीं आता है।"

यहां 'स्वधर्म' और गीता में 'स्वकर्म' कहा है। इन दोनों में 'स्व' शब्द देकर यही बताया गया है कि खुद कर्मों के अच्छे बुरे होने की कोई बात नहीं। अपने-अपने कर्म ही पूजा बन जाते हैं। उनकी बाहरी बनावट और रूपरेखा कोई चीज होती नहीं। स्वामी जी के प्रत्येक कर्म कामना संकल्प से रहित, ज्ञान की दीप्त अग्निशिखा में तपाये हुए शुद्ध कंचन की भांति थे। उन्हें पूर्ण विरक्ति थी। वे राग द्वेष से रहित पूरे स्थित प्रज्ञ योगी थे जो सदा आत्म-तुष्ट और मस्त रहते थे। चिन्ता उन्हें छू तक नहीं गई थी।

समाज सेवा में ही स्वामी जी ने मुक्ति के आदर्श की चरितार्थता पाई। वे अपनी आत्मकथा के पृष्ठ १६६–१६७ में लिखते हैं कि—'पहले मेरी धारणा दूसरी ही थी। जहां तक मुक्ति या ज्ञान का प्रश्न था, मैं उन्हीं स्वार्थियों में से एक था जो एकान्त में जाकर जिन्दगी गुजार देते और ध्यान धारणा ही जिनके जीवन का काम है। शुरू में तो इसी बात को लेकर घर छोड़ा था और जंगलों की खाक छानता फिरा—कहां कहां नहीं भटका। श्रीमद् भागवत् के कुछ वचन मिले जिन्होंने मेरी आंखों का पर्दा खोल दिया। नरसिंह और प्रहलाद के प्रसंग में एक श्लोक भागवत में आता है जिसमें भक्तवर प्रहलाद ने नरसिंह भगवान् को उत्तर देते हुए स्पष्ट कर दिया है कि जनता की सेवा ही भगवान की सेवा और आधराना है। वह कहते हैं—

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्ति कामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थ निष्ठाः।
नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एको
नान्यत्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात् ऋषि मुनि लोग तो स्वर्थी बनकर अपनी ही मुक्ति के लिए एकान्तवास करते हैं। लेकिन मैं ऐसाकदापि नहींकर सकता। सभी दुखियों को छोड़ मुझे केवल अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मैं तो उन्हीं के साथ रहूँगा, मरूँगा जिऊँगा।

इस प्रकार समाज और देश की सेवा–भावना से अनुप्राणित स्वामी जी उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते गये। वे १९२० ई० में पटना में मौलाना मजहरुल हक के मकान पर ठहरे हुए गांधी जी से मिले और बातचीत के बाद निश्चय किया कि "मुझे भी राजनीति में फौरन कूद पड़ना चाहिए। इसलिए नहीं कि देश का उपकार होगा। बल्कि इसलिए कि तभी मैं सच्चा सन्यासी बन सकूंगा। अभी तो कच्चा हूँ।'

इस प्रकार स्वामी जी ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में तीन बार जेल यात्रा की वह १९२२ ई० में गाजीपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे और कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन से लौटते समय गाजीपुर में पकड़े जाकर पहली बार जेल में दाखिल हुए। आगे चल कर उन्होंने अपना मुख्य क्षेत्र बिहार को बनाया और वहीं से १९३० एवं १९४० ई० में दूसरी और तीसरी बार जेल गये।

भारतीय किसानों की दुर्दशा और उनकी दुर्गति से द्रवीभूत होकर किसानों के उद्धार की ओर ध्यान दिया। उन्होंने बिहार से प्रारम्भ करके सारे भारत के विभिन्न प्रान्तों में किसान संगठन का कार्य किया, कराया और इस प्रकार एक अखिल भारतीय किसान सभा बनाई। वे भारत में किसान जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं। स्वामी जी की ८६वीं जयन्ती के अवसर पर ११ मार्च १९७५ को अपने सन्देश में भारत की प्रधान मन्त्री स्व० इन्दिरा गांधी ने,कहा था कि "स्वामी सहजानन्द सरस्वती भारतीय किसान आंदोलन के जनक एवं जन नेता थे। उन्होंने देश के अन्तर्गत जो भूमि सुधार आन्दोलन का शुभारम्भ किया था उसे हम लोगों को पूरा करना चाहिए।"

स्वामी जी 'मनस्येकं वचनस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्, के मूर्तिमान् स्वरूप थे। उहोंने कथनी और करनी मे कभी अन्तर नहीं आने दिया। यही कारण था कि सत्य के उस नैष्ठिक पुजारी से. कथनी भिन्न और करनी भिन्न वालों से व्यवहार क्षेत्र में कभी एक रस नहीं पटी। स्वामी जी छल प्रपंच और स्वार्थ लिप्सा से इसीलिए सदा बेलाग दूर रहे।

स्वामी जी उच्चकोटि के मानवतावादी और करुणा के अवतार थे। स्वामी जी का प्रत्येक कार्य सदा श्रद्धा, प्रेम और सच्चाई का प्रतीक था। वे न्याय के सात्विक, सजग प्रहरी और अद्वैत के उपासक थे। स्वामी जी निष्काम कर्मयोगी अथवा सच्चे ज्ञानयोगी और पक्के वेदांती के उज्वल स्वरूप थे।

स्वामी जी राष्ट्रीय काँग्रेस, किसान जागरण और विद्यार्थी आन्दोलन के सर्वमान्य प्रगतिशील नेता तो थे ही अंत में उन्होंने विरक्त महामण्डल की अध्यक्षता स्वीकार कर विरक्तों के रंगमंच से उन्हें भी एक बार कस कर ललकारा और धर्म की दुनिया में जो अन्धेर मची है, ठगी और पाखण्ड, पाप, धूर्तता, तृष्णा का नंगा नाच हो रहा है उसे मिटाने की कोशिश की। साधु सन्तों को विरक्त महामण्डल के रंगमच से धर्म का वास्तविक अर्थ बताया तथा शास्त्रों के तात्पर्य को बताकर उन्हें लक्ष्य तक पहुचाने वाला असली मार्ग दिखाया। नकली वेदांत को छोड़कर असली वेदान्त को अपनाने की सलाह दी। १९४९ ई० की रामनवमी ९ अप्रैल को अयोध्या में विरक्त महामण्डल के महाधिवेशन में उन्होंने अध्यक्षता का आसन ग्रहण किया और महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। उस अधिवेशन में पुरी के तत्कालीन शंकराचार्य अनन्तश्री श्री स्वामी कृष्ण भारती तीर्थ जी भी उपस्थित थे। एक दिन के अध्यक्ष स्वामी जी थे और दूसरे दन के अध्यक्ष शंकराचार्य जी थे।

स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति के उन्नयन के अनेक महान् कार्य किये। उन्होंने कर्मकाण्ड जगत् में अपना 'कर्म कलाप' नामक ग्यारह सौ पृष्टों का अनूठा ग्रंथ लिखकर प्रसारित किया जिससे समाज का भारी उपकार हुआ। उन्होंने गीता दर्शन पर गंभीर चिंतन वाला मौलिक और अभूतपूर्व भाष्य ग्रंथ लिखा जो गीता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय के नाम से १९४९ ई० में पहलीबार किताब महल जीरो रोड इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्होंने निम्निलिखित पुस्तकें लिखीं जो समय समय पर प्रकाशित हुयीं और उससे समाज की सर्वाङ्गीण उन्नति हुई। वे पुस्तकें निम्नलिखित हैं।

१. ब्रह्मर्षि वंश विस्तर	७. क्रांति और सयुक्त मोर्चा
२. ब्राह्मण समाज की स्थिति	८. किसान कैसे लड़ते हैं ?
३. कर्म कलाप	९. किसान क्या करें ?
४. झूठा भय मिथ्या अभिमान	१०. किसान सभा के संस्मरण
५. गीता हृदय	११. खेत मजदूर
६. मेरा जीवन संघर्ष	१२. झारखण्ड के किसान

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् डा० वाल्टर हाउजर ने जो वर्जीनिया विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग का अध्यक्ष रहे हैं, भारत आकर स्वामी जी के संबंध में शोध कार्य किया है। उनके शोध का विषय संभवत: भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वामी सहजानन्द सरस्वती की देन' था। इस पर दिल्ली विश्वविद्यालय से उन्हें पीएच० डी० की उपाधि भी प्राप्त हो चुकी है। यह शोध प्रबंध अंग्रेजी में है और प्रकाशित भी हो चुका है।

पूज्यपाद स्वामी जी जिसके लिए अवतरित हुए थे अपना वह कार्य पूरा कर आषाढ़ कृष्ण ११, संवत् २००७ वि० को मुजफ्फरपुर में ब्रह्मलीन हो गये। स्वामी जी जून के अंतिम सप्ताह में दरभंगा जिले के देवपार गाँव में जो पूसा रोड के पास है, अपने परम भक्त पं० युमना कार्मी के यहाँ गये थे। वहां से लौटते समय कुछ घंटो के लिए वे सामान्य रुप में पक्षाघात के शिकार हुए और मुजफ्फरपुर पहुंच कर मुचकुन्द शर्मा वकील के निवास स्थान पर विश्राम कर रहे थे। पौने दो बजे रात को उन्होंने अपने सेवक ब्रह्मचारी रामश्रम (अब स्वामी शिवानन्द सरस्ती) से मदद लेकर आसन लगाया। मुंहवन्द क्रिया और धीरे धीरे श्वास ऊपर चढ़ाया। बस प्राण ब्रह्मरंध्र से बाहर हो गये। यही उस युग पुरुष के संघर्षमय जीवन की संक्षिप्त कहानी है।

बक्सर, भोजपुर (बिहार) में स्वामी जी का एक भव्य स्मारक बन रहा है जहाँ शीघ्र ही उनकी संगमर्मर की दिव्य प्रतिमा स्थापित होने वाली है।

B–3/175, राज गुरुमठ, शिवाला घाट, शिवाला
वाराणसी

मेरा यह स्वभाव है कि जिस बात में पड़ता हूँ उसमें विघ्न बाधायें आने पर मुझे उससे विमुख करने के बजाय और भी संलग्न कर देती हैं। हां यदि समझा बुझाकर कोई मनाना चाहे तो बात दूसरी है। मगर दबाव के आगे झुकना तो मैंने जाना ही नहीं। यही बात अब भी पाई जाती है। इसलिए बहुत से लोग मुझे जिद्दी और तानाशाह तक कह डालते हैं। परन्तु मैं इसे अपनी एक अपूर्व शक्ति समझ इसमें गर्व अनुभव करता हूँ। इसका रहस्य सलझ न सकने वालों की नादानी पर कभी-कभी मन ही मन हँसता भी हूँ। [पृ० ३०] स्वामी जी की आत्मकथा।

—'मेरा जीवन संघर्ष' से साभार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE Grant-2

With best compliments from :

CHANDRA TAILORS

58 / 52, Birhana Road,

Kanpur.

With best compliments from :

HOTEL HOLIDAY INN

GUMTI NO. 5

G. T. ROAD, KANPUR.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

आचार्य परमानन्द शर्मा—मन्त्री
बंग प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन

देहाभिमान विषयक चिन्ता के साथ ही कर्म विषयक चिन्ता उपस्थित होती है। शास्त्रीय आदेशों से जो व्यक्ति विशेष अनुगत हैं, वे भली प्रकार जानते हैं कि पंचकोष के आहार के लिए कर्म, चित्त की प्रसन्नता के लिए कर्म एवं ऐहिक उन्नति, अनभीष्ट की अप्राप्ति, पारत्रिक सुख अथवा मुक्ति के लिए कर्म इत्यादि क्रियमान वैध कर्म समूह देह, प्राण, मन, ज्ञान, आनन्द का पोषण करते हैं। यह देवी सूक्त की चिन्तनप्रणाली है। सांख्य योग तथा निष्काम कर्म योग भगवत्गीता की चिन्तनप्रणाली है। इन वैध कर्मों के चिन्तन के दो प्रमुख आधार हैं—प्रथम संस्कार एवं द्वितीय शिक्षा। इन दोनों की सम्पूर्ति से ही देहधारी में कर्म वैशिष्ठय दृष्टिगोचर होता है। आज जिसकी चरितावली के अंकन का विशेष आग्रह है; हमारे इन चरित्र नायक में ऐसा ही कर्म वैशिष्ठ्य ओत-प्रोत था। संस्कार इनकी आत्मा से संपृक्त था और शिक्षा इनको निजी अध्यवसाय एवं स्वाध्याय से प्राप्त थी। संस्कार के तंतुओं पर जब शिक्षा के आघात लगते हैं, तब हृदय मधुर आनन्द ध्वनि से व्याप्त होकर विकसित होता है और उसकी विशालता अपरिसीम हो जाती है। इस व्याप्ति भाव के मूल में सदाचार निश्चित्त रूप से व्यवस्थित रहता है एवं सर्व सद्गुण सम्पन्नता, शक्तिमानता, बहुज्ञता, प्रयत्नशीलता आदि अकेकानेक गुण भी उपस्थित रहते हैं। इन समस्त गुणों का समुच्चय हमारे चरितनायक में आश्चर्यकारक था। साथ ही ये नियम और व्यवस्था की सृष्टि के नियन्ता थे। अगाध चातुर्य और अनुपम शक्ति एवं अपूर्व कर्मकौशल से चकित कर देने वाले व्यक्तित्व के प्रकाश पुंज थे। आदर्श को विशुद्ध यथार्थ रूप देने वाले ये महान सूत्रकार थे। ये थे श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य दण्डि स्वामी सहजानन्द सरस्वती।

नियमित व्यायाम से शरीर सुदृढ़ होता है, किन्तु स्वामी जी का शरीर संस्कारतः वंशपरम्परागतः सुदृढ़ था। मन जोशीला था। चित्त उत्साह पूर्ण था। बुद्धि तीक्ष्ण एवं नैतिक विशुद्धता से परिपूर्ण थी। अहं प्रवलतम था। प्रवृत्ति कार्यक्षम थी। विचारों में प्रौढ़ता, स्थिरता, सुबोधता एवं परिपक्वता थी। भावों में परदुःख कातरता, उदारता और सरलता थी। हृदय में धीरता तथा दृढ़ता थी। जैसे आघात के साथ प्रत्याघात होता है, वैसे ही संकट के साथ मानव सशक्त होता है—समर्थ होता है। अशक्त को पराजित होना पड़ता है और निर्बल को अनैकित होना पड़ता है। इसीलिए उत्तम जन संकटों के आने पर उसकी किंचित भी चिन्ता नहीं करते। अपार धैर्य के साथ उसकी प्रतिद्वन्दिता करते हैं। ऐसे पुरुषोत्तम थे हमारे स्वामी जी। इनके जैसे महज्जनों के लिए महात्मा भर्तृहरि का कथन है :—

'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्ध मुक्तमजना न परित्यजन्ति ॥'

अर्थात् विघ्नों के द्वारा बार-बार प्रतिरोध होने पर भी उत्तम पुरुष एक बार प्रारम्भ किया हुआ कार्य कभी त्यागते नहीं। "और भी कहा है :—

"मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुखं न च सुखम् ॥"

अर्थात मनस्वी कर्मयोगी जब कार्य करने के लिए एक बार तत्पर हो जाता है, तब फिर वह आने वाले सुख दुखों को कुछ नहीं गिनता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता के दूसरे अध्याय के अन्त में सांख्य बुद्धि और योगबुद्धि को स्थित-प्रज्ञ के पहले की भूमिका कहा गया है। सांख्यबुद्धि को आत्मज्ञान अथवा ब्रह्मविद्या शास्त्र कहा है तथा योग बुद्धि की आत्मज्ञान के अनुसार जीवनकला कहा है। दोनों के योग से ब्रह्मविद्या परिपूर्ण होती है। ब्रह्मविद्या अथवा अध्यात्म विद्या को मानव जींवन की पूर्णता की विद्या कहा है। इस पूर्णता के लिए तत्वज्ञान और आचरण दोनों का योग अनिवार्य है। यदि इन तथ्यों का ज्ञान नहीं है, तो फिर प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन स्थितप्रज्ञ की इन दोनों भूमिकाओं के एकीकरण का समुज्ज्वल दृष्टान्त था। ये अपनी योग बुद्धि (जीवन कला) से कर्त्तव्य का निश्चय करते थे। निश्चय के पश्चात् एकाग्रता पूर्वक उस साधना में तन्मय हो जाते थे—फल पर कभी ध्यान नहीं देते थे। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" इस प्रवचन के ये स्थितप्रज्ञ प्रतीक थे। किन्तु जिस कर्त्तव्य में सामूहिक अनैतिकता दृष्टिगोचर होती थी, उसे तत्काल ही त्याग देते थे। अन्यथा कर्त्तव्य साधन में निमग्न रहने की उनकी वृत्ति अथवा निष्ठा सहस्रमुख श्लाघनीय थी। सदाचार पूर्ण एवं नीति युक्त मार्ग कभी परित्याग नहीं कर सकते थे।

"उदेति सविता ताम्रः ताम्र ऐवास्तमेति च।
संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥"

अर्थात सूर्य उदय होते समय भी लाल रहता है और अस्तंगत समय भी लाल ही रहता है। ऐसे ही सुख या दुख जो भी सम्मुख आवे, महत्तम व्यक्तित्व में कथमपि अन्तर नहीं पड़ता। ऐसे उत्तम व्यक्तित्व के लिए महात्मा भर्तृहरि का कथन हैं:

"निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मीः समाविशतु गंच्छतु वा यथेष्टम् ॥
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥"

अर्थात् नीति निपुण पुरुष निन्दा करें, चाहे बड़ाई करें। सुख-सम्पति आवे, चाहे चली जाय। मृत्यु आज ही हो जाय, चाहें युगान्तर में हो, पर धीर पुरुष नीति मार्ग से एक डग भी नहीं हटते। नीति का उच्चध्येय सामने रख कर, उसके आचरण का एकनिष्ठ प्रयत्न करते हुए स्वामी जी अपनी जीवन यात्रा में कभी विचलित नहीं हुए।

स्वामी जी का ध्येय था कि मानव जीवन का मुख्य प्रयोजनीय तो असन और वसन ही है। इनमें असन देहरक्षा के लिए अपरिहार्य है; किन्तु वसन किंचित मुख्य होने पर भी विशेषतः मान, यश, प्रतिष्ठा दम्भ, दर्प, मदमत्तता प्रभृति मिथ्याभिमान सम्बन्धी कृत्रिमता का प्रलेप मात्र है; जो व्यक्ति या समाज के जीवन को पंकिल एवं उत्कट बना देता है। इसका सामाजिक परिणाम यही होता है कि मानव केवल अपने जीवन के लक्ष्य और प्रयत्न को ही नष्ट नही करता, वरंच अर्थ सम्पद् और उपकरण के यत्न की कर्म-ताड़ना में अपने को नष्ट कर देता है। कर्म केवल प्रयत्न है, वह लक्ष्य नहीं हो सकता। गति के गन्तव्य गणित को लेकर मनुष्य प्रायः ही भूल कर बैठता है। शरीर-यात्रा के पक्ष से कर्म का परिहार नहीं चल सकता, यह सत्य है; किन्तु इस मुख्य उद्देश्य को कुकर्म विघ्नित कर देता है। आधुनिक काल के इस प्रकार अकर्म-विकर्म ने समाज-जाति एव अन्तर्जातीय जीवन क्षेत्र में जिस कुकर्म चक्र की रचना की है; उसके आवर्त्त में गच्चा खाकर वर्तमान युग का मनुष्य वैज्ञानिक सभ्यता के समस्त आडम्बर के रहते हुए भी हतश्वास गतश्वास हो रहा है इसीलिए प्रत्यंक युग के, प्रत्येक देश के अन्तंदृष्टि-सम्पन्न मनीषियों ने कर्म के सम्बन्ध में सावधान रहने की अमृत वाणी उच्चरित की है, जो कर्म के द्वारा जीवन विकास की धारा को सुपथ से परिचालित करने में सदैव सहायता करती है। इसका अनुसरण करने के लिए समाज में अनेक प्रकार की नीतिविधियों का प्रचलन है।

स्वामी जी का जन्म ऐसे शुभ मुहुर्त में हुआ था कि उसके प्रभाव से उन्हें जन्मज़ात वैराग्य प्राप्त था। एक छोटा किन्तु मनोरम गाँव दुलहपुर स्टेशन के सन्निकट गाजीपुर जनपद में है। उसका नाम देवा है। गांव में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डेढ़ हजार बीघे की खेती है। हमारे चरित्र नायक के पिता-मह एक अच्छे जमींदार थे। परिवार विभाजन से खेत के टुकड़े होते गये। इनके दादा एक प्रशंसनीय घुड़सवार थे। बढ़िया पीढ़ी के घोड़ों को पालने का उन्हे व्यसन था। इनके पिता श्रीमान बेनी राय बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व के गृहस्थ थे। ये अपने पिता के सबसे छोटे पुत्र थे। सम्वत् १९४५ वि० की शिवरात्रि को ये भूमिष्ठ हुए। पारिवारिक नाम श्री नौरंगराय था। तीन वर्ष की अल्पायु में मातृ-वियोग हो गया। इनकी चाची ने जो मौसी भी लगती थी, बड़े प्यार से इनका लालन पालन किया। अस्तु, मौसी को ही ये मां कहते थे। इनके पिता जी कठोर प्रकृति के व्यक्ति थे। उग्र स्वभाव के कारण पुत्रों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं था। गृहस्थी का काम करना, भैंस का दूध दही घी खिलाना, व्यायाम से शरीर तगड़ा बनाना आदि ही उनका सिद्धान्त था। हमारे चरितनायक भी दस वर्ष तक उपर्युक्त कार्यों के अनुकूल भैंस चराते कसरत करते रहे। किन्तु; गाँव के अधिकांश लड़के जब पढ़ने लगे, तो इनके पिता ने भी इन्हे जलालाबाद के प्राथमिक विद्यालय में भरती करा दिया। उस समय देवागाँव में कोई विद्यालय नही था। इनकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण थी। गणित में इतने तेज थे कि विद्यालय के आध्यापकों का ध्यान इस कुशाग्र बुद्धि प्रतिभा सम्पन्न छात्र की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। आध्यापकों के आकर्षण का परिणाम यह हुआ कि लोअर अपर प्राइमरी की छह वर्षों की पढ़ाई तीन वर्ष में ही समाप्त कर दी। अपर प्राइमरी की वार्षिक परीक्षा में जिला प्रतियोगिता में ये ही प्रथम आये थे। उसी समय ये रामचरित मानस और भगवद्गीता, का नित्य पाठ करते थे। पठन-पाठन के साथ पूजा अर्चना में भी तल्लीन रहने लगे।

सं० १९५९ वि० में गाजीपुर तहसीली मिडिल स्कूल में पढ़ने के लिए नाम लिखाया। अपनी श्रेणी में सर्वदा प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। सभी विषयों में इनकी समान गति थी। स्मृति भी प्रौढ़ थी। मिडिल की वार्षिक परीक्षा में युक्त प्रान्त भर में इनका छठवां स्थान रहा। गाजीपुर में इनकी अर्चना आराधना का क्रम और अधिक विस्तृत हो गया। आजमगढ़ के अमृतराय अध्यापक के सहवास की कसौटी पर इनकी प्रतिभा और भी अधिक विभासित हुई और स्थानीय शिक्षित वर्ग में इनका सम्मान बढ़ता ही गया। साथ ही पूजा और व्रतोपासना की ओर इनकी प्रवृत्ति और भी अग्रसर हुई। मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण होने पर इनको छात्रवृत्ति मिलने लगी। और अब ये गाजीपुर जर्मन मिशन हाई स्कूल अर्थात् आजकल के सिटी हाई स्कूल में अध्ययन करने लगे। मारवाड़ी मुहल्ले के महादेव-मन्दिर की एक कोठरी में रहने लगे। गंगा-स्नान और महादेव की अर्चना ये दोनों ही इनकी मनोऽभिलषित इच्छाएँ पूरी होने लगी। हाई स्कूल में इनके मनोनुकूल एक विषय संस्कृत भी अनिवार्य हो गया। इसमें बिना किसी के परामर्श के ही इतना परिश्रम किया कि पहले के कण्ठस्थ देवी सूक्त के मन्त्रों, शिव-महिम्न के स्तोत्रों, गीता के कितने ही सन्दर्भित श्लोकों के अर्थ स्वतः स्पष्ट होने लगे।

इधर इनके परिवार के अधिकारी इनके व्रतोपवास से इतने व्यग्र हुए कि एक प्रकार से बलात् ही सं० १९६२ वि० में इनका ब्याह कर दिया। इनकी धर्मपत्नी एक ही वर्ष में अचानक दिवंगत हो गयीं। अस्तु स्वामी जी के क्रमानुष्ठान में कोई अन्तर नहीं उपस्थित हुआ। हाई स्कूल के अध्यापकों में सूरज प्रसाद परम भक्त व्यक्ति थे। उनमें इनकी अत्यधिक निष्ठा थी। सं० १९६४ वि० में वे उच्चतर विद्यालय के अन्तिम वर्ष के विद्यार्थी थे। उत्तीर्ण होने पर निश्चय ही इन्हें छात्रवृत्ति मिलती। परिवार की सहायता के बिना भी ये केवल छात्रवृत्ति के बल पर विश्वविद्यालय की उच्चतम डिग्री प्राप्त कर सकते थे। लेकिन; इन्हे दूसरी ही ओर से उच्चतम स्तर पर पहुँचना था। उसी वर्ष ये भागकर बनारस पहुँचे और सिद्ध अपारनाथ के मठ में उपस्थित हुए। इस मठ के कई गिरि संन्यासी एक बार गाजीपुर गये थे और उनसे इन्होंने मठ का पता ले लिया था। उनके बहकावे में ये पहले गिरिनामी संन्यासी हुए। इसके पहले भी एक बार भागकर बनारस और काकोरी तक गये थे किन्तु वर्षा ऋतु से घबराकर लौट आये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ दिनों बाद परिवार को मालूम हुआ तो इनके भाई बनारस से इन्हें घर ले आये। अध्यापक सूरज प्रसाद और उस देहात के प्रसिद्ध फलाहारी खाकी बाबा और अनेक परिजन-पुरजनों ने समझाया; लेकिन कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हुआ। पिताजी ने साथ चलने की धमकी दी, तो भी स्वामी जी तैयार हो गये। अन्ततोगत्वा हारकर सबने इनका मार्ग छोड़ दिया। स्वामी जी के बाल बन्धु श्री हरिनारायण भी इनके साथी हो गये। दोनों योग सिद्धि के लिये योगी गुरु की खोज में पैदल झूसी (प्रयाग) पहुँचे। वहां स्वामी जी ज्वराक्रान्त हो गये। झूसी मठ के एक साधु ने लौह भस्म के बदले लोहा पीसकर पिला दिया। स्वामी जी का शरीर फुंसियों से भर गया। एक मास वहीं पड़े रहे। जब कुछ राहत मिली, तो फिर पैदल यात्रा कर चित्रकूट आये। कुछ फल नहीं अर्थात् कोई योगी गुरु नहीं मिला। चित्रकूट से लौटकर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर का दर्शन किया। वहाँ से चले तो राह में अंतरिया ज्वर आने लगा। बरसात के दिन थे। वहाँ अनपढ़ देहात के लोग इतने डरपोक थे कि संन्यासी जानकर ठहरने की जगह नहीं दी। फतहपुर के मार्ग में एक मन्दिर में ठहरे। सबेरे उठे तो ज्वर नहीं था। शरीर चंगा था। पैदल यात्रा और मधुकरी वृत्ति के बल पर कानपुर से कालपी, उरई, झांसी, ललितपुर होते हुए बीना से सागर पहुंचे। नर्मदा नदी पार की। नरसिंहपुर होते मानेपुर (जब्बलपुर) पहुँच गये। यहां हरिनारायण के परिचित एक व्यक्ति मिले। बड़े भक्त प्रवृत्ति के थे। इन्हीं के यहां एक पखवारे विश्राम किया। मानेपुर में किसी ने ओंकारेश्वर के कमलभारती महायोगी का नाम बताया। खाँडवा होते हुए ओंकार पहुँचे। वे महायोगी वहाँ के जंगल में रहते थे। वहाँ पहुँचने पर उनके शिष्यों ने बतलाया कि वे तो अखण्ड समाधि ले चुके हैं। वहाँ से निराश लौटे तो मालवा, इन्दौर भ्रमण करते उज्जैन पहुँचे। बीस दिन महाकालेश्वर की पुण्य भूमि में व्यतीत कर, पद-यात्रा से मथुरा, हाथरस, हरद्वार घूमते हुए ऋषिकेश पहुंच गये। कैलास-आश्रम के एक संन्यासी से वेदान्त मुक्तावली पढ़ने लगे; किन्तु स्वामी जी को समझने में कठिनाई होती थी। अस्तु; पढ़ाई छोड़कर केदारनाथ गये। वहाँ से तुंगनाथ पहुँचे। यहीं पर श्री हरिनारायण का संग छूट गया। फिर भ्रमण करते हुए कुछ दिनों बाद किसी प्रकार काशी लौट आये और संस्कृत के अध्ययनन के लिए दृढ़ संकल्प कर लिया।

सं० १९६६ वि० से अविरल संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया। अपारनाथमठ के निकट एक संन्यासी पाठशाला में प्रसिद्ध व्याकरणी पण्डित हरिनारायण तिवारी से सिद्धान्त कौमुदी प्रारम्भ की। ढ़ाई वर्ष तक लगातार मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। वहीं शंकर भट्टाचार्य से न्याय पढ़ते थे। पण्डित नित्यानन्द जी से मीमांसा पढ़ते थे। एक दूसरे पण्डित जी से वेदान्त पढ़ते थे। अभीतक अपारनाथ के गिरि संन्यासी थे। एक दिन नवाबपुरा कम्पनी बाग के निकट एक वृद्ध संन्यासी स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती का दर्शन प्राप्त हो गया। उन्हीं के प्रेरणा से गिरिनामा त्यागकर दण्डी संन्यासी दीक्षित हुए। इनके गुरु ने स्वामी सहजानन्द सरस्वती नाम दिया। इसके बाद गोदौलिया के पीछे एक दण्डीमठ में तथा कभी ललिताघाट में रहने लगे। अध्ययन ज्यों-का-त्यों चलता रहा। व्याकरण में मनोरमा, शेखर और महाभाष्य का अध्ययन किया। फिर वात्स्यायन-भाष्य, न्यायवार्तिक, तात्पर्य टीका, कुसुमांजलि, आत्मतत्त्व विवेक जैसे गूढ़ ग्रन्थों का अध्ययन किया। नैयायिक जीवननाथ मिश्र से पक्षता—सामान्य निरुक्ति, सिद्धान्त-लक्षण तथा बाद के ग्रन्थों का अध्ययन किया। वेदान्त का अध्ययन बलिया के पण्डित अच्युत त्रिपाठी से किया। उनसे इन्होंने खण्डन खण्डखाद्य, संक्षिप्त शारीरिक, अद्वैत सिद्धि आदि ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। मीमांसा के न्याय रत्नमाला आदि ग्रन्थों से आगे पढ़ना चाहते थे, तो उनके अध्यापको को कठिनाई होने लगी। तब स्वाध्याय की शरण में स्वतः आ गये।

सं० १९७१ वि० में भूमिहार-ब्राह्मण-महासभा के कार्यकर्त्ता आग्रहपूर्वक स्वामीजी को सभा में ले गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी ने अपने भाषण में कहा—"सबसे पहले संस्कृत का प्रचार करना चाहिये। यह लज्जा की बात है कि हम उससे उदासीन हैं। जर्मनी जैसा गुणग्राहक देश हमारी विद्याओं का पठन-पाठन करे—रक्षा करे! हमें मीमांसा पर प्रभाकर के एक ग्रन्थ की आवश्यकता थी—वह हमें जर्मनी में मिला। उसे लिखकर बनारस से लौटाया गाया। धिक्कार है तुम लोगों पर! जर्मनी को साधुवाद!" उस सभा में स्वामीजी ने भूमिहारों के ब्राह्मणत्व को प्रकट करने वाली कितनी ही बातें कहीं। इसके बाद इस विषय पर ग्रन्थ लिखने के लिये सामग्री एकत्र करने में स्वामीजी जुट गये। बस्ती, गोरखपुर, प्रयाग, मेरठ आदि अनेक स्थानों की यात्रा की। इस भ्रमण में स्वामीजी को पता लगा कि यत्र-तत्र भूमिहार ब्राह्मणों का व्याह-संबंध सरयूपारियों, कानकुब्जों एवं मैथिलों के परिवार में हुआ है। सं० १९७२ वि० में भूमिहार ब्राह्मण परिचय नामक ग्रन्थ लिखा और प्रकाशित कराया। कई वर्षों बाद अत्यधिक अन्वेषण से बहुत अधिक सामग्री प्राप्त हुई, तो उक्त ग्रन्थ को ब्रह्मर्षिवंश बिस्तर के नाम से एक विशाल ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित कराया। इसी वर्ष स्वामीजी को ज्ञात हुआ कि दरभंगा में चित्रधरमिश्र एक बहुत बड़े मीमांसक हैं। सात मास उनके यहाँ रहकर मीमांसा सम्बन्धी सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर डाला। कुमारिल की दुर्लभ पुस्तक टुप्टीका को हाथ से लिखकर पढ़ा। पण्डित बालकृष्णजी मिश्र उस समय वहीं थे। उनसे वाद (न्याय) तथा काव्य का अध्ययन किया। विदा होते समय उन्होंने अपने गुरु का एक ग्रन्थ उपहार में इन्हें दिया और उसपर स्वरचित निम्नांकित पद्य लिखा :—

'प्रेमैवमास्तु यदि स्यात् सुजनेन नैव,
तेनापि चेत् गुणवता न समं कदाचित्।
तेनापि चेद् भवतु नैव कदापि भंगः
भंगोपि चेद् भवतु वश्यमवश्यमायुः॥'

अर्थात् प्रेम ही मत हो, यदि हो तो सुजन के साथ नहीं। यदि उससे हो भी, तो गुणी के साथ तो कदापि न हो। यदि उससे हो भी जाय, तो कभी भंग न हो। यदि भंग हो, तो आयु अपने वश में अवश्य हो।

भूमिहार ब्राह्मण आन्दोलन को सं० १९७२ वि० से सं० १९७७ वि० तक स्वामीजी ने प्रबल रूप में चलाया। इसी समय के मध्य "ब्राह्मण समाज की स्थिति" और "झूठा भय तथा मिथ्याभिमान" नामक पुस्तकें लिखीं। संस्कृत विद्यालयों की स्थापना कीं। पुरोहिती पर पुरजोर बल दिया। इसके इसके लिए कई वर्षों के अध्ययन द्वारा अनेक स्मृतियों एवं आचार ग्रन्थों का मन्थन किया तथा अनेक कर्म-काण्ड विषयक पुस्तकों का अवलोकन किया। फलस्वरूप स्वामी जी ने "कर्मकलाप" नामक वृहत्काय एक ग्रन्थ लिखा। निर्णय सिन्धु की टिप्पणियों पर समीक्षाएँ कीं। बिहटा (बिहार) में श्री सीतारामाश्रम की स्थापना की। जिसे संस्कृत अध्ययन का केन्द्र बनाया। वह आज भी नियमित चल रहा है।

सं० १९७८ वि० में स्वामी जी नागपुर कांग्रेस में सम्मिलित हुए और लौट कर बक्सर से राजनीतिक क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया। हथुआ नरेश कौंसिल के लिए खड़े हुए। कांग्रेस की ओर से एक धोबी खड़ा किया गया। स्वामी जी इस समय कांग्रेसी थे। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा—'राजा महाराज से धोबी कहीं अच्छा है।' धोबी जीत गया। तिलक स्वराज्य फण्ड में चन्दा एकत्र करने के लिए बहुत सहायता की। जब लोगों ने चन्दे के रुपये में कुछ गड़बड़ी की, तो स्वामी जी बहुत रुष्ट हुए और वहाँ से कांग्रेस कार्य करने के लिए गाजीपुर चले आये। अहमदाबाद कांग्रेस (सं० १९७८ वि०) से लौटने पर उन्हें जेल भेज दिया गया। बन्दी होकर गाजीपुर, बनारस, फैजाबाद, लखनऊ आदि जेलों के कष्ट वहन करते। सं १९८० वि० में जेल से छूटकर गाजीपुर लौट आयें। इसी क्षेत्र में कांग्रेस का कार्य करते रहे। उस समय इनका तूफानी दौरा होता था और धुंआधार व्याख्यान होते थे। ऐसे ही समय में इन पंक्तियों के लेखक को स्वामी जी की चरण सेवा का कुछ दिनों के लिए सौभाग्य प्राप्त हुआ था। स्वामी जी अपने हाथ से रुपये-पैसे नहीं स्पर्श करते थे। अस्तु दौरे में टिकट कटाने अथवा फलाहार लाने के लिए इनके साथ रहने की एक व्यक्ति की आवश्यकता रहती थी; जो रुपये-पैसे अपने पास रख कर इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहे, इनके लिए पूजा की सामग्री जुटाता रहे, इनके विस्तर को संभालता रहे। एक दिन स्वामी जी रेवती पुर आये। उनका कार्य-वाहक अचानक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्वस्थ हो गया। उनके साथ एक व्यक्ति का रहना नितान्त आवश्यक था। गाजीपुर जन-पद के सुप्रसिद्ध नेता श्री विश्वनाथ शर्मा मुझे स्वामी जी निबट ले गये। दुपहर की बेला थी। मैंने डटकर भस्म रमाया था। स्वामी जी का चरण स्पर्श कर इनके सम्मुख जब खड़ा हुआ, तो उनका पहला प्रश्न कानों में वज्र-घोष की भांति पड़ा–यह चूल्हें की राख क्यों पोत ली है ? मैंने तत्काल ही निवेदन किया–स्वामी जी, यह भस्म है। दूसरा प्रश्न स्वामी जी का था –क्या गायत्री मंत्र जानते हो ? मैंने हाथ जोड़कर कहा–जी, स्वामी जी ! फिर उन्होंने उसी तहती भाषा में कहा–अभी छोड़ों जीवन वेकार करने वाली ये क्रियाएँ और कुछ पढ़ने लिखने की ओर ध्यान दो।' उसी दिन तीसरे पहर गाजीपुर के लिए स्वामी जी के साथ प्रायण किया। मैंने बिस्तर उठाकर सिर पर रख लिया। सुवहल के निकट आने पर स्वामी जी ने पूछा–आदित्य भगवान के अस्ताचल गामी होने के पहले घाट पर पहुंच सकोगे ? मैंने उत्तर दिया-निश्चय ही। स्वामी जी ने डग बढ़ाया। सुवहल के पार जाने पर मैं इनसे एक फर्लाङ्ग पीछे रह गया। स्वामी जी ने मुड़कर देखा तो ठहर गये और मेरे निकट पहुंचने पर कड़े स्वर में फटकारा—इसी चाल पर सूर्यात से पहले घाट पर पहुँचोगे ? मैंने धीरे से कहा–स्वामी जी, यदि बिस्तर न होता, तो इतने पीछे आप होते। मेरे तत्काल उत्तर से स्वामी जी को उग्रता हास्य में परिणत हो जाती थी। यद्यपि उस गति से भी हम लोग सूर्यास्त से पहले ताड़ीघाट पहुँच गये। तबस्वामी जी और अधिक प्रसन्न हुए। इस सहवास में मुझे शिक्षा और आनन्द दोनों की प्राप्ति हुई।

काँग्रेस में कार्य करते हुए अधिकांश कांग्रेसियों के अनैतिक आचरण से स्वामी जी ऊबने लये थे। सं० १९८६ वि० में सोनपुर मेले में बिहार प्रान्तीय किसान सभा हुई। स्वामी जो सभापति थे। इन्होंने कास्तकारी बिल के षड्यन्त्र की पोल खोली और प्रबल विरोध किया। भाषणों पश्चात् चुनाव हुआ। स्वामी जी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। श्री कृष्ण सिंह मंत्री चुने गये। सदस्यों में बाबू राजेन्द्र प्रसाद, बाबू ब्रज किशोर प्रसाद, बाबू राम दयालु सिंह, बाबू अनुग्रह नारायण सिंह आदि कांग्रेस के सभी प्रमुख नेता थे। इसके सात वर्ष बाद सं० १९९३ वि० में लखनऊ कांग्रेस के समय पहला अखिल भारतीय किसान सम्मेलन हुआ और स्वामी जी ही उसके प्रथम सभापति थे। किसानों की जाँच का प्रश्न स्वामी जी ने कांग्रेस के सामने उपस्थित किया। कुछ लोगों ने विरोध किया। जवाहर लाल ने कहा-यह सवाल जरूर सामने लाना चाहिए। हम इसके लिए स्वामी जी को धन्यवाद देते हैं। प्रस्ताव पास हुआ और उसके अनुसार जाँच भी हुई। कांग्रेसी नेताओं से चलते सब प्रान्तों में नहीं हुई। किसानों की जिन-जिन लड़ाइयों में स्वामी जी ने भाग लेकर नेतृत्व किया; उनमें से एक-एक के लिए एक-एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है। सं० १९९७ वि० में रामगढ़ में दिये हुए व्यख्यान के लिए स्वामी जी पर मुकदमा चलाया गया और तीन वर्ष का कारावास हुआ। सं० १९९९ वि० में समय से कुछ पहले ही स्वामी जी जेल से मुक्त कर दिये गये। और अन्त तक ये किसानों के लिए ये युद्ध करते रहे।

स्वामी जी प्रकृतितः क्रांतिकारी व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी "क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा" नामक पुस्तक में लिखा है—"किसी चीज या व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करके कोई नयी प्रणाली जारी करने को भी क्रांतिकारी परिवर्तन कहते हैं। पर हम सिर्फ राज्यक्रान्ति को क्रान्ति मानेंगे। यहाँ राज्य क्रान्ति व्यापक अर्थ में प्रयुक्त है।" इस पुस्तक में आगे स्वामी जी ने लिखा है—"अब तो क्रान्ति का काम है, उसे उस, यंत्र को चूर-चूर कर देना।" इसी क्रम में यह भी कहा है—'जहां क्रान्ति की आग एकाएक धधक उठती है, वहाँ हस्तान्तरण की स्थिति नहीं आ सकेगी। वहाँ तो बल प्रयोग से ही सत्ता हस्तगत की जा सकती है।" स्वामी जी ने भगवद्गीता पर भाष्य लिखा है, जो अब तक के प्रवचनों से सर्वथा भिन्न प्रकार है। पटना से कई वर्षों तक "लोक संग्रह" नामक दैनिक समाचार पत्र सम्पादन भी किया था। अन्तिम जीवन तक किसानों के लिए लड़ते रहे।

(मणिमय से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती: एक संस्मरण

—सी० राजेश्वर राव

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का संस्मरण लिखते हुए मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता हूं। स्वामी जी केवल एक उद्दीप्त स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं थे, बल्कि वे लाखों दलित किसान-जन मानस के नेता भी थे।

उन्होंने जमीन्दारों के जुल्म के खिलाफ जुझारू संघर्ष करते हुए बिहार में किसानों का नेतृत्व किया। बाद में उन्होंने इण्डियन नेशनल कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के समय ही १९३६ में बंकिम मुखर्जी, इन्दूलाल याग्निक, मुजफ्फर अहमद, बाबा सोहन सिंह भखना, राहुल सांकृत्यायन, आचार्य नरेन्द्र देव और प्रो० एन० जी० रंगा जैसे अपने उत्साही साथियों के साथ अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की। इस तरह किसानों को उनके अपने जनसंगठन के अन्दर ही संगठित करने के भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयास बहुत लाभकारी सिद्ध हुए। इसके लिये स्वामीजी और अखिल भारतीय किसान सभा के अन्य संस्थापक सदस्यों को उस राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व के खिलाफ तगड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी, जो यह कहा करता था कि अलग किसान सभा की स्थापना से स्वतंत्रता आन्दोलन में फूट पैदा हो जायेगी, और इसीलिये स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद किसानों की सारी समस्याओं को हल कर लिया जायेगा। इस तरह स्वामीजी सामंतों के शोषण की समाप्ति और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन दोनों को एक साथ संगठित कर पाये और उन्होंने इन आन्दोलनों को शक्ति प्रदान की।

सर्वप्रथम स्वामीजी से मेरी भेंट १९४४ में विजयवाड़ा में हुई, जहाँ वे अखिल भारतीय किसान सभा के एतिहासिक आठवें सम्मेलन, जिसमें २५,००० महिलाओं सहित एक लाख किसानों ने भाग लिया था, की अध्यक्षता करने आये थे। दृढ़ता और सच्चाई प्रवाहित उनके सिकुड़न भरे तथा गेरुआ वस्त्र आच्छादित चेहरे ने मेरे युवा-हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उस समय मैं किसान-सभा अधिवेशन के जनसेवादल का कप्तान था।

मुझे वह घटना अच्छी तरह याद है, जो उस समय घटी। एक धनी हमदर्द द्वारा प्रदत्त अच्छे मकान में मैंने बड़े किसान-नेताओं के ठहरने का प्रबन्ध किया। अकेले उन्होंने ही वहाँ ठहरने से इन्कार कर दिया जबकि अन्य नेतागण वहाँ ठहरने में राजी हो गये। उन्होंने कहा, "किसान गरीब हैं, और किसानों के नेता होने के नाते मैं ऐसे भव्य भवन में ठहरना पसन्द नहीं करूँगा।" इसलिये हमलोगों को उनके लिये बगीचे में एक कुटिया बनानी पड़ी थी, जहाँ वे किसान सभा के अधिवेशन भर ठहरे। उनके कठोर व्यवहार और तीखी वाणी के बावजूद, उनकी सच्चाई, दलित जनमानस के प्रति लगन और दुश्मनों के समक्ष उनकी निर्भीकता के कारण लोग इसे बुरा नहीं मानते थे। स्वामीजी हमें छोड़ चुके हैं, लेकिन जिन कारणों के लिये वे लड़े अर्थात् किसानों को उत्पीड़ित करनेवाली जमीन्दारी प्रथा, आज भी मौजूद है और देश ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है। लेकिन वे इसे देखने के लिये जीवित नहीं रह सके। किसान समुदाय कभी भी उनकी सेवा और अपनी खुशी के लिये उनके बलिदान को भुला नहीं सकता। हमारे देश के किसानों के हृदय में उन्होंने स्थाई स्थान बना लिया है और हमारे हृदय में भी दलित,'पीड़ित जनमानस के लिये समझौताहीन सिपाही और लड़ाकू देश-भक्त के रूप में उनका स्थान अमर है।

(स्वामी सहजानन्द स्मृति ग्रंथ, पटना से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Seth. Mangal Prasad
Proprieter :

Sapna Palace

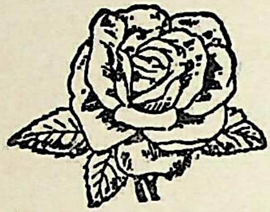

The MALL, KANPUR.

M/s. Inder Cloth Stores

118/2 Gumti No. 5, G. T. Road,

KANPUR.

DURGA RUBBER PRODUCTS

Factory Area,

Fazal Gunj, KANPUR.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसानों के लोकप्रिय नेता स्वामी सहजानन्द

(एक संस्मरण)

—योगेन्द्र झा

"मैं ईश्वर को ढूँढ़ने चला था। मैंने उसे जंगलों और पहाड़ों में ढूँढ़ा। ग्रन्थों और पुस्तकों में भी कम नहीं ढूँढ़ा, मगर मैं उसे नही पा सका। अगर वह कहीं मुझे मिला तो किसानों में। किसान ही मेरे भगवान हैं और उन्हीं की पूजा किया करता हूँ। और यह तो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता कि कोई मेरे भगवान का अपमान करे"। किसानों के बारे में यह मार्मिक उद्‌गार—एक क्रान्तिकारी उद्‌घोष, १९३८ ई० के मार्च महीने में मधुबनी के एक विशाल सम्मेलन में मैंने सुना। ये उद्‌गार थे किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती के।

स्वामी जी के भाषण सुनने का यह मेरा पहला अवसर था। उस समय मैं नवम् वर्ग का छात्र था। "किसान-रूपी भगवान का अपमान वर्दाश्त नहीं कर सकता" इस कथन के साथ ही स्वामी जी का समस्त रोष अबाध गति के साथ जमींदारी-प्रथा, विभिन्न रूपों में सामन्ती जुल्म और भूस्वामियों के अत्याचारों के विरुद्ध धारा-प्रवाह भाषण के रुप में अपार जन-समूह को उद्वेलित करता रहा। अन्य श्रोताओं पर, "किसान नहीं भगवान है" इस उक्ति का कितना असर पड़ा मैं नहीं कह सकता, मगर प्राचीन भारतीय दर्शन पर आधारित परिपक्व होती हुई मेरी अनीश्वरवादी भावना आह्लादित हो उठी। भारतीय दर्शन के मूल सूत्रों में व्यक्तिगत ईश्वर (God) के लिए स्थान नहीं।

ऐश्वर्यपूर्णता प्रदर्शित करने के लिए, श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए भगवान शब्द के प्रयोगों से संस्कृत साहित्य भरा पड़ा है। पिता, गुरु, राजा एवं अन्य श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए भगवान शब्द का प्रयोग सर्वविदित है। ऐसी पृष्ठभूमि में अन्न उपजाने वाला, अन्नदाता वास्तविक पालनकर्त्ता के लिए, किसान के लिए भगवान शब्द का प्रयोग मैंने स्वामी जी का सिर्फ व्यक्तिगत उद्‌गार नहीं समझा। इसे मैंने अत्यन्त ही समुचित और प्राचीनतम भारतीय दार्शनिक और सांस्कृतिक परम्परा के पूर्णतः अनुकूल माना।

अन्नदाता किसान ही भगवान है, इसी समझ ने गेरुआ-वस्त्र-धारी स्वामी सहजानन्द सरस्वती को क्रान्तिकारी लहर की अगली कतार में लाकर खड़ा कर दिया। इसी भगवान के 'अपमान' को हमेशा के लिए निर्मूल करने की उत्कट अभिलाषा ने गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी को विश्व क्रान्ति के प्रतीक लाल झंडे के नीचे लाकर खड़ा कर दिया था। सुई से लेकर विमान, झोपड़ी से महल, कल-कारखाने, खान, बगान तक के निर्माता, रचयिता और चालक मजदूर वर्ग के साथ अन्नदाता किसान की एकता के प्रतीक हँसुआ और हथौड़ा के क्रान्तिकारी प्रतीक को उनके हृदय का प्यारा बना दिया था।

स्वामी जी का ठिगना वदन, कठोर संयमित आहार और नियमित व्यवहार पर आधारित हल्का वजन, ताम्रवर्ण की त्वचा के रोम-रोम की दमक और कांतिपूर्ण ललाट पर तथा चेहरे पर की बिजली सी चमक, सब कुछ किसानों के शोषण के समूल नाश के लिए ही न्योछावर था। साधारण बोल-चाल और भाषण में भी तत्काल शोषण के खात्मे के लिए उनकी व्यग्रता ही प्रदर्शित होती थी।

१९४२ ई० के पूर्वार्द्ध की बात है। स्वामी जी जेल से बाहर आ गए थे। अपने जन्म-काल से ही गैरकानूनी स्थिति में रहती आयी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी यथास्मरण कानूनी स्थिति में नहीं आ सकी थी। ऐसे ही समय में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री—पी० सी० जोशी से स्वामी जी की मुलाकात का प्रबंध किया गया। मैं भी उस बात-चीत में उपस्थित था। महामंत्री जोशी के चले जाने पर स्वामी जी ने उनके साधारण हॉफ पैंट और शर्ट के लिवास, तेलविहीन बाल आदि का हवाला देते हुए मुझसे कहा—"देखा, तुम्हारी पार्टी का देश भर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का महामंत्री कितना सादा रहता है।" मैंने स्वामी जी से पूछा–"स्वामी जी ! क्या मैं भी हाँफ पैंट और हाँफ शर्ट पहनना शुरु कर दूँ ?" स्वामी जी ने कहा–"अरे तुम तो सादा हो ही। अब क्या जुल्हऊ धोती भी छोड़कर नंगे हो जाओगे ? और स्नेहवश एक हल्का तमाचा दिया।

१९४४ ई० में मैं जेल से बाहर आया। स्वामी जी कमला-कोशी बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों के निरीक्षण हेतु दरभंगा मधुवनी क्षेत्र में पधारे थे। उत्तर विहार सहायता समिति के अध्यक्ष स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद एवं महामंत्री स्व० डा० अनुग्रह नारायण सिंह थे। मुझे उक्त सहायता समिति की ओर से दरभंगा जिला एवं सीतामढ़ी अनुमण्डल का प्रभारी बनाया गया था। स्वामी जी बाढ़ में डूबे एवं महामारियों से आक्रांत गाँवों का नाव पर मेरे तथा मेरे अन्य साथियों के साथ निरीक्षण कर रहे थे। एक तरफ गाँव के आक्रान्त ग्रामीणों तथा दूसरी ओर कुछ सौ कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों को देखकर स्वामी जी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने पूछा—"क्या जी, तुम्हें फिर जेल भेज दिया गया था और जमानत पर आए हो ? इस साहाय्य कार्य से सरकार का क्या विगड़ता है ?" मैंने कहा, "यह सरकार से पूछिए वही बतायेंगी।"

कुछ देर मौन रहने के बाद उन्होंने स्व० अनुग्रह बाबू का हवाला देते हुए पूछा—"अच्छा यह बताओ, तुम्हारे जैसे कट्टर कम्युनिस्ट को इस साहाय्य कार्य का प्रभारी कैसे बना दिया गया।" मैंने फिर वही उत्तर दिया –"बनाने वाले से पूछिए, वही बतायेंगे।" स्वामी जी ने हँसते हुए कहा–"तुम्हारा लड़कपन नहीं गया है, गिरफ्तारी के बारे में सरकार से पूछूँ और इस प्रभारी के बारे में कांग्रेस से पूछूँ।"

१९४६ ई० में स्वामी जी किसान सभा के कार्यक्रम के अनुसार मेरे साथ विभिन्न स्थानों का दौरा कर रहे थे। मथुरापुर थाने के उनके एक भक्त के यहाँ हम लोग ठहरे थे। वे डेढ़ सौ बीघे के एक खुशहाल किसान थे। भोर में मैंदान की तरफ से स्वामी जी लौटे। उनके एक हाथ में लोटा और दूसरे में एक वैंगन था। तमतमाते हुए चेहरे से रोषपूर्ण आवाज निकाली–',इस वैंगन का इतिहास बताओ।,, उनके भक्त ने दोनो हाथ जोड़कर विनीत भाव से स्वामी जी के रोष को कम करने का प्रयास किया। कुछ देर बाद स्वामी जी ने स्वयं कहा-"तुमने एक गरीब का घर उजाड़ कर, उसकी वास की जमीन पर तुमने वैंगन रोपा है। यही इस वैंगन का इतिहास है।" मैंदान जाते समय रास्ते में श्री वुनियादी महतो ने स्वामी जी को सारी वातें बतायी थीं। फिर स्वामी जी ने मुझसे कहा–"तुम तो खरे आदमी हो, फिर तुम इसके यहाँ कैसे ठहर गए, जो गरीबों की घरारी पर वैंगन उपजाता है। मैंने कहा–'स्वामीजी अभी मैं किसान नेता का मालूमी सहायक हूँ, आप जहाँ पहुँचेंगे साथ रहूँगा"।

स्वामी जी ने कहा–"इस वैंगन वाली जमीन पर चाहे इनकी मर्जी से या लड़कर उस गरीब का पुनः घर बनवाओ।"

स्वामीजी ने सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त की थी। अभी भी बिहटा आश्रम का समाचार पूछने वाले लोग और स्वामीजी के सम्वन्ध में सम्पूर्ण भारत में याद करने वाले लोग मुझे मिलते रहते हैं। हमारा कर्त्तव्य होगा स्वामीजी के बचे कामों का पूरा करें। किसानों, मजदूरों एवं सामन्ती अवशेषों से कुचले गरीबों को, ... मुक्ति दिलावें। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—: ०⁐० :—

> मेरा सदा से विचार रहा है कि माता और स्त्री इन दो की जवाब देही हर आदमी पर, कम से कम हर हिन्दू पर रहती है इन दोनों को कष्ट और यंत्रणा देने वालों का भला कभी नहीं होता और अगर नरक नाम का कोई पीड़ाप्रद स्थान है तो वे वहाँ जरूर जाते हैं। स्व० सहजानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब स्वामी जी ने साम्यवाद अपनाया

—आचार्य पं० कामेश्वर शर्मा 'नयन' एम० ए०

हर महान् व्यक्ति के जीवन में ऐसी घटनाएँ असामान्य रूप ले लेती हैं, जिन पर साधारण लोगों की दृष्टि तो पड़ती है, किन्तु उससे मर्माहत होने की सुध नहीं रह जाती। यहीं पर असाधारण व्यक्तित्व अपने तीव्र तम प्रभाव से समाज को एक ऐसा धक्का देता है, जिससे सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता के प्रासाद चूर-चूर होकर सदा-सदा के लिए धूलिसात हो जाते हैं, मिट जाते हैं। एक नये भवन का सृजन होता है।

सम्भवत: महाभारत युग के वाद प्राचीन भारतीय धर्म-प्रणाली की भी यही स्थिति हो गयी थी। बुद्ध ने वैदिक धर्म के विरुद्ध विद्रोह किया। भारत ही नहीं, अपितु एशिया महादेश के हर भाग में वौद्ध-धर्म फैल गया। जिस प्रकार बुद्धदेव के जीवन में इस नये धर्म को उत्प्रेरित करने वाली उनके जीवन की तीन प्रमुख घटनाएँ थीं। उसी प्रकार स्वामी जी के संन्यस्त जीवन को भी साम्यवाद के उग्र पथ पर ले जाने वाली, उनके जीवन की तीन महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन्हीं के चलते उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक साम्यवाद के माध्यम से दीन-हीन संतप्त मानवों की सेवा करना ही भगवत्-प्राप्ति माना है।

यद्यपि उनका प्रारम्भिक जीवन सन् १९०१ ई० से सन् १९२० ई० तक स्वाध्याय, शास्त्र-चर्चा, धर्म-चर्चा समाजोद्धार, वर्ण-व्यवस्था आदि विचारों के गूढ़तम व्याख्यानों में व्यतीत हुआ, फिर भी सन् १९३० ई० से उन्होंने देश-सेवा का जो व्रत लिया, वह उनके जीवन के अन्त-अन्त तक अबाधित गति से चलता रहा। अनेक विघ्न- वाधओं के वात्याचक्र में रहकर भी उन्होंने 'परित्राणाय साधूनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' के सिद्धान्त से इंच मात्र भी अपने को पृथक् नहीं किया। १९३९ ई० तक कांग्रेस में महात्मा गाँधी के सत्य एवं अहिंसा-व्रत पर चलकर उन्होंने देश की सेवा की। वर्षों जेल की यातनाएँ सही। अनेक संस्थाओं, सभाओं और संगठनों का सृजन तथा संचालन किया। इन तमाम संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने मानवता के त्राण का मार्ग खोजा। इतने सारे संगठनों में सर्वाधिक महत्व उन्होने जिस संस्था को दिया, वह किसान सभा थी।

यद्यपि किसान-सभा का पहला संगठन प्रान्तीय स्तर पर ही हुआ, पर पीछे चलकर यह किसान सभा इतनी प्रशस्त हुई कि उनका स्वरूप अखिल भारतीय-स्तर का हो गया। न केवल बिहार में बल्कि सम्पूर्ण देश में कांग्रेस की भी जड़ गाँव-गाँव तक इसके साथ ही जम गई। सारे राष्ट्र के किसानों का यह संगठन इतना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि इसी की सीढ़ी पर चढ़कर कांग्रेस शक्तिशाली संस्था बन गई। किसान-सभा के द्वारा जमीन्दारी उन्मूलन की भीष्म-प्रतिज्ञा करके स्वामीजी ने सारे देश में तहलका मचा दिया था। देश के सारे राजे, रजवाड़े एवं जमीन्दार इनके विरुद्ध हो गये थे। स्वामी जी ने इनकी जरा भी परवाह न की। अन्ततोगत्वा स्वयं कांग्रेस वाले भी इस सभा से खूब खार खाने लगे। तब स्वामीजी ने इन कांग्रेसियों से भी अपने को दूर किया और सन् १९४० से ही ये कांग्रेस से अलग होकर किसान सभा चलाते रहे, जब तक ये परमब्रह्म में लीन नहीं हो गए।

गरीब किसानों की दयनीय दशा उनसे देखी न गयी और अन्त में वही हुआ जो उन्होंने कहा था। सन् १९४७ ई० की अजादी-प्राप्ति के बाद ही पहले बिहार से और क्रमशः देश के सारे प्रदेश से जमीन्दारी प्रथा का अभिशाप इस देश की धरती से सब दिन के लिए मिट गया। आज वस्तुतः जमीन्दारी के जमाने के भारत और वर्त्तमान भारत में जमीन और आसमान का अंतर हो चुका है। अन्य अनेक कारण भी हो सकते हैं, किन्तु जमीन्दारी के अभिशाप से मुक्त होकर जनता स्वाधीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो सकी है इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता। देश को स्वाधीन करने के पूर्व जनता की मौलिक व्यवस्था को सुन्दर बनाने के लिए जमीन्दारी प्रथा का उन्मूलन अत्यावश्यक हो गया था।

इस संबन्ध में स्वामी जी ने स्वयं अपने 'मेरा जीवन-संघर्ष' नामक पुस्तक में तीन घटनाओं की चर्चा की है। निम्नलिखित तीन घटनाओं ने उनके संन्यासी जीवन को विद्रोही बना दिया था। संसार से सब कुछ छोड़कर, संन्यस्त होकर भी उस महात्मा ने जो विद्रोहात्मक रूप अख्तियार किया, उसका प्रधान कारण वे ही तीन घटनाएँ हैं, इनके सम्बन्ध में स्वामीजी ने कहा है:—

"जमीन्दारी की लूट और गाँधी के सत्य की पुकार के प्रसंग में मैं यहाँ अपने जीवन की तीन महत्वपूर्ण घटनाएँ लिख देना चाहता हूँ, जिन्होंने मेरे हृदय पर अमिट छाप डाली, बहुत अंशों में मेरे जीवन को पलटा और मुझे उग्र-पन्थी बनाया।

पहली घटना सन् १९१७ ई० की है जब मैं गाजीपुर जिले के विश्वम्भरपुर गाँव में था। वहाँ सुखी जमीन्दार रहते थे। उनके मौजे—"मौजा" में जो वहाँ से ३-४ मील पर है, मैंने जाड़ों में एक हलवाहे को मरा देखा। ६०-७० साल का रहा होगा। टूटी झोपड़ी में जमीन पर पड़ा था। इन्फ्लुएंजा से मौत हुई थी। यह बीमारी और जाड़े का दिन, मगर तन पर सिर्फ एक लंगोटी थी। ओढ़ने को कुछ नहीं। कहीं से एक फटा बोरा मिला था। उसी में सिर और पैर टांग डालकर पड़ा-पड़ा मर गया। पीठ और चूतर खुले ही थे। बिस्तर, चारपाई, दवा वगैरह की तो बात ही नदारद। मेरा दिल रो पड़ा। मैंने सोचा इन साठ-सत्तर वर्षों में लाखों आदमियों की खुराक का गेहूँ, चावल, दूध, घी, पैदा किया होगा इसने और अपार धन कमाया होगा। मगर दुनिया कैसी जल्लाद और लुटेरी है कि इसने शायद ही जीवन भर में कभी गेहूँ, घी खाया हो और अच्छा कपड़ा पहना हो और मरने के समय नंगा ही रह गया, सो भी जाड़े में। टूटी खाट भी नहीं। अब इसे कफन भी देने वाला कोई नहीं। यह दुनियाँ डूब जाय। ऐसा घोर अन्याय ! अंधेर, ऐसी निर्दयता।

दूसरी घटना सन् १९३६ ई० की है। मुंगेर जिले में चकाय थाना है, ठट्ट पहाड़ों से भरा संताल परगना और हजारीबाग जिले के निकट है। वहाँ देहातों में काले-काले प्रायः नंगे और विस्टी पहने पहाड़ी संथाल वगैरह रहते हैं। वहीं एक-दो दिन रहना पड़ा। शाम को देहातों में टहलने जाया करता था। जब उन नग्न-प्राय गरीब और परिश्रमी किसानों की दशा की पूछताछ की तो पता चला कि ये पहाड़ और जंगल काट कर खेत बनाते और धान उपजाते हैं। मगर कभी एक आना पैसा और कभी एक सेर भर चावल देकर दो ही चार साल में सारे खेत बनिये लिखवा लेते हैं। फलतः वे या तो बनियों के हलवाहे बन जाते या कहीं और जाकर उसी तरह खेत बनाते जिन्हें पुनरपि बनिये ले लेते हैं। यही क्रिया सैकड़ों वर्षों से चालू है। ये परिश्रमी, सच्चे और सीधे होते हैं। इसी से लूटे जाते हैं और बराबर नंगे ही रहते हैं। मेरे दिल से आवाज आयी कि इस दुनिया में सत्य और न्याय कहाँ है ? अहिंसा कहाँ है? दयामय दीन-बन्धु भगवान कहाँ है ? इनसे बढ़कर दीन कौन है ? इनका सत्य इन्हें लुटवाता है और बनिये का जाल और छल उसे हलवाहा बना देता है। क्या भगवान्, सत्य, न्याय, नाम की वस्तु सचमुच है ?

तीसरी घटना मुंगेर के बेगूसराय इलाके की सन् १९३७ई० की है। मैंने रास्ते में देखा कि एक मुर्दे को टूटी खाट में सुलाये और चिथड़ा ओढ़ाये कुछ लोग गंगा की ओर लिये जा रहे हैं। उनके पास न तो मुर्दा जलाने के लिए लकड़ी और न ही दूसरा सामान है। एक मुट्ठी या मामूली-सी लकड़ी थी। मेरे दिल ने पुकारा कि ओह यह जुल्म, यह लूट ! यह हृदय हीनता ! जिसने जीवन में बनियों तथा सत्ताधारियों के लिए भोग-विलास का सामान और लाखों के खाने के लिए गेहूँ, मलाई पैदा की उसकी ही यह दशा कि कफन तक नदारत ! ऐसे तपस्वी और त्यागी कि दूध, गेहूँ पैदा करके भी स्वयं न खाया, किन्तु मदमत्तों को दिया। उन्हीं का इसके प्रति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसा व्यवहार ! इस समाज को मिटाना होगा । यही सबसे बड़ा धर्म ; सबसे बड़ी अहिंसा, सबसे बड़ा सत्य है। इन्हीं गरीबों की सेवा करते हुए मरना होगा । इन्हें छोड़ मेरे दिल में भगवान कहाँ ?" इन्हीं उपर्युक्त घटनाओं को लेकर स्वामी जी किसान-सभा में आये । जबतक जीवित रहे, दीन-बन्धुओं की सेवा, किसान सभा का संगठन और नि:शुल्क विद्या-दान करना ही उनके जीवन का व्रत रहा । उनके जीवन से मानवता के त्राण की शिक्षा तो मिलती ही है, साथ-ही साथ धनी और अत्याचारी के विरुद्ध भी इतनी बड़ी निर्भीकता का शंख-नाद फूकनेवाले संसार में विरले ही जन होते हैं यह ज्ञात होता है । आश्चर्य है इतने निष्काम कर्मयोगी, जन-नायक संन्यासी-व्यक्ति के विरुद्ध भी दो अल्पज्ञों ने सम्भवत: अपनी पी०-एच० डी० की उपाधि के शोध-प्रबन्ध में उल्टा-सीधा लिखा है और विश्वविद्यालय ने उन्हें योग्य तक ठहरा दिया है । जिसने उस जमाने के सुप्रसिद्ध किसान-सभा नेता पं० यदुनन्दन शर्मा के बारे में लिखते हुए जातीयता-ग्रस्तता का दोषारोरण स्वामी जी पर किया है; उन्हें मालूम होना चाहिए कि पं० यदुनन्दन शर्मा एक शाकद्वीपी ब्राह्मण थे । ये अभी कुछ वर्ष पहले तक जीवित थे । अनुसन्धित्सुओं को चाहिए था कि वे उनसे किसान-सभा के कार्यालय में जाकर स्वयं मिल लेते । जिन व्यक्तियों को इतिहास एवं राजनीति के गत २५ वर्षों पूर्व पुरुष के बारे में भी सम्यक् ज्ञान नहीं है, विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उन्हें उपाधि कैसे दे दी ?

इतने बड़े जन-सेवी मानवता के रक्षक के लिए जातीय संगठनों का नायक कहना एक अनुसंधायक की अल्पज्ञता के सिवा कुछ दूसरा भी अर्थ रखता है ? मैं उन युवा-तुर्क विद्यार्थियों को अपनी सलाह देता हूँ कि कम-से-कम भारत के वर्तमान राजनीतिक, इतिहास का पुन: अध्ययन कर लें ताकि भविष्य उन पर अंगुली न उठायें ।

—:०:—

जो बात आप कहते है, करना चाहते हैं, उसे हृदय से कहिये कीजिये । उसके बारे में ईमानदारी और पूरी सच्चाई से काम लीजिये । जरा भी दिखावटी पना न रहने दीजिये । बाहर और भीतर एक ही ढंग की बात रहे । फिर देखिये कि आप के चारों ओर एक बिजली का सा वायुमण्डल पैदा हो जाता है या नहीं और उसका फौरन असर और लोगों पर पड़ता है या नहीं। जो परिस्थिति और जो वातावरण अकृत्रिम होगा–स्वाभविक होगा वह बिजली का सा असर जरुर करेगा । इसीलिए नीतिकारों ने कहा है कि जो बात सोचो वही बोलो और वही करो तो महात्मा हो गये और इसमें गड़बड़ हो तो दुरात्मा।

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यत्कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम् ॥

मैं वचन और कर्म के साथ दिल को अपनी ओर से जोड़ देता हूँ, इन चारों में एक ही बात रहने पर इन्सान में अभूतपूर्व शक्ति पैदा हो जाती है मैंने आज तक इस सिद्धान्त को हजारों बार स्वयं अनुभव किया है और ऐसा करने के फल को आजमा देखा है । —स्वामी सहजानन्द (मेराजीवन संघर्ष पृ० ५३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

PRATAP SINGH & SONS

Service station
&
Auto Dealers
The Mall, KANPUR.

M/s. Neeraj, Savings, Sales & Finance Coy.

80 Feet Road, KANPUR.

हिरन टुबैको फैक्ट्री

हिरन नगर, उन्नाव

अपने निम्नांकित उत्पादनों के लिए विख्यात है—

- हिरन छाप तम्बाकू
- खरगोश छाप तम्बाकू

सदैव प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्यासी की जीवन यात्रा

— व्रजकिशोर सिंह भू०पू० सदस्य, राज्य सभा

जननायक स्वामी सहजानन्द का जन्म पूर्वी उत्तर प्रदेश में हुआ, परन्तु उनकी कर्म भूमि बिहार रही। किशोरावस्था में ही उनके त्याग, अदम्य उत्साह, अपूर्व लगन तथा अनौचित्य के प्रतिकार की भावना का जनता को परिचय मिला। स्वामीजी ने आद्यशंकराचार्य द्वारा स्थापित दशनामी संन्यासी सम्प्रदाय में दीक्षित होना चाहा, परन्तु मानवता को "अहम् ब्रह्मास्मि" के मन्त्र से पवित्र करने वाले शङ्कर द्वारा स्थापित इस सम्प्रदाय में काल के प्रवाह से विकृति आ गई थी। स्वामीजी ने अपनी लगन, विद्वत्ता तथा बुद्धि के सुनियोजित प्रयत्न से दीर्घकाल से खड़ी उस असहिष्णुता की दीवार को जो मनुष्य को जन्म के आधार पर मनुष्य से अलग करती थी तोड़ा। तत्कालीन आचार्यों को उन्हें दीक्षा देनी पड़ी। संन्यासी सहजानन्द की जीवन-यात्रा शुरू हुई।

मानव जीवन एक यात्रा ही है, लम्बी या कम दूरी की। इस यात्रा का ध्येय होता है अपनी खोज। अधिकांश मनुष्यों की यात्रा थोड़े ही समय में खत्म हो जाती है। खोज का अंत हो जाता है। अपने को पाकर, बिना जाने या जान बूझकर इन्सान बची हुई जिन्दगी उसी 'अपने' की सहज प्रवृत्ति के अनुसार, उसकी तुष्टि में बिताता है। संसार बदलता है, वह नहीं बदलता। जमाना आगे बढ़ता है वह जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाता है। परन्तु कुछ इन्सान ऐसे होते हैं जिनकी खोज का कभी अन्त नहीं होता। वे एक मंजिल पर पहुँचते हैं समसामयिक परिप्रेक्ष्य में परन्तु समय का प्रवाह रुकता नहीं। जमाना आगे बढ़ता है। उन्हें अपने अन्दर एक शून्य का अनुभव होता है—बेचैनी, असन्तोष, तज्जनित जिज्ञासा। यह उन्हें एक नए मंजिल की ओर ले चलती है। ऐसे ही मनुष्य सतत् प्रगतिशील होते हैं, इन्हें एक युगद्रष्टा भी कह सकते हैं। स्वामी जी ऐसे ही इन्सान थे।

स्वामीजी की जीवन-यात्रा का प्रारम्भ एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य में हुआ। उनके आत्मसम्मान को जोर का धक्का लगा। सन्यासी आगे बढ़ा। जाति की छोटी समष्टि सामने खड़ी थी। तन मन से उसी की सेवा में लग गया। मैंने अपने जीवन में पहली बार स्वामीजी को इसी दौर में देखा। जातीय महासभा की बैठक में, बड़े-बड़े श्रीमान, विद्वान तथा श्री गणेशदत्त सिंह जैसे महान त्यागी वहाँ एकत्रित थे। फिर भी एकत्रित जन-समूह को एक अकिंचन दण्डी संन्यासी की बात सुनकर ही किसी अहम सवाल पर फैसला करना था। वे थे दण्डी स्वासी सहजानन्द सरस्वती।

मैंने कांग्रेस की सभा और महा सभा भी देखी थी। चौदह पन्द्रह साल की उमर से ही उन बैठकों में स्वयं सेवक बन कर जाता। देश की महान् विभूतियों के सान्निध्य में खड़े रहने का सौभाग्य प्राप्त होता था, महा-मानवों का जमघट होता था परन्तु उनमें एक महा-महामानव था, तब का महात्मागांधी भविष्य का राष्ट्रपिता बापू। उसकी आवाज ही केवल कांग्रेस की आवाज नहीं, बल्कि देश की आवाज थी। जो स्थान इस महान देश के स्तर पर मैंने उस महा-महामानव का पाया वही स्थान मैंने देखा स्वामीजी का उस काल में जाति की असीमित परिधि में था। दोनों के प्रभाव का रहस्य था निष्काम सेवा की प्रवृत्ति। तुलसीदास के शब्दों में :

'परहित बस जिनके मन मांहीं।
तिनकँह जग दुर्लभ कछु नांही ॥'

कुछ छिछले समालोचक स्वामीजी के जीवन के इस अध्याय को आधार बनाकर उनकी कटु आलोचना करते हैं। वे आज के मूल्यों के मापदण्ड से पचासों साल पहले की कार्यवाइयों का अवमूल्यन करते हैं। ऐसी स्थिति में दृष्टिदोष स्वाभाविक हैं। वे भूल जाते हैं कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय चेतना का भी क्रमविकास होता है। राष्ट्रीय चेतना का विकास साधारणतया धार्मिक, जातीय तथा सामाजिक चेतना के जागृत होने के बाद होता है। यह सार्वभौम सत्य है। आज के विकसित देशों का मध्यकालीन इतिहास यही बतलाता है। ज्ञानेश्वर, तुकाराम समर्थ गुरु रामदास की पृष्टिभूमि में ही महाराष्ट्र के जीवन-प्रभात में शिवाजी का आविर्भाव सम्भव हुआ। चैतन्य महाप्रभु, राममोहनराय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशव चन्द्र सेन, रामकृष्ण देव और विवेकानन्द ने जब बंगाल के जन-मानस को झंझोरा तभी देशबन्धु दास, नेताजी सुभाष, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चन्द्र जैसे देशसेवक 'बन्देमातरम्' का उद्घोष करते हुए देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने में समर्थ हुए। बारदोली सत्याग्रह में जाति पंचायतों ने जो किया वह स्तुत्य हैं। यह उस सत्याग्रह की कहानी से साफ हो जाता है। अतएव स्वामी जी की तत्कालीन गतिविधि भी निन्दनीय नहीं, वह विकास की एक सीढ़ी थी, आवश्यक सीढ़ी, और आवश्यक कभी निन्दनीय नहीं हो सकता।

सन्यासी कुछ और आगे बढ़े। बढ़ना था, स्वभाव प्रेरित कर रहा था, क्योंकि सन्यासी सहजानन्द या जातिसेवक सहजानन्द वास्तविक सहजानन्द नहीं थे। बाद की दो घटनाओं से यह साफ हो जाता है। मैं एक बार स्वामी जी के साथ आज के नवादा जिले के वारसली गंज क्षेत्र से जा रहा था। स्वामी जी को देख कर कुछ लोगों ने आवाज दी, पास आए, अभ्यर्थना की, कुछ खाने-पीने का सामान दिया, उन्हें स्वामी जी ने बड़े सौहार्द और प्रेम से गले लगाया। जब हम चले तो स्वामी जी ने कहा—"देखा, इन मुसलमानों को, देखा इनका अपनापा का भाव? इनका सौहार्द और प्रेम? इन्हें हम क्यों दूसरी जगहों की घटनाओं के लिए जिम्मेदार समझें? ये हमारे हैं, हमारे रहेंगे"। यह घटना उस काल की है जब कि सारे देश का धार्मिक वातावरण विषाक्त हो गया था। देश में और पास के देशों में जहां-तहां धार्मिक दंगे हो रहे थे। ऐसे समय में आकस्मात ऐसे भावों की अभिव्यक्ति से साफ हो जाता है कि स्वामीजी असहिष्णुता और सङ्कीर्णता से ऊपर उठकर परवर्ती जीवन में आगे बढ़े थे।

दूसरी घटना दो साल बाद की है। १९४७-४८ में जिला बोर्डों के चुनाव हो रहे थे। एक क्षेत्र में एक शक्तिशाली स्वतन्त्र उम्मीदवार उसी जाति का था जिस जाति का नेतृत्व स्वामी जी ने कई साल तक किया था। कांग्रेस का उम्मीदवार दूसरी जाति का था। मैं स्वामी जी के साथ कांग्रेस के समर्थन में यात्रा कर रहा था। घूमते-घूमते मतदान का दिन आ गया। उस दिन जब हम एक चौराहे पर पहुँचे तो देखा कि स्वतन्त्र उम्मीदवार कई ट्रक भरकर मतदाताओं को साथ लिए जा रहे हैं, ट्रक चौरास्ते पर रुक गए। स्वामीजी ने मतदाताओं को कांग्रेस उम्मीदवार को वोट देने के लिए कहा। इतनी सी बात से स्वतन्त्र उम्मीदवार की इमारत ढह गई।

दोनों घटनाओं में स्वामीजी की प्रतिक्रिया आकस्मिक थी, समझ-बूझकर नहीं। एकाएक। स्वभावजन्य। अतएव दोनों घटनायें वास्तविकता की द्योतक हैं। ऐसे ही अवसरों पर मनुष्य की वास्तविकता की झलक मिलती है।

संन्यासी अपने को पा नहीं सका था। अतएव संन्यासी आगे बढ़ा। एक बड़ी समष्टि सामने खड़ी थी-त्रस्त और आर्त किसानों की। संन्यासी अपनी स्वाभाविक लगन से उनकी सेवा में लग गया। इस शताब्दी के तृतीय और चतुर्थ दशक में किसान सभाओं का जोरदार संगठन उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश आदि राज्यों में प्रारम्भ हुआ। ये संस्थायें राष्ट्रीय नवचेतना तथा तज्जनित राष्ट्रीय संग्राम की मुख्य धाराओं की पूरक धाराओं के रूप में आगे आयीं। इन्होंने सदियों से संतप्त फिर भी मूक और बधिर ग्रामीणों में एक नया आत्मविश्वास पैदा किया। उन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान कराया इन संस्थाओं का ध्येय था राष्ट्र की विदेशी सत्ता से मुक्ति और उस परिपेक्ष्य में वर्गीय समस्याओं का समाधान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी देश में और विशेषतया विहार में इस किसान जागृति के नायक और अग्रणी के रूप में सामने आये। उन्होंने ग्रामों का दौरा किया। उनकी समस्याओं का गहन अध्ययन किया। उनके समाधान का भगीरथ प्रयत्न किया। संन्यासी सहजानन्द 'दीनबन्धु सहजानन्द' बन गए। किसान शक्ति और सहजानन्द पर्यायवाची हो गये। स्वामीजी और उनके पटु सहयोगी पण्डित यदुनन्दन शर्मा के शंखनाद पर एक लाख किसानों का जमा हो जाना मामूली सी बात थी। आगे-आगे भगीरथ सहजानन्द पीछे-पीखे लाखों-लाख जनता की उमड़ती गङ्गधारा। आश्चर्यमयदृश्य !

कुछ समालोचक संन्यास-धर्म की दुहाई देकर स्वामी जी के जीवन के इस जन-कल्याणकारी अध्याय की भी कटु आलोचना करते हैं। उनके विचार में सार्वजनिक कार्यों में पड़कर, चाहे वे कितने भी लोक कल्याणकारी हों, स्वामीजी संन्यास-धर्म से च्युत हो गये। परन्तु यह भ्रान्तिसूलक धारणा है। परिवार से, समाज से, संसार से विरक्त होकर एकान्तिक अध्यात्म साधना में जीवन यापन करना ही संन्यास धर्म नहीं है। ऊँचे पहाड़ों की कन्दराओं में जाकर रहने पर भी संसार साथ लगा ही रहता है। जीवन यापन के लिए ही सही। वासनाओं का त्याग ही संन्यास है कर्मों का त्याग नहीं, चाहे वे सांसारिक कर्म ही क्यों न हों। कर्म नहीं, कर्मों के फल में बासक्ति का त्याग ही संन्यास है। संन्यास है बापू के अनासक्तियोग की साधना। फिर संन्यास धर्म जड़ और अचल नहीं। चिन्तनशील मानव की दूसरी प्रवृत्तियों की तरह यह भी विकासशील है।

भगवान बुद्ध सम्यक-सम्बोधि ज्ञान की प्राप्ति के बाद एकान्तिक आनन्द का लोभ संवरण कर "बहुजन हिताय, बहुजन, सुखाय" चालीस साल तक इस देश केमध्य नगरों, वनो और बीहणों में घूमकर जन-समुदाय को ज्ञान और आनन्द का भागीदार बनाते रहे। आदि शंकर ने इस देश के ओर से छोर तक घूमकर अनिष्ट-कारी सिद्धान्तों, रूढ़िओं, विचारों और कर्मो का विरोध किया। महान मानवतावादी वेदान्त दर्शन की पुनर्स्थापना की, प्रचार किया। मानव के साँसारिक जीवन को भी फलस्वरूप एक और स्तर ऊँचा उठाया। आधुनिक युग में रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द ने संन्यास धर्म को एक नयी दिशा दी। दरिद्र ही नारायण है। त्रस्त मानवता की सेवा ही नारायण की सेवा है। इस नारायण की सेवा ही आज की परिस्थिति में संन्यासी का एक मुख्य धर्म है और आज इसी भावना से प्रेरित होकर रामकृष्ण मिशन के संन्यासी जनकल्याणकारी कार्यो में लगे रहते हैं।

विवेकानन्द ने कन्याकुमारी की सागरशिला से सिंह-नाद किया था—"देशवासियो ! भूखे भजन नही करते, कर नहीं सकते। उन्हें धर्म और अध्यात्म की शिक्षा देना उनके साथ एक तीखा मजाक है। भौतिक कल्याण और समृद्धि की नींव पर ही धर्म और अध्यात्म की दीवार खड़ी हो सकती है।', स्वामी सहजानन्द ने उस सिंह-घोष को सुना था। उन्होंने समझा इस प्रेरणादायक संदेश को मूर्त्तरूप देना ही संन्यासी का परम धर्म था। यह युग के परिप्रेक्ष्य में ही हो सकता था। बीसवीं सदी समष्टि का युग था, व्यष्टि का नहीं। व्यक्ति के स्तर पर चेष्टाएँ अपर्याप्त होतीं। जनता की संघबद्ध शक्ति से ही जन-कल्याण और देशकल्याण सम्भव था। जागृत जनसमुदाय ही अपनी संघबद्ध चेष्टाओं से, कार्यकलापों से अपना और देश का कल्याण कर सकता था। दूसरा विकल्प नहीं था। अतएव स्वामीजी राष्ट्रीय, वर्गीय तथा आर्थिक संगठनों की स्थापना और संचालन में लग गये। यह संन्यास धर्म का चरमोत्कर्ष था, अवनति नहीं।

संन्यासी सतत प्रगतिशील था। जाति-सेवा से ऊपर उठकर किसान-सेवा में लगा। किसानों का सबसे लगन वाला सेवक अतएव उनका मूर्धन्य नेता। अनुभव हुआ किसानों की समस्याओं का समाधान केवल उनके वर्गीय संगठन से सम्भव नहीं। देश के अन्य पीड़ित और त्रस्त वर्गो की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में ही इनका भी समा-धान हो सकता था। किसानों, मजदूरों, खेतिहर मज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरों, छोटे-मोटे व्यवसायियों आदि की एकत्रित शक्ति से ही सबों की समस्याओं का समाधान सम्भव था। एक नये समाज और अर्थव्यवस्था की आवश्यकता थी। अत- एव संन्यासी ने समाजवाद, साम्यवाद की दुन्दुभि बजाई। किसान-सेवक जनसेवक बन गया! सेवा ही नायकत्व का अधिकार देतीं है। संन्यासी सहजानन्द 'जननायक सहजानन्द' बन गये। यात्रा का वस्तुत: अन्त हुआ। खोज का अन्त हुआ। आत्मतुष्टि आत्मसंतोष।

परन्तु समाजवादी, साम्यवादी शक्तियाँ छोटी-छोटी इकाइयों में बँटती जा रहीं थी। बटवारा बढ़ ही रहा था। सभी दो दाल की खिचड़ी पकाने मे लगे थे। ऐसी परिस्थिति में शक्ति का ह्रास अवश्यम्भावी था। सुनहरे भारत की जिस तस्वीर ने हजारों, लाखों को सर्वस्व न्योछावर करने का उत्साह और सामर्थ्य दिया था वह दूर भागती जा रही थी। ऐसे समय में जननायक सहजानन्द ने वामपक्षी एकता का आह्वान किया। पच्चीसों साल पहले परिस्थिति अनुकूल नही थी। नयी आजादी के नशे ने लोगों की दृष्टि धूमिल कर दी थी। फिर युगद्रष्टा जितनी दूर देखता है दूसरे उतनी दूर नही देख सकते। अतएव वामपक्षी एकता मृगमरीचिका बन कर रह गई और जननायक के ऐहिक जीवन की यात्रा पूरी हो गई। योगी ब्रह्मलीन हो गया। दिवगंत पण्डित यदुनन्दन शर्मा ने मुझे बताया था कि अन्तिम समय में जननायक का सर रामाश्रय ब्रह्मचारी की गोद में था। एक हल्की आवज हुई। जननायक का ब्रह्माण्ड फटा। प्राण महाप्राण में विलीन हो गया।

जननायक नही रहें परन्तु आज उनका वामपक्षी एकता का नारा उत्तरोत्तर बलवान होता हुआ भारत के राजनैतिक क्षितिज को कम्पायमान कर रहा है। जन- नायक जीवन से मृत्यु में अधिक बलशाली बन गये। हमें आजाद हुए तीस साल से अधिक बीते। देश में राज- नैतिक उलट-फेर हुये। हमने कुछ अंशों में, कुछ क्षेत्रों में तरक्की भी की। जहाँ-तहाँ कदम बढ़े लेकिन देश के स्तर पर गरीबी बढ़ती ही गई हम अन्य प्रगतिशील देशों की तुलना में पिछड़ते ही चले गये। गत वर्ष एक निरंकुश त्रासदायी युग का अन्त हुआ। राजसत्ता कुछ अच्छे ईमातदार लोगों के हाथ में आई परन्तु दुनिया केवल ईमानदारी से ही नही चलती। साथ-साथ आवश्यकता है सही विचार की ओर विचार को मूर्त्तरूप देने की क्षमता और प्रवृत्ति की। नया समाज चाहिये, नया ढाँचा चाहिये, पुरानी बोतलों में पुरानी शराबों को, चाहे वे नये रङ्ग के क्यों न हो, भरने से काम चलने का नहीं। आज भी हम समाज और उसकी विभिन्न इकाइयों के बदलने की बात नही सोचते। पुराने ढाँचे की लौह परिधि के अन्दर ही काम करना चाहते हैं। केवल कुछ मांस पेशियों, स्नायुओं तथा तन्तुओं को इधर-उधर करने की सोचते हैं। आधुनिक इतिहास साक्षी है कि इस आधार पर किसी अविकसित देश ने तरक्की नहीं की। तरक्की की उन्होंने ही जिन्होंने समाज और उसकी इकाइयों को बदला। राष्ट्र को एक नयी दिशा दी। अतएव आवश्यक है एक नयी चेतना।

काश, आज जननायक जिन्दा होते !

"जिस प्रकार किसी की निजी चीज होती है; अपनी योग्यता तथा समझ होती है, अपना शरीर और स्वास्थ्य होता है ....उसी प्रकार धर्म की भी बात है। यह भी हरएक आदमी का अपना निजी और व्यक्तिगत पदार्थ है। उसमें किसी का साझा या हिस्सा नहीं है। सामूहिक या समूह की चीज न होकर व्यक्तिगत है, हर व्यक्ति का जुदा-जुदा है। यह बात गीता ने निर्विवाद सिद्ध कर दी है। अगर यही बात, यही मन्तव्य संसार में व्यापक हो जाय, अगर यह गीता धर्म (गीता का बताया धर्म) संसार मान ले, तो धर्म के झगड़े रहने ही न पायें। इनके जीते जी हमारा देश आज नरक बन रहा है और जिसगजब की बला में आ फँसा है, वह तो न रहे। आज जो भाई का गला भाई और पड़ोसी धर्म की वेदी पर चढ़ाने को आमादा है, वह तो न हों। धर्म की पद नापाकी जंगी तो मिट जाय।"

"गीता धर्म औ मार्क्सवाद" से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैज्ञानिक समाजवादी स्वामी सहजानन्द

—शील भद्र याजी

भारतवर्ष ने अनेक साधु, सन्त, महन्त, ऋषि, मुनि तथा सन्यासी पैदा किए परन्तु सन्यासी होते हुए जिस प्रकार जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती कट्टर मार्क्सवादी एवं वैज्ञानिक समाजवादी नेता हुए उसका उदाहरण मिलना मुश्किल है। हम भारतीय उन्हें जन-नायक कहकर पुकारते हैं। स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी का सारा जीवन संघर्ष में लगा रहा। बचपन से ही वे असमानता तथा अन्याय के खिलाफ सिर्फ नारे ही नहीं लगाते रहे वरन् संघर्ष द्वारा इनको हटाने के प्रयत्न में भी लगे रहे।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का यह दृढ़ विश्वास था कि साम्राज्यवाद सामंतवाद तथा पूंजीवाद से संघर्ष करने में अवधि के विभाजन का मापदण्ड नहीं होना चाहिए। इसलिए १६२१ ई० में जब भारत के कोने-कोने में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ तो स्वामीजी उस लड़ाई में कूद पड़े तथा उत्तर प्रदेश से जेल गये और पं० जवाहर लाल नेहरूजी के साथ देहरादून जेल में जिन्दगी बिताई।

जेल से रिहा होने पर सामाजिक कुरीतियों एवं सामंतवाद, जमीन्दारी प्रथाओं को जड़ से उखाड़ने के प्रयत्न में लग गये। इस बीच १६३० ई० में नमक कानून तोड़ने तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु हुआ तो फिर पटना जिला के डिक्टेटर बन कर स्वतंत्रता संग्राम की रहनुमाई की तथा हजारीबाग सेण्ट्रल जेल में रहे। हजारीबाग सेण्ट्रल जेल से रिहा होने पर उन्होंने देश की ८५ प्रतिशत जनसंख्या किसानों को जगाने तथा जमीन्दारी प्रथा के खिलाफ संघर्ष चलाने के लिए सर्वप्रथम पश्चिमी पटना जिला में तथा इसके बाद सारे बिहार में किसान सभा की स्थापना कर सैकड़ों बकास्त संघर्ष का संचालन किया। बिहार में सर्वप्रथम किसान सभा का संगठन कर किसानों के वर्ग-संघर्ष को तीव्र करने के ख्याल से उन्होंने स्वर्गीय इन्दु लाल याज्ञिक तथा किसान-बन्धु आचार्य एन० जी० रंगाजी के सहयोग से अखिल भारतीय किसान सभा का संगठन किया। पक्के तथा कट्टर वैज्ञानिक समाजवादी होने के नाते स्वामी सहजानन्द सरस्वती का दृढ़ विश्वास था कि किसान एवं मजदूर वर्ग-संघर्ष के जरिये से ही आगे बढ़ सकते हैं अपने अधिकारों को पा सकते हैं तथा अन्त में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद किसान-मजदूर राज एवं समाजवाद की स्थापना कर सकते हैं।

जब १६३६ ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी समिति ने अपने प्रस्ताव द्वारा सभी किसान एवं मजदूरों के वर्ग-संघर्ष पर पाबन्दी लगा दी, उस समय स्वामी सहजानन्द सरस्वती, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, श्रीं के० एफ० नारीमैन, श्री किशोरी प्रसन्न सिंह तथा लेखक आदि ने ६ जुलाई १६३६ में कांग्रेस के इस किसान-मजदूर विरोधी फैसले के खिलाफ सारे भारतवर्ष में प्रतिवाद मनाकर विरोध किया। कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने इन किसान-मजदूर नेताओं को प्रतिवाद दिवस मनाने के अपराध में तीन-तीन वर्ष तक कांग्रेस संस्था में कोई भी पदाधिकारी नहीं बनने के लिए अनुशासन की कार्यवाई की। परन्तु स्वामीजी तथा नेताजी वर्ग-संघर्ष के रास्ते से नहीं हटे। उस समय बहुत से नामधारी समाजवादी नेता जैसे श्री एम० एन० राय, श्री जयप्रकाश नारायण आदि अनुशासन की कार्यवाई के भय से प्रतिवाद-दिवस में शामिल नहीं हुए।

आज बिहार में जो किसानों को सभी हक मिले, जमीन्दारी प्रथा खत्म हुई तथा काश्तकारी कानून में मौलिक परिवर्तन या संशोधन हुए, इन सब का सारा श्रेय दण्डीधारी संन्यासी वैज्ञानिक समाजवादी नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती तथा उनके पक्के अनुयायियों को है।

इस बीच जब द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू हुआ तो जन-नायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने नेताजी सुभाषचन्द्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोस का साथ दिया तथा रामगढ़ में जो समझौता विरोधी सम्मेलन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हुआ उसके वे स्वागताध्यक्ष हुए तथा इसी सम्मेलन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जंग करने के हेतु राष्ट्रीय संग्राम शुरु कर देने के बिगुल बजाये। सारे बिहार में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा लेखक के साथ २७ दिनों में ४३८ आम-सभाओं में भाषण देकर बिहार की जनता को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफजंग करने को तैयार किया तथा इसी जुर्म में फिर तीन वर्ष की सख्त सजा पाकर हजारीबाग सेण्ट्रल जेल में बन्द कर दिये गये।

१५ अगस्त १९४७ई० को जब भारत स्वतंत्र हुआ तो स्वामीजी ने कांग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर देश में समाजवाद की स्थापना के उद्देश्य से पटना में भारत की सभी वामपक्षी पार्टियों एवं वर्ग संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन किया। पटना के उस वामपक्षी सम्मेलन में अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लाक, अखिल भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी, अखिल भारतीय संयुक्त किसान सभा, अखिल भारतीय किसान सभा, आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी, अखिल भारतीय क्रान्तिकारी साम्यवादी पार्टी, अखिल भारतीय क्रान्कितारी वर्कर्स पार्टी, बालशेविक पार्टी ऑफ इण्डिया, डिमोक्रेटिक बैनगार्ड, कम्युनिष्ट वर्कर्स लीग ऑफ इण्डिया, अखिल भारतीय मजदूर सभा, सोशलिस्ट युनिटी सेण्टर, कम्युनिस्ट वर्कर्स आदि अठारह वामपक्षी संस्थाओं के प्रतिनिधि हजारों की तादाद में शामिल हुए। इस वामपक्षी मोर्चा सम्मेलन का सभापतित्व स्वामीजी ने किया। इस सम्मेलन में सदा की भाँति बिना पेन्दे के लोटे की श्री जयप्रकाश नारायण की पी० एस० पी० शामिल नहीं हुई, क्योंकि आजादी की प्राप्ति के बाद श्री जयप्रकाश नारायण की सोशलिस्ट पार्टी वैज्ञानिक समाजवाद को छोड़कर सुधारवादी समाजवादी पार्टी बन गई।

जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती सिर्फ राजनैतिक आजादी से खुश नहीं थे, इसलिए इन्होंने इन १८ वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों तथा वर्ग संस्थाओं को बुलाकर भारतवर्ष में जल्द से जल्द समाजवादी गणतंत्र की स्थापना के लिए संयुक्त वामपक्षी मोर्चा बनाया तथा उनका एक घोषणा-पत्र तैयार हुआ जिस पर उपर्युक्त १८ वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों एवं किसान-मजदूर वर्ग-संस्थाओं के नेताओं के हस्ताक्षर हुए। उस संयुक्त वामपक्षी मोर्चा के घोषणा-पत्र का देश तथा विदेश के सभी वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों एवं कम्युनिष्ट पार्टियों ने स्वागत किया तथा प्रशंसा की। अभी तक संसार में थर्ड तथा फोर्थ इन्टरनेशनल के मानने वालों में कभी भी किसी संयुक्त घोषणा-पत्र पर संयुक्त हस्ताक्षर नहीं हुए परन्तु यह जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ही एक ऐसे वैज्ञानिक समाजवादी नेता हुए कि उन्होंने पटना में इन दोनों इंटरनेशनल के मानने वाले को एक ही संयुक्त वामपक्षी मोर्चा घोषणा-पत्र पर सबसे हस्ताक्षर कराकर इन सब को एक ही संयुक्त वामपक्षी मोर्चा का संयोजक एवं सेक्रेटरी जनरल इस लेखक को बनाया तथा वे स्वयं सभी किसान सभाओं को एक संयुक्त किसान सभा बनाने के संयोजक हुए।

देश का दुर्भाग्य है कि इस संयुक्त वामपक्षी मोर्चा बनाने के बाद जननायक स्वामीजी हमारे बीच नहीं रहे। यदि इस देश में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा जननायक वैज्ञानिक समाजवादी संन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वती जीवित रहते तो आज से पच्चीस साल पूर्व ही भारत एक सोशलिस्ट रिपब्लिक हो जाता तथा इस देश से गरीबी, बेकारी तथा शोषण मिट जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंत के वे चिरस्मरणीय दिन स्वामी जी के साथ

—आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री

यद्यपि पूज्य स्वामीजी के साथ मेरा व्यक्तिगत संबंध कम-से-कम २० वर्षों का है, जबकि मैं बहुत छोटा—प्राय: ८-९ वर्ष का ही रहा होऊँगा, और उन्हें बहुत समीप से देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है, फिर भी उनके विविध गुणों के संबंध की चर्चा नहीं कर, अभी मैं उनके अंतिम दिनों की झांकी ही दे रहा हूँ।

मेरे मित्र पं० विष्णु शर्मा चतुर्वेद १ जून १९५० को पूज्य स्वामीजी से मिलने मुजफ्फपुर गए थे, और स्वामीजी के स्वास्थ्य में सुधार देखकर उन्हें काफी प्रसन्नता हुई थी। फिर उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि आपकी (स्वामीजी की) सेवा में, यदि आवश्यकता हो तो, मैं रहूँ। स्वामी ने तब उनसे कहा था—"तुम श्री सरस्वती-मंदिरम् के काम को और आगे बढ़ाओ, और उसी में अभी लगो, तबतक श्रुतिदेव को भेज दो। और, चतुर्वेद जी से यह संवाद पाकर मैं स्वामीजी की सेवा में, उसी दिन करीब १ बजे, पहुँच गया। स्वामी जी खाट पर लेटे थे, मैंने चरण छुए। उन्होंने 'नारायण' कहकर बताया कि मेरा अनुमान था कि आज तुम आ ही जाओगे और मैंने यह बात ब्रह्मचारी जी (श्री ब्रह्मचारी रामाश्रय विशारद) को बता दी थी। फिर, स्वामीजी अपनी गाथा सुनाने लगे:– "मैं तो मृत्यु-मुख से बाल-बाल बच गया हूँ। जाने को था डुमराँव और चला आया मुजफ्फरपुर। यहाँ डा० नायरे ने इतनी सुन्दर चिकित्सा की कि मैं तो इतनी शक्ति अनुभव करता हूँ, मानो मेरा कायाकल्प हो गया हो। लोगों को आश्चर्य होगा, मेरी अंतड़ियों से ३० सेर से अधिक मल निकला है। मैं प्राकृतिक चिकित्सा का पहले से ही समर्थक था, अब तो और भी आस्था हो गई है।"

स्वामीजी १३ मई को मुजफ्फरपुर पहुँचे थे और १४ तारीख से उनकी चिकित्सा आरंभ हुई। प्रथम सात दिनों तक केवल खीरे और तरबूज के रस पर ही निर्भर रहकर एनिमा, मिट्टी और जल-चिकित्सा से पेट की सफाई शुरू हुई थी। सात दिनों के बाद उन्हें ताजा दही व मट्ठा आधा सेर, लौकी की तरकारी पाँच छटांक और आम का रस तीन छटांक के करीब दिन में तीन बार—सवेरे साढ़े छ: बजे, दोपहर को बारह बजे और शाम को साढ़े छ: बजे—दिए जाने लगे। इसी नियत भोजन पर वे अंत तक रहे।

१० जून की रात, विशेष कार्य से मैं पटना चला आया और स्वामीजी ११ जून के सवेरे ही हुंकार के प्रधान संपादक तथा संचालक पं० यमुना कार्यी के निमंत्रणानुसार देवपार, पूसा के लिए रवाना हुए। मैं तीन-चार दिनों के बाद फिर स्वामीजी के चरणों में उपस्थित हुआ। स्वामीजी की फिर वही शब्दावली थी कि मैं कह रहा था कि आज श्रुतिदेव अवश्य पहुँचेगा। प्रणाम करते ही उन्होंने पटना के समाचार पूछे। श्री सरस्वती मंदिर की बातें पूछीं तथा पं० विष्णुशर्मा चतुर्वेद का कुशल पूछा। चूँकि मैं बिहटा आश्रम भी गया था और उनकी चादरें ले आया था, अत: आश्रम का हाल-समाचार भी पूछने लगे। स्वामीजी की एक काली गाय, जो डेढ़ वर्ष से लगातार करीब दो-दो सेर सुबह शाम दूध देती थी, उसे पूछना कभी नहीं भूले।

१८ जून को श्री स्वामीजी ने मेरा लिखा झंझावातम्, संस्कृत का खंडकाव्य सुना। अगस्त क्रांति की स्मृति में लिखा गया यह काव्य अमृतसर में १९४३ ई० की ९ अगस्त को पूरा हुआ था। इसे सुनकर स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए। उस दिन पहला अध्याय समाप्त हुआ। उत्कंठा बढ़ने पर उन्होंने स्वयं लेकर देखा। पुन: २४ तथा २५ को भी तीसरे अध्याय के क्रमश: सारे श्लोक सुने। सुनकर अत्यंत प्रसन्न थे। २५ जून की शाम को भी ये बातें उन्होंने की, जबकि आश्रम में पड़े हुए मेरे कुछ सामान के देने की बातें कर रहे थे। चूँकि २६ को मैं पटना आनेवाला था, अतएव ये बातें हो रही थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन दिन पहले से मेरी बाँई आँख फड़कने लगी। पहले दिन मैंने स्वामी जी से कहा, तो उन्होंने कहा कि कोई अनिष्ट होगा। मैंने कहा कि पता नहीं, क्या अनिष्ट होगा। दूसरे दिन पुन: मैं उनकी देह की मालिश कर रहा था, तो आँख फड़कने लगी। उन्होंने पूछा कि क्या आज भी फड़कती है ? मैंने कहा–जी हाँ, पुन: इसी तरह २६ के सबेरे भी पूछा और मैंने कहा–जी हाँ। आज भी फड़कती है। उन्होंने यही उत्तर दिया। मुझे इस फड़कने का अर्थ नहीं लग रहा था। मैंने समझा था कि पटना में कोई बड़ा अनिष्ट हो। किन्तु, क्या पता था कि मेरी आँखों के नीचे ही इतना बड़ा अनिष्ट होने जा रहा है। काश, मैं भविष्यदर्शी होता !

२६ जून का वह मनहूस प्रातःकाल। क्या पता था कि आज जो सूर्योदय के बाद रात्रि आयेगी, वह महाँ-काल रात्रि होगी। किसानों का सूर्य, जनता का नायक आज अन्तिम क्रिया करके सर्वदा के लिए सो जाएगा !

आज उन्हें दाँत बनवाने के लिए मुजफ्फरपुर जाना था और पहले का प्रोग्राम था कि उधर से ही बघनगरी भी जाएँगे। किन्तु मौसम की खराबी के कारण बघनगरी जाना स्थगित हो गया था। खन्ना साहब मोटर लेकर आए, कार्यीजी के साथ वे तैयार हो गए। मेरा कार्यक्रम भी साथ ही चलने को था, किन्तु ऐन मौके पर चलते समय स्वामी जी ने कहा–'श्रुतिदेव, तुम यहीं रहो। पता नहीं, तबियत कैसी हो जाए। १२ बजे तक लौट आऊँगा।' मैं तो रुक गया, किन्तु हमारे स्वामीजी नहीं लौटे। सदा के लिए चले गये। मुजफ्फरपुर जाते हुए रास्ते में ही उन्हें मोटर की यात्रा ने परिश्रान्त कर दिया। उनकी दुर्बलता बढ़ गई और तापमान भी ९९ हो गया। श्री कार्यीजी ने तथा श्री खन्ना ने भी वहाँ जाने से मना किया था, किन्तु उन्होंने किसी की नहीं सुनी–'हरीच्छा बलीयसी।' उस दिन ३ बजे तक ताप-मान बढ़ती पर था। दो बजकर बीस मिनट पर कार्यी जी को राँची जाने की अनुमति दी। तीन बजे ने के बाद ही तापमान घटने लगा और रक्तचाप बढ़ने लगा। तब व्याकुलता हुई। डाक्टर आए, सिविल सर्जन आए और ? और, तब तक डाक्टरों के कथनानुसार पक्षाघात हो गया था।

हमें पूसा में साढ़े चार बजे चिट्टी मिली कि स्वामी जी को बुखार हो गया है, आप लोग आ जाएँ। हम लोग किसी तरह भींगते-भींगते वैनी स्टेशन आये, साढ़े आठ बजे की गाड़ी से मुजफ्फरपुर पहुँचे। श्री स्वामी जी की जीभ बन्द थी। डा० नायरे और पं० मुचकुन्द शर्मा उदास बैठे थे। उनका कहना था कि अच्छा हुआ, आ गये, अन्यथा दर्शन भी दुर्लभ थे। हम तो काठ हो गये। हमें क्या पता था कि इतनी दूर तक नौबत आ गई। हम देखने गए। देखा, मुख पर शान्ति विराज रही है। दोनों हाथ छाती पर हैं। कभी-कभी हाथ को मुँह तक ले जाते और पुन: अपनी जगह पर रख देते। मुझे तो मालूम पड़ा कि स्वामीजी ध्यानस्थ हैं, किसी गहरी विचारणा में पड़े हुए हैं। वे बेहोश कभी न हुए। अन्त तक होश था। जब कभी उन्हें आवश्यकता होती, वे उठो-उठो कहते और उठाने का संकेत करते। वह भी मैं समझता हूँ कि संभवत: समाधि-रूप में बैठने के लिए ही संकेत था, पर हम उसे नहीं समझ सके। हम स्वामीजी से अन्तिम बार कुछ पूछ नहीं सके, क्योंकि मेरे सामने यह पहली मृत्यु थी, मेरे मस्तिष्क में कुछ आया ही नहीं कि क्या किया जाए। मैं तो किंकर्त्तव्य- विमूढ़ था। अन्त तक मुझे भ्रम बना रहा कि जो अभी दाँत बनवाने आये थे और जो अभी ६० वर्ष जीने की घोषणा करते थे, वह कैसे मरेंगे ? क्या वह हमलोगों को बहलाकर धोखा देते थे ? वस्तुत: धोखा ही तो था। उनकी कोई इच्छा नहीं थी, कोई व्याकुलता नहीं थी, मस्तक पर शिकन न थी। पौने दो बजे एक बार मुँह बन्द किया और धीरे-धीरे श्वास ऊपर चढ़ाया और प्राण ब्रहरंध से बाहर हो गये। हम देखते रह गये। डाक्टर ने कहा–इतिश्री। मैंने कहा-अभी नहीं, किन्तु ? वह तो चले गये और सर्वदा के लिए चले गए।

(संकलन स्वामी सहजानन्द स्मृतिग्रंथ से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी की क्रान्ति का प्रतीक

श्री सीताराम आश्रम, बिहटा

—रामचन्द्र शर्मा

पटना से लगभग ३० किलोमीटर पश्चिम, आरा-पटना के बीच विहटा महत्वपूर्ण रेवले स्टेशन है। गुड़ और चावल की मण्डी के अतिरिक्त विहटा अपनी चीनी मिल के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां भगवान शंकर का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। हर महाशिवरात्रि के अवसर पर पशुओं का एक दीर्घकालिक विराट मेला लगता है।

सन् १९२६–२७ में स्वामी जी एक ऐसे स्थान की खोज में थे जहां वे एक विद्यालय खोलकर संस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार तथा सांस्कृतिक जागरण की लहर पैदा कर सकते। विहटा के बगल में ही राघवपुर ग्राम के सन्त थे श्री सीताराम दास जी। उनके पास इकट्ठी कई बीघे जमीन तो थी ही उसमें बहुत सुन्दर आम का बगीचा भी था। जरा जीर्ण हो जाने पर श्री सीताराम जी ने चाहा कि वह जमीन लेकर कोई व्यक्ति अथवा संस्था वहाँ वेद शास्त्रादि की शिक्षा की व्यवस्था करे। स्वामी जी श्री सीताराम जी से मिले और संस्कृत विद्यालय के नाम पर पूरी जमीन का वन्धन नामा एक ट्रस्ट के नाम कर दिया गया। स्वामी जी भी इस ट्रस्ट के के सदस्यों में थे।

भूमि मिल जाने के बाद स्वामी जी ने संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन–अध्यापन के लिए एक आश्रम की नींव रखी। सन्त श्री सीताराम दास जी के नाम पर आश्रम का नाम श्री सीताराम आश्रम रखा गया। शीघ्र ही स्वामी जी ने विभिन्न समाजप्रेमियों को प्रेरित कर आश्रम भवन का निर्माण कराया। जो भवन जो जिस व्यक्तिने बनुवाया उनका नाम आज भी आश्रम के उस भवन की दीवाल पर लगे संगमरमर पर खुदा है। आश्रम का विशाल भूखण्ड एक भव्य चहारदीवारी से घिर वाया गया और ब्रह्मचर्याश्रम का संचालन प्रारम्भ हुआ वेद, उपनिषद्, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, षड्दर्शन, व्याकरण आदि विभिन्न विषयों के साथ आधुनिक विषयों के भी अध्यापन की आश्रम में समुचित व्यवस्था रखी गई। प्रारम्भ में स्वामी जी ने भी इस आश्रम में अध्यापन का कार्य किया।

स्वामी जी जब किसान आन्दोलन में कूदे तब आश्रम की व्यवस्था से उनका लगाव कम हो गया। कारण उन्हें समय ही उसके लिए नहीं मिल पाता था।

परन्तु २२ वर्षो तक उन्होंने किसान आन्दोलन का जो नेतृत्व किया उसका केन्द्र यह आश्रम ही था। आश्रम में आज भी एक छोटा सा प्रेस है। स्वामीजी का निजी पुस्तकालय ब्रह्मर्षि-पुस्तकालय के नाम से है, एक आयुर्वेदिक औषधालय भी है। इन सब के साथ ही वहां स्वामी जी की भव्य समाधि तथा मंदिर भी निर्मित है। मन्दिर के सम्मुख खड़े होते ही संगमरमर पर अंकित स्वामी जी का संदेश हृदय को आकर्षित कर लेता है।

विवेकी राय मार्ग, बड़ी बाग, कानपूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

GRATA FOOTWEAR

(Manufacturers & Exporters)

of

ARMY BOOTS & SHOES

88/22 Darul-Maula Nala-Road,

Sisamau, KANPUR.

卐

Telephone : 246913

Gram : TRUNKTAN KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी की कलम से : जन्म और बाल्यावस्था

मुझे ठीक याद नहीं कि माँ के गर्भ से मैं कब आया। जब यह जान सकता था तब तो इसकी कोशिश ही न की, न कर सका और अब अर्द्धशताब्दी से ज्यादा समय गुजर जाने पर पता लगना एक प्रकार से असम्भव है। इसलिये इस बात की फिक्र ही छोड़ दी। फिर भी पढ़ने के समय स्कूल में जो अवस्था मोटी-मोटी लिखी लिखाई जाती है, उसी के आधार पर मैंने यह अनुमान किया कि सन् १८८९ के आरम्भ के ही महीनों में यह दुनिया मूकरूप से देखी थी। जहाँ तक फिर भी पता लग सका है, फरवरी महीने में फागुन की महाशिवरात्रि का दिन था, हालाँकि पक्की जान कारी न हो सकी है।

अपनी माँ का मैं अंतिम बालक था और कुछ सयाना होने पर मैं जान पाया कि मेरी तीन या ४ वर्ष की उम्र में ही माता का देहान्त हो गया था। फलतः मातृसुख का का अनुभव मैं यथावत् कर न सका। माता की सेवा का तो प्रश्न ही नहीं, उसका अवसर ऐसी हालत में मिलता ही कैसे?

मेरे पिता श्री बेनीराय, दो भाई थे और माता भी दो बहनें थीं। फलतः माता के मरने पर उसकी बड़ी बहन मेरी मौसी और चाची ने, क्योंकि दोनों बहनों की शादी पिता और उनके बड़े भाई से ही हुई थी, मेरा पालन पोषण किया। असल में मौसी को ही मैंने हमेशा माँ की तरह समझा और माना और उसका भी भाव मेरे प्रति सोलहो आने पुत्रवत् ही रहा, परिणाम यह हुआ कि जब मैंने प्रायः अट्ठारह वर्ष की आयु में सन्यास ले लिया तो उसे मर्मान्तिक-वेदना हुई अधिक दिनों तक वह जीवित रह न सकी। पिताजी को भी अपार क्लेश हुआ और वह भी मेरे गृहत्याग के पश्चात् शीघ्र ही कुछ वर्षों के भीतर ही चल बसे परन्तु ठीक-ठीक कह नहीं सकता कि दोनों का देहावसान कब किस समय हुआ। केवल इतनी ही खबर किसी प्रकार लग सकी कि दोनों ही स्वर्गीय हो गये।

चाचा श्री विश्वेश्वर राय के तो एक ही पुत्र थे श्री सुन्दर राय। लेकिन हम पांच भाई थे। बहन कोई न थी, सिर्फ एक चचेरी बहन थी। पांच भाइयों में एक का देहान्त तो मेरी जानकारी से पहले ही हो गया था। इसलिए इस समय उसका नाम भी मुझे याद नहीं। शेष चार में श्री रामदिलास राय की भी मौत मेरे सामने हो गयी। रह गये तीन। सबसे बड़े थे श्री जंग बहादुर राय और उसके बाद श्री रामध्यान राय हाँ, अपने माँ-बाप का दिया अपना नाम तो मैं भूल ही गया। मुझे लोग नवरंग राय कहते थे चचेरे भाई का तो कोई वंश रह नहीं गया है और न मृत भाइयों का। लेकिन जो शेष दो भाई बचे थे, और जिसमें बड़े का भी पीछे देहान्त हो गया उनका वंश है।

बाल्यावस्था की कोई विशेष बात न तो मुझे याद है और न मालूम। सिर्फ एक ही बात जानता हूँ, जो घर के बड़ी बूढ़ी औरतों से सुनी थी। वे कभी कभी हंसी में मेरे बारे में कहा करतीं थीं कि "यह तो बड़ा ही पत्थर के कलेजे का है, जब इसकी मां मरी थी और सभी लोग रोते थे तो यह कहता था कि "माँ तो मर ही गयी, क्या रोते रोते आप बाकी लोग भी मर मिटेंगें" लेकिन मुझे अनुभव नहीं कि आया, ऐसा कहता था या नहीं, कारण ३-४ वर्ष की अवस्था की बात ही तो ठहरी। हाँ एक बात और है। न जाने मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा रहा है कि बचपन में लड़के मिल मिलाकर जो खेल खेला करते और शैतानियाँ करते रहते हैं, उनसे मैं बराबर दूर रहा हूँ।

फलतः न तो वे खेल ही जानता और न वैसी शरारतें ही। यहाँ तक की दरवाजे के सामने अपार जल का लम्बा तालाब, जिसे सब बावड़ी (बौली) कहा करते थे, रहने पर भी मैंने तैरना जाना ही नहीं, जब कि मेरी उम्र के सभी लड़के इस विद्या में पारंगत थे। तालाब तो मेरे गाँव मे बहुत थे, मगर स्वभावतः ही मैंने तैरना न सीखा। आखिर, इस काम में भी तो नटखट पन की जरूर होती है और मुझमें वह चीज थी ही नहीं। परिणाम यह है कि मैंने अच्छी तरह तैरना आज तक जाना ही नहीं। सिर्फ सन् १९१६ ई० की ऐतिहासिक बाढ़ आने पर विश्वम्भरपुर (गाजीपुर) के ताल में संन्यासी होने के बहुत बाद किसी प्रकार थोड़ा सा सीख पाया था। सो भी इसलिये कि एक बार सारन जिले में नहाने के समय एक तालाब में डूबते-डूबते बचा था। पता नहीं कि उतना भी तैरना अब भूल गया या आता है क्योंकि फिर कभी इसकी परीक्षा की नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरा स्थान और वंश

मेरा जन्म देवा नामक ग्राम में हुआ। यह स्थान युक्त प्रान्त के सबसे पूर्वीय और बिहार से मिले हुए गाजीपुर जिले की सैयदपुर तहसील, शादियाबाद परगने और बिरनों थाने के भीतर गाजीपुर शहर से उत्तर-पश्चिम प्रायः बीस मील के अन्दर पर बंगाल नार्थ वेस्टर्न (ओ० टी०) रेलवे के दुलहपुर स्टेशन के पास है। यहाँ गाजीपुर से दो एक कच्ची और दूसरी पक्की सड़कें आती हैं। कच्ची तो गाँव से होकर ही किनारे-किनारे निकल जाती है मगर पक्की बिरनों थाने से होकर आती है और गाँव के उत्तर होकर निकट से ही सीधी आजमगढ़ चली जाती है। कच्ची सड़क गाँव से कुछ दूर उत्तर पश्चिम में इसी से मिलकर खत्म हो जाती है। देवा गाजीपुर जिले के वायव्य कोन का आखरी गाँव है और इसके बाद आजमगढ़ जिला शुरू हो जाता है।

गाँव के चारो ओर पुरानी खाई है, जो अधिकांश में समय गुजर जाने के कारण भर सी गयी है। फिर भी वर्षा में तो पानी से लबालब हो ही जाती है और दो-चार निर्दिष्ट मार्गों के अलावा गाँव के बाहर जाने के और रास्ते रही नहीं जाते। इसके अंशों में खास कर समूचे उत्तरी भाग में, जो ज्यादा चौड़ा भी है, गर्मियों में भी जल भरा रहता था। खाई के सिवाय उसके भीतर ही, पर उसी के किनारे गाँव के चारो कोनों में मिट्टी के चार बहुत ही ऊँचे घूस है, जिन्हें अब तक बराबर मोर्चे के नाम से लोग पुकारते हैं। इतना ही नहीं, गाँव के उत्तरी भाग में, खास कर जहां हमारे वंश वालों का घर है, एक पुराने गढ़ के चिन्ह अभी तक पाये जाते हैं। जिससे लम्बी-लम्बी ईंटें निकलती हैं और जिसे कोट के नाम से पुकारा जाता है। वहीं एक पुरानी देवी भी हैं, जिन्हे कोट का देई या देवी कहते चले आते हैं। गढ़ पर ही, जो अब प्रायः समतल सा हो गया है, हम लोगों के घर के बगल में ही एक पुरानी कब्र पड़ी है, जिसकी मरम्मत उस समय हमारे घर वाले ही कभी-कभी करा दिया करते थे और जिसे "शहीद मर्द" कहकर पुकारते थे। मैंने यह देखा है कि घर वाले कभी-कभी "शहीद मर्द" पर दिया जलाया करते थे। मालूम होता है, पुराने समय, जब गढ़ मौजूद था, किसी लड़ाई में कोई बहादुर मुसलमान किसी कारण से लड़ते-लड़ते हक के के लिये मरा था जिससे उसकी बहादुरी में उसकी कब्र को "शदीद मर्द" कहने लगे। गाँव में मुसलमान तो केवल दो चार घर ही जुलाहे और चुड़िहार मिलाकर हैं। दो घर भाँट भी हैं, जिनमें एक श्री रामखेलावन मियाँ बड़ा ही गवैया और सारंगी का बजवैया कारीगर था। इससे उसकी ख्याति आस-पास में और दूर तक भी थी। सारंगी बजाने में तो कमाल करता था। उसके व्यवहार अचार से उसे कोई सहसा कह नही सकता था कि मुसलमान था। कहते हैं कि वह स्वयमेव एकबार हिन्दू बनने को तैयार था। मगर गांव के बड़े बूढ़े हिन्दुओं ने ही न होने दिया। उसका लड़का श्री प्रदीप तो गाने बजाने में उससे भी बाजी मार ले गया है और बहुत दूर तक सीमन्तों में उसकी पूछ है।

देवा नाम, कोट की पुरानी देवी और गढ़ का विचार करने से अन्दाज होता है, पहले वह हिन्दुओं का था पीछे किसी मुसलमान नबाब या सामन्त ने उस पर अधिकार किया। उसे ध्वस्त करके ही फिर हमारे पूर्वजों ने उस पर कब्जा किया और उसी लड़ाई में किसी तरह की आकर्षक मृत्यु के कारण वह मुसलमान "शहीद मर्द" बना।

बूढ़े लोग कहते थे कि चारो मोर्चे पर तोपें रहा करती थीं, उन्होंने ऐसा सुना था। यह भी वे लोग सुनाया करते थे कि पहले उत्तर वाली पक्की सड़क पलनें जाया करती थी, जिन्हें तिलंगा के नाम से पुकारते थे। वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत पुरानी बात न थी। मालूम होता है, तैलंग लोगों को फौज में भर्ती करके सन् १८५७ ई० के बाद उधर गोरी पलटनों के साथ ही गश्त कराया जाता था। इसीलिये सभी पलटनों के सिपाहियों को तिलंगा कहने की आदत सी पड़ गई थी।

मेरा वंश जुझौतिया ब्राह्मणों का है। जो पश्चिम से आकर उस गाँव में बहुत पहले ही बस गये थे। हाँ, यह बूढ़े यह भी कहते थे कि उनके पूर्वज गांव से उत्तर के डीह में वसे थे जो अब खेत हो गया है, मगर गौर करने से वहां प्रथम वस्ती होने का अन्दाज लगता है। जब डाकुओं ने बहुत दिक किया तो गढ़ के भीतर आ बसे। खैर, बात जो हो, जुझौतिया ब्राह्मणों का एक दल कुछ कायस्थों के साथ बुन्देल खण्ड की ओर से किसी प्रकार वहां आ गया। कान्य कुब्ज ब्राह्मणों की ही एक शाखा जुझौतिया कहाती है, जैसे सरवरिया या सरयूपारी। जुझौतिया जजकशुक्ति पुराना नाम है। वहीं रहने से ये ब्राह्मण जुझौतिया कहे गये। वहां के लोग खूब लड़ाके वीर होते थे, यह सभी जानते हैं और इतिहास इसका साक्षी है। इसीलिए वुन्देलखण्ड को जुझौति भी कहते थे। जुझौतिया ब्राह्मण अधिकांश उसी भाग में और हमीरपुर, ललितपुर, झांसी में पाये जाते हैं। चित्रकूट के पास में कोई एक छोटा मोटा राजा या जमींदार भी उनमें पहले था। उनकी सभा भी एक है और वंशावली वगैरह भी छपी है।

ये थोड़े से जुझौतिया ब्राह्मण सुदूर पश्चिम से कब और कैसे आये पता नहीं। इस इलाके में या इधर उधर नजदीक में कहीं और उनका सुराग नहीं मिलता, सिर्फ एक ही गांव वही है, वहाँ भी उनकी संख्या ज्यादा नहीं है। पन्द्रह बीस घर होगें जो असल में गिने गुथे पूर्वजों से ही इतने बूढ़े हैं, ऐसा अन्दाज है। आस पास के गांवों में या तो सयूपारी ब्राह्मण पाये जाते हैं या भूमिहार ब्राह्मण पाये जाते हैं, सो भी बहुत कम। मालूम होता है, खेतीवारी करने और समय समय पर युद्ध-कौशल दिखाने वाले ये जुझौतिया लोग बुन्देलखण्ड वाले अपने ऐसे ही भाइयों से रेल, तार वगैर का जमाना न होने के कारण धीरे-धीरे कतई अलग हो गये और अपने ही सरीखे भूमिहार ब्राह्मणों से उन्होंने खान, पान और विवाहादि का नाता क्रमशः जोड़ लिया। मुझे खूब याद है कि अकेले होने के कारण इनकी वैसी प्रतिष्ठा भूमिहार ब्राह्मण भी नहीं कर सकते थे। वे समझ ही न सकते थे कि ये जुझौतिया आखिर कौन जीव हैं। कान्य कुब्ज, सरयूपारी आदि को तो समझ पाते थे। इसीलिये मेरे समय में हमारे गाँव के लोग जुझौतिया कहने में भी संकोच करते थे और इस नाम को भी नासमझी से विगाड़कर जुजहुतिया, या जिजहुतिया आदि कर दिया था। इधर पता लगा कि दुमका (संथाल परगने में) कोई जुझौतिया अध्यापक मैथिलों के द्वारा इसीलिये अपमानित किये जाते थे कि उस श्रेणी का वहाँ और कोई है नहीं। ऐसा होता ही है। हजारों के बीच जो अकेला होता है वही नक्कू बनाता है। देवा के जुझौतिया ब्राह्मणों का कश्यप या काश्यप गोत्र है।

(मेरा जीवन संघर्ष से)

"स्वामी जी के ग्रथों से कतिपय उद्धरण"

ब्राह्मण-लक्षण

श्रुति, स्मृति तथा पुराणादि के अवलोकन से स्पष्ट है कि मैथुनी सृष्टि से पूर्व विराट् भगवान अथवा हिरण्य गर्भ (ब्रह्मा वा प्रजापति) ने सांकल्पिक (मानसिक) सृष्टि की और तदनुसार ही ब्राह्मणादि वर्णों को परस्पर विलक्षण सूचित करने के लिए मुखादि भिन्न-भिन्न अंगों से उत्पन्न किया, जैसा कि शुक्ल यजुर्वेद के ६२ वें अध्याय के १ वे मंत्र से स्पष्ट है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यःकृतः।
ऊरू तदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

जिसका तात्पर्य यह है कि हिरण्यगर्भ या प्रजापति के मुख से ब्राह्मण बाहु से क्षत्रिय, जंघे से वैश्य और पाँव से शूद्र उत्पन्न हुए क्योंकि इसके बाद के मंत्र 'चन्द्रमा मन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोजातः, में पंचम्यन्त पद 'मनसः' रखा है जिसका अर्थ यही हो सकता है कि मन से चन्द्रमा की उत्पति हुई। तदनुसार ही इस पूर्व मंत्र में भी अर्थ करना चाहिए। इस स्थान पर जो लोग यही कहा करते हैं कि ऐसा अर्थ करने से सृष्टि क्रम से विरोध पड़ता है क्योंकि आजकल मुखादि अंगों से किसी की उत्पत्ति नहीं देखते। उनसे पूछना चाहिए कि अच्छा, तो सृष्टि प्रारम्भ काल में प्रथम स्त्री पुरुष थे ही नहीं तो सृष्टि कैसे हुई ? इसलिए यह मानना ही पड़ेगा कि प्रथमतः ईश्वर ने कुछ स्त्री पुरुषों को संकल्प से ही उत्पन्न किया। तदनन्तर सृष्टि क्रम उन्ही से चला जो आजतक है। अतः मानसिक सृष्टि के विषय में, जिसका मानना आवश्यक है—यह शंका हो ही नहीं सकती। मनु जी भी स्पष्ट रूप से प्रथमाध्याय ३१ वें श्लोक में यही बात कहते हैं, जैसा कि लिखा है—

लोकानां तु विवृद्धयर्थं मुख बाहूरूपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्त्तयत् ॥

इस श्लोक में स्पष्ट रूप से 'मुखबाहूरुपादतः' इस पंचम्यन्त पद का प्रयोग है। यदि मुख स्थानापन्न ब्राह्मण हुए इत्यादि रूप अर्थ पर ही आग्रह होवे तो भी हमारा कोई विरोध नहीं है। इस मानसिक सृष्टि के बाद उन्हीं उत्पन्न स्त्री–पुरुष व्यक्तियों द्वारा मैथुनी सृष्टि हुई और यद्यपि मानसिक सृष्टि में भी वर्णों का विभाग था, जैसा कि अभी कह चुके हैं, अतः उसके अनुसार भी जातियों का नियम हो सकता है या था। तथापि आजकल के जीवों में मुख आदि से उत्पत्ति नहीं पायी जाती है। इसलिये महर्षियों के मुख से जो उत्पन्न हुआ, उसे ब्राह्मण कहते हैं। इत्यादि जातियों का लक्षण न करके "ब्राह्मण्यां" ब्राह्मणेनैवमुत्पन्नो ब्राह्मणः स्मृतः" (हारीत स्मृति १ अ० १५) अर्थात् ब्राह्मणी के रज और ब्राह्मण के वीर्य से जो त्रिविवत उत्पन्न होता है उसे ब्राह्मण कहते हैं' इत्यादि रूप ही लक्षण किया है। ऐसी दशा में किसी का यह कथन कि 'क्योंकि तुम दान नहीं लेते और पुरोहिती नहीं करते हो, अतः ब्राह्मण नहीं हो-केवल मूर्खता है क्यों कि जब उसकी उत्पत्ति ब्राह्मण से है तो उसकी ब्राह्मणता में संदेह ही क्या हो सकता है? हाँ इतना अवश्य हो सकता है कि यदि वह ब्राह्मणोंचित कर्म न करेगा तो पतित अथवा हीन ब्राह्मण समझा जा सकता है। परन्तु प्रतिग्रहादि तो ब्राह्मणोचितकर्म नहीं हैं प्रत्युत ब्राह्मणत्व को सत्यानाश में मिलाने वाले हैं जैसा कि मनु जी ने कहा है और अन्यत्र भी लिखा है कि–

,प्रतिग्रह समर्थोऽपि प्रसंगं तत्र वर्जयेत्।
प्रतिग्रहेण ह्यस्याशु ब्राह्मं तेजं प्रशाम्यति ॥
पौरोहित्यमहं जाने विगर्ह्यं दूष्य जीवनम् ॥ स्कन्द पु० ॥

अर्थ यह है कि यदि प्रतिग्रह करने में सामर्थ्य भी रखता हो (अर्थात् उससे होने वाले पाप को हटाने के लिए बहुसंख्य गायत्री–जप और तपस्यादिक भी कर सकता हो) तो भी प्रतिग्रह का नाम भी न लेवे क्योंकि उससे शीघ्र ही ब्रह्मतेज (ब्राह्मणता) का नाश हो जाता है। ब्राह्मण कहता है कि हम पुरोहिती को निन्दित और जन्म को दूषित करने वाली जानते हैं। जैसा रामायण में लिखा है कि- पुरोहिती कर्म अति मंदा। वेद पुराण स्मृति कर निन्दा। इत्यादि इसका विस्तार-पूर्वक विचार आगे होगा। ऐसी दशा में प्रतिग्रह या पुरोहिती से रहित किसी शुद्ध ब्राह्मण या ब्रह्मण समाज को ब्राह्मण न कहना या हीन ब्राह्मण कहना केवल मूर्खता, द्वेष, नास्तिकता और धृष्टतामात्र है। यदि प्रतिग्रह या पुरोहिती ब्राह्मणोंचित कर्म मान लिया जावे' तो भी उनका न करने बाला ब्राह्मण क्यों न कहा जायेगा ? क्योंकि कर्म करने से जाति मानना विधर्मियों का सिद्धान्त है और अनभिज्ञता है। सनातन–धर्म का तो अटल सिद्धान्त है कि आम्र के बीज से जो उत्पन्न होगा वह आम्र ही होगा चाहे उसका सिंचन करिये या न करिये। श्रुति भी यही कहती है कि "अष्ट वर्षा ब्राह्मण मुपनयीत तं चाध्यापयीत" अर्थात आठ वर्ष के ब्राह्मण का उपनयन संकार कराकर उसे पढ़ावें और मनु जी भी कहते हैं कि–"गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् २अ० ३६। अर्थात गर्भ से आठवें वर्ष ब्र ह्मण का उपनयन करावे। यद्यपि उपनयन संस्कार से पूर्व उसने कोई ब्राह्मणता-संपादक कर्म नहीं किए हैं और न भविष्यत् का ही निश्चय है, तथापि उसे ब्राह्मण ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया है।

इसलिए यही सिद्धान्त है कि ब्राह्मणी और ब्राह्मण द्वारा जिसकी उत्पत्ति शास्त्रीय-रीति से हो उसे ही ब्राह्मण कहते हैं। जिसके धर्म 'संध्यावंदनादि' हैं न कि पुरोहिती या प्रतिग्रह आदि। (ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणव, ऋषि, छन्द आदि

ओंकार को ही प्रवण कहते है और उसे सब वेदों का सार एवं सब मंत्रों का राजा मानते हैं। ऐसा लिखा गया है कि तीनों वेदों को मथने से क्रमश: भू:, भुव:, स्व: निकले और इन तीनों के मथने से क्रम से अ, उ, म तीन अक्षर निकले जिनसे ओंकार बना है। इसीलिए यजुर्वेदियों के यहाँ प्रत्येक मंत्र के बोलने से प्रथम प्रणव बोला जाता है और सामवेदी यद्यपि ऐसा नहीं करते, तो भी एक प्रकरण के सम्पूर्ण मंत्रों के प्रारम्भ में ओंकार अवश्य बोलेंगे और यदि उस प्रकरण के बीच में भी आचमन आदि के लिए किसी कारण रुकना पड़ा तो फिर जिस मंत्र को पहले बोलेंगे उसके आरम्भ में प्रणव अवश्य लगावेंगे। स्वस्ति आदि कहकर दान लेने के समय भी "ॐ स्वस्ति" कहने की रीति तीन वर्णों के यही है और शूद्र के यहाँ केवल "स्वस्ति" कहते हैं।

प्रत्येक वैदिक मंत्र से कोई कर्म करने के पहले उनके ऋषि, छन्द, देवता और विनियोग इन चार बातों के जानने को परिपाटी है और उनके जाने बिना जप आदि को निष्फल बताया है।

पहले वेद का कोई ग्रन्थ नहीं था। किन्तु समाधि द्वारा एकाग्र चित्त से जिन जिन ऋषियों ने जिन जिन मंत्रों का साक्षात्कार किया या देखा कि यह मंत्र ऐसा है, अथवा जिस मंत्र की उपासना, अनुष्ठान आदि द्वारा जिस ऋषि को सिद्धि प्राप्त हुई, वही उस मंत्र का ऋषि कहा जाता है और ऐसे ही मंत्रों का संग्रह वेद है। ऋषि शब्द का अर्थ है ज्ञानी और वेद मंत्रों का द्रष्टा। प्रत्यक्ष करने वाला।

मंत्रों के पढ़ने में क्लेश न होकर आसानी हो और वे ठीक ठीक पढ़े जावें इसीलिये प्रत्येक मंत्र का पिंगल की रीति के अनुसार कोई न कोई छन्द है और प्रत्येक छन्द का नियम है कि इतने अक्षर, चरण या मात्रा का होगा। इसके जाने बिना ठीक उच्चारण असंभव है। यही छन्द कहलाता है।

जिस मंत्र से जिस विषय का प्रतिपादन या निरुपण रहता है या जिसकी स्तुति आदि की जाती है वही उसका देवता कहा जाता है। देवता का यहाँ अर्थ है प्रधान या प्रतिपाद्य विषय।

प्रत्येक मंत्र का जप होम आदि का कोई न कोई प्रयोजन है। विनियोग का यही तात्पर्य है कि कौन मंत्र किस काम में लगाया जाने योग्य है यह मालूम हो जावे, ताकि दूसरे मंत्र से दूसरा काम न लिया जा सके।

इससे स्पष्ट है कि ऋषि आदि के ज्ञान की कितना आवश्यकता है। जैसे ऊंचे कोठे पर बिना सीढ़ी के चढ़ना या अन्धेरे में बिना चिराग के जाना खतरे और धोखे से खाली नहीं है, उसमें गिरने या मरने का भय रहता है ठीक यही बात वेद के मंत्रों के विषय में भी है।

छन्दों का ज्ञान सीढ़ी का काम देता है जिससे मंत्रोच्चारण रुपी ऊंचे कोठे पर निर्विघ्न पहुंच सकें—उनका उच्चारण शुद्ध शुद्ध करें। और उनका अग भंग न करें। ऋषि, देवता और विनियोग का ज्ञान, दीप का काम करता है जिससे मंत्रों के अर्थों के विषय में अन्दाजी टटोल करना न पड़े, उनका अन्धकार दूर हो जावे। प्रत्येक ऋषि का कोई न कोई प्रधान विषय हुआ करता है और उसके विषय प्रतिपादन की शैली भी निराली ही होती है। यह बात हरेक आदमी के विषय में कही जा सकती है। अतएवं ऋषियों का ज्ञान भी मंत्रार्थ जानने में सहायक होता है। यदि उस मंत्र के अनुष्ठान द्वारा उस ऋषि को सिद्धि मिली तो वह कैसी थी यह देखकर मंत्र के विषय का अन्दाज लगाया जा सकता है। देवता से तो विषय स्पष्ट ही है। विनियोग भी इस बात की सहायता करता है कि जब अमुक काम में यह मंत्र लगाया जाता है तो उसका प्रतिपादन इस मंत्र में किसी न किसी रुप में अवश्य होगा। इस तरह हम वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण और उनके अर्थ समझने में सफल हो सकते हैं। हाँ, इतने से कहीं कहीं क्लिष्ट और सांकेतिक शब्दों के अर्थ फिर भी नहीं जाने जा सकते हैं इसीलिए वैदिक कोष निघन्टु और निरुक्त के रूप में बनाया गया है। निघन्टु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में ऐसे शब्दों के और निरुक्त में वाक्यों के अर्थ बताये गये हैं। निरुक्त के अन्तर्गत ही निघन्टु भी माना जाता है। इस प्रकार वेद मंत्रों आ अर्थ जाना जाता है। दृष्टान्त के लिए परम प्रसिद्ध गायत्री मंत्र को लीजिये। वस्तुतः गायत्री नाम का कोई मंत्र हो ही नहीं सकता। गायत्री तो एक प्रकार का छन्द है जिस में वेद के सैकड़ों मंत्र लिखे हैं। इस छन्द के २४ अक्षर होते हैं और इस मंत्र में भी २४ ही अक्षर हैं। इसीलिये गायत्री छन्द में लिखे या पढ़े जाने के कारण ही इस मंत्र को गायत्री कहते हैं। छन्द में चरण या पाद होते हैं। इसमें आठ-आठ अक्षर के तीन पाद हैं। अक्षर से तात्पर्य यहां केवल स्वर से है न कि व्यंजन से भी। यद्यपि तीन व्याहितियों के सिवाय गायत्री मंत्र में २३ ही स्वर हैं। तथापि "वरेण्यम" में जो "णयम" उसे णियम', पढ़ने की रीति हैं। इससे २४ अक्षर पूरे हो जाते हैं। इस मंत्र का देवता सविता "परमात्मा वा सूर्य" है। इसी से स वित्री कहाती हैं। वस्तुतः यह एक ऋक मंत्र है। इसके ऋषि विश्वामित्र हैं। उन्होंने इसी के द्वारा ब्रम्हतेज को प्राप्ति की थी। इससे पता चलता है कि अवश्यमेव इसमें ब्रम्हतेज का निरूपण होगा और बात यही है भी। परमात्मा या ब्रम्ह के तेज वा ज्योतिः स्वरूप "भर्ग" का निरूपण तो इसमें हुआ ही है।

(स्वामी जी कृत कर्मकलाप से)

धर्म और ईश्वर

असली किसानो को किसान सभा में लाने में हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वे कट्टर भाग्यवादी बन गये है, उनने सभी कार्यारम्भ शक्ति खो दी है और भविष्य के लिए वे निराश हो गये हैं। खूबी तो यह हैं कि भगवान और धर्म के नाम पर ही उनकी यह दशा हो गयी है। ऐसा कहा जाता है कि धर्म और भगवान की ओर प्राचीनों का, ऋपियों का, और भविष्य दर्शियों का ख्याल इसीलिये गया और ये धर्म तथा ईश्वर इसीलिए प्रकट हुए कि आत्मा और जीव की भूख को शान्त करें। जीवन भर मैं संस्कृत-साहित्य, भारतीय दर्शनों तथा दूसरे दर्शनों का बड़े चाव और ध्यान से अध्ययन करता रहा हूं और उनके द्वारा धर्म तथा भगवान के विषय में थोड़ा बहुत जानने और समझने का दावा भी रखता है हूँ। मैंने गीता को भी हृदयंगम किया है और वह मुझे प्रिय है। लेकिन मुझे उनमें से किसी में भी उस अतलगर्त का पता नहीं लगा, जिसमें अर्वाचीन धर्म, ने जनता को ढकेल दिया। इसलिए इस तरह के धर्म को मिट जाना ही होगा। क्योंकि हमारे जीवन में इसके लिए स्थान ही नहीं है। इसकी तों हालत यह है कि आज यह आत्मा की भूख को शांत करने के बजाये दरअसल कमाने वाली जनता के शोषकों और लूटने वालों की लिप्सा और तृष्णा की ही सन्तुष्टि कर रहा है और उसके लिये वायुमण्डल तैयार कर रहा है। क्योंकि वास्तव में इसने उस जनता की आत्मा को मार डाला है, उसके भीतर की सभी आरम्भिक शक्तियों को खतम कर दिया है और उसे कट्टर भाग्यवादी बना दिया है। क्या मैं धर्माचार्यों, धर्मोपदेशकों और धर्म शिक्षकों से एक छोटा सा प्रश्न करूँ? क्या सचमुच धर्म और सर्वशक्तिमान भगवान का यही काम है और अगर यही बात है तो अपने आपको कायम रखने का इन्हें क्या हक है? वे इस भूमण्डल से मटियामेट क्यों न कर दिये जायें? किसान सभा के सभी कार्यकर्ताओं का यह पवित्र कर्तव्य है कि "अर्वाचीन धर्म" की इस प्रवंचना का भण्डाफोड़ करें और ख्याल रखें कि जनता के दिल और दिमाग से इसका जादू एकदम मिट जाये। जब तक ऐसा नहीं हो जाये, जनता के लिये कोई आशा नहीं।

(महारुद का महाताण्डव से)

स्वामी जी का प्रिय शेर

फना के बाद हमसे बेकसों को कौन पूछेगा।
मगर ए वेकसी, रोया करेगी तू हमें बरसों॥
करेगी याद ए गम, तू हमें वादए फना बरसों
खिलाया है जिगर बरसों पिलाया है लहू बरसों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

(जीवन वृत्त तथा कृतित्व)

१८८९ ई० महाशिवरात्रि के दिन गाजीपुर जिले के देवाग्राम में जन्म।

१८९२ ई० माता का देहान्त।

१८९८ ई० जलालाबाद मदरसा में अक्षरारंभ।

१९०१ ई० लोअर तथा अपर प्राइमरी की ६ वर्ष की शिक्षा ३ वर्षों में समाप्त।

१९०४ ई० मिडिल परीक्षा में संपूर्ण उत्तर प्रदेश में छठा स्थान प्राप्त कर छात्र वृत्ति प्राप्ति।

१९०५ :- विवाह (वैराग्य से बचाने के लिए)

१९०६ :- पत्नी का स्वर्गवास।

१९०७ :- पुनः विवाह की बात जानकर महा शिवरात्रि को घर से निष्क्रमण तथा काशी पहुँच कर दसनामी सन्यासी स्वामी अच्युतानन्द से प्रथम दीक्षा प्राप्त कर संन्यासी बने।

१९०८ :- प्रायः वर्ष पर्यन्त गुरु की खोज में भारत के तीर्थों का भ्रमण।

१९०९ :- पुनः काशी पहुँचकर दशाश्वमेध घाट स्थित श्री दण्डी स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती से दीक्षा ग्रहण कर दंड प्राप्त किया और दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती बने।

१९१० :- से १९१२ तक काशी तथा दरभंगा में संस्कृत साहित्य व्याकरण, न्याय तथा मीमांसा का गहन अध्ययन।

१९१३ :- स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती के प्रयास से २८ दिसम्बर को बलिया में हथुआ नरेश की अध्यक्षता में संपन्न अ. भा. भूमिहार ब्राह्मण महा सभा में प्रथम बार उपस्थिति तथा ब्राह्मण समाज की स्थिति पर भाषण।

१९१४ :- काशी से 'भूमिहार ब्राह्मण पत्र' निकाल कर १९१६ तक उसका संपादन तथा प्रकाशन।

१९१४-१५ भारत के विभिन्न भागों में भ्रमण कर भूमिहार ब्राह्मणों तथा अन्य ब्राह्मणों का विवरण एकत्र करना।

१९१६ :- 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' का प्रकाशन। (काशी के अतिरिक्त विश्वंभर पुर (गाजीपुर) में अधिकांश समय निवास।)

१९१७ :- प्रथम बार भोजपुर के डुमरी में आगमन तथा कान्यकुब्ज और शाकद्वीपी ब्राह्मणों के विवाद में पं० देवराज चतुर्वेदी (का. ब्रा. भा:) द्वारा आमंत्रित।

१९१९ :- सिमरी (आरा) आकर पुनः विश्वंभरपुर (गाजीपुर) वापस।

१९२० :- ५ दिसम्बर को पटना में श्री मजहरूल हक के निवास पर ठहरे महात्मा गाँधी से राजनीतिक वार्ता तथा राजनीति में प्रवेश का निश्चय कर कांग्रेस में शामिल।

१९२१ :- गाजीपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चुना जाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा अहमदाबाद कांग्रेस में शामिल होना।

१९२२ :- २ जनवरी को गिरफ्तार होकर एक वर्ष का कारावास।

१९२३ :- जेल से छुटने पर सिमरी (भोजपुर) में निवास।

१९२४ :- सिमरी तथा आसपास प्रयत्न से खादी वस्त्रोत्पादन के लिए ५०० चर्खें तथा ४ कर्घे का चलवाना प्रारम्भ। सामाजिक सभाओं में ब्राह्मणों की एकता तथा संस्कृत शिक्षा प्रचारार्थ भाषण। सिमरी (भोजपुर) में चार महीने में 'कर्मक्लाप' (जन्म से मरण तक के संस्कारों का १२०० पृष्ठों के हिन्दी में विधि सहित विशाल ग्रंथ की रचना।

१९२५ :- काशी में आयोजित संयुक्त प्रांतीय भू ब्रा. सभा में भू.ब्रा द्वारा पुरोहिती करने से सबन्धित भाषण। –दिसम्बर में खलीलाबाद (वस्ती) में राजा चन्द्रेश्वर प्र. सिंह (मकसूदपुर, गया) की अध्यक्षता में सम्पन्न अ. भा. भूमिहार ब्राह्मण महासभा में पुरोहिती वाला प्रस्त व पेशकर उसमें महत्वपूर्ण भाषण।

१९२५:- भूमिहार ब्राह्मण परिचय का परिवर्द्धन कर 'ब्रह्षिवंश विस्तर' नाम से प्रकाशन।

१९२६ :- 'कर्मकलाप' का काशी से प्रकाशन।

१९२६ :- अमिला, घोषी, आजमगढ़ में आयोजित भू ब्रा. महासभा में भाषण तथा संस्कृत शिक्षा प्रचार का संदेश।

समस्तीपुर में निवाम। तथा पटना में आयोजित अखिल भारतीय भू० ब्रा० महा सभा में त्यागी ब्राह्मण चौ० रघुबीर सिंह को अध्यक्ष निर्वाचित कराना तथा पुरोहिति के प्रस्ताव को पारित कराना।

१९२७ :- समस्तीपुर से आकर पटना जिले के बिहटा में श्री सीताराम दास जी द्वारा प्रदत्त भूमि में श्री सीतारामाश्रम बनाकर स्थायी निवास तथा पश्चिमी पटना किसान सभा की स्थापना।

१९२८ :- सोनपुर(छपरा) में १७ नवम्बर को संपन्न बिहार प्रान्तीय किसान सम्मेलन का अध्यक्ष चुना जाना।

१९२९ :- अन्तिम वार मुंगेर की अ. भा. भूमिहार ब्राह्मण महासभा में सम्मिलित, मतभेद के कारण वापस।

१९३०–अमहरा (पटना) में २६ जनवरी को नमक कानून भंग के कारण ६ माह का कारावास। हजारीबाग जेल में 'गीता रहस्य' (गीता पर महत्वपूर्ण भाष्य) की रचना। जेल से लौटकर कांग्रेस तथा किसान सभा के कार्यों में संलग्न होना।

१९३४–भूकम्प पीड़ितों की सेवा हेतु बिहार में समिति गठित कर सेवा कार्य का संचालन।

१९३५–पटना जिला कांग्रेस के अध्यक्ष प्रादेशिक कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य तथा अ० भा० कांग्रेस समिति का सदस्य चुना जाना।

१९३६–अ० भा० किसान सभा का संगठन तथा प्रथम अधिवेशन का अध्यक्ष पद ग्रहण। (लखनऊ)

१९३७–अ० भा० किसान सभा का महामंत्री चुना जाना।

१९३८–१३ मई से १५ मई तक संपन्न अ० भा० किसान सम्मेलन (कोमिल्ला, बंगाल) के अध्यक्ष।

१९३९–अ० भा० किसान सभा के महामंत्री निर्वाचित तथा १९४३ तक उक्त पद पर।

१९४०–(१९–२० मार्च) को रामगढ़ (बिहार) में सुभाष चन्द्र वोस की अध्यक्षता में आयोजित अ० भा० समझौता विरोधी सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष। उपर्युक्त सम्मेलन में भाषण के लिए तीन वर्ष का कारावास।

१९४१–से ४३–जेल में कई पुस्तकों की रचना।

१९४४–१४, १५ मार्च को बेजबाड़ा (आन्ध्र) में अ० भा० किसान सम्मेलन के अध्यक्ष।

१९४८–६ दिसम्बर को कांग्रेस की प्राथमिक एवं अ० भा० कांग्रेस की सदस्यता का त्याग तथा साम्यवादी सहयोग से किसान मोर्चा का संचालन।

१९४९–महाशिवरात्रि को बिहटा (पटना) में हीरक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जयन्ती समारोह समिति द्वारा साठ लाख रु० की थैली भेंट तथा उसका तदर्थ दान।

१९४९-९ अप्रैल (राम नवमी) को अयोध्या में संपन्न अ० भा० विरक्त महामंडल के प्रथम अधिवेशन में शंकराचार्य के बाद अध्यक्षीय भाषण।

१९५०-एप्रिल में रक्तचाप से विशेष पीड़ित होकर प्राकृतिक चिकित्सार्थ डॉ० शंकर नायर (मुज़फ्फरपुर) से चिकित्सा प्रारंभ। मई-जून से अपने अनन्य अनुयायी किसान नेता पं० यमुना कार्यी (देवपार, पूसा, समस्तीपुर) के निवास पर निवास।

२६ जून१९५०-पुन: डाक्टर नैयर को दिखाने आने पर मुज़फ्फर पुर में ही पक्षाघात का आक्रमण तथा २६ जून की रात्रि २ बजे प्रसिद्ध वकील पं० मुचकुन्द शर्मा के निवास पर देहान्त।

२७/६/५० को शव का पटना गांधी मैदान में लाखों लोगों द्वारा अन्तिम दर्शन डॉ० महमूद की अध्यक्षता में शोक सभा, नेताओं द्वारा श्रद्धांजलि।

२८/६/५० डा०श्रीकृष्ण सिंह मुख्यमंत्री तथा अन्य नेताओं का अर्थी के साथ श्री सीतारामाश्रम विहटा (पटना) में पहुँचना तथा वहीं अन्तिम समाधि।
-डा० राजेन्द प्रसाद आदि का शोक सन्देश।

स्वामी जी रचित पुस्तकें-

ब्रह्मर्षि वंश विस्तर, ब्राह्मण समाज की स्थिति, झूठा भय मिथ्या-अभिमान, कर्म-कलाप, गीता हृदय (धार्मिक) क्रांति और संयुक्त मोर्चा, किसान सभा के संस्मरण, किसान कैसे लड़ते हैं, झारखण्ड के किसान, किसान क्या करें, मेरा जीवन संघर्ष (आत्मकथा) आदि।

स्वामी जी द्वारा सम्पादित पत्र

स्वामी जी ने क्रमशः भूमिहार ब्राह्मण काशी और लोक संग्रह पटना नामक पत्रों का सम्पादन १९११-१६ और १९२२-२४ तक सफलता पूर्वक किया। उनके लेख "हुंकार" पटना, जनता (पटना), विशाल भारत (कलकत्ता) तथा कल्याण (गोरखपुर) के इश्वरांक तथा योगांक में भी प्रकाशित हुये थे।

स्वामी जी के नाम पर स्मारक संस्थायें-

श्री सीतारामाश्रम विहटा, पटना, अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ शर्मा, मंत्री श्री रामकृष्ण शर्मा

स्वामी सहजानन्द संस्कृतोच्च विद्यालय, विहटा, पटना।
" " स्मारक प्रेस-- " "
" " महाविद्यालय- जहानाबाद (गया)
" " पीरो (भोजपुर)।
" " आरा (भोजपुर)।
" " मोतीहारी।
" " महिला महाविद्यालय, बिहटा (वेगूसराय)
" " बिनोवा महा विद्यालय, सिमरी (भोजपुर) पं० सूर्य ना० शर्मा द्वारा स्थापित)
" " महाविद्यालय, गाजीपुर-श्री केशव प्र० शर्मा द्वारा संथापित।
" " स्मारक समिति, मन्दिरी (पटना)- मंत्री श्री वैद्यनाथ पाँडेय एम०एल०सी०
" " स्मारक न्यास, पाण्डेपट्टी, बक्सर (भोजपुर) अध्यक्षस्वामी विमलानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित।
" " परिषद्, सिन्दरी (धनबाद) -अध्यक्ष प्रो० विश्वेश्वर प्र० सिंह
" " सेवा समिति, बोकारो।
" " कन्या उच्च विद्यालय, बसंतपुर (गया)

संकलनकर्ता :

चौधरी राजनारायण शर्मा
ग्राम- श्रीरामपुर अयोध्या
पो०- बैनी
जि०-समस्तीपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी का वंश वृक्ष

- ठाकुर प्रसाद राय
  - वेनी राय
    - जंगबहादुर राय
      - राजा राय
        - उमाशंकर राय
      - कान्ता राय
    - रामध्यान राय
      - शम्भु राय
        - जगदीश राय
        - ब्रजवासी राय
      - हरिद्वार राय
      - बनारसी राय
        - ऋषीकेश राय
        - विनोद कुमार राय
        - अरविन्द कुमार राय
        - अखिलेश कुमार राय
      - रामचन्द्र शर्मा
        - पीयूष देव
        - पुष्कर देव
    - राम विलास राय
    - नवरंग राय (स्वामी सहजानन्द सरस्वती)
  - विशेश्वर राय
    - सुन्दर राय

"मनुष्य के संकल्प और दृढ़ निश्चय में बड़ी ताकत है
और उसके बल से वह जो चाहे कर सकता है"

—स्वामी सहजानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महियाल ब्राह्मण का उद्भव

—तारिणीशि झा

संस्कृत व्याकरण के अनुसार महियाल शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार होगी – महि वा मही दोनो शब्द पृथ्वी के वाचक हैं। महि=पृथ्वी याति संगच्छते इति -महियः-पृथ्वी से संगम करने वाला समुद्र अर्थात् महि सागर (संगम) तम् अलन्ति भूषयन्ति इति महियाल: अर्थात महिसागर – संगम को सुशोभित करने वाला (ब्राह्मण) महियाल ब्राह्मण कहलाया।

महिसागर संगम क्षेत्र गुजरात प्रदेश के बड़ौदा जिले में पड़ता है। कहते हैं कि ब्रह्मा जी ने समुद्रतट पर जो अश्वमेघ यज्ञ किया था, उसमें अन्य देवों के साथ पृथ्वी देवी भी सम्मिलित हुई थी और यज्ञ के बाद वह नदी का रूप धारण करके समुद्र में विलीन हो गई थी। तभी से वह महीसागर संगम के नाम से सुविख्यात है।

स्कन्दपुराण के कुमारिका खण्ड के अध्याय २, ३, ४, में महीसागर संगम एवम नारद द्वारा वहां बसाए गये उत्तम ब्राह्मणों की भव्य तथा रोचक कथा वर्णित है। जो इस प्रकार है –:

एक बार देवर्षि नारद के मन में यह संकल्प उठा कि मही सागर संगम के पवित्र तट पर उत्तम ब्राम्हणों को बसाया जाय वे उस पवित्र क्षेत्र को प्राप्त करने के लिए विचार करने लगे कि यह पृथ्वी सदा से राजाओं की मानी गई है। वर्तमान समय में इस पुण्य क्षेत्र का स्वामी राजा धर्मवर्मा है। यदि मैं धर्मवर्मा से इस क्षेत्र की याचना करूँ तो वह मेरे लिए कष्टप्रद बात होगी; क्योंकि दान लेने से ब्राह्मण दाता के पापकर्म का भागी बनता है। इसलिए मैं प्रतिग्रह से दूर रहता हूँ। तब कैसे यह स्थान प्राप्त हो इस उधेड़ बुन में नारद जी के कई दिन बीत गये।

एक दिन उस पवित्र संगम में स्नान करने के लिए मुनियों की टोली आ पहुँची उनको देखकर नारद जी प्रसन्न हुए और उनसे पूछ बैठे–"महात्मा लोगों का आगमन कहाँ से हो रहा है ? मुनियों ने उत्तर दिया– "मुनिराज। इस समय हम लोग सीधे सौराष्ट्र देश के राजा धर्मवर्मा की राज-सभा से आ रहे हैं। वह राजा तपस्वी एवं तत्त्वदर्शन का जिज्ञासु है। उसने दान का तत्व जानने की इच्छा से बहुत वर्षों तक तप किया। अनन्तर आकाशवाणी द्वारा उसे एक श्लोक की प्राप्ति हुई:–

द्विहेतु षडधिष्ठानं षडंगं च द्विपाकुयक्।
चतुष्प्रकार त्रिविधं त्रिनाशं दानमुच्यते ॥

इस श्लोक का वास्तविक अर्थ जानने के लिए राजा ने बहुत प्रयत्न किया, किन्तु यथार्थ अर्थ ज्ञात नहीं हो सका। तब उसने घोषणा करवायी कि जो कोई इसकी यथार्थ व्याख्या करके मुझे सन्तुष्ट कर देगा, उसे मनोवाञ्छित चीजें दूंगा। राजा की घोषणा सुनकर हजारों विद्वान् उसकी सभा में पहुँचे। उनमें हम लोग भी थे। परन्तु राजा को व्याख्या से सन्तुष्ट न कर सके। इसलिए आत्मशान्ति के लिए मही–सागर–संगम पर आये हैं।"

ब्राह्मणों की बात सुनकर नारद ने सोचा कि मैं तो पितरों के मुख से इसका यथार्थ अर्थ सुन चुका हूँ। इसलिए राजा को सन्तुष्ट करके क्यों न उससे यहाँ की भूमि प्राप्त कर लूँ। विद्या से अर्जित धनराशि शुक्ल वर्ण की श्रेणी में आती है। अतः मुझे इसमें पाप नहीं लगेगा। ऐसा सोचकर नारद वृद्ध ब्राह्मण का रूप बनाकर धर्मवर्मा की सभा में पहुँचे और राजा से बोले– "राजन्। अपने श्लोक का अर्थ सुनिये–

(१) दान के दो हेतु, (२) छह अधिष्ठान, (३) छह अंग, (४) दो फल, (५) चार प्रकार, (६) तीन श्रेणियां तथा (७) तीन नाशक कहे गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनमें श्रद्धा और शक्ति–ये दो दान के हेतु हैं। श्रद्धा के बिना जो कुछ भी किया जाता है वह निष्फल होता है। श्रद्धा पूर्वक सत्पात्र को थोड़ा भी धन देने से भगवान् श्री हरि शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। अब शक्ति के विषय में सुनिये। कुटुम्ब और सेवकों के पालन से जो धनराशि बच जाय, उसी का दान करने से धर्म का वास्तविक लाभ होता है। अपने स्वजनों एवं सेवकों की अवहेलना करके अपनी शक्ति के बाहर जो दान किया जाता है, वह आगे चलकर विष के समान हानिकारक होता है।

विद्वानों ने धर्म, अर्थ, काम, लज्जा, हर्ष एवं भय इन छह को दान का अधिष्ठान बतलाया है। इनमें "दान देना चाहिए" ऐसा विचारकर निःस्वार्थ भाव (धर्मबुद्धि) से जो दान सत्पात्र को दिया जाता है वह धर्मदान, फल की इच्छा रखकर जो दान दिया जाता है वह अर्थदान, स्त्री–समागम, मद्यपान, शिकार तथा द्यूतक्रीडा आदि भोगों की तृप्ति के लिए कुपात्र को जो दान दिया जाता है वह कामदान; भरी सभा में याचकों के माँगने पर लज्जावश विवशता से जो दान दिया जाता है वह लज्जा-दान; प्रियकार्य अथवा प्रिय समाचार सुनकर प्रसन्नता वश जो दान दिया जाता है वह हर्षदान; एवं निन्दा, अनर्थ, तथा हिंसा का निवारण करने के लिए विवश होकर जो दान दिया जाता है वह भयदान कहा गया है।

दाता, प्रतिग्रहीता (दान लेने वाला) भावशुद्धि, देश एवं काल को विद्वानों ने दान के छह अंग बतलाये हैं। अव्यसनी, सदाचारी अनिन्द्य तथा पञ्चमहायज्ञादि करने वाले दाता को उत्तम एवं निष्ठुर स्वभाव वाले, अश्रद्धालु, दुष्टात्मा, व्यसनी एवं मिथ्या शपथ खाने वाले दाता को निकृष्ट बतलाया गया है, कुलीन, विद्वान, सदाचारी, जितेन्द्रिय ब्राह्मण को दान का उत्तम पात्र (प्रतिग्रहीता) माना गया है। दाता के अन्तःकरण में याचकों के प्रति आदर तथा सत्कार की भावना तथा उनमें दोष–दृष्टि न रखना ये सब भाव दान में दाता के लिए शुद्धिकारक माने गये हैं। न्यायोपार्जित धनराशि को अर्थशुद्धि की कोटि में रखा गया है और उसके दान की विशेष महिमा गायी गई है। जिस जगह जिस समय जो वस्तु अत्यावश्यक और अति कठिनता से प्राप्त होने वाली होती है उसका दान करना देशकाल का विचार कहा गया है।

शास्त्रकारों ने दानरुपी वृक्ष के दो फल बतलाये हैं। उनमें से एक तो परलोक के लिए होता है और दूसरा इस लोक के लिए। जो दान धर्मबुद्धि से सत्पात्र को दिया जाता है उसका फल दाता स्वर्गलोक में भोगता है। किन्तु जो दान फल की आशा रखकर दिया जाता है उसका फल दाता इसी लोक में पाता है।

दान के ध्रुव, त्रिक, काम्य एवं नैमित्तिक–ये चार प्रकार शास्त्रों में बतलाये गये हैं। कूप बनवाना, पोखरा खुदवाना, बगीचा लगाना इत्यादि सर्वोपयोगी कृतियां जो चिरकाल तक रहती हैं, उनमें धन लगाना ध्रुव दान कहा गया है। अतिथि–सत्कार, गोग्रास तथा वैश्वदेव इत्यादिक दान जो उपनयन से लेकर मरणपर्यन्त निरन्तर किये जाते हैं, वे त्रिक (नित्य दान) कहे जाते हैं। इनको न करने से मनुष्य पाप का भागी बनता है। धन, पुत्र, स्त्री इत्यादिक मनोरथों की पूर्ति के लिए जो अपेक्षा करके किसी विशेष अवसर (अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, ग्रहण, पितृपक्ष, नवरात्र आदि) पर जो दान किया जाता है, उसे नैमित्तिक दान बतलाया गया है।

दान की तीन श्रेणियाँ–उत्तम, मध्यम, एवं कनिष्ठ हैं। गृह, मन्दिर, भूमि, विद्या, गौ, कूप, प्राण तथा सुवर्ण इन वस्तुओं के दान को उत्तम; अन्न, बगीचा, वस्त्र तथा घोड़ा आदि वाहनों को मध्यम एवं जूता, छाता, बर्तन, दही, मधु, आसन, दीपक, काष्ठ तथा पत्थर आदि वस्तुओं के दान को कनिष्ट माना गया है।

पश्चाताप, अपात्रता एवं अश्रद्धा–ये तीन दान के नाशक कहे गये हैं। दान देकर बाद में पछताने, अपात्र को देने तथा श्रद्धारहित होने से दान का फल नहीं मिलता है और वह व्यर्थ हो जाता है।"

पूर्वकथित श्लोक की ऐसी व्याख्या सुनकर राजा धर्म वर्मा का हृदय गद्‌गद हो उठा। उसने वृद्ध ब्राह्मण को प्रणाम करके परिचय पूछा। जब मुनि ने अपने को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारद बताया तब राजा उनके चरणों में गिर पड़ा और बोला—हे देवता ! हमारा राज्य आपका है। मैं स्त्री, पुत्र समेत आपका सेवक हूँ" इस पर नारद बोले—"राजन ! तुम धन्य हो। मुझे राज्य नहीं चाहिए, केवल उत्तम ब्राह्मणों को बसाने के लिए महीसागर संगम का क्षेत्र चाहिये"। राजा के "एवमस्तु" कहने पर नारद आकाश मार्ग से प्रस्थित हो गये। भारत वर्ष के सभी प्रदेशों के ब्राह्मणों की जाँच पड़ताल करते हुए कलाप नगर पहुँचे। वहाँ के सभी विप्रगण स्वभावत: ज्ञाननिष्ठ, सत्यवादी अतिथिप्रिय, एवं मातृ-पितृ-भक्त थे। नारद ने उनसे १२ प्रश्न करके उनकी परीक्षा ली। ब्राह्मणों ने प्रश्नों का उत्तर भलीभाँति दिया। उससे नारद बहुत सन्तुष्ट हुए। उन लोगों से महीसागर संगम के आस-पास की भूमि को स्वीकार कर वहाँ निवास करने की प्रार्थना की। किन्तु वे ब्राह्मण अप्रतिग्राही थे। इसलिए भूमिदान लेना स्वीकार नहीं किया। इस पर नारद ने अपना परिचय दिया तथा महीसागर संगमतीर्थ की महिमा बतायी। पश्चात् नारद के बहुत अनुनय—विनय करने पर वे विप्रगण महीसागरसंगम की भूमि में जाकर बस गये। वे ही ब्राह्मण "महियाल" कहलाये। उसी "महियाल के भेद, त्यागी चितपावन, भूमिहार आदि भी हैं। यह मत स्वामी नृसिंघानन्द सरस्वती जी महाराज का है।

६३, मीरागली, दारागंज,
इलाहाबाद—२११००६

कोई अन्याय केवल इसलिए मान्य नही हो सकता कि लोग उसे परंपरा से सहते आए हैं,

—प्रेमचंद: 'कायाकल्प

सहनशील होना अच्छी बात है, परन्तु अन्याय का विरोध करना उस से भी उत्तम है.

—जयशंकर प्रसाद

जो व्यक्ति अकृतज्ञ है, निरंतर दूसरों के दोष देखता रहता है,उसे अगर सारी धरती का राजा बना दिया जाए तो भी वह प्रसन्न नहीं होगा.

—'जातक कथा'

यह हो सकता है कि आदमी कई बार गिरे, लेकिन जब तक वह यह नहीं कहे कि किसी ने उसे धक्का दे दिया, तब तक वह असफल नहीं रहेगा.

—एल्मर जी लेटरमैन

दूसरे लोगों का अहंकार असह्य इस लिए होता है कि वह हमारे खुद के अहंकार को आहत करता है.

—ला रोशफूको

हम स्वभाव के मुताबिक सोचते हैं, कायदे के मुताबिक बोलते हैं, रिवाज के मुताबिक आचरण करते हैं.

— फ्रांसिस बेकन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविता संग्रह : हर मोड़ पर
कावयित्री : कु० नीरजा त्यागी
प्रकाशक : साहित्य रत्नालय
३७/५०, गिलिस बाजार,
कानपुर ।
मूल्य : दस रुपए
पृष्ठ संख्या : चौबीस

कावयित्री कु० नीरजा त्यागी

कविता में छन्द का टूटना अब पुरानी बात हो गयी है। लय का भी कोई सही पैमाना अब नहीं रह गया। भावना की गद्यात्मक अभिव्यक्ति को तोड़-तोड़ कर लिख देने से क्या वह कविता हो जाती है, यह एक सवाल है। जीवन की रागात्मकता को स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही स्तरों पर जिया जा सकता है। जब उसे हम स्थूल रूप में देखना, जानना और परखना चाहते हैं तब हमारे भावों की अभिव्यक्ति अतुकान्त-काव्य में होना स्वाभाविक-सा लगता है और जब उसके सूक्ष्म रूप को जीते हैं तो हमारे अवचेतन में एक संगीत निरन्तर गूँजता रहता है, जिसके परिणाम छन्द बद्ध कविता के रूप में सामने आते हैं।

'हर मोड़ पर' कु० नीरजा त्यागी का पहला कविता संग्रह है जिसमें अट्ठारह कवितायें संग्रहीत हैं। कवयित्री के भीतर एक जबरदस्त छटपटाहट है। 'नया सवेरा' और 'तुमने' शीर्षक कविताओं में जो कि देखी जा सकती है एक ओर शहर से दूर चलने का आवाहन है और दूसरी ओर एकाकार होने की तीव्र इच्छा। 'तुमने' कविता पढ़ते सयय 'ट्विन लाइट' का दर्शन कौंधता है और यह रचना की सार्थकता मानी जा सकती है।

इसे उम्र का कच्चापन ही कहा जाएगा कि 'प्यार मिला' शीर्षक कविता में शाश्वत सत्य को अभिव्यक्ति के स्तर पर "कु० नीरजा" ने एक वक्तव्य सा देकर उद्घाटित किया है। अनुभवों और उनकी परिपक्वता का उम्र से बड़े करीब का रिश्ता होता है। जिस्म को नकारना किसी मानसिक रुग्णता या पराजय का द्योतक है, क्योंकि संग्रह की अधिकांश कविताओं में एकाकार होने की कामना की गई है। ध्यान से देखने पर यह भी आभास मिलता है कि यही दो विन्दु ऐसे हैं जिनकी उपस्थिति से रचनाकार का भाव-जगत उद्वेलित हो रहा है।

संग्रह के अन्तिम आवरण पर कवि उद्भ्रान्त की सम्मति तो समझ में आती है पर छठें पृष्ठ पर उनकी चार पंक्तियाँ प्रकाशित करने का औचित्य क्या है, कहा नहीं जा सकता? शायद वे कविियित्री के प्रेरणा स्रोत हों।

कुल मिलाकर कु० नीरजा त्यागी का यह पहला कविता संग्रह पाठकों का ध्यान आकर्षित करेगा। संग्रह के आवरण और पाँचवें पृष्ठ पर जो रेखाचित्र छपे हैं वे स्वयं कावयित्री ने बनायें हैं जिसके लिए भी उन्हें अलग से सराहा जा सकता है।

"ब्रह्मर्षि-समाज" साहित्य-कला और संगीत की इस प्रतिभा सम्पन्न कलाकार को पाकर गौरवान्वित है और कामना करता है कि कु० नीरजा त्यागी अपनी प्रतिभा से मात्र समाज का ही नहीं अपितु देश का नाम ऊँचा करेंगी। उन्हें समाज की ओर से अनन्य आशीष।

— सम्पादक "ब्रह्मर्षि-सन्देश"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण

हरि शंकर शर्मा, सम्पादक "हिन्दी शिक्षक", बम्बई

महाँराष्ट्र में ब्राह्मणों की मुख्य तीन शाखायें हैं— देशस्थ, कोंकणस्थ और कराड़े ।

भारत के पश्चिम में अरब सागर के तट से कुछ हटकर किनारे–किनारे उत्तर से दक्षिण सह्याद्रि पर्वत-शृंखला चली गई है । इसके पूरब की ओर देश की मुख्य भूमि से जुड़े इलाके में रहने वाले 'देशस्थ' और पश्चिम की पतली पट्टी–जिसे 'कोंकण प्रदेश' कहा जाता है, 'कोंकणस्थ' कहलाते हैं । इसी तरह कराड़ के 'कराड़े' ब्राह्मण हैं ।

'चित्तपावन' ब्राह्मणों की मुख्य भूमि 'कोंकण' है । इस प्रदेश के विषय में पुराणों में कहा गया है कि पहले समुद्र सह्याद्रि तक फैला था । परन्तु भगवान परशुराम ने एक बार समुद्र से भूमि माँग कर अथवा छीन कर वहाँ १४ गोत्र के साठ ब्राह्मणों को बसाया और उस क्षेत्र का नाम अपनी माता 'कुमकुणा' –रेणुका, के नाम पर रखा, जो बाद में बदलकर 'कोंकण' हो गया । यहाँ रहने वाले ब्राह्मण 'कोंकणस्थ' कहे जाते हैं । कोंकणस्थ ब्राह्मणों में ही 'चित्तपावन' आते हैं । 'चित्तपावन' नाम के विषय में अनेक मान्यताएँ प्रचालित हैं ।

स्कन्द पुराण के सह्याद्रि खंड अध्याय २२ के अनुसार एक मान्यता यह है कि समुद्र से भूमि प्राप्त कर भगवान परशुराम जब वहाँ ब्राह्मणों को बसाने की इच्छा करते हुए, विचारमग्न समुद्र की ओर देख रहे थे, उसी समय अचानक वहाँ १४ व्यक्ति आ गए । भगवान के पूछने पर उन्होंने अपने को 'कैवर्त' बताया । परशुराम ने उन्हें पवित्र कर शुभ लक्षणों से युक्त गौरवर्ण ब्राह्मण बना दिया । उनको चिता में प्रवेश करा, पुनर्जन्म दे, पवित्र किया, इसलिए वे 'चित्तपावन' –अर्थात चिता द्वारा पवित्र कहलाये ।

माधव कृत 'शत प्रश्नावली' के अनुसार सह्याद्रि के पश्चिम में १४ वेदज्ञ ब्राह्मणों को बर्बर म्लेच्छ सागर तट पर उठा ले गए । म्लेच्छों की संगति से वे ब्राह्मण-कर्म भ्रष्ट हो गए । बाद में वे सब भगवान परशुराम की शरण में आए । परशुराम ने इनकी शुद्धि की और इनके चित्त को पवित्र किया । इसलिए इनका नाम 'चित्तपावन' (चित्त+पावन) पड़ा ।

प्रसिद्ध इतिहासकार श्री राम चन्द्र नरहरि बापट के अनुसार कोंकण के निवासी क्षिति (भूमि) को पावक (अग्नि) से जलाकर (पवित्र कर) कृषि योग्य बनाते हैं । यह कार्य कोंकण को आबाद करने वाले ब्राह्मणों ने परशुराम के समय से ही आरंभ किया और अब तक करते आ रहे हैं । इसीलिए ये 'क्षितिपावन'–चिति पावन, चित्तपावन कहलाये । अनुमान किया जाता है कि अत्यंत प्राचीनकाल में सर्व प्रथम जीवन-निर्वाह के लिए ब्राह्मणों ने ही कृषिकार्य आरंभ किया । आज भी ब्राह्मणों में पंजाब के 'महियाल' और उत्तर प्रदेश एवं बिहार के 'भूमिहार' इसी प्रकार के नाम हैं, जिनका संबन्ध 'भूमि' या कृषि से है ।

एक दूसरे विद्वान डॉ० भंडारकर के अनुसार चित्तपावन ब्राह्मणों के मूल पुरुष टर्की से भारत आए थे । इनके इस अनुमान का आधार चित्तपावनों में से बहुतों की आँखें यहूदियों से मिलती-जुलती हैं । पर सभी लोगों की वैसी नहीं हैं । इस अनुमान में यदि कुछ हद तक सच्चाई हो, तो संभव है कि प्राचीनकाल में टर्की के कुछ लोग समुद्री मार्ग से यहाँ आने पर बस गए हों । बल–बुद्धि में ब्राह्मणों–सा होने से उन्हीं में विलीन हो चुके हों । इतिहास साक्षी है कि दो हजार वर्ष पहले तक भारत में बाहर से आई हुई अनेक जातियाँ यहाँ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोगों में विलीन होती गई हैं। पर इससे यह कहना गलत होगा कि सारे चित्तपावनों के पूर्वज बाहर से आये होंगे। इस अनुमान का संबन्ध स्कंद पुराण वाली घटना से जोड़ा जा सकता है।

चित्तपावन ब्राह्मणों के आचार-विचार, मान्यताओं आदि से उनका उत्तर भारत निवासी ब्राह्मण होना ही सिद्ध होता है। सन् १९१६ में एक बार वाराणसी की एक सभा में भाषण करते हुये स्वयं लोकमान्य तिलक ने स्वीकार किया था कि हमारे पूर्वज आर्यावर्त से ही दक्षिण में गए थे। हम उसी ब्राह्मण वर्ग के हैं जिसमें काशी नरेश हैं।

चित्तपावन ब्राह्मणों में से बहुत बड़ी संख्या में प्रतिभाशाली विद्वान, महान योद्धा, क्रांतिकारी ओर कुशल प्रशासक हो चुके हैं। भारत के राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। इनमें से अनेक ऐसे महापुरुष हो चुके हैं, जिनका नाम भारत के इतिहास में अमर है और आगे रहेगा। पेशवा, झाँसी की रानी, नाना फड़नवीस, वासुदेव बलवंत फड़के, लोकमान्य तिलक, वीर सावरकर, चापेकर बन्धु, गोखले, रानाडे, आगरकर, बाबूराव विष्णु पराड़कर आदि इसी परंपरा में हो चुके हैं।

मध्यकाल में चित्तपावन ब्राह्मणों में से बहुत से लोग उत्तर प्रदेश के झाँसी, कानपुर, वाराणसी और बिहार के अनेक स्थानों पर जाकर बस गए थे। इनमें बिहार के लोग काफी पहले आये थे। वे वहाँ के 'भूमिहार ब्राह्मणों में मिल गए हैं। उन्हें चित्तपवनिया भूमिहार या 'दुमका' (हजारी बाग जिला) कहा जाता है।

महाराजा बिल्डिंग, १२५ गिरगांव रोड,
मुंबई–४०००४

With Best Compliments From :

M/s GENERAL TRADERS

GRAM : KHAJURAHO Ph. Office: 63321
TELEX-325-349 TEXGIN. 66815
Resi. : 240241

Regional Sales Organiser

SAURASHTRA CHEMICALS

PORBANDAR

Shop No. 4, Sinha Market
49/27, GENERAL GANJ-KANPUR.

With Best Compliments From :

TOURIST

Transport Service

(Fleet Owners & Contractors)

118/570, KAUSHALPURI-KANPUR

Head Office : 219659
Branch : 244221
Resi. : 216214

Repr :
DHARAMVIR SINGH CHHATWAL

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण : एक उत्कृष्ट परम्परा

(तथा उनका मूल स्थान मदारपुर)

—कुलदीप नारायण "झड़प"

यों तो जीवन के सम्बन्ध में सभी जीव और मनुष्यता के नाते सभी मनुष्य समान हैं, परन्तु संस्कृति, सदाचार, व्यवसाय तथा परम्परा भेद के कारण मनुष्य जाति के भिन्न-भिन्न वर्ग बन गये हैं। भारत में इन वर्गों को स्थाई रूप प्राप्त होने के कारण जाति कहते हैं। वर्ण-व्यवस्था गंगा की धारा के समान तरल और प्रवाह शील थी, जबकि जाति-व्यवस्था तालाब की भाँति घिरी तथा स्थिर है, इसलिये जाति-व्यवस्था भले ही त्रुटिपूर्ण और विघटनात्मक हो परन्तु इससे हमें उन मौलिक परम्पराओं का बोध होता है, जो अपने किसी विशेष गुण-कर्म, संस्कार और सदाचार के कारण गठित हुई थी। भूमिहार ब्राह्मण वर्ग एक ऐसी ही परम्परा है।

अपने गुण-धर्म, सदाचार-संस्कार और श्रेष्ठ परम्परा के कारण ब्राह्मण जाति सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, यथा—

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धि जीविनः।
बुद्धिवत्सनराः श्रेष्ठा, नरेष्वपि द्विजातयः॥

जिन कारणों से इतर जातियों में ब्राह्मणों को महत्व प्राप्त है, उन्हीं कारणों से ब्राह्मणों में भूमिहार ब्राह्मणों को महत्व प्राप्त है। वे उन कुलों की परम्परा में हैं, जिनके पूर्वज विद्या, सदाचार, सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रोत्थान की भावना, लोक हितकरी कार्य तथा अपनी श्रेष्ठ कुलीन परम्परा के लिये प्रसिद्ध थे एवं अपनी इन्हीं विशिष्टताओं के कारण राजा-प्रजा द्वारा सम्मानित समाज के अग्रणी और व्यवस्थापक थे। राजाओं ने आदर पूर्वक आमंत्रित कर उन्हें अग्रहार देने में अपने को धन्य माना।[1] अग्रहार दान नहीं वरेण्यता का सम्मान था। इसी से उसे श्रेष्ठ अयाचक ब्राह्मण भी ग्रहण करते थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश और विहार में जो ताम्रपत्र मिले हैं, उनमें शायद ही कोई ऐसा हो, जिस के पाने वाले भूमिहार ब्राह्मणों के पूर्वज न हों।[2]

भूमिहार ब्राह्मणों का संगठन निम्नांकित स्रोतों से हुआ है:

१. ज्ञान मार्गी निवृत्त या यायावर ब्राह्मण—ये त्रिकर्मा थे और दान-दक्षिणा से सर्वथा दूर रहते थे। निकृष्ट वृत्ति को त्याग करने से इन्हें "निवृत्त" और श्रेष्ठ वृत्ति ग्रहण करने के कारण "यायावर" कहा जाता था।[3]

२. अग्रहार भोगी ब्राह्मण—अग्रहार उस भूमि को कहते थे, जो अनेक पीढ़ियों से विद्वता तथा कुलीनता में प्रसिद्ध ब्राह्मणों को राज्य द्वारा सम्मानार्थ अर्पित की जाती थी।[4]

३. गुरुकुलों के कुलपति, आचार्य, धर्माचार्य आदि—ये लोग प्रायः भूमिपति और अप्रतिग्रही होते थे तथा शिक्षा संस्थानों की व्यवस्था करने के लिये भूमि ले लेते थे।

---

१. भूमिहार, ब्राह्मणों की वह शाखा है जो, किसी समय अपने विद्याबल के कारण राजवंशों से भूमि का अग्रहार प्राप्त कर चुकी थी और बाद में भूमिपति होने का सौभाग्य भोगती रही। ×× ये कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक शाखाही माने जाते थे। आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक पत्र-सैनिक ब्राह्मण परिशिष्ट, पृ० २२२।

२. विकास की एक धारा भाग २ अं० ३.

३. म०शा० १९९/३९-४०, मनु० १२/८८, बौधायन

४. अपि पाप कृतां राज्ञां प्रति गृह्णन्ति साधवः। पृथिवी नान्यदिच्छन्ति पावनं जननी समा॥महा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. ब्राह्मण राजवंश—बौद्धकाल के पश्चात् भारत में ब्राह्मण राज्य का उदय हुआ। शुंग, काण्व, सात वाहन, वाकाटक, पल्लव, कादम्ब, गुप्त, पारिव्राजक, शाही, सेन आदि राजवंशों के लोग ब्राह्मण थे। भूमिहार ब्राह्मणों में आज भी चनकिया (चाणक्य कुल) सुंगनिया, कन्वायन आदि[1] उन परंपराओं के जीते-जागते अवशेष हैं। भगवान परशुराम द्वारा काश्यपादि ब्राह्मणों को भूमि देना प्रसिद्ध ही है[2] जातक ग्रंथों और महाभारत से भी ज्ञात होता है कि ब्राह्मण राजा होते थे। अत्रि-स्मृति तथा स्कन्द-पुराण में ब्राह्मण का एक भेद राजा बताया गया है।[3]

५. उच्च-पदाधिकारी ब्राह्मण-राज्य के मंत्री, सेनापति, धर्माध्यक्ष, न्यायाधीश आदि उच्च पदों पर कार्यरत ब्राह्मणों को जागीर दी जाती थी। ये लोग प्रतिग्रही न थे।

भूमिहार ब्रह्मणों का संगठन प्रायः इन्हीं पाँच स्रोतो से हुआ है। वे परम्परा से ब्रह्म तेज और क्षात्र शक्ति से समन्वित होकर भारतीय संस्कृति के पोषक तथा राष्ट्र के प्रहरी रहे हैं,[4] जिसके विषय में भगवान् परशुराम ने कहा था—

> अग्रतः चतुरोवेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।
> इदं ब्रांह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ॥

ब्रह्म तेज और क्षात्र शक्ति दोनों के समन्वय और संगठन की उपयोगिता वेद शास्त्र दोनों में बताई गई है। जिस प्रकार वायु और अग्नि का सम्मिलन सामर्थ्य का बढ़ाने वाला है, उसी प्रकार ब्राह्म-क्षात्र तेज की एकता तेज बल का संवाहक है। न केवल ब्राह्म शक्ति सुख समृद्धि और विकास का कारण बनती है, न ही केवल क्षात्रशक्ति। दोनों का समन्वय और सन्तुलन जहां होता है वहीं पुण्यशील देश उन्नति करता तथा आगे बढ़ता है।

> "ना ब्रह्म क्षत्रमिध्नोति ना क्षत्रं वर्द्धते।
> ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्द्धते ॥मनु. ९/१२२
> यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यं चौ चरतः सह।
> तं लोक पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना ॥यजु २०/२५

महाभारत में कहा गया है कि सामाजिक अनुशासन और धर्म की रक्षा के लिये शस्त्र धारण करने से ब्राह्मण तीनों काल में दूषित नहीं होता। शास्त्र और शस्त्र धारण करना उसका धर्म है क्योंकि क्षत्री उसी से उत्पन्न हुआ है।

> ब्राह्मणः त्रिषु कालेषु शस्त्रं गृहणन्न दुष्यति।
> आत्मत्राणे, वर्ण दोषे दुर्दम्य नियमेषु च ॥ म. शा. ७८/३१

> ब्राह्मणस्यापि चेद्राजन् क्षत्र धर्मेण वर्ततः।
> प्रशस्तं जीवितं लोके क्षत्रं हि ब्रह्म संभवम् ॥ वही २२/६

वायु-पुराण में कहा गया है कि पूर्वकाल में भी ब्राह्मण राजा हो चुके हैं, महाभारत से भी इसकी पुष्टि होती है। ऋषि लोग अपने क्षेत्र के भूम्याधिकारी होते थे। बुद्ध के सम सामयिक बड़े बड़े भूमिपति ब्राह्मणों का पता चलता है, जो वेद-शास्त्र पारंगत परम विद्वान और दानशील थे।[5] भूमिहार ब्राह्मणों की परम्परा ऐसे ही ब्रह्म-क्षत्रिय शक्ति समन्वित तेजस्वी ब्राह्मणों की है। ९-१०वीं शताब्दी के अरब यात्री इब्न खुर्दब और बवापुरी ने भारत में सात जातियों का होना लिखा है। इनमें सब कुत्रियाँ (सर्व-कर्तृ अर्थात् सर्व समर्थ) का स्थान पहिला था, जो सबके (पुराहितादि ब्राह्मणों के भी) पूज्य और प्रणम्य थे। उन्हीं में राजा होते थे। इम्पीरियल गजेटियर के अनुसार ११-१२वीं शताब्दियाँ नवीन सभ्यता का सत्ययुग थीं। ब्राह्मण जन्म से ही देवता माने जाते थे। वे लोग कभी-कभी राज्य के सबसे ऊँचे पदों पर भी रहते थे। हीन दर्जे के ब्राह्मण ही पुरो-

१. इन वंश परम्पराओं के ब्राह्मण पटना-गया मंडल में पालीगंज के आसपास हैं।
२. म० द्रो० ७०/२१, स्कं. नं ६९/९
३. अत्रि. ३७५, वासेह सुत्त-२४
४. मनु-१२/१००
५. कास्सि भारद्वाज सुत्त आदि जातक ग्रंथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हित और पुजारी हुआ करते थे[१]। सर रिचर्ड टेम्पुल बार्ट ने सन् १८८० ई० के भारत का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रतिष्ठा की दृष्टि से वे ही ब्राह्मण श्रेष्ठ माने जाते हैं जो जमींदारी आदि करते हैं और अपने पुरोहित भाइयों से पृथक हैं।[२]

महाभारत में पुरोहित को क्षत्रिय के समान बताया गया है[३] और ब्राह्मण को राजा तथा पुरोहित पर नियंत्रण रखने के लिए कहा गया है जिससे स्पष्ट है कि अयाचक ब्राह्मणों की शक्ति राजा और पुरोहित से परे थी और उनके ऊपर ही राष्ट्र तथा समाज की रक्षा और अनुशासन का दायित्व था।

भूमिहार ब्राह्मणों की वंशावलियों, इतिहास और अनेक अभिलेखों के आधार पर उनकी वंशगत कुलीनता तथा महत्व प्रकट है। जहाँ उनका दूसरे वर्ग के ब्राह्मणों के साथ विवाह सम्बन्ध होता है, वहाँ अन्य वर्ग के ब्राह्मण उन्हें प्रायः परम्परा से अपनी कन्या ही देते आ रहे हैं।[४] इस प्रचलित व्यवहार से भी भूमिहार ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन होता है। मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्र, महाभारत, रामायण और भागवतादि पुराणों में पुरोहिती तथा दान दक्षिणा लेने को छोटा काम कहा गया है[५] तथा त्रिकर्मा ब्राह्मण को श्रेष्ठ बताया गया है।[६]

इतिहासकारों और नृतत्व शास्त्रियों के कथनानुसार भूमिहार ब्राह्मणों की वंश परम्परा विशुद्ध आर्यों की है।[७] उन्होंने यत्न पूर्वक अपने को रक्त मिश्रण से बचाया है।[८] इनकी स्थिति ही ऐसी रही है, जिसके कारण इनकी वंश-परम्परा संकरण से मुक्त और प्रायः विशुद्ध रही। यह दूसरी बात है कि इनके महत्व से द्वेष रखने वाले लोगों ने इन पर अपना ही दोष थोपने और प्रतिष्ठा गिराने की कम कोशिश नहीं की। पुरोहित तथा याचक वर्ग प्रायः आत्महीनता की भावना से ग्रस्त तथा अनुदार होता है।[९]

अयाचक होने के कारण भूमिहार ब्राह्मणों में स्वभावतः यह दोष नहीं आ पाया। परम्परया अधिकार और स्वामित्व की भावना से युक्त होने के कारण इनमें प्रायः स्पष्टवादिता, स्वाभिमान, विनम्रता अनुशासनप्रियता ओर उदारता का भाव पाया जाता है। विद्वानों ने इनकी व्यवहार कुशलता की प्रशंसा की है।[१०] जिस जाति में बाण, मयूर राज शेखर, कृष्ण मिश्र जैसे साहित्यकार, स्वामी नरहर्यानन्द, नन्ददास, सेनापति जैसे भक्ति कवि, स्वामी रामानन्द, तुलसी, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, दिनकर जैसे युग पुरुष, तथा राजा बलवन्त सिंह और महराजा फतेहशाही जैसे वीर-पुंगव क्रान्तिकारी उत्पन्न हुए हों, उसके लिये इससे बढ़कर ऊँचाई का मानदण्ड ही क्या हो सकता है ? कुछ लोग अनभिज्ञता वश इनके नाम के साथ राय, सिंह, शाही ठाकुर, प्रधान आदि उपाधियों को देखकर चौंकते हैं, किन्तु ये उपाधियाँ उनके महत्व की सूचक हैं। जो उनके विशिष्ट गुणों के कारण मिली थीं। ये उपाधियाँ उत्तर

---

१. इम्पीरियल गजेटियर भाग-२ पृ० २१५
२. ब्र० वं० वि० पृष्ठ १११
३. म० शा० ७६/७
४. अयाचक ब्राह्मण, त्रिकालजयी पृ० ५१-५२
चतुर्मुख (चैत्र सं० २०-३१ वि०) पृ० ७५-८२
पं० गोरे लाल तिवारी-जुझौतिया ब्राह्मणों के इतिहास की रूपरेखा भाग-१ पृ० ४६-२१०,
५. प्रतिग्रह मन्यमास्तपस्तेजो यशोनुदम्-भागवत
६. वा. स. १/६/१३ त्रिकर्मस्तिका स्तैव सात्विकः ब्राह्मणाँ नृप-देवी भागवत
७. भारतवर्षीय जनगणना १८९१ ई० पृ० १९१
इलियट-सप्लीमेन्टल ग्लासरी भाग १ पृ० २९
डा० रामप्रसाद चंद्रा-इंडो आर्यन रेसेस पृ० १६५.
८. रक्तमिश्रण बचाने में यही एक जाति है जिसने संयम पूर्वक उसे बचाया है- राहुल सांकृत्यायन
९. स्वामी विवेकानन्द-शिक्षा, संस्कृति और समाज पृ० १०८, १०९
१०. प्रो० राजनाथ पाण्डेय-त्रिकाल जयी पृ० ५०
ठा० सूर्यनरायण सिंह- बलिया जिले का इतिहास पृ० २७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के प्रायः सभी उच्च स्तरीय ब्राह्मण परम्पराओं में ग्राह्य हैं।[1]

स्व० पंडित अयोध्यादास ने लिखा है–"अस्तु इसी प्रकार श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण, व्यवस्था पत्रों, प्राचीन वंशावलियों, ब्राह्मणादि के लेखों, गवर्नमेन्ट के आज्ञापत्रों, आईने अकबरी आदि ग्रन्थों, मैथिल, सनाढ्य, कान्य कुब्ज, सरयूपारीण, सारस्वत और गौड़ ब्राह्मणों की सम्मति तथा उन सभी ब्राह्मणों के नमस्कार, प्रणाम, विवाह सम्बन्ध और खान पान आदि से सिद्ध हो गया कि सनातन काल से भूमिहार ब्राह्मण अन्य ब्राह्मणों से श्रेष्ठ तथा सर्वमान्य ब्राह्मण हैं, एवं सच्चरित्र भी हैं।[2]

श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती का भी ऐसा ही मत है, यथा––"सृष्टिकाल से ही जो याचक और अयाचक दो प्रकार के ब्राह्मण हैं, उनमें से अचायक ही श्रेष्ण तथा सर्वमान्य हैं। ये भूमिहार, पश्चिमा, त्यागी, जमींदार, मोहियाल आदि उसी अयाचक दल के हैं।[3]

प्रायः सभी कान्यकुब्ज वंशावलियों में मदारपुर के अधिपति भूमिहार ब्राह्मण बताये गये हैं। ये ब्राह्मण अपने आचार व्यवहार और विद्या विवेक के कारण विशेष प्रसिद्ध तथा बहु प्रतिष्ठित थे। इसी से वे समाज में भूमिहार नाम से सम्बोधित किये गये। गुणकर्म और परम्परानुसार इनके सजातीय त्यागी (लोकहित के लिये त्याग करने वाले परम दानी) महियाल (अपने गुणों और कर्मों से पृथ्वी की शोभा बढ़ाने वाला भूमि भूषण) चित्तपावन (पवित्र हृदय अथवा भूतल को पवित्र बनाने वाला), पोकरने (पवित्रता कारक) आदि नाम भी इसी प्रकार गुण–बोधक है।[4]

भूमिहार का शब्दार्थ

विद्वानों ने भूमिहार शब्द की कई व्युत्पत्तियाँ की हैं, जैसे:–

१. भूमि+हार=वाला। भूमिपति, जमींदार, राजा–रईस। दक्षिणात्य ब्राह्मणों में अय्यर, आयंगर और नम्बूदरी इसी अर्थ के द्योतक हैं।

२. भूमिसुर→भूमिहुर→भूमिहर→भूमिहार अर्थात् पृथ्वी का देवता।

३. भूमिधर, भूमिहर, भूमिहार अर्थात भूमि को धारण करने वाला, भूमि रक्षक, समाज रक्षक, धर्मधुरंधर, महान्।

४. भूमि हर अर्थात् निर्बल, अयोग्य, अहंकारी और अत्याचारी राजाओं से भूम्याधिकार छीनने वाला समाज रक्षक ब्राह्मण जैसा कि परशुराम, वामन, द्रोण पुष्यमित्र और सात वाहन नरेशों ने अपने विषय में स्पष्ट किया है।

५. भूमि+हार=अग्रहार=स्वीकार करने वाला। वेद शास्त्र के गहन अध्ययन हेतु राज्य द्वारा ससम्मान सर्मपित भूमि (अग्रहार) का स्वीकार करने वाला श्रेष्ठ ब्राह्मण। गुरुकुलों के कुलपतियों तथा मंत्री, सेनापति आदि पदाधिकारियों को भी भूमि ही दी जाती थी।

६. भूमि+हार=माला, शोभा[5]। अपने महत्वपूर्ण गुणों तथा लोक हित कारक कामों से भूमण्डल को सुशोभित करने वाला, समाज के हृदय स्थल पर सदा विराजमान, सर्व प्रिय ब्राह्मण।

७. भू=नाना+मि=सन्देह+हार हरण करने वाला अर्थात नाना प्रकार के सन्देहों का निवारण करने वाला परम विवेकी ब्राह्मण।[6]

---

१. विकास की एक धारा भाग २ अ० ३

२. विप्रोत्तम परिचय पृ० १२६

३. ब्र० वं० विस्तर पृ० ५०–५१

४. त्यागी, महियाल, चितपावन और पोकरने की व्युत्पत्ति क्रमशः प्रतिग्रह त्यागी महिपाल राजा, क्षिति पावन तथा पोकर वासी से भी की गई है। पोकरन जोधपुर और जैसलमेर के मध्य एक स्थानहै।

५. पं० अयोध्यादास–विप्रोत्तम परिचय

६. स्वामी विमलानन्द सरस्वती-ब्राह्मण कौन ? परिशिष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रो० राजनाथ पाण्डेय के कथनानुसार भूमिहार शब्द भूमिसुर, महिसुर, महिदेव, भूदेव आदि का पर्याय वाची है।[1] श्री गौरीशंकर गुप्त के मत से गो० तुलसीदास ने महिसुर, भूसुर, भूदेव आदि का प्रयोग भूमिहार ब्राह्मणों के लिये किया है।

भूमिहार ब्राह्मणों का मूलस्थान—मदारपुर

मदारपुर (मन्दारपुर) को आजकल मकनपुर कहते हैं। इसके पास एक गांव मदारपुर नाम को आज भी जीवित रखे हुए है। प्राचीन काल में यह स्थान एक गांव न होकर एक क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित था। इसे सत्ययुग में धर्मारण्य, त्रेता में सत्यमन्दिर, द्वापर में वेद भवन तथा कलियुग में मोहेरक (मोहार्क) पुर के नाम से पुकारा गया।[2] अस्तु इन नामों से उक्त क्षेत्र का महत्व प्रकट है। किन्तु काल गति से आज न उसके वे नाम रह गये और न वह महत्व। आज वह युगों की स्मृति बटोरे हुए अनुसन्धान का विषय बना हुआ है। यह पवित्र स्थान ईसन नदी के तट पर कानपुर फर्रुखाबाद की सीमा पर बिल्हौर स्टेशन के निकट विद्यमान है। बसन्त पंचमी के अवसर पर-यहाँ भारत-प्रसिद्ध मेला लगता है।[3]

धर्मारण्य

पुराणों में धर्मारण्य नाम के तीन क्षेत्रों का वर्णन है-एक गया के निकट मगध में, दूसरा पुष्कर के निकट राजस्थान में और तीसरा वह जो इस निबन्ध का वर्ण्य है। स्कन्दपुराण के ब्रह्मखण्डान्तर्गत धर्मारण्य—महात्म्य के अनुसार सत्ययुग में वहाँ धर्मराज ने तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर त्रिदेव प्रकट हुए और कहा-"वर मांगो" धर्मराज ने कहा "हेदेव गण, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो इस क्षेत्र में संसार के सर्वोत्तम ब्राह्मणों को प्रतिष्ठित कर इसका नाम धर्मारण्य प्रसिद्ध कीजिये।[4] त्रिदेवों ने कहा "ऐसा ही होगा।"

तत्पश्चात भगवान विष्णु ने २४ गोत्र के ब्राह्मणों को चुन कर वहाँ स्थापित किया एवं उस क्षेत्र का नाम धर्मारण्य प्रसिद्ध किया।

धर्मारण्य की प्रशंसा करते हुए व्यास जी राजा युधिष्ठिर से कहते हैं- -"हे नृप श्रेष्ठ! धर्मारण्य पृथ्वी रूपी सुन्दरी के ललाट का तिलक है। वह वाग्देवी सरस्वती की रम्य क्रीड़ा स्थली है। ब्रह्मा-विष्णु-शिव इन्द्रादि देवताओं, लोकपालों, दिग्पालों, मातृशक्तियों, गन्धर्व, अप्सराओं आदि से सदा सेवित मुनिगणों की भूमि है। जहाँ सदेव यज्ञकर्म होते रहते हैं। वहाँ जिसका भी शरीर छूटता है, उसे विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। जो वहाँ पितरों का श्राद्ध करता है, उसकी २१ पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। वहाँ सब जीव निर्वैर और शान्त भाव से रहते हैं। वह संसार सागर से पार उतारने वाली शिवभूमि है। वहाँ की यात्रा हेतु एक पग रखने से एक अश्वमेघ का फल मिलता है। वहाँ के १८ सहस्त्र तपोनिष्ठ ब्राह्मण शाप तथा अनुग्रह दोनों में समर्थ है। भूतल में श्रेष्ठ धर्मारण्य की प्रशंशा स्वर्ग के देवता भी करते हैं।[5]

लंका विजय के पश्चात अयोध्या लौटने पर श्री रामचन्द्र जी ने महर्षि वसिष्ठ से पूछा कि "हे गुरू देव; मैं कहाँ यज्ञ करूँ।" तब वशिष्ठ जी ने कहा "हे राम! धर्मारण्य-निवासी काश्यपादि गोत्र के ब्राह्मण बड़े सदाचारी शास्त्र परायण, ब्रह्मज्ञानी और पवित्र वंश के हैं। उनके दर्शनमात्र से पाप दूर हो जाता है। उनकी प्रशंसा देवता भी करते हैं। वे सदा प्रतिष्ठा प्राप्त, सभी प्राणियों की भलाई में संलग्न, श्रेष्ठ यज्ञों का

१. प्रो० राजनाथ पाण्डेय-त्रिकालजयी

२. धर्मारण्यं कृत युगे, त्रेतायां सत्यमन्दिरम्।
द्वापरे वेदभवनं, कलौमोहेरकं पुरम् ॥स्कं. ब्र. घ. ४०/२७

३. इसके अतिरिक्त अन्य मेले भी लगाते हैं।

४. यदि तुष्टोऽसि देवेश, वांछितं कुरुषे यदि।
धर्मारिण्ये महापुण्ये ऋषीणाश्रमान्कुरू॥ स्कं. ब्र. घ. ४/१६
धर्मारण्येमिद ख्यातं सदा भूयाद्युगेन्तुगे ॥वही ४/६२

५. आचार्य श्रीराम शर्मा—स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुष्ठान करने वाले तथा धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करने वाले ब्राह्मण हैं। अतः तुम वहीं चलकर यज्ञ करो।[१]

महर्षि वसिष्ठ के आदेशानुसार श्री रामचन्द्र जी जब धर्मारण्य में पहुँचे तो ज्ञात हुआ कि वहाँ के ब्राह्मण लोहासुर के अत्याचार से उद्ध्वस्त होकर इधर-उधर चले गये हैं। श्री रामचन्द्र जी ने उनका पता लगाकर बड़े सम्मान के साथ उन्हें बुलवाया और पुनः धर्मारण्य में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने ब्राह्मणों की सेवा के लिये ३६ सहस्त्र वैश्य उनसे चौगुने शूद्र तथा कुछ क्षत्रियों की स्थापना की।[२] इसके बाद श्री राम चन्द्र जी ने ब्राह्मणों से निवेदन किया कि,

"हे विप्रश्रेष्ठ ! अपात्र को दिया गया दान कभी सुखकारी नहीं होता, सुपात्र को देना चाहिये। अस्तु मैं आप लोगों को कुछ देना चाहता हूँ आप लोग आज्ञा दें।"

श्री राम चन्द्र जी की बात सुनकर ब्राह्मणों ने परस्पर विचार-विमर्श किया और तदनुसार श्री रामचन्द्र जी से बोले—"हे राम, हमलोग शिलोञ्छजीवी है। सदा संतुष्ट रहकर धर्म कार्य में लगे रहते हैं। हमें दान से कोई प्रयोजन नहीं। राजा का दान घोर और भयंकर होता है, हम लोग त्रिवेदों के बसाये हुये हैं, इसलिए बिना उनकी आज्ञा के प्रतिग्रह नहीं ले सकते।"

उनकी बात सुनकर रामचन्द्र जी ने त्रिवेदों का स्मरण किया। त्रिदेव प्रकट हुए। उनके कहने पर ब्राह्मणों ने दान लेना स्वीकार कर लिया। यज्ञ सम्पन्न होने पर श्री रामचन्द्र जी ने उन्हें दस-दस दुधारू गायें दीं। बहुत सा धन तथा १४४ ग्राम भी दिये।[३] श्री राम चन्द्र जी फिर वहाँ दूसरी बार गये और सीता जी के कहने पर ५५ गाँवों का अग्रहार दिया। ब्राह्मण लोग एक समिति का संगठन कर उन गाँवों की व्यवस्था करने लगे।

यज्ञ पूरा होने पर श्री रामचन्द्र जी ने धर्मारण्य के पूर्वीय भाग में धर्मेश्वर दक्षिण दिशा में गणेश, पश्चिम में सूर्य, उत्तर स्वयंभू (ब्रह्मा) और मध्य में सतमंजिला मन्दिर निर्मित कराकर उसमें अम्बिका देवी की स्थापना की।[४] यहीं पर उन्होंने ब्राह्मणों की रक्षा के लिए हनुमान जी की स्थापना की और कहा कि हे हनुमान ! भविष्य में तुम्हारी पूजा होगी।

श्री रामचन्द्रजी द्वारा स्थापित सभी स्थान कानपुर-फर्रुखाबाद की सीमा पर बिल्हौर स्टेशन के पास है। मध्यवर्ती स्थान जहाँ अम्बिका देवी की स्थापना की गई थी, रौगाँव (राजग्राम) के निकट अइमा (आदिमाता) और देविनपुरा के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ आज भी देवी तथा श्री हनुमान जी के पुराने मन्दिर हैं। इस स्थान से ४-५ किलोमीटर के अन्तर पर पूर्व दिशा में मकनपुर है, जहाँ सूफी संत बदीउद्दीन की मजार, विशाल औरंगजेबी मसजिद एवं अन्य अनेक इमारतें खड़ी हैं, जो मुसलमानों के अधिकार में है। इन स्थानों के मध्य में एक स्थान "धम्माल" के नाम से प्रसिद्ध हैं। स्पष्ट रूप से "धम्माल" धर्मालय धर्मेश्वर का अपभ्रंश है। इसी स्थान पर धर्मराज ने तपस्या की थी। आज भी यहाँ बहुत से मलंग (मुसलमान साधु) विभिन्न अवसरों पर एकत्र होते हैं। रौगाँव से दक्षिण ६ किलोमीटर पर गंगुआपुर (गणगौरपुर) श्री रामचन्द्र जी द्वारा स्थापित "गणेश गौरी" की याद दिला रहा है। रौ गाँव से सात किलो मीटर पश्चिम ओर सुरसी (सूर्यसर) और बकरौली (बकुलार्क) नाम के स्थान हैं। एवं उत्तर ओर ७ किलो मीटर पर श्री राम द्वारा स्थापित स्वयंभू नामक स्थान

१. स्कं ब्र. ध. २६/१८-१६

२. तेषां सुश्रूषार्थाय वैश्यान्रामोन्यवेदयत्
षट् त्रिंशश्च सहस्त्राणि शूद्रास्तेभ्यश्चतुर्गुणान् ॥
वही ३६/४५

३. एकैकशो दशदश ददौ धेनुः पयस्विनी ।.:
चत्वारिंशच्छतं प्रादाद् ग्रामाणां चतुराधिकम् ॥

४. पूर्वं धर्मेश्वरो देवो दक्षिणेन गणाधिपः
पश्चिमे स्थापितो भानुरुत्तरे च स्वयंभुवः ॥ वही ४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, जिसे आजकल "संभुआ" कहते हैं ये सारे स्थान स्कन्द-पुराण के अनुसार दो योजन (८ मील) के घेरे में है। प्राय: उनकी यही स्थिति आज भी है। जिससे स्पष्ट है कि धर्मराज की तपोभूमि धर्मारण्य यही है। जिसे भगवान विष्णु ने सत्ययुग में बसाया था। इसकी याद में वहाँ की नदी "विष्णुनदी" कहलाई, जिसे आजकल "इसन" (विष्णु-बिसन-इसन) कहते हैं।

धर्मारण्य के ब्राह्मण

सातवीं शताब्दी में यशोवर्मन का उत्तराधिकारी "आम" नामकबौद्ध राजा शासन करता था, जिसने अपने दामाद कुमारपाल को धर्मारण्य का क्षेत्र दहेज में दे दिया। कुमार पाल जैन मतावलंबी था। उसने धर्मारण्य के ब्राह्मणों को बुला कर कहा कि हे ! ब्राह्मणों, श्रीराम चन्द्र त्रेता में थे। इस समय वे नहीं हैं। इस समय धर्मारण्य का राजा मैं हूँ, इसलिए तुम प्रदत्त भूमि का कर दो। यदि कर नहीं देना चाहते हो तो जैन मत स्वीकार करो" ब्राह्मणों ने कुमार पाल को बहुत समझाया-बुझाया, किन्तु उसने उनकी एक न सुनी। उसने कूटनीति पूर्वक १५ सहस्त्र ब्राह्मणों को अपने पक्ष में कर लिया। केवल तीन सहस्त्र ब्राह्मण ही उसके कहने में नहीं आये और राजाज्ञा का विरोध करते रहे। अन्त में श्री हनुमान जी की कृपा से उनकी विजय हुई। कुमार पाल उनकी शरण में आया। उसने वैदिक धर्म की दीक्षा ली और श्री रामचन्द्र जी का भक्त बन गया। जिन ब्राह्मणों ने राजा कुमारपाल की आज्ञा की अवहेलना कर केवल वेदत्रयी पर विश्वास प्रकट किया, वे त्रैविद्य" तथा जिन्होंने कुमार पाल के कहने में आकर त्रयी के अतिरिक्त जैनमत पर भी आस्था प्रकट की वे चातुर्विद्य कहलाये। त्रैविद्य और चातुर्विद्य में परस्पर विवाह सम्बन्ध वर्जित हो गया।[१] भूमिहारादि अयाचक ब्राह्मणों की परम्परा इन्हीं त्रैविद्य ब्राह्मणों की है। इन्हीं ब्राह्मणों के विषय में परशुराम जी की यह उक्ति चरितार्थ होती है।

अग्रत: सकलं शास्त्रं, पृष्ठत:सशरं धनु:

त्रैविद्य बड़े शक्तिशाली थे उनकी प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती रही। हर्षवर्धन के पश्चात् उसके मंत्री अर्जुन ने उत्तरी विहार तक अधिकार कर वहाँ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की बस्तियाँ बसाईं। इसी से तिर्हुत में उन्हें "पश्चिमा" कहते हैं। जब अफगानी आक्रमणों का विध्वंसकारी तूफान लेकर महमूद कान्य कुब्ज प्रदेश में घुसा तो वहाँ के ब्राह्मणों ने उसका प्रबल प्रतिरोध किया था। अलबेरूनी लिखता है कि मंछ के ब्राह्मण महमूद से तनिक भी भयभीत नहीं हुए थे और बड़ी शक्ति के साथ भिड़ गये। भूमिहार ब्राह्मणों का एक दल मंछिया कहलाता है। उनके पूर्वज मंछ से विहार में आये थे। कहते है कि मुहम्मद गोरी को भी मदारपुर के ब्राह्मणों से निपटना पड़ा था। गौतम चन्द्रिका में कहा गया है--

जयचन्दहु विनसिगे जवहीं।
भूमिहार कनउज के तबहीं॥
तजि निज ग्राम रामपुर छाये।
गौतम कुल संबंध बढ़ाये॥[२]

अष्ट छाप के प्रसिद्ध कवि भक्त प्रवर नन्द दास जी रामपुर के ही रहने वाले थे। यह रामपुर ग्राम वाराणसी-इलाहाबाद मार्ग पर कछवा रोड़ स्टेशन से दो किलोमीटर दक्षिण है। वहाँ "चकनन्दा" और "चक्र चनहा" नामक दो क्षेत्र हैं, जिनमें प्रत्येक का क्षेत्र फल ९६ बीघा (६४ एकड़) है। शायद ये क्षेत्र अन्नदान (सदावर्त) के लिये अलग किये गये थे। गंगा तटवर्ती बरैनी ग्राम यहाँ से छ: किलोमीटर नैऋत्य कोण में है। ऐसा लगता है कि इसी ग्राम के विषय में भक्तमाल के टीकाकार प्रियदास ने लिखा है[३]--

"निकट बरैली ग्राम तामे सो हवेली रहै,
नन्ददास बसे जहाँ साधु सेवा रागी हैं।"

---

१. परस्परं न विवाहश्चातुर्विद्य त्रैविद्ययो: ।

२. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र-तुलसी दास (परिशिष्ट)

३. चन्द्रहास अग्रज सुहृद ··· ··· भक्त माल नामा दास कृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुसलमानी आक्रमणों से उद्ध्वस्त होकर अपनी संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए अनेक प्रतिष्ठित कान्यकुब्ज घराने वाराणसी तथा बिहार के क्षेत्र में बस गए थे। जो जिस स्थान से आया अथवा अग्रहार पाकर जहाँ बसा, उसी स्थान वाची नाम से उस परम्परा के लोग जाने जाते हैं, जैसे-वरूवा से आने वाले वरूवार, पहतिपुर से आने वाले पाहितीपुर पाण्डेय, हीरापुर (उन्नाव) से आने वाले हीरापुरी पाण्डेय, चौसी से आने वाले चौसियार, एकसार में बसने वाले एकसरिया, नोन्हउल में बसने वाले नोन्हउलिया ब्राह्मणों के पूर्वज नोन्ह नदी के तट बिठूर से आये थे। वाराणसी के राजा बानार ने उन्हें वर्तमान बलिया जिले में अग्रहार दिया। इसी वंश परम्परा में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सेनापति उत्पन्न हुये। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सेनापति का जन्म स० १६४६ वि० के लगभग अनूप शहर में होना माना है, किन्तु अनूप शहर उस समय बसा ही न था।

शर्की राज्य जौनपुर के संस्थापक ख्वाजा जहाँ ने अपनी सहायता के लिए मदारपुर के राजा शिवराज देव को बुलाया और वाराणसी से पूरब ६ परगनों की जागीर दी थी। शिवराज देव के प्रभाव से बंगाल से अलीगढ़ तक की जनता ने जौनपुर राज्य की अधीनता बिना लड़-भिड़ स्वीकार कर ली। मुसलिम काल के सम्पूर्ण शासकों में जौनपुर के शर्की राजा हिन्दू प्रजा के प्रति विशेष उदार थे। यही कारण है कि उनके शासन काल में कभी अशान्ति नहीं हुई। इसका बहुत कुछ श्रेय उक्त ब्राह्मण राजवंश को दिया जा सकता है, जिन्होंने हिन्दू प्रजा को प्रसन्न रखने के लिए-स्थान-स्थान पर यज्ञ किए और वहाँ के ब्राह्मणों को वृत्ति देकर सम्मानित किया।

तस्टिहा-उपाधि

शर्की राज्य की स्थिति सुदढ़ हो जाने पर शिवराज देव मदारपुर चले गए और पूर्वी प्रदेश की जागीर की व्यवस्था के लिए अपने पुत्र ध्रुवराज देव को नियुक्त किया। ध्रुवराज देव ने सैदपुर (गाजीपुर) के निकट ध्रुवार्जुन नामक स्थान पर निवास किया। उनके पुत्र कनकराज देव (कनक ऋषि) वर्तमान बलिया जिले के कंसीपटना नामक स्थान पर चले आये। वाल्मीकि रामायण पर इनकी टीका है। नैपाल के वराह क्षेत्र में इन्होंने तपस्या की, जहाँ इनकी धूनी जल रही है इन्हीं के नाम पर वहाँ की एक नदी का नाम कनकमई पड़ गया। उनके समय में "कसोपटना" तीर्थ क्षेत्र बन गया था, जिसकी पंचकोसी यात्रा की जाती थी। यात्रा का प्रारभ कनकेश्वर महादेव से और अंत सधवा में होता था। ठहराव के स्थान अजीजपुर, कुआरीडीह आदि थे।

कनकदेव जी के पुत्र गोभिल चन्द्र (गोलकचन्द्र या गोधन चन्द्र देव) कर्मनिष्ठ वैदिक विद्वान थे। उनकी यज्ञ भूमि किड़िहरापुर स्टेशन के पास जजौली के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ उनका लंवखी वाग था, जो अवँराई-कलाँ के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अन्तर्गत झारखंडे महादेव के पोखरे में अनेक प्रकार के कमल पुष्प खिलते थे। इनके पुत्र राजा रइकरदेव (राकड़देव) ने जौनपुर के अन्तिम शर्की सुल्तान हुसेन शाह के पलायित हो जाने पर भी आजमगढ़ के निकट सिकन्दर लोदी से तीन दिनों तक डट कर युद्ध किया था और विजयी हुए थे। फलस्वरूप सिकन्र लोदी को हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाना तथा राजाओं की भीतरी व्यवस्था में दखल देना बन्द करना पड़ा। अतः राकड़देव की विजय से प्रसन्न होकर तीर्थराय रघुवंशी, दशरथ आदि हिन्दू राजाओं, मुखियों तथा ब्राह्मणों ने राकड़देव की विजयिनी बाहों की पूजा कर उन्हें "तस्टिहा" की उपाधि से विभूषित किया।[1] तस्टिहा का अर्थ है-"तस्टिन हन्ता" अर्थात धर्मध्वंसक आततायियों का विनाशक।

१. रन ठट्ट के ठ्ट पहाड़ भयो, सो भुजाबल से "तटिहा" पद पायो। विधना के चरित्र को कौन लखे, जै पद जमाल नक्षत्र चढ़ायो॥ क़नसो अस छाप कर्न राज किये, सब देस नरेश सों बाँह पुजायो॥ (बंशावली)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा ने इस विषय की स्मृति में "तस्टिहा व रामपुर" नामक दो गढ़ों का निर्माण कराया। एक फर्रुखाबाद जिले में आजकल "ठटिया" के नाम से प्रसिद्ध है तथा दूसरा बलिया जिले में इस समय "टेटिही रामपुर" कहलाता है। "तस्टिहा–विलासपुर" के नाम से उन्होंने एक तीसरा गढ़ भी बनवाया, जिसे आजकल ताड़ी बड़ा-गाँव (बलियाँ) कहते हैं। बलिया जिले की लकड़ा नदी (राकड़ नदी) रेंकुआताल आदि का नामकरण इन्हीं के नाम पर हुआ है। ये इतने तेजस्वी थे कि इनसे कोई आँख नहीं मिला सकता था। दानी इतने थे कि समाज में राजा कर्ण के नाम से प्रसिद्ध हुए। जिस स्थान पर बैठकर प्रतिदिन दान करते थे, वह स्थान "बलिकरना" नाम से प्रसिद्ध है।

मदारपुर का ध्वंस

राकड़देव के पुत्र राजा सूर्यमल देव के समय सं० १५८४ वि० तदनुसार फरवरी, १५२८ ई० में बाबर ने मदारपुर पर आकस्मिक आक्रमण किया। इस भीषण युद्ध में वहाँ के ब्राह्मणों सहित सब लोग मारे गये।[1] बाबर ने वहाँ की स्त्रियों और बच्चों तक को निर्ममता पूर्वक तलवार के घाट उतार दिया। वह लिखता है कि जो लोग भागते थे, उन्हें भी मेरे सैनिक घोड़े से गिरा कर मार डालते थे।[2]

इस युद्ध के पश्चात सदा के लिये ब्राह्मण केन्द्र मदारपुर मुसलमानों के अधिकार में आ गया। जहाँ पहिले हिन्दू मन्दिर और देव स्थान थे, वहाँ आज सूफी सन्त बदीउद्दीन की दरगाह, औरंगजेब द्वारा बनवाई विशाल मस्जिद, मकबरे आदि खड़े हैं। यहाँ बसन्त पंचमी के अवसर पर देश – प्रसिद्ध मेला लगता है। आज भी हिन्दू लोग इस तीर्थ में अपने बच्चों का मुण्डनादि संस्कार कराने आते हैं। औरंगजेबी मस्जिद में पीछे की ओर से पत्थर की जाली वाला एक झरोखा है तथा उसकी सीध में मस्जिद के भीतरी भाग में एक छोटा चबूतरा बना हुआ है। धार्मिक हिन्दू झरोखे द्वारा उस देवस्थान का दर्शन करते और झरोखे से फेंक कर उस पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। रौगाँव के पं० वाचस्पति त्रिपाठी के उल्लेख से विदित होता है कि जहाँ दरगाह खड़ी है। वहाँ मन्दारेश्वर महादेव का मन्दिर था। हिन्दुओं का विश्वास है कि मन्दारेश्वर का शिवलिंग आज भी उस भूमि पर भूगर्भ में स्थित है। इसके आगे एक कुण्ड था, जिसे पाट कर मजार स्थापति की गई थी। राजा भाग्यमल की दालान के आगे मकनादेव का टीला है। यहाँ मुकुन्द देव (विष्णु) का मन्दिर रहा होगा। इसके पास ही धम्माल (धर्मालय) है। युद्ध में मुगल सैनिक इतनी अधिक संख्या में मारे गये थे कि मकनापुर के चारों ओर दूर तक की भूमि अनगिनत मजारों से पटी है, और ऐसा लगता है कि यह मजारों का गाँव है। मकनपुर से एक मील पर भदौसी (फर्रुखाबाद) के निकट राजा सूर्यमल देव के भाई कमलदेव (कौला बाबा या कमल मुनि) तथा बीस वर्षीय कुमार भवदेव (भावसिंह बाबा) की समाधियाँ हैं, जिन्होने उक्त युद्ध में यहाँ वीर गति पाई थी।

वंश परम्परा

मुगलों के निर्मम हत्याकांड से किसी प्रकार अनन्त राम ब्राह्मण की पत्नी बच निकली थी, जिसकी रक्षा स्योना नाई ने की। अनन्त राम की पत्नी दुर्बल होने के कारण एक बालक को जन्म देकर कालगति को प्राप्त हुई बालक का नाम "गर्भू" रखा गया।[3]

गर्भू के वंशज कान्यकुब्ज प्रदेश के पचीसों गाँवों में निवास करते हैं, जैसे–कुतमऊ आदि के तिवारी, विनौर

---

१. मदारादि पुराख्यस्य भूमिहारा दिजास्तु ये
तेभ्यश्च यवनेन्द्रैश्च महद्युद्धमभूत्पुरा।
तेभ्यश्च ब्राह्मणा सर्वे परास्ता अभवंस्ततः ॥
पं० दुर्गादत्त तथा पं० मुकुन्द राम कृत कान्य कुब्ज वंशावली पृ० १०५.

२. बाबरनामा

३. हरिप्रसाद भगीरथ–बृहत् कान्यकुब्ज कुलदर्पण पृ० ११७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि के अग्निहोत्री, गल्हैया आदि के दुबे, नगरा आदि के मिश्र, क्यूना आदि के दीक्षित, विधौली आदि के शुक्ल तथा मिगलानी आदि के अवस्थी। नालन्दा (बिहार) जिले के पिलिछवार बाभन भी अपना आगमन मदारपुर के बताते हैं। अकबर के सेनापति राजा मानसिंह ने बंगाल जाते समय इन ब्राह्मणों की पूजा कर पिलिछ परगने का अग्रहार समर्पित किया था, तब से उक्त वंश परम्परा के ब्राह्मणों की संज्ञा "पिलिछवार" हो गई। पिलिछवार ब्राह्मण नालन्दा और बिहार शरीफ के आस-पास बसे हुए हैं।

ऊपर कथित भवदेव की गर्भवती पत्नी की गर्भ रक्षा के लिये यज्ञादि अनुष्ठान किये गये जिससे नारायण देव का जन्म हुआ। नारायण देव के चार पुत्र क्रमशः लक्ष्मणदेव, कृष्णदेव, पुरन्दरदेव और चूड़ामणिदेव हुए। लक्ष्मणदेव, के वंशज मुर्तजीपुर (गाजीपुर), कृष्णदेव के वंशज लिलकर (बलिया) डुमरहर, कृष्णापाली (सीवान), हरखपुरा (सारन) पुरन्दरदेव के वंशज जमुई (बलिया), डुमरहर, खुर्द (सीवान) तथा चूड़ामणिदेव के वंशज सीसोटार (बलिया), अमरपुर केवटलिया (सीवान) दीनापट्टी प्रेमवलिया (देवरिया) में हैं। भवदेव के छोटे भाई भुवदेव के दो पुत्र रामदेव और श्यामदेव हुए, जिनके वंशज कठौंड़ा (बलिया) मैरीटार, गोठिनी, भरौली (सीवान) एवं चाँद परसा (सारन-बिहार) में हैं।

इस वंश परम्परा में सदा से अनेक वीर विद्वान और महान पुरुष उत्पन्न होते रहे हैं। इनमें कई मुगलकाल के मनसबदार और सेनापतियों में थे उत्तर मुगलकाल नवाबी शासन के विरुद्ध समयानुसार इन लोगों ने क्रांतिकारी पग उठाया। लिलकर के लोगों ने चार बार अंग्रेजी शासन को शसस्त्र चुनौती दी थी। कई विद्वान, सुकवि और सन्त पुरुष भी हो चुके हैं। मदारपुर के ही कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण पहले भूमिहार की प्रतिष्ठा सूचक उपाधि से विभूषित थे। बाद में इनसे सम्बन्ध करने वाले अन्य कुलीन भूम्याधिकारी ब्राह्मणों को भी "भूमिहार" कहलाने में अपने प्रतिष्ठा का बोध हुआ। इस प्रकार भूमिहार नाम ब्राह्मणों के एक उच्च वर्ग का द्योतक बन गया। आजकल भूमिहार ब्राह्मणों के लगभग डेढ़ सौ भेद-प्रभेद पाये जाते हैं। कुछ विशिष्ट वंश परंपराओं की सूची निम्नांकित है :

काश्यप : तटिहा, किनवार, बेरूवार, पिलिछवार, ओइनीवार, सिरियार, मौल्दियार, दंसीवार, मौवार, नोनहुलिया, कुंड़हनिया, जैथरिया, भेलौरिया, मनेरिया, मालवीय, जुझौतिया, चरियइयाँ, धौरानी, बौनडीहा, कोलहा, भदैनी. चौधुरी,

शांडिल्य : दिघवैत, नैनीजोरा, याजी, पहितिया, डुमरैत, भिटवार, चकसेरिया, सोहगिया (सोहगौरिया)

भारद्वाज : हीरापुरी, चकवार, द्रोणटेकार (डुमटेकार), चौंसियार, मंछिया, सररिया, सोन परवरिया

वात्स्य : बगौछिया, सोनभदरिया, गग्नामिश्र, दोनवार

भार्गव : भृगुवंश, चइँयार। पाराशर-एकसरिया सहदौलिया

सावर्णि : सोवरनिया, बेमुवार

कौशिक : कौशिक, निकुतिवारी

गौतम : गौतम, गौतमियाँ

वसिष्ठ : कस्तुवार, मार्जनी मिश्र

कौडिन्य : अथर्व

विष्णुवृद्ध : भटाने आदि।

इतिहास बताता है कि आधुनिक भूमिहार ब्राह्मणों की परम्परा पुरातन काल से अथवा सदा से ही देश, समाज और संस्कृति की संरक्षक तथा अग्रणी रही है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे पहिले सेनानी महाराज बहादुर फतेह शाही इसी परम्परा के वीराग्रणी थे, जिन्होने २३ वर्ष तक सारन में अंग्रेजी शासन को जमने नहीं दिया। आधुनिक स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार के कामों में भी इस वर्ग के लोगों की त्याग-तपस्या का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विद्या-बुद्धि कुशल वीर वर्ग की स्वातंत्र्य चेतना और सामाजिक भावना सदा जागृत रही और आगे भी जागृत रहेगी। महान कुल में महान ही होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयाचक ब्राह्मणों के विविध वंश

भूमिहार, महिवाल, त्यागी, चितपावन एवं अनामिल ब्राह्मण

—डॉ० रघुनाथ सिंह

उत्तर–भारत में ब्राह्मणों की मुख्यत या दो शाखायें थीं। सारस्वत तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मण। प्राचीन काल में देश अथवा नदियों के नाम पर जहाँ ब्राह्मणों की आबादी थी उनका नामकरण किया गया। सारस्वत ब्राह्मण सरस्वती नदी के तट पर आबाद होने के कारण सारस्वत तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मण कान्यकुब्ज प्रदेश में रहने के कारण कान्यकुब्ज कहलाए। दोनों प्रदेशों के मध्य में यमुना नदी बहती है, यमुना नदी के पश्चिम से लेकर गान्धार तथा काश्मीर तक सारस्वत ब्राह्मण थे। धारणा है कि वर्तमान घग्घर नदी ही सरस्वती नदी थी। यह नदी पंजाब से बहती हुई राजस्थान होती हुई सिन्धु में मिलती थी। यह नदी राजस्थान में लुप्त हो गई। किन्तु इसका कोई कारण नहीं मिलता है कि कैसे सारस्वत ब्राह्मण मंगलोर तक पहुंच गए। वे क्यों नहीं यमुना पार कर पूरब दिशा की ओर बढ़े।

वास्तविकता यह है कि जिस सरस्वती नदी को कहा जाता है, वह घग्घर नहीं है। मूल सरस्वती नदी इस समय पाकिस्तान में है वह काश्मीर की नदी थी, वह कृष्णगंगा में शारदी तीर्थ स्थान के पास आकर मिलती थी। शारदी तीर्थ के नाम पर ही काश्मीर का मूल नाम शारदा देश था। जब ब्राह्मणों की आबादी पंजाब के सरस्वती नदी के किनारे आकर आबाद हुई तो उनकी गति दक्षिण की ओर हुई, पहले सरस्वती नदी पंजाब, मालवा आदि होती हुई गुजरात में खम्बात की खाड़ी में गिरती थी। यही कारण है कि सारस्वत ब्राह्मणों की गति दक्षिण भारत की ओर हुई। और वे सरस्वती नदी के सूखने के कारण दक्षिण की ओर बढ़ते गए।

महाभारत काल से ही याचक और अयाचक दो वर्गों में ब्राह्मण विभाजित हो गए। सारस्वत ब्राह्मणों में अयाचक ब्राह्मण महियाल ब्राह्मण आदि कहलाए, महियाल लोग उत्तर पंजाब तथा यमुना नदी के पश्चिमी तट से लेकर गान्धार तक फैले थे। गुजरात के अनामिल तथा महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण भी अयाचक की श्रेणी में आते है।

इस प्रकार पश्चिम की ओर महियाल, अनामिल, तथा चितपावन आदि अयाचक ब्राह्मण आवाद हो गए।

यमुना नदी से पूर्व की दिशा में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की पांच शाखाएँ फैल गईं, उनमें सरयूपारी, सनाढ्य, जुझौतिया, भूमिहार ब्राह्मण तथा मैथिल हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की शाखा में भूमिहार तथा त्यागी, अप्रतिग्राही या अयाचक ब्राह्मण कहलाए। महाराष्ट्र के पेशवा लोग चितपावन ब्राह्मण की शाखा के हैं। उत्तर–प्रदेश, बिहार में जमींदारी तथा कृषि–कार्य करने के कारण त्यागी तथा भूमिहार कहे गए। सिकन्दर से युद्ध करने वाला पोरस महियाल ब्राह्मण था। महियाल ब्राह्मण अरब तक फैले थे। वे व्यापार करते थे, वे इमामहुसेन के पक्ष से युद्ध किये थे। महिवाल ब्राह्मणों की एक शाखा पश्चिम के मुस्लिम देशों में हुसेनी ब्राह्मण नाम से विख्यात हैं। कौटिल्य को इसी आधार पर बिहार के भूमिहार लोग भूमिहार तथा महियाल लोग महियाल वंशज मानते हैं। कौटिल्य का सम्बन्ध तक्षशिला से था। जहां से वह पूरब पाटलि-पुत्र पहुँचा।

अतएव हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वास्तव में वेदानुसार चातुर्वर्ण्य में प्रथम ब्राह्मण वर्ग था कालान्तर में ब्राह्मण लोग कर्म और जन्म के द्वारा अनेक नामों में अपने स्थान के कारण या नदियों के तट पर रहने के कारण भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाने लगे। चितपावन ब्राह्मणों की आबादी बिहार में है जो चितपवनियां कहे जातेहैं। भूमिहारों और उनमें शादी विवाह होता है। त्यागी तथा महियाल ब्राह्मणों में भी कन्या का लेन देन होता है।

जिन ब्राह्मणों ने पठन पाठन का कर्म त्याग कर कृषि या सैनिक पेशा स्वीकार किया उन्हें ब्राह्मण मानने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में लोगों को हिचक लगने लगी, इस प्रकार अयाचक ब्राह्मणों में विवाह सम्बन्ध तथा याचक ब्राह्मणों में रक्त सम्बन्ध का आवागमन हुआ। इस प्रकार एक ही स्रोत के उत्पन्न हुए ब्राह्मण सारस्वत कान्यकुब्ज आदि स्थान और कर्म के कारण भिन्न कहे जाने लगे।

यह विवाद निराधार है कि अयाचक ब्राह्मण-ब्राह्मण नहीं है। पूर्व काल में जातियां नहीं थीं केवल चार वर्ण थे। एक कथा और भी कही जाती है कि भूमिहार, त्यागी आदि ब्राह्मण और क्षत्रिय के पारस्पारिक विवाह सम्बन्ध से उत्पन्न हुए हैं। लोकोक्ति है कि भगवान परशुराम ने जब क्षत्रियों का संहार किया और भूमि ब्राह्मणों को दी, जिन ब्राह्मणों ने भूमि लेना स्वीकार कर अपना पेशा बदल दिया वे भूमिहार आदि कहे जाने लगे। यह बात हमें नहीं भूलना चाहिए कि प्राचीन काल में आर्यों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होता था। और यह धर्म सम्मत माना जाता था। क्षत्रियों और ब्राह्मणों में परशुराम के काल में वैवाहिक सम्बन्ध हुआ भी हो तो वह जायज था। केवल पेशा बदल देने से कोई जन्मना ब्राह्मण अपनी जाति नहीं खो देता।

कालान्तर में जब जातियों का प्रचलन दृढ़ होता गया तो मूल ब्राह्मण छोड़कर लोग जातियों के नाम से सम्बोधित होने लगे।

अतएव भिन्न-जाति से सम्बोधित होते हुए भी ब्राह्मण मूलतः एक ही हैं। आज ब्राह्मण चाय की दूकान या नौकरी पेशा करने के कारण अपनी जाति नहीं बदल देता। यही बात ब्राह्मणों की सभी शाखाओं के विषय में कही जाएगी। भारतवर्ष के सभी ब्राह्मणों का मूल स्रोत एक ही है। जब मूल एक ही है, शाखा भी एक ही होगी। अतएव भूमिहार, त्यागी, महिवाल, चितपावन तथा अनामिल लोग एक ही ब्राह्मण वर्ण की भिन्न भिन्न शाखाएं है। कालान्तर में जातियों के रूढ़ होने पर वे अलग हो गए किन्तु हैं एक।

-:o ⁐ o:-

शुभ कामनाओं सहित :

कम खर्च व बढ़िया धुलाई के लिए

जेमनी साबुन (रजि०)

हमेशा प्रयोग करें

हरप्रकार की धुलाई के साबुनों के निर्माता :

तेज सोप एन्ड केमिकल वर्क्स

356, डा० बाथम रोड, रेल बाजार कानपुर। टेलीफोन : 63844

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आरक्षण की राजनीति और वर्ण व्यवस्था"

सुधा राय

आधुनिक युग में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है तथा हिन्दू समाज ही एकमात्र ऐसा समाज है जहाँ समाज का वर्गीकरण आर्थिक आधार पर न होकर जाति एवं वर्ण-गत आधार पर दृष्टिगोचर होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय गणतन्त्र को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व ने हिन्दू समाज में वर्ण व्यवस्था को कलंक मानकर उसके उन्मूलन का व्रत लिया है। समाज में जो नारे लग रहे हैं तथा प्राचीन धर्म ग्रंथो यथा—रामायण, 'मनुस्मृति' आदि को जलाने तथा अपमानित करने का जो अभद्र अभियान चल रहा है, वह भी वर्ण-व्यवस्था के प्रति विद्रोह का ही सूचक कहा जा रहा है। पर यह अभियान कितना न्यायोचित है यह विचारणीय है।

वर्तमान विश्व में मानवतावाद तथा भारत में समाज-वाद के प्रणेता बहुधा यह कहते सुने जाते हैं कि "अब मनुस्मृति का युग समाप्त हो चुका है" तथा राष्ट्र के पिछड़ेपन तथा दरिद्रता के लिए हमारी वर्ण व्यवस्था ही उत्तरदायी है। तर्क यह दिया जाता है कि समाज के एक वर्ग विशेष ने अपनी प्रभुता की रक्षा के लिए ही धर्म तथा राज्य का आश्रय लेकर सामन्तवादी इस व्यवस्था का निर्माण तथा पोषण किया हैं। प्रायः सभी तर्क सवर्ण या अभिजात वर्ग तथा दलित या शोषित वर्ग आदि वर्गीकरणों पर आधारित हैं। राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने जिसे अस्पृश्यता निवारण या हरिजन उत्थान का नाम दिया था उसका आधार छुआछूत नाश तथा आर्थिक समृद्धि से हटकर जातिगत आरक्षण बन गया है। परस्पर घृणा तथा प्रतिशोध की जो भावना इससे जाग्रत हो गई है, वह स्वयं में एक जटिल समस्या बनती जा रही है। गुजरात राज्य के अहमदाबाद तथा बड़ौदा तथा मध्य-प्रदेश में आरक्षण के समर्थन तथा विरोध में हुये दगों ने वर्तमान भारत का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह स्वयं में विचारणीय तथ्य है। इसका अन्त कहाँ होगा यह किसी को ज्ञात नहीं है। हमारे देश के कर्णधार इसमें देश का भविष्य बना रहे हैं या अपना, ये तो वे ही जानते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि क्या हमारी सामाजिक व्यवस्था, जिस रूप में आज दृष्टिगोचर होती है, उसी रूप में हमारी सभ्यता के स्वर्णिम युग में भी विद्यमान थी? क्या हमारी इस वर्णव्यवस्था के सर्जक वैदिक ऋषियों का भी इस व्यवस्था के सृजन तथा वर्गीकरण के पीछे कोई संकुचित दृष्टिकोण था?? क्या तथा कथित आधुनिक शोषित वर्ग तथा वर्तमान नेतृवर्ग के कतिपय सदस्यों द्वारा वर्ण व्यवस्था की भर्सना के रूप में प्राचीन धर्मग्रन्थों के विरुद्ध विषवमन एवं तथा कथित अभिजात वर्ग के प्रति विद्वेषमूलक प्रतिशोध की भावना तथा जातिगत आरक्षण का कोई औचित्य या वैज्ञानिक आधार है??

इन प्रश्नों का उत्तर जाति एवं वर्णगत संकीर्णता से ऊपर उठकर देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा वैज्ञानिक अर्थो में समाजवाद की परिभाषा को ध्यान में रखकर देना ही श्रेयस्कर होगा। आध्यात्मिक या भौतिक वादी दृष्टिकोण मात्र से ही एक पक्षीय खण्डन या मण्डन देश की सांस्कृतिक एकता एवं वर्गविहीन समाज पर व्यर्ग मात्र होगा। इस बढ़ते द्वन्द को समाप्त करने तथा एक स्वस्थ वातावरण के सृजन में सहायक विकल्प ढूँढ़ना ही हमारा ध्येय हो, यही श्रेयस्कर होगा।

यदि हम भारतीय समाज के विकास का अनुशीलन करें तो स्पष्ट होगा कि भारतीय हिन्दू सभ्यता के विकास का मूल हमारा वैदिक साहित्य ही है। इसी साहित्य निधि पर हम आज भी गर्व करते हैं तथा अपनी आध्या-त्मिक श्रेष्ठता की दुहाई देते हैं। अतः वेदों या उपनिषदों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था का औचित्य ही हमारे प्रश्न का उत्तर दे सकता है।

वेदों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व एवं शूद्र नामक चार वर्णों की उत्पत्ति क्रमशः ब्रह्म या प्रजापति के मूख, बाहु उदर तथा पाद से बतायी गयी है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु रान्जयः कृतः।
उरु तदस्य यद्वैश्यं, पदभ्यां शूद्रो अजायत ॥

परवर्ती साहित्य में भी इसी वर्ण व्यवस्था को स्वीकार कर कर्म के आधार पर आचरण का निर्देश दिया गया है। आधुनिक राजनीतिज्ञ इस वर्गीकरण के लक्षणात्मक तथा व्यंजनात्मक अर्थ को समझने की चेष्टा तो नहीं करता पर अभिधात्मक अर्थ के आधार पर या तो स्वार्थ–सिद्धि की चेष्टा करता है या उस पर कीचड़ उछालने में ही आनन्द का अनुभव करता है। जिस समाज रूपी शरीर के आचरणानुसार विभाग ऋषियों ने किये थे, उसका प्रत्येक अंग आज राजनीति से प्रेरित होकर सहयोग की भावना को त्यागकर परस्पर संघर्षरत है। सबको अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित करने की इच्छा के मूल में दूसरे की हीनता सिद्ध करने की चिन्ता अधिक हो गई है। आरोप, प्रत्यारोप के मूल में संघर्ष का जो भाव गहरा होता जा रहा है, उससे समाज या राष्ट्र पर क्या दूरगामी प्रभाव पड़ेगा, यह सोचने का अवकाश वस्तुतः हमारे नेतृवर्ग के पास नहीं है। उनका इष्ट तो इस अग्नि को निरन्तर प्रदीप्प करने से सिद्ध होता है। फिर वे समाधान क्यों ढूढ़ें ?

ऋषियों ने जिस वर्ण व्यवस्था का सृजन किया था, उसका आधार ब्रह्मज्ञान या अध्यात्मवाद था। तभी तो स्थावर जंगम इस विश्व में ही नहीं ग्रह नक्षत्रों को भी चरित्रगत गुणों एवं प्रभावों के आधार पर वर्ण-व्यवस्था के अन्दर लाया गया था। देव तथा दानव दोनों के शिक्षक एवं गुरु ब्रहस्पति एवं शुक्र ब्राह्मण, मंगल तथा सूर्य क्षत्रिय, बुध वैश्य तथा शनि को शूद्र कहा गया। यह वर्गीकरण जन्म के आधार पर नहीं, प्रत्युत कर्म और विचारधारा एवं लोक पर पड़ने वाले उनके अनुभूत प्रभावों पर आधारित था। तभी तो पातंजलि जैसे भाष्यकारों ने कर्म से विरत मात्र जन्म से जातिगण श्रेष्ठता की भावना की भर्त्सना करते हुए कहा कि जो विद्यातप आदि से हीन है, वह वर्ण से नहीं मात्र जाति से ही ब्राह्मण कहा जा सकता है।

विद्या तपश्च योनिश्च त्रयं ब्राह्मण कारणम्।
विद्या तपोभ्यां यो हीनो जाति ब्राह्मण एवं सः॥
(पांतजलि भाष्य)

अन्यथा ब्राह्मण 'गुरु का पुत्र' बुध वैश्य तथा क्षत्रिय सूर्य का पुत्र शनि शूद्र क्यों कह जाते ? इस पर विचार नहीं किया जाता।

वेदों में मंत्र ज्ञान एवं तदनुरूप आचरण के आधार पर ही वर्णगत वरीयता का क्रम निर्धारित किया गया है। यह वर्गीकरण स्थूल कम सूक्ष्म अधिक है। अपनी सुख सुविधा का ध्यान छोड़कर तपस्वी भावना से समाज कल्याण की दृष्टि से कष्ट उठा कर भी धर्म में प्रवृत्ति ही ब्राह्मण की वृत्ति मानी गयी है। सत्ता की भूख एवं उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न तथा राष्ट्र की रक्षा का व्रत ही क्षत्रिय वृत्ति है। वैभव एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति को दृष्टि में रखकर उत्पादन तथा उससे लाभ प्राप्त करने की वृत्ति वैश्य वृत्ति है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र का ध्यान कर उचित श्रम भावना ही शूद्र वृत्ति है। अतः तपस्या द्वारा शिक्षा का प्रसार, शारीरिक बल द्वारा सत्ता की रक्षा व्यापार द्वारा समाज की आवश्यकता की पूर्ति एवं समृद्धि तथा सेवा की भावना से प्रमुख कार्यों में रत समाज का श्रम हरण ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र का प्रधान कर्त्तव्य निर्धारित किया गया है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो आज भी हर व्यक्ति में किसी न किसी मात्रा में ये वृत्तियाँ वर्तमान हैं तथा एक ही शरीर में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र उसी अनुपात में विद्यमान हैं, जिस अनुपात में ब्रह्म के अंगों में उनकी कल्पना की गई है। फिर क्या उनका परस्पर संघर्ष उचित है ? क्या अपनी ही विभिन्न चित्त वृत्तियों के परस्पर संघर्ष की स्थिति में हम शांति का अनुभव कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकते हैं ? स्पष्ट है कि ऋषियों का इस वर्गीकरण के पीछे जो उद्देश्य था वह मात्र समाज एवं राष्ट्र की समृद्धि एवं सहयोग को दृष्टि में रखकर किया गया था। जन्म से जाति की श्रेष्ठता की स्थापना निहित स्वार्थों का परवर्ती प्रयास मात्र था। यह मनुष्य मात्र में व्याप्त उस मनोवैज्ञानिक सत्य की चरम परिणति थी जिससे हम आज भी मुक्त नहीं हो सके हैं। आज भी व्यक्ति अपने द्वारा अर्जित प्रतिष्ठा को अपनी पारिवारिक सम्पत्ति बनाने के लिए सचेष्ट है। नेता चाहते हैं, अकर्मण्य, अयोग्य सन्तानें भी नेतृत्व ग्रहण करें, धनी मानी व्यक्ति अपनी अयोग्य एवं अकर्मण्य सन्तानों को अपनी अर्जित सम्पति से धनी एवं प्रतिष्ठित बनाने में संलग्न हैं समाज में प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न व्यक्ति चाहे नेता हो अभिनेता, वकील हो या डाक्टर, इंजिनीयर हो या ठेकेदार अपने वंशज को ही उत्तराधिकारी बनाने के लिए प्रयत्नशील देखा जा सकता है। विजातीय प्रतिभा के विकास में रोड़े अटकाने का प्रयास आज भी उसी मात्रा या उससे भी अधिक मात्रा में देखा जा सकता है, जिस रुप में विकसित होकर यह वर्तमान स्वरुप प्राप्त कर सका है। स्पष्टतया इस वर्णव्यवस्था तथा जातिवादी दुर्भावनाओं के लिए शास्त्र नहीं; मानवीय भावनायें ही अधिक दोषी हैं। हमें अपनी इस स्वार्थी भावना से लड़ना तथा उस पर विजय प्राप्त करना है। इसी में व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र का हित है।

इतिहास साक्षी है कि यह संघर्ष नया नही है। प्राचीन भारत में भी श्रेष्ठता प्राप्ति के इस संघर्ष का क्रमवद्ध इतिहास मिलता है। प्रतिस्पर्धा तथा श्रेष्ठता के लिए संघर्ष मानव मनोविज्ञान का ही एक पक्ष है। पहले ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग ने शास्त्र और शस्त्र के क्षेत्र में श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए संघर्ष किया। वशिष्ठ, विश्वामित्र, परसुराम आदि के संघर्षों का इतिहास इसका साक्षी है। आगे चलकर कृष्ण, महावीर तथा गौतम बुद्ध आदि भी इसी संघर्ष में रत दिखाई पड़ते हैं। मध्यकालीन समाज में यहीं संघर्ष विविध वादों के संघर्ष के रूप में दिखाई पड़ता है। वर्तमान काल में इस संघर्ष का जो रुप दिखाई पड़ता है उसके जन्मदाता हमारे गौरांग प्रभु थे जिनके चले जाने के बाद भी हम उनके द्वारा थोपी गई मानसिक दासता से मुक्त नहीं हो पाये हैं। वर्ण विद्वेष उन्होंने अपनी प्रभुसत्ता को स्थिर बनाने के लिए फैलाया था। स्वन्तत्रता प्राप्ति के वाद हमारे नेतृत्व वर्ग ने उसी अग्नि का उपयोग अपनी कुर्सी सुरक्षित रखने के लिए करना ही अपना धर्म बना लिया है। विद्वेष की भावना भड़का कर वोट प्राप्त करना तथा शासन पर अधिकार करना आज नेतृव्य का मुख्य ध्येय बन गया है। निहित स्वार्थो की पूर्ति के लिए जन साधारण को मूर्ख बनाकर स्वार्थ सिद्धि का जो अभियान चलाया जा रहा है उसमें जातिगत या वर्णगत आरक्षण के नाम पर भाई भतीजावाद हीं अधिक सक्रिय दिखाई पड़ता हैं। क्या इसे हम समाजवाद का वैज्ञानिक स्वरूप कह सकते हैं ? क्या यही वर्ग विहीन समाज की स्थापना का सहज स्वरूप है ? आरक्षण की इस माँग की पृष्ठभूमि में मानवतावादी एवं समाजवादी मान्य मूल्यों तथा स्वीकृत परम्पराओं की जो हत्या हो रही है, वह चिन्ता का विषय है। इसे एक वर्ग विशेष के उत्थान के प्रयास के स्थान पर एक नये वर्ग की प्रतिष्ठा का प्रयास कहना अधिक उपयुक्त होगा। वर्ण विहीन समाज की स्थापना के नाम पर नित्य नये नये वर्ग बन रहें हैं। क्या यही हमारा समाजवाद हैं, समानता का प्रयास है !!!

प्राचीन धर्म ग्रंथों तथा शास्त्रों की निन्दा तथा अवमानना करने वाले तथा कथित विद्वानों ने ग्रंथ विशेष का अनुशीलन तो दूर वस्तुतः दर्शन भी नहीं किया है,। या यदि किया भी है तो उनकी दृष्टि ग्रंथ के रचयिता के गुणों पर शायद पड़ी ही नहीं है "मनुस्मृति के युग की समाप्ति" घोषित करने वाले वस्तुतः यह भूल जाते हैं कि स्मृति विशेष का प्रयोजन धर्माचरण की प्रेरणा देना तथा कर्तव्य का बोध कराना है न कि अधिकारों की विवेचना करना। यदि ऐसा न होता तो बार बार मनु ने यह उद्घोष न किया होता कि अधिक आयु होने या केश पक जाने या अधिक धन या बाँधवादि होने से ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोई बड़ा नहीं होता, वरन् जिसने वेद वेदांग का अध्ययन किया है वही महान है।

आरोप लगाने वाले बहुधा यह भूल जाते हैं कि ये सारे अधिकार एवं कर्तव्य के विवेचन वैदिक आध्यात्म-प्रधान, बौद्धिक संस्कृति को दृष्टि में रखकर किये गये हैं। उनमें जन्म के साथ जाति की श्रेष्ठता का दावा करने वालों के प्रति स्पष्ट व्यंग है तथा उन्हें कर्म की प्रेरणा देने का प्रयास किया गया है।

इसी प्रकार गोस्वामी संत तुलसीदास रचित राम-चरित मानस पर शूद्र तथा नारी विद्वेष का दोष लगा-कर मानस को अपमानित कर जलाने वाले वस्तुतः तुलसी के दर्शन तथा क्रान्तिकारी प्रवृत्ति से अनभिज्ञ है। ये बहुधा वे लोग हैं जिन्होंने मानस को शायद एक बार पढ़ने का कष्ट भी नहीं किया है। जिनका सारा विद्वेष मात्र "ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी" को ताड़ना का अधि-कारी बताने वाली उक्ति पर आधारित है। पर विद्वेष की भावना फैलाकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले वस्तुतः यह भी नहीं जानते कि संत कवि ने पूर्ववर्ती राम कथा के किन अंशों को किस प्रयोजन से ग्रहण किया है तथा शूद्रक आदि की कथा को किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छोड़ दिया है। वे वस्तुतः यह भी भूल जाते हैं कि राम-चरित मानस की कथा जिन तीन वक्ताओं तथा तीन श्रोताओं के संवाद के रूप में कही गयी हैं, उनमें एक प्रमुख वक्ता चाण्डाल स्वरूप कागभुसुण्डि भी हैं जिसने इच्छा त्याग की शक्ति रख कर भी ब्राह्मण शरीर से चाण्डाल शरीर को ही अधिक स्नेह से धारण कर रखा है। उनकी दृष्टि उन सभी प्रसंगों पर नहीं जाती जो पूर्ववर्ती रामायण कथाओं में होने पर भी मानसकार द्वारा अनुपयुक्त तथा द्वेष प्ररक होने के कारण छोड़ दिये गए हैं। सन्त कवि द्वारा ब्राह्मणोंपर व्यंग "द्विज चिन्ह जनेऊ उघार तपी" तथा बार-बार प्रभु राम द्वारा प्रेम के नाते की ही श्रेष्ठता का प्रतिपादन उनकी दोषान्वेषी दृष्टि की पहुँच के बाहर ही रह जाता है।

गोस्वामी जी बार बार अपने इष्ट देवता भगवान श्रीराम से उद्घोष कराते हैं। शवरी से राम कहते हैं—

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानऊँ एक भगति कर नाता॥
जाति पाँति कुल धरम कड़ाई।
धन वल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहई कैसा।
विनु जल वारिद देखिये जैसा॥

कागभुसुण्डि को भक्ति का महत्व समझाते हुए वे पुनः दुहराते हैं :—

भगति हीन विरचि किन होई।
सब जीवहु सम प्रिय मोहिं मोई॥
भगतिवन्त अति नीचहु प्रानी।
मोहिं प्रान प्रिय अस मम वानी॥

विनयी तथा किसी से विरोध न मानने वाले संत कवि जब "सीय राममय सब जग जानी। करऊँ प्रनाम जोरि जुग पानी" कहते हैं तब ये आलोचक भागकर दूर खड़े हो जाते हैं या आँखें मूँद लेते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि संत कवि ने "सुरसरि सम सबकर हित" करने वाली कथा का चयन किया है। वे उस संत पर आरोप लगाते हैं, जिसने अपने पात्रों के चित्रण में उनके कर्म के अनुसार ही उनका वर्गीकरण किया हैं। उनके भरत शूद्र केवट से शिष्टाचार वश "कुशल सुमंगल क्षेमा" पूछते हैं जो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य से से पूछे जाते हैं। वे शूद्र, केवट से शास्त्र विहित मात्र आरोग्य को नहीं पूछते जो उन्हें पूछना उचित था। यहाँ वह स्पष्ट करना उपयुक्त होगा कि स्मृतियों ने शिष्टाचार के लिए जो शब्द बनाये हैं उनके अनुसार विधान है कि—

ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत, क्षत्रियं बन्धुमनामयम्।
वैश्यं क्षेम पृच्छेत, शूद्रमारोग्यमेव च॥

अर्थात मिलने पर ब्राह्मण से कुशल, क्षत्रिय से सुमंगल वैश्य से क्षेम तथा शूद्र से आरोग्य प्रश्न पूछना चाहिए। पर शूद्र केवट को शूद्र न मानकर ब्राह्मण,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षत्रिय एवं वैश्य के समान जो आदर दिया गया वह भरत से मिलने के पहले के व्यवहार पर आधारित था। इस प्रकार मानों भक्त कवि ने कर्मानुरूप जाति निर्धारण के सिद्धांत का अनुमोदन तथा जातिगत प्रभुता का जो प्रच्छन्न विरोध किया है, उसे देखने की दृष्टि वे कहाँ से लावें ? उनका ध्येय तो विद्वेष के सृजन द्वारा स्वार्थ सिद्धि मात्र है। गुण नहीं वे तो दोष बताकर तथा कटुता बढ़ाकर ही स्वार्थ साधन में सफल हो सकते हैं। राजनीति में उनके लिए वही औचित्य की कसौटी है।

भारतीय वर्ण व्यवस्था को सभी दोषों का मूल मानकर उसे मिटाने तथा विषमता दूर करने की प्रक्रिया में आरक्षण का निरन्तर बढ़ता यह प्रमाद हमारे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र का जो चित्र विश्व में उपस्थित कर रहा है वह कितना सुन्दर या असुन्दर है—यह अध्ययन का विषय है। राजकीय सेवाओं तथा अन्य क्षेत्रों में आरक्षण का जो चक्र चल रहा है, उस पर भी इस परिपेक्ष्य में विचार करना श्रेयस्कर होगा। यह कहना असंगत नहीं होगा कि आज जिस रूप में इस विषय के पक्ष तथा विपक्ष में तर्क दिये जा रहे हैं, वह मात्र निहित स्वार्थ की दृष्टि से चलाया जाने वाला राजनीतिक व्यापार ही है। हिन्दू धर्म में उत्तम खेती, मध्य बान, अधम चाकरी की उक्ति के आधार पर सेवा वर्ग को कर्मानुसार शूद्र वर्ण में ही गिना गया है। यदि यह सत्य है तो फिर शूद्रों में शूद्रों का वर्गीकरण तथा आरक्षण या पिछड़ेपन के आधार पर आरक्षण का औचित्य क्या रह जाता है ? वह भी जब उसका आधार जातिगत या वर्गगत बना दिया जाय। गुजरात तथा मध्य प्रदेश के आरक्षण विरोधी आन्दोलनों के सन्दर्भ में दमन तथा छुआछूत मिटाने की आड़ में जो दमन चक्र चल रहा है वह कितना विस्फोटक होगा यह कौन जानता है।

आज विभिन्न सरकारी एवं अर्धसरकारी सेवाओं में नियुक्ति मात्र नहीं प्रोन्नतियों में भी आरक्षण की धूम है। राज्यों सेवाओं तथा शैक्षणिक संस्थाओं में जहां पहले भरती प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के आधार पर होती थी वहाँ भी आरक्षण के कारण शैक्ष-णिक योग्यता तथा अवस्था एवं प्रतियोगिता के मान दण्ड अलग-अलग निर्धारित हो गये है। कल तक जो निम्न या कनिष्ठ पद पर था प्रोन्नति में आरक्षण के सहारे कल वरिष्ठ हो सकता है। शिक्षा में आरक्षण अब आरक्षित डाक्टरों, इंजीनियों और वैज्ञानिकों का सृजन कर रहा हैं। प्रश्न उठता है कि क्या यह राष्ट्रीय नैतिकता पर प्रहार नहीं है ! क्या इससे योग्यता के स्तर पर में गिरावट नहीं आ रही है ! क्या आरक्षण द्वारा गढ़ा गया एक अकुशल वर्ग, राष्ट्र की किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं कर रहा है। यह भी एक विचारणीय पहलू है।

आज विश्व के सभी समाजवादी देशों में जो वैज्ञानिक आधार पर समाजवाद का प्रचार तथा प्रसार हो रहा है उसका ध्येय आर्थिक विषमता को दूर करना है। देश विदेश में चाहे जितने धर्मावलम्बी हों पर आरक्षण का आधार आर्थिक समता एव योग्यता ही समझा जाता है। पर भारतवर्ष में आर्थिक समानता लाने या विषमता दूर करने के लिए जातिगत तथा वर्णगत आरक्षण का जो प्रपंच खड़ा किया गया है उसका कारण अब प्रायः अधिक स्पष्ट हो गया है। सवर्णों में आर्थिक अक्षमता का नितान्त अभाव कल्पित कर आरक्षण द्वारा नये वर्ग की सृष्टि के पीछे सामाजिक उन्नति का ध्येय नहीं, प्रत्युत राजनीतिक दृष्टि से आसन्न चुनावों में वोटों का व्यापार ही इष्ट प्रतीत होता है। बुद्धिजीवी वर्ग के लिए के लिए यह एक विचारणीय विषय है। हम लक्ष्य की प्राप्ति में कहां तक सफल या असफल हुए है तथा इसका दूरगामी परिणाम क्या होगा ? इस पर निष्पक्ष रूप से विचार करना हर राष्ट्र प्रेमी का परम धर्म है। राष्ट्र हित में राष्ट्रनीति निर्धारण का स्वप्न तभी साकार हो सकता है जब हम व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर स्वान्त सुखाय के स्थान पर बहुजन हिताय चिन्तन, मनन तथा आचरण का व्रत लें। यही भारतीय संस्कृति का संदेश एवं उद्देश्य रहा है तथा भविष्य में भी रहना चाहिए। तभी हम अपने अतीत पर गर्व करने के अधिकारी होंगे। अन्यथा सत्ता की रक्षा के लिये यह वर्ग सन्तुष्टि का प्रयास हमें २१ वी नही १९ वीं सदी में ही ले जाकर रहेगा।

बी ८८, सूरजकुण्ड कालोनी
गोरखपुर। उ०प्र० ॥ २७३००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

JAI DURGA CORPORATION

Approved Govt. Contractors,
Manufacturers & Suppliers
Regd. with D. I. & N. S. I. Kanpur.

Dealers in :

Web Equipments, Leather, goods, Wooden Articles
Tin Boxes, Steel Furnitures.
All type of Trollies & other General Stores

卐

15/266, Civil Lines
KANPUR - 208 001

Phone : Office / Resi. { 62408

With best compliments from :

M/s. KANPUR CHEMICAL AGENCIES

Distributors :- Kanoria Chemical Industries Ltd. Renuket

Ref. KCA

Telephone : Office– 63321, 66815
Resi. – 240241, 241946
Gram – KHAJURAHO

49 / 27, Sinha Market,
Generalganj, Kanpur.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय ज्योतिष की पृष्ठभूमि

—विन्ध्यवासिनी सिंह

मानव स्वभाव से जिज्ञासु है। मानव स्वभाव की इस जिज्ञासा ने ही अनेक शास्त्रों की भाँति ज्योतिष का भी रहस्योद्घाटन किया है। आज ज्योतिषी के नाम मात्र से ही आपके मस्तिष्क में एक त्रिकालदर्शी का चित्र खिंच जाता है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने की आपकी इच्छा बलवती हो उठती है। आप ज्योतिष को एक रहस्य का विषय समझते हैं। आपकी दृष्टि में ज्योतिष विज्ञान नहीं कला है। विषय के ज्ञान, उसकी प्राचीनता के इतिहास तथा उसके क्रम के विषय में सोचना आपने आवश्यक नहीं समझा। आपका यह दृष्टिकोण आधुनिक भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता के अनुकूल भले ही हो पर भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा दार्शनिक विचार धारा के प्रतिकूल ही है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण सदा दार्शनिक रहा है। भारतीय दर्शन के अनुसार मानव सच्चिदानन्द का प्रतिरूप है। अपने विचार तथा क्रिया से वह सत् (सत्य), चिद् (ज्ञान) एवं आनन्द की प्राप्ति के लिए जाने, अनजाने लौकिक तथा पारलौकिक दोनों क्षेत्रों में सतत प्रयत्नशील रहता है। पारलौकिक दृष्टि से ज्योतिष का रहस्य भी परब्रह्म की प्राप्ति ही है। इसी कारण ज्योतिष में चिरन्तन और जीवन से सम्बद्ध सत्य का विश्लेषण होता है। सभी भारतीय शास्त्र मानव जीवन के केवल किसी एक अंग विशेष का विश्लेषण तथा निरूपण करते हैं पर ज्योतिष आन्तरिक तथा बाह्य जगत के समस्त ज्ञान का प्रतिपादन करता है। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान के आदि ग्रन्थ वेदों के ६ प्रमुख अंगों:- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष में ज्योतिष शास्त्र को नेत्र की संज्ञा दी गई है।

ज्योतिष शास्त्र का जन्म, कब तथा कहाँ हुआ? इस पर विविध विद्वानों में मतैक्य नहीं है। तथापि यह निर्विवाद रूप से निश्चित प्राय है कि भारत ही इस विद्या का जनक तथा जगद्गुरु है। अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी ज्योतिष तथा गणित शास्त्र में भारतीय ज्ञान की प्राचीनता तथा श्रेष्ठता स्वीकार की है। प्रो० मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक "इन्डिया-ह्वाट कैन इट टीच अस" में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि, "भारतवासी आकाश मण्डल और नक्षत्र मण्डल आदि के बारे में अन्य देशों के ऋणी नहीं हैं। वे ही इन वस्तुओं के मूल आविष्कर्ता हैं।" इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में भी अंकगणित की विवेचना करते हुए भारत को वर्तमान अंकगणित का जनक स्वीकार किया गया है। श्री सी० वी क्लार्क, प्रो० विल्सन, डा० रावर्टसन तथा प्रो० कार्लब्रुक आदि ने भी भारतीय ज्ञान की प्राचीनता तथा प्रभुता खुले शब्दों में स्वीकार की है। कर्नल टाड के अनुसार "हम उन ज्योतिषियों को कहाँ पा सकते हैं जिनका ग्रहमण्डल सम्बन्धी ज्ञान आज भी योरप में आश्चर्य उत्पन्न कर रहा है।" बीसवीं शताब्दी के जगत् प्रसिद्ध हस्त विज्ञान वेत्ता तथा ज्योतिषाचार्य कीरो (Cheiro) ने तो यह तक लिखने में संकोच नही किया कि "जब आदम की उत्पत्ति नहीं हुई थी, जब ईसा का नाम भी नहीं सुना गया था, जब मुहम्मद की कल्पना भी नही हुई थी तब तथा उससे भी पहले ईसा के जन्म से २६००० (छब्बीस हजार) वर्ष पहले हिन्दू, ग्रहों का विज्ञान पूर्णतया जानता था।" फ्रांसीसी तथा चीनी विद्वानों की अनेक अन्य सम्मतियाँ भी इस विषय में उद्धृत की जा सकती हैं।

इस शास्त्र का नामकरण "ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधक शास्त्र:" के आधार पर ही किया गया है। आचार्यों ने आकाश स्थित ग्रह, नक्षत्रादि ज्योति पिण्डों के स्वरूप, संचार, गति तथा संचारानुसार शुभाशुभ फलों का बोध कराने वाले इस शास्त्र को ही ज्योतिष शास्त्र का नाम दिया है। ज्योतिष शास्त्र के जितने अंग बताये गये हैं तथा उनका जो विषद् विवेचन किया गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है यदि उसका वृहद् विश्लेषण किया जाए तो आज का मनो-विज्ञान, जीव-विज्ञान, पदार्थ-विज्ञान, रसायन-विज्ञान तथा चिकित्सा-विज्ञान आदि सभी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। यद्यपि इस परिभाषा का विकास भारतीय ज्ञानोन्नति के साथ हुआ है तथापि यह स्पष्ट है कि समस्त भारतीय ज्ञान की पृष्ठभूमि की भाँति भारतीय ज्योतिष की पृष्ठभूमि भी दर्शन शास्त्र ही है।

भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा ईश्वर का अंश तथा अमर है। माया से आवद्ध होकर यही आत्मा नाम रूपात्मक आवरण रूपी भौतिक शरीर में शरण लेता है। कर्म प्रवाह के कारण शरीर में स्थित रहकर वह नाना प्रकार के भोगों का उपभोग करता है तथा तदनुरूप कर्म रत रहकर संस्कार अर्जित करता रहता है। जन्म जन्मान्तर तक यह संचय तथा उपभोग की क्रिया चलती रहती है। भौतिक शरीर की विशेषता यह है कि इसमें शरण लेते ही आत्मा जन्म जन्मान्तर की निश्चित स्मृति खो देता है। इसलिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र में यह मान्यता है कि इस भौतिक शरीर में स्थित विस्मृति की अवस्था में भी आत्मा का एक से अधिक जगत् से सम्बन्ध बना रहता है। इसी आधार पर मानव के भौतिक शरीर को ज्योतिः (कारण) मानसिक तथा पौद्गलिक (भौतिक) नामक तीन उप शरीरों में विभक्त किया गया है। ज्योतिः शरीर का सम्बन्ध नक्षत्र जगत से, मानसिक का मानसिक जगत से तथा पौद्गलिक का भौतिक जगत से होता है।

मनोवैज्ञानिक आधार पर भी मनुष्य के व्यक्तित्व को वाह्य तथा आन्तरिक दो भागों में विभक्त किया जाता है। विचार अनुभव तथा क्रिया के आधार पर दोनों प्रकार के व्यक्तित्वों के पुनः तीन-तीन भाग किये जाते हैं। यह भी मान्यता है कि वाह्य व्यक्तित्व आकर्षण से तथा आन्तरिक व्यक्तित्व विकर्षण से प्रभावित होता है। मनुष्य का अतःकरण दोनों प्रकार के व्यक्तित्वों को आपस में मिलाकर तीनों क्षेत्रों में एक संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है।

आधुनिक विज्ञान परमाणु युग में आकर इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि जगत का प्रत्येक परमाणु सौर जगत् के समान आकार-प्रकार वाला है पर भारतीय दर्शन अनन्त काल से "यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे,' का सिद्धान्त मानता आया है। भारतीय ऋषियों ने इसी आधार पर अन्तर्मुखी सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा अनन्त ब्रह्माण्ड स्थित ग्रह नक्षत्रों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रक्रिया का दर्शन इस भौतिक शरीर में ही किया है। वस्तुतः इसी सूक्ष्म दर्शन के आधार पर सप्तग्रहों की भी कल्पना वाह्य तथा आन्तरिक व्यक्तित्व के विचार अनुभव तथा क्रिया एवं अतःकरण के अनुरूप की गई है।

सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों में पृथ्वी का क्रम शुक्र तथा बुध के बाद तथा मंगल, गुरु तथा शनि के क्रमशः पहले पड़ता है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला ग्रह होने के कारण दोनों पार्श्वों से गुजरता है। आचार्यों ने पृथ्वी से गणना करने के कारण शुक्र, बुध तथा सूर्य को अन्दर की ओर तथा आन्तरिक व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला तथा मंगल, गुरु और शनि को वाह्य पार्श्व में तथा वाह्य व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला ग्रह माना है।

चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ दोनों पार्श्वों से गुजरता है। यही कारण है मन का प्रतीक यह ग्रह दोनों व्यक्तियों को प्रभावित करता है। आचार्य नेमि चन्द्र शास्त्री ने अपनी पुस्तक भारयीय ज्योतिष में इसका बड़ा तर्क पूर्ण विवेचन किया है। पर मेरा मत उनसे कुछ भिन्न है। मैं सूर्य को आन्तरिक सत्य तथा आत्मा का स्वरूप तथा शनि को वाह्य या लौकिक-सत्य दुःख तथा मृत्यु का प्रतीक, बुध को आंतरिक ज्ञान (गणित) तथा वृहस्पति या गुरु को वाह्य या सांसारिक ज्ञान अर्थात धर्म तथा न्याय का प्रतीक, शुक्र को आन्तरिक आनन्द (योग तथा प्रेम) का प्रतीक तथा मंगल को वाह्य आनन्द के स्रोत शरीर की पुष्टता का प्रतीक तथा चन्द्र को मानव मन के प्रतीक ग्रह के रुप में मानता हूँ। यह कल्पना सत्य के अधिक निकट दिखाई पड़ती है। इस तरह आन्तरिक तथा वाह्य क्षेत्र में तीन तीन ग्रह सूर्य, बुध, शुक्र, तथा शनि, वृहस्पति और मंगल क्रमशः सत्, चिद्,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा आनन्द का प्रतिनिधित्व कर आन्तरिक तथा वाह्य या भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन में सच्चिदानन्द का मूर्त स्वरूप प्रगट करते हैं तथा मन का प्रतीक चन्द्रमा क्रमशः दोनों दृष्टियों से जातक या व्यक्ति को प्रभावित करता हैं, जो एक शाश्वत सत्य है।

आचार्य वाराह मिहिर ने शरीर चक्र को ही ग्रह कक्षावृत के रूप में चित्रित किया है। शरीर के ही द्वादश भाग करके प्रत्येक को एक राशि की संज्ञा दी है। मेष को मस्तक, वृष को मुख, मिथुन को वक्षस्थल, कर्क को हृदय, सिंह को उदर, कन्या को कटि, तुला को वस्ति, वृश्चिक को लिंग, धन को जंघा, मकर को घुटना, कुंभ को पिण्डली, मीन को पैर कल्पित किया गया है। इसी प्रकार सूर्य को आत्मा, चन्द्रमा को मन, मंगल को धैर्य, बुध को वाणी, गुरु को विवेक, शुक्र को वीर्य तथा शनि को संवेदन की संज्ञा दी गई है। इतना ही नहीं अश्वि-न्यादि सत्ताइस नक्षत्रों का भी काल पुरुष के अंग में न्यास का वड़ा सुन्दर वर्णन वाराह संहिता में मिलता है। वाराह मिहिर द्वारा काल पुरुष की इस कल्पना का आधार ऋषियों का आध्यात्मिक ज्ञान तथा मूल उद्देश्य ज्योतिषज्ञान को व्यावहारिक बनाना है। काल ही पुरुष या ब्रह्म का प्रतीक है। प्रकृति तथा पुरुष के संयोग से उत्पन्न स्थावर जंगम पर विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न प्रभावों के कारण स्वभाव तथा प्रभाव का वैचित्र्य दृष्टिगोचर होता है।

ज्योतिर्विदों के मतानुसार मानव जिस प्रकार की नक्षत्र ग्रहादि की स्थिति के प्रभाव में जन्म लेता है तथा जैसे वातावरण में पलता है उसमें तदनुरूप तत्वों की वहुलता होती है। यही कारण है एक ही समय में जगत के विभिन्न भागों में भिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न तथा भिन्न वातावरण में पले लोगों में केवल आकृति व स्वभाव का वैषम्य ही नहीं भाग्य में भी भिन्नता देखने को मिलती है। भारतीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण से पूर्व-कृत कर्म ही किसी व्यक्ति का दैव होता है। अर्जित संस्कार ही मनुष्य के हानि-लाभ जीवन-मरण तथा यश, अपयश के कारण होते हैं। पर यह भी निर्विवाद सत्य है कि संस्कारों का अर्जन नित्य प्रति होता रहता है तथा पूर्व संचित संस्कारों को भी वर्तमान से प्रभावित होना पड़ता है। आप यह कह सकते हैं कि आपका 'दैव' आप स्वयं हैं। आप स्वयं अपने भाग्य की रचना करते आये हैं, कर रहे हैं तथा करते रहेंगे।

लोक व्यवहार को दृष्टि में रखकर ज्योतिष के दो क्रियात्मक सिद्धान्त बताये गये हैं–गणित और फलित। गणित ज्योतिष के अन्तर्गत शुद्ध गणित के अतिरिक्त, कारण, तंत्र तथा सिद्धान्त का भी समावेश मिलता है। फलित में जातक, ताजिक, मुहूर्त, प्रश्न एवं शकुन की चर्चा की गई है। यद्यपि भारतीय ज्योतिष का रहस्य समझने के लिए गणित ज्योतिष का ज्ञान आवश्यक है तथापि सर्व साधारण के लिए उसकी विशेष आवश्यकता नहीं समझनी चाहिये, क्योंकि विद्वानों द्वारा निर्मित प्रामाणिक पंचाँगों द्वारा सर्व-साधारण उस अभाव की पूर्ति कर सकते हैं। पर फलित ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त करने के पहले पंचांग देखने की विधि तथा उसके मुख्य उपकरणों का ज्ञान आवश्यक हो जाता है।

भारतीय पंचाँग भी ईसवी सन् के ग्रेगोरियन केलन्डर की भांति भारतीय आधार पर वार, तिथि, नक्षत्र, करण तथा योग आदि का विवरण देते हैं। इनमें प्रत्येक दिन का दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि भी दिये जाते हैं। प्रत्येक पंचाँग में पंचाँग देखने की विधि तथा तद्‌विषयक जानकारी भी दी हुई रहती है। ज्योतिष-शास्त्र में तिथियों की गणना शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से आरम्भ होती है। चन्द्र और सूर्य के एक दिन भ्रमण में करीब वारह अंश का अन्तर होता है। इनमें जो समय लगता है उसे ही एक तिथि की संज्ञा दी जाती है। सूर्य और चन्द्र का जब एक दूसरे से १८०° पर होते हैं तब पूर्णिमा तथा जब पुनः एक राशि पर होते हैं तो अमावस्या होती है। एक अमावस्या से दूसरी अमा-वस्या तक चन्द्र के पहुंचने में करीब साढ़े उन्तीस दिन लगते हैं जिसे एक चान्द्रमास कहा जाता है। चान्द्र मास का चैत्र, वैसाख आदि नामकरण, नक्षत्र विशेष में चन्द्रमा की पूर्णिमा के दिन स्थिति के अनुसार किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे चैत्र की पूर्णिमा को चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में, वैशाख की पूर्णिमा को विशाखा में, ज्येष्ठ को ज्येष्ठा में, आषाढ़ को पूर्वा या उत्तराषाढ़ में, सावन को श्रवण में भाद्र को पूर्वा या उत्तरा भाद्र में आश्विन को अश्विनी में, कार्तिक को कृतिका में, अगहन या मार्गशीर्ष को मृगशिरा में, पूस को पुष्य में, माघ को मघा में तथा फाल्गुन पूर्णिमा को पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों में संचार करता दिखाई पड़ता है।

आकाश में फैले असंख्य स्थिर तारों का जो समुदाय दिखाई पड़ता है उनमें से कुछ समुदायों का उपयोग आचार्यों ने इस विस्तृत आकाश की नाप के लिए किया है। सारे आकाश को २७ भागों में विभक्त कर प्रत्येक विभाग को एक नक्षत्र विशेष के नाम पर अंकित किया गया हैं। इस प्रकार हर राशि में सवा दो नक्षत्र आते हैं। फलित ज्योतिष में इन नक्षत्रों का बड़ा व्यापक उपयोग किया गया है। ग्रहों की स्थिति जानने से लेकर मनुष्य के भाग्य ज्ञान तक में इन नक्षत्रों ही उपयोग होता है। फलित ज्योतिष के ज्ञान के लिए इन नक्षत्रों का नाम स्मरण रखना आवश्यक है। नक्षत्रों की भाँति योगों की संख्या भी सत्ताईस होती है। तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। करणों की संख्या ११ होती है। ७ करण चर संज्ञक होते हैं तथा ४ स्थिर संज्ञक होते हैं।

आकाश स्थित ग्रह कक्षावृत के ३६० अंशों को २७ नक्षत्रों तथा बारह राशियों में विभाजित कर आचार्यों ने राशियों के स्वरूप भी स्थिर किये हैं। स्वरूप के अनुसार ही राशियों के वर्ण, तत्व, दिशा, प्रकृति तथा स्वभाव आदि भी निश्चित किये गये हैं प्रत्येक राशि में जन्म लेने वाले व्यक्ति का स्वभाव आदि भी प्राय: राशि के समान ही होता है। आचार्यों द्वारा वर्णित यह स्वरूप तथा स्वभाव आदि का विवेचन सर्वथा मनोवैज्ञानिक आधार पर ही किया गया है।

राशियों के निर्धारण के बाद राशियों का स्वामित्व भी बड़े वैज्ञानिक ढंग से निश्चित किया गया है। होरा शास्त्र के अनुरुप दिन को रात्रि तथा दिन दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में राजनैतिक आधार पर राजा, युवराज, मंत्री, सेनापति, पुरोहित तथा सेवक की भी कल्पना की गई है। दोनों भागों के एक एक अधिपति होने के कारण सूर्य तथा चन्द्रमा को केवल एक-एक राशियों का स्वामित्व प्रदान किया गया है। पर अन्य ग्रहों का क्षेत्र दोनों होरापतियों के क्षेत्र में समान रूप से पड़ने के कारण उन्हें प्रत्येक क्षेत्र की एक राशि का स्वामित्व दिया गया है। निम्नांकित चित्र से उपरोक्त तथ्यों का और स्पष्टीकरण होता है :—

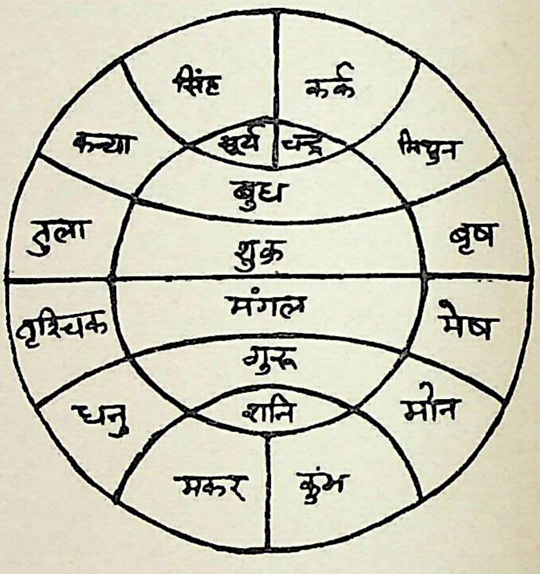

चन्द्रमा जितने दिनों में पृथ्वी की एक परिक्रमा करता है उसे एक चान्द्रमास कहा जाता है। साधारणतया बारह चान्द्र मास का एक वर्ष होता है। पृथ्वी सौर की एक परिक्रमा ३६५ दिनों में पूर्ण करती है। इसलिए सौर वर्ष ३६५ $\frac{1}{4}$ दिनों का माना जाता है। पाश्चात्य विद्वान सौर वर्ष के अनुसार ही अपना पंचाँग निर्मित करते आये हैं। इसी कारण हर चौथे वर्ष को ३६६ दिन का मानकर वह अपनी गणना शुद्ध कर लेते हैं। पर चन्द्र वर्ष के ३५४$\frac{1}{2}$ दिनों का ही होने के कारण हर तीसरे वर्ष भारतीय पंचाँगों में अधिक मास की व्यवस्था है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा के साथ-साथ अपनी धुरी पर भी चौबीस घण्टों में परिक्रमा पूरी करती रहती है। जिसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फलस्वरूप दिन और रात होते हैं। पृथ्वी का हर भाग भी इसी कारण बारह राशि चक्रों में विभाजित किया गया है। फलतः बारह राशियों का यह चक्र दिन रात के २४ घण्टों में भी एक बार घूम जाता है। इसी सूक्ष्म विवेचन के अनुसार प्रति दिन बारहों राशियों का उदय अस्त लग्नों के रूप में ज्योतिष शास्त्र में माना गया है। जन्म पत्र में लग्न का महत्व राशि के महत्व से अधिक सूक्ष्म माना गया है। उदाहरणार्थ सूर्य नक्षत्र कक्षा की जिस राशि में जिस समय स्थित होता है उसी लग्न में उसका उदय तथा उससे सातवीं लग्न में अस्त होता है। अतः स्पष्ट है जन्म समय पृथ्वी का जो अंश सूर्य के सामने होता है उसे लग्न तथा जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो उसे आपकी राशि कहते हैं। स्थूल रूप से लग्न तथा राशि के आधार पर ग्रहों का स्थूल वर्णित फल आज कल किसी भी समाचार पत्र के एक आकर्षक कालम के रूप में आप देख सकते हैं।

जन्म पत्र के सूक्ष्म विवेचन में लग्न का विशेष महत्व माना जाता है। लग्न स्थित ग्रह में जो बलवान हो उसी के अनुरूप उस समय जन्म लेने वाले का रूप तथा स्वाभाव होता है। लग्न के भी अंशात्मक आधार पर विश्लेषण कर के प्रत्येक अंश को पुनः अनेक भागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार होरा (दो) द्रेष्काण (तीन) सप्तमांश (७) नवमांस (९) दशमांस (१०) द्वादशांश (१२) त्रिशांश (३०) तथा षष्ठ्यंश चक्र भी विषद विवेचन के लिये बनाये गये हैं। हर चक्र का अपना अलग महत्व है। उदाहरणार्थ द्रेष्काण से बन्धुबान्धव, सप्तमांश से पुत्र पौत्रादि नवांश से स्त्री सुख आदि का विवेचन करने का निर्देश मिलता है।

ग्रहों के आपस में मित्र, सम तथा शत्रु भाव की भी कल्पना आचार्यों ने की है। उनकी दीप्त, मुदित, स्वस्थ, विकल, दैन्य आदि अवस्थायें भी स्थिति के अनुसार बताई गई हैं। स्पष्ट है कि ज्योतिष में सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलों का ज्ञान केवल जन्म चक्र से ही नहीं अपितु सूक्ष्म गणित द्वारा प्राप्त करने की व्यवस्था दी गई है। जन्म चक्र तो केवल जन्म कालिक आकाश दर्शन का प्रतिबिम्ब माना जाता है। प्रसंग विशेष के विस्तृत ज्ञान के लिये उसका विस्तृत विवेचन आवश्यक है। फिर भी स्थूल फल तो किसी भी समय साधारण ज्ञान के आधार पर आप जन्म चक्र से ही जान सकते हैं।

लग्न किसी भी राशि विशेष में क्यों न हो उसे प्रथम या तनु भाव की संज्ञा दी गई है। इसी प्रकार द्वितीय यादि द्वादश भावों को भिन्न-भिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है। भावों के अनुरूप फलों का ज्ञान भी भावों के विवेचन से ही होता है। भाव स्थित ग्रह, भावेश, भाव का कारक तथा अन्य ग्रहों की स्थिति के अध्ययन से आप भाव विशेष के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक भाव का नाक्षत्रिक, मानसिक तथा भौतिक प्रभाव आपके वाह्य तथा आन्तरिक व्यक्तित्व पर पड़कर भाव सम्बन्धी आपके विचार अनुभव और क्रिया को प्रभावित करता है। विषय इतना विस्तृत है कि प्रत्येक अंग पर एक ग्रंथ रचना हो सकती है। प्राचीन तथा अर्वाचीन आचार्यों द्वारा लिखा गया पर्याप्त साहित्य भी इन विषयों पर उपलब्ध है। जो किसी भी जिज्ञासु की पिपासा को शान्त कर सकता है। लग्न भाव और विविध भावों में ग्रह स्थिति की भिन्नता के आधार पर ही फलों का वैचित्र्य देखने को मिलता है। लग्न, भाव तथा ग्रहों के अंश निश्चित करने के लिये पंचाँग तथा अंकगणित का साधारण ज्ञान प्रर्याप्त है।

मनुष्य के भाग्य आकलन के लिये केवल ग्रह फल ही नहीं ग्रहों के फल प्राप्ति के समय का ज्ञान भी आवश्यक है। ग्रहों की दशा का समय जानने के लिये आचार्यों ने परिस्थितियों के अनुसार अनेक दशाओं का वर्णन किया है। पर भारत में मुख्यतया अष्टोत्तरी तथा विंशोत्तरी दशाओं द्वारा ग्रह फल जानने का प्रचलन अधिक है। इनमें भी महर्षि पाराशर ने विंशोत्तरी दशा पद्धति को ही प्रधानता दी है। इसके लिये २७ नक्षत्रों को ९ ग्रहों में बाँटा गया है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष मानी गई है। इसे सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र का दशाकाल क्रमशः ६, १०, ७, १८, १६, १९, १७, ७ तथा २० वर्ष का माना गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। मनुष्य जिस नक्षत्र में चन्द्र की स्थिति के समय जन्म लेता है उसी क्रम से दशा चलती है। कृतिका नक्षत्र से आरम्भ कर सूर्यादि ग्रहों की दशायें उपरोक्त क्रम से चलती हैं। जन्म समय तक जन्म नक्षत्र का भुक्तपल "भयात" तथा पूर्ण नक्षत्र के मान को "भभोग" कहा गया है। जिस ग्रह की दशा में जन्म हो उसकी दशा वर्ष की संख्या में भयात का गुणाकर भभोग का भाग देने से लब्ध वर्षादि जन्म समय में दशा का भुक्तकाल तथा शेष दशां का भोग्य काल होता है। इसी प्रकार अनुपात से ग्रहों की दशा में अन्तर दशा, प्रत्यंतर दशा तथा सूक्ष्मादि दशा काल ज्ञात किये जाते हैं। जिस समय जिन ग्रहों की दशा, अन्तर दशा आदि होती है उन्हीं के अनुरूप तत्वों की प्रधानता मनुष्य के स्वरूप तथा स्वभाव में दिखाई पड़ती है।

भारतीय विद्वानों ने समय समय पर ज्योतिष के सिद्धान्तों में अनेक परिवर्तन तथा परिवर्धन शोधों के आधार पर किये हैं। इस शास्त्र का स्वयं का एक साहित्य बन गया है। भारतीय ज्योतिष का आधार सदा दार्शनिक ही रहा है आधुनिक युग की भौतिक विचार धारा से वस्तुतः प्राचीन सिद्धान्तों की संगति नहीं वैठती। यही कारण है आज चमत्कारवाद को ज्योतिष की संज्ञा दी जाती है और सच्चे अर्थों में ज्योतिष का परिहास किया जाता है।

ज्योतिष के मूल भूत सिद्धान्तों की अनभिज्ञता के कारण आज ज्योतिष के विषय में भ्रमात्मक कल्पनायें प्रचलित हैं। शिक्षित वर्ग जो पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में अब भारतीय दार्शनिक विवेचन से दूर भागता है तथा हर वस्तु को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने का ढोंग रचाता है, ज्योतिष को विज्ञान मानने से भी डरता है। कुछ नेताओं ने तो यह कहने में भी संकोच नहीं किया कि ज्योतिष का विज्ञान होना पूर्णतया प्रमाणित नहीं है। कुछ लोग इसे सार्वजनिक परिवेक्षण का भ्रम (Falacy of Common Observances) या अन्धविश्वास की संज्ञा देते हैं। भारतीय ऋषियों का तर्क सम्मत दार्शनिक विवेचन उन्हें शोध की वस्तु नहीं दिखाई पड़ता।

साधारण व्यक्ति का दैव में प्रवल विश्वास ज्योतिष को रहस्य के रूप में चित्रित कर देता है। आपने उन्हें तर्क से प्रभावित करने की चेष्टा की ओर वे कह उठते हैं :—

"हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ"

जीवन की हर असफलता का दोष विधि के सर मढ़ कर वे सन्तोष प्राप्त कर लेते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अपने भाग्य की रचना उन्होंने स्वयं की थी और वे अपने पूर्व संचित कर्मों का फल भोग रहे हैं। संत तुलसीदास ने कहा भी है :—

"काहु न कोऊ दुःख सुख कर दाता।
निजकृत कर्म भोग सब भ्राता"॥

ज्योतिष विज्ञान का अध्ययन करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि ज्योतिष का प्रयोजन आपको दर्शन के प्रभाव से भाग्य वादी एवं निराशावादी बनाना नहीं प्रत्युत भविष्य से अवगत कराकर कर्तव्यों द्वारा उसे अनुकूल बनाने के लिए प्रेरणा देना है। आपको यह नहीं भूलना चाहिये कि ग्रह फलाफल के नियामक नहीं सूचक होते हैं। वे दुःख सुख स्वयं नहीं देते केवल उनकी ओर संकेत करते हैं। ज्योतिष तर्क पर आधारित सहेतुक शास्त्र है। उसका उद्देश्य आपको कर्तव्य की प्रेरणा देकर कर्मठ तथा पुरुषार्थी बनाना है।

इसीलिए महर्षि पाराशर ने अपने ग्रंथ के उपसंहार में स्पष्ट रूप से उद्घोष किया है :—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी :
दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्तयां
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।

२/४६२ आजाद नगर
कानपुर॥ २०८००२॥

-:०:-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञान और धर्म

— वटुक राय

विज्ञान अनुभव के आधार पर सत्य को स्वीकार करता है पर धर्म सदा से विश्वास के माध्यम से सत्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहा है।

विख्यात अणु वैज्ञानिक अलबर्ट आएंस्टीन ने कहा है, "मैं ईश्वर को मानता हूं। इस ससार की व्यवस्था और सम्पूर्ण सृष्टि की रागात्मक संश्लिष्टता में ईश्वर अपने को व्यक्त करता है। मैं मानता हूं कि सम्पूर्ण प्रकृति में ईश्वर की चेतना कार्य कर रही हैं। विज्ञान के काम की नींव अब इसी तथ्य पर आधारित है कि यह संसार आकस्मिक रूप से यों ही नहीं उत्पन्न हो गया; बल्कि इसमें एक क्रम है, सार्थकता है जिसे विज्ञान से समझा जा सकता है।"

जब विज्ञान ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है, तो वह धर्म के निकट आ जाता है; चूंकि दोनों ही सत्यान्वेषी हैं और दोनों का ही कार्य उसकी सृष्टि को समझना है, फलस्वरूप दोनों में सामंजस्य उत्पन्न हो जाता है। सच्चे धर्म और सच्चे विज्ञान में कोई विरोध नहीं है। विरोध है दोनों के विकृत स्वरूपों में। इसके विपरीत दूसरी विचार धारा के लोगों का मत यह है कि विज्ञान और धर्म दोनों एक दूसरे से पूर्णत: भिन्न हैं। विज्ञान विशुद्ध तर्क पर आश्रित है और धर्म विशुद्ध विश्वास पर। सत्यान्वेषण के लिये विज्ञान प्रायोगिक पद्धति का प्रयोग करता है, जब कि धर्म आन्तरिक अनुभव पद्धति अपनाता है। विज्ञान प्रत्यक्ष प्रभाव को महत्व देता है, जब कि धर्म विश्वास को।

कुछ लोगों की मान्यता है कि धर्म, विज्ञान की तुलना में उच्चतर सत्य है। ऐसी स्थित में जब विज्ञान धर्म द्वारा प्रतिपादित तथ्यों की जाँच करके उन्हें दूसरे रूप में प्रस्तुत करता है तो संघर्ष उत्पन्न होता है। उदाहरणार्थ धर्म कहता है कि मनुष्य को ईश्वर ने बनाया है और विज्ञान बताता है कि बन्दर से विकसित होकर मनुष्य बना है। इस कथन से धर्म के प्राचीन प्रतिष्ठित सिद्धान्त उखड़ने लगते हैं, जिससे सघर्ष का जन्म होता है। जिन समाजों के जीवन के समस्त पक्षों पर धर्म छाया रहता है उनमें विज्ञान को धर्म के अत्यधिक विरोध का सामना करना पड़ता है, जिससे उन समाजों में विज्ञान के स्वाभाविक विकास में बाधा पड़ती है। कुछ व्यक्ति यह भी कहते हैं कि धर्म का सत्य विज्ञान के सत्य से भिन्न होता है, किन्तु ऐसी तटस्थ स्थिति कम ही बन पाती है।

मध्यकाल में धर्म का इतना विस्तार हुआ कि यह व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक एवं जीवन के प्रत्येक पक्ष पर छा सा गया। समाज की बागडोर पण्डों पुजारियों और मुल्लाओं के हाथों में चली गयी। समाज, राजनीति, शिक्षा, साहित्य, कला सभी धर्म से आतंकित थे। पाखण्ड और धार्मिक अंध-विश्वास का एकक्षत्र साम्राज्य था। विज्ञान ने इन सबका विनाश किया। विज्ञान ने ही धर्म निरपेक्षता को जन्म दिया। आज प्रचीन मूल्यों और मान्यताओं एवं अपने स्वरूप को धर्म बदल चुका है और विज्ञान उसके वास्तविक स्वरूप और आत्मा के उद्घाटन के लिये सतत् प्रयत्नशील है।

पिछली दो शताब्दियों में विज्ञान ने असाधारण सफलता पायी है। इसने अनेक धार्मिक परम्पराओं और अन्ध-विश्वासों का भण्डाफोड़ किया है। इस सफलता से गर्वित होकर बहुत से वैज्ञानिक यह कहने लगे हैं कि विज्ञान ही अन्तिम सत्य का उद्घाटन कर सकता है। ईश्वर कुछ नहीं है सब कुछ प्रकृति है जिसे विज्ञान बड़ी तेजी से समझ रहा है। शीघ्र ही उसके लिये कुछ भी रहस्यात्मक नहीं रह जायेगा। विज्ञान की यह गर्वोक्ति ही धर्म के पैर उखाड़ने लगती है।

उक्त विचारधारा के समर्थकों का एक वर्ग ऐसा भी है जो धर्म का सदैव विरोध न करके केवल वहीं विरोध करता है जहाँ कि धर्म और विज्ञान में संघर्ष होता है और वे भिन्न मत प्रकट करने लगते है। उनका मत है कि धर्म को चाहिये कि वह विज्ञान के प्रकाश में स्वयम् को सुधारे तथा अपनी रूढ़ियों और मिथ्या धारणाओं को त्याग दे और समय के अनुसार अपने को ढाले। ऐसी स्थिति में धर्म और विज्ञान में तनाव कुछ कम हो सकता है।

आज़ विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर तो अवश्य पहुँच गया है किन्तु उसकी अधिकांश उपलब्धियों ने मानवता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और विश्व-शांति के लिये भयानक खतरा उत्पन्न कर दिया है। आज का प्रत्येक व्यक्ति यह खूब अच्छी प्रकार समझता है कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग का क्या नतीजा होना है। विश्व के दो महान विद्वानों के विचार देखिए। पिटरिम सोरोकिन कहते हैं, "नैतिक और सामाजिक दृष्टि से जिम्मेदार विज्ञान, जो जगन्नियन्ता ईश्वर की सेवा में लगा हो, शांति प्रदान कर सकता है"– विश्व के महान विचारक बर्ट्रेण्ड रसेल ने कहा है–

"संसार की वर्तमान स्थिति और अणुयुद्ध का खतरा यह प्रमाणित करता है कि वैज्ञानिक-प्रगति बिना किसी तत्सम्बन्धी धर्माचरण तथा राजनैतिक प्रगति के आज उस विकराल काल की विभीषिका को और भी प्रचण्ड बना सकती है।"

स्पष्ट है कि विज्ञान को धर्म याद आ रहा है, वह धर्म की मान्यताओं को अन्ततः स्वीकार कर रहा हैं। यह अनुभव किया जा रहा है, कि विज्ञान धर्म से पृथक होकर नहीं चल सकता है।

धर्म ने विज्ञान को अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित किया है। उसने विज्ञान को एक प्रकार से प्रतियोगिता की भावना दी है। धर्म ने प्राकृतिक रहस्यों के सम्बन्ध में जो मत प्रस्तुत किये वे बुद्धिवादियों में अविश्वास उत्पन्न करते थे जिससे उन्हें प्राकृतिक रहस्यों का उद्घाटन करने की प्रेरणा प्राप्त हुयी। उन्होंने अपने ढंग से प्रकृति के रहस्यों का अध्ययन किया और संतोषजनक निष्कर्ष निकालने में सफल हुये। इस सफलता ने उन्हें और आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया है। ठीक इसी प्रकार विज्ञान में कट्टरवादिता अथवा हठवादिता का तत्व भी धर्म की ही देन है।

धर्म ने विज्ञान को प्रत्यक्ष रूप से भी प्रभावित किया है। विज्ञान अपने अब तक के सतत प्रयत्न के बाद भी यह प्रमाणित नहीं कर सका है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। तेजी से बढ़ते हुए विज्ञान के चरण यहीं पर आकर ठिठक जाते हैं और उसे धर्म की बात स्वीकार करनी पड़ती है। इंगलैंड की रायल सोसायटी के सेक्रेटरी सर जेम्सजींस ने कहा है कि "पहले हम जड़ भौतिकता को ही वास्तविक वस्तु समझते थे। अब अनुभव होता है कि बात एकदम विपरीत है। ऐसा प्रतीत होता है कि मन या आत्मा ही भौतिकता की सृष्टि करती है। आत्मा से मेरा आशय उस महान सर्वव्यापी आत्मा से है जिसके विचार-कणों से हमारी पृथक्-पृथक् आत्मायें बनती हैं।" स्पष्ट है कि जेम्सजींस महोदय ने ईश्वर के अस्तित्व का समर्थन किया है।

सर ए० एस० एडिंगटन के मतानुसार—"हम आज इस निष्कर्ष पर पहुंच गये हैं कि कोई अज्ञात शक्ति कार्य कर रही है, और हम यह नहीं जानते कि वह क्या कर रही है। आजकल के विज्ञान में निर्जीव भौतिकता का विचार समाप्तप्राय होता जा रहा है। अब हमारे अनुभवों में सर्वप्रथम मन या आत्मा आती है। मेरे विचार से चैतन्यता आधारभूत वस्तु है, भौतिकता इसी चेतना से उत्पन्न हुयी हैं।"

धर्म ने विज्ञान को ही प्रभावित नहीं किया वरन् स्वयं भी उससे प्रभावित हुआ है। विज्ञान ने धार्मिक अंधविश्वासों मिथ्या मान्यताओं, खोखले रिवाजों एवं पाखण्डों को समूल उखाड़ फेंका है। अबतक जिन घटनाओं को ईश्वरीय चमत्कार माना जाता था उन्हें विशुद्ध प्राकृतिक माना जाने लगा है। अब महामारियों को 'माता माई का कोप' और भूकम्प को 'प्रभु की चेतावनी' नहीं माना जाता है। अब हम नही मानते कि जादूगरनियाँ भूत प्रेतों से सम्पर्क रखती हैं। यद्यपि गिरजों और देवालयों में बहुत से व्यक्ति प्रार्थना करने जाते हैं फिर भी उनमें से कुछ थोड़े से ही व्यक्तियों को इसमें विश्वास होता है कि ईश्वर ऋतुओं का स्वामी है। हमें यह भी विदित है कि नरक नाम की कोई जगह नहीं है और स्वर्ग भी कहीं अन्यत्र नहीं है, यहीं है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि धर्म और विज्ञान में रूढ़ियों और अंधविश्वासों को लेकर दीर्घकाल से संघर्ष होता चला आ रहा था। विज्ञान ने अपने प्रायोगिक और प्रत्यक्ष प्रमाणों से बता दिया है कि, धार्मिक मान्यताओं में किस सीमा तक वास्तविकता है अतएव धर्म ने विज्ञान के सुझावों के अनुसार स्वयं को संशोधित और परिवर्तित कर लिया है। फिर भी ऐसी अनेक बातें हैं जो विज्ञान की पहुंच से बाहर हैं अतएव ऐसी परिस्थिति में धर्म ही सहायता करता है। इसलिये विज्ञान के विरोध के बाद भी धर्म का लोप नहीं हुआ है, और आज भी उसका महत्वपूर्ण स्थान समाज में पूर्ववत् है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहले धर्म वैयक्तिक मुक्ति का साधन था किन्तु अब उसका उपयोग समाज के कल्याण के लिये होने लगा है। प्रोटेस्टेंट और आर्य-समाज जैसी विचारधाराओं ने धर्म का जो लक्ष्य निर्धारित किया है वह हमारे मत की भली भाँति पुष्टि करता है। जहाँ पर सत्य और शिव आपस में मिलते हैं वहाँ सौन्दर्य स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। भविष्य में ऐसी परिस्थियाँ उत्पन्न होंगी जब विज्ञान एवम् धर्म परस्पर सहयोग तथा सामञ्जस्य स्थापित कर सकेंगे और तभी विश्व एवं मानवता का कल्याण हो सकेगा, उनकी रक्षा हो सकेगी। ईश्वर करे वह दिन शीघ्र आये जब विज्ञान और धर्म के समन्वय से निम्न कथन सत्य हो—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माकश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

८२/११ गोविन्द नगर ब्लाक नं० ६ कानपुर।

—: ०◯० :—

छपते-छपते

(प्राप्त प्रतिक्रियायें)

ब्रह्मर्षि समाज कानपुर के मुखपत्र "ब्रह्मर्षि-सन्देश" का "दिनकर स्मृति अंक" मिला। धन्यबाद। बहुत ही बढ़िया लगा। दिनकर जी के साथ ही इस अंक में उस समाज की भी गौरवगाथा पर्याप्त है जिसमें दिनकर जी जन्मे थे।

आपने व्यापक रूप से सकीर्ण दायरों से निकल कर समाज के कई घटकों को जोड़कर संस्था के रूप में "ब्रह्मर्षि-समाज" का जो गठन किया है, यह बहुत ही स्तुत्य कार्य है।

अंक पठनीय सामग्री से भरपूर है, इसलिए संग्रहणीय बन गया हैं। मेरी शुभकानायें स्वीकार करें।

भारतीय विद्याभवन
मुंशी सदन, कुलपति मुंशी मार्ग
वम्बई। ४०००७. ॥

गिरिजा शंकर त्रिवेदी
सम्पादक,
"नवनीत हिन्दीडाइजेस्ट"

ब्रह्मर्षि सन्देश का "दिनकर स्मृति अंक" प्रथम प्रयास होते हुये भी हर प्रकार से सफल है। समाज सुधार के लिये किसी न किसी महापुरुष के नाम से सम्बद्ध कर प्रकाशन में व्यापकता का समावेश किया जा सकता है। अच्छा हो, उत्तर प्रदेश तथा बिहार के बाहर के भी गणमान्य महापुरुषों यथा तिलक, रानाडे, देसाई तथा जगत्गुरु शंकराचार्य आदि के स्मृति-अंक-प्रकाशन से कार्यक्षेत्र व्यापक बनाया जाय। पत्रिका में जहाँ समाजोत्थान संबन्धी लेखों को प्रधानता दी जाय वहीं कुछ ऐसी सामग्री का भी समावेश किया जाय जिससे यह न प्रतीत हो कि हम राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि आप स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृति अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। स्वामी जी मात्र संत ही नहीं थे, अपितु एक सफल जननायक, भविष्य द्रष्टा तथा युग पुरुष थे। उन्होंने समाज को सोते से जगाया तथा उसमें चेतना का संचार किया। आशा है पत्रिका ससाज के सभी वर्गों में नवं चेतना का संचार करने में सफल एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

वी १/१० प्रशान्त पुरी,
मकबूल आलमरोड,
वाराणसी। २२१००२ ॥

डा० वैजनाथ सिंह
भू० पू० सदस्य मा० शि०-परिषद्, उ० प्र०
एवं अध्यक्ष, भूमेश्वर समाज, वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उभरती प्रतिभायें

(कुमारी रेनू राय)

(कुमारी रेनू राय)
गणतंत्र दिवस
२६ जनवरी १९८६ को
प्राप्त पुरस्कार
--०--

सुपुत्री श्री जय ठाकुर राय	छात्रा--कक्षा १०
चार्जमैन ग्रेड I	आर्डिनेन्स फैक्टरी इन्टर कालेज
आर्डिनेन्स फैक्टरी,	अर्मापुर – इस्टेट
अर्मापुर इस्टेट, कानपुर	कानपुर। उ० प्र०॥

१. सर्वोत्तम महिला एन० सी० सी कैडेट के लिये राष्ट्र-पति द्वारा प्रदत्त एक हजार रुपये का नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र।
२. सांस्कृतिक कार्यक्रम संबंधी प्रधान-मंत्री स्वर्ण पदक तथा चाँदी का बाउल।
३. उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त रजत पदक तथा दो सौ पचास रुपये का नकद पुरस्कार।

महान दार्शनिक एवं लेखक डा० सैमुअल जान्सन ने ठीक ही कहा है, 'सच्ची प्रतिभा है विशाल सामान्य शक्तियों से सम्पन्न वह मन से जो अनायास किसी खास दिशा में बढ़ने के लिये कृत संकल्प होता है।"

कानपुर आर्डिनेन्स फैक्ट्री में चार्ज मैन, ग्रेड I के पद पर कार्यरत श्री जय ठाकुर राय की द्वितीय संतान कुमारी रेनू बचपन से भारतीय शास्त्रीय नृत्य तथा कला में रुचि लेती रही है। विद्याध्ययनके साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए कृत संकल्प वह अपने शिक्षा संस्थान का प्रतिनिधित्व करती रही। एन. सी. सी की महिला कैडेटों में अपनी प्रतिभा के कारण वह वर्ष १९८६ के गणतंत्रदिवस समारोह दिल्ली में भाग लेने के लिये उत्तर प्रदेश से चुनी गई तथा अपने प्रथम प्रयास में ही उपरोक्त पुरस्कार पाने में सफल रही है।

कक्षा १० की इस पन्द्रह वर्षीया छात्रा ने अपने कला पूर्ण सुन्दर एवं उत्कृष्ट सांस्कृतिक प्रदर्शन से एक साथ तीन श्रेष्ठता पुरस्कार जीतकर न केवल अपने माता, पिता, पैत्रिक ग्राम तथा प्रदेश को गौरवान्वित किया है अपितु पूरे ब्रह्मर्षि समाज का गौरव बढ़ाया है। उक्त पुरस्कार इस प्रतिभा सम्पन्न छात्रा की कला और संस्कृति के प्रति समर्पण के साथ साथ उसके उज्वल भविष्य की संभावनाओं के भी प्रतीक हैं।

हम ब्रह्मर्षि समाज तथा ब्रह्मर्षि-संदेश परिवार की ओर से छात्रा के माता पिता को बधाई तथा उसके उज्वल भविष्य के लिये शुभकामनायें व्यक्त कर आशा करते हैं कि वह सफलता के नित्य प्रति नये कीर्तिमान स्थापित करेगी।

> जो आदमी के बस में हो, वह क्षमता है, जिसके बस में आदमी हो, वह प्रतिभा है। "जेम्स लावेल"
>
> साधारण वस्तु अपने से ऊँची किसी वस्तु का पता नहीं रखती, लेकिन प्रतिभावान को प्रतिभा झट पहचान लेती है। "आर्थर को. डायल"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(सदस्यता प्रपत्र एवं नव सदस्य सूची)

ब्रह्मर्षि-सन्देश

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर

परिशिष्ट
समाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ब्रह्मर्षि सन्देश" "परिचयांक" विमोचन के कुछ दृश्य

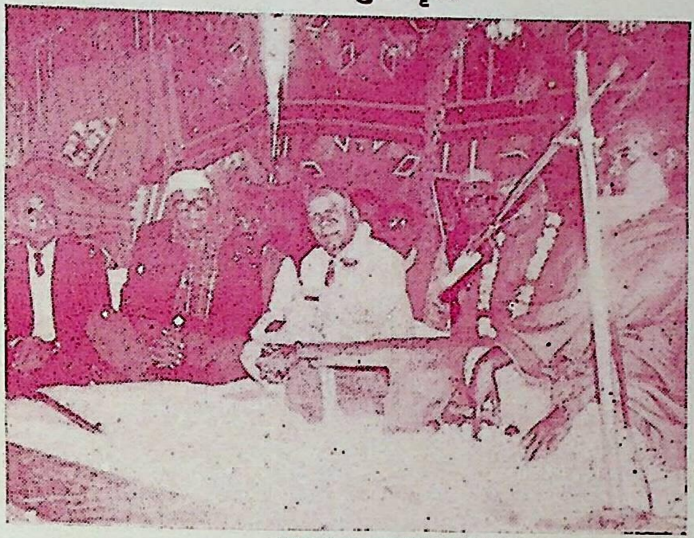

ब्रह्मर्षि-सन्देश परिचयांक "दिनकर-स्मृति अंक" के विमोचन अवसर पर स्वागत भाषण करते हुए डा० शौनक ब्रह्मचारी तथा मंच पर आसीन मुख्य अतिथि डा० रामकर्ण शर्मा तथा अन्य गणमान्य सदस्य ।

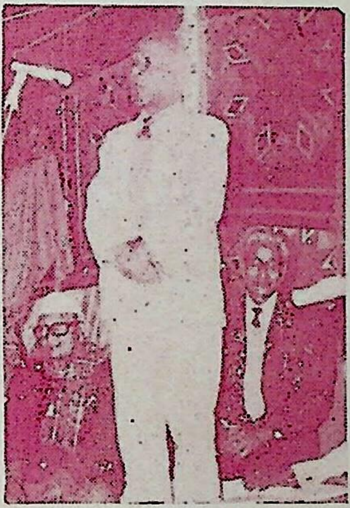

मुख्य अतिथि डा० रामकर्ण शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी सभा में भाषण करते हुये पीछे बैठे दिखाई पड़ रहे हैं प्रधान सम्पादक श्री वी० वी० सिंह, श्री राजकुमार सिंह तथा समाज के महामन्त्री श्रीरामजी राय ।

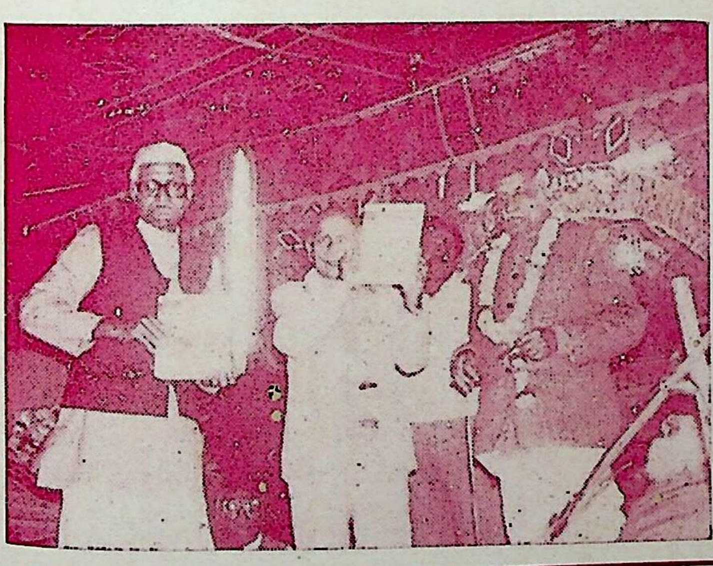

ब्रह्मर्षि-सन्देश के परिचयांक के विमोचन अवसर पर बायें से श्री चन्द्रभान त्यागी भूतपूर्व अध्यक्ष ब्रह्मर्षि समाज कानपुर, विमोचन कर्ता डा० रामकर्ण शर्मा कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी तथा तात्कालिक मंच के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नारायण सिंह भू० पू० न्यायाधीश इलाहाबाद उच्च न्यायालय ।

(छायांकन-अरुण कुमार सिंह के सौजन्य से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समाज, कानपुर
के (१९ जनवरी १९८६ को सम्पन्न त्रय वार्षिक चुनाव के दृश्य)

सभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री राज कुमार सिंह को माल्यार्पण करते भू० पू० अध्यक्ष श्री चन्द्रभान त्यागी, पृष्ठभूमि में बायें से क्षेत्रीय प्रतिनिधि सर्वश्री अश्विनी कुमार, विश्राम सिंह तथा महामंत्री श्री रामजी राय।

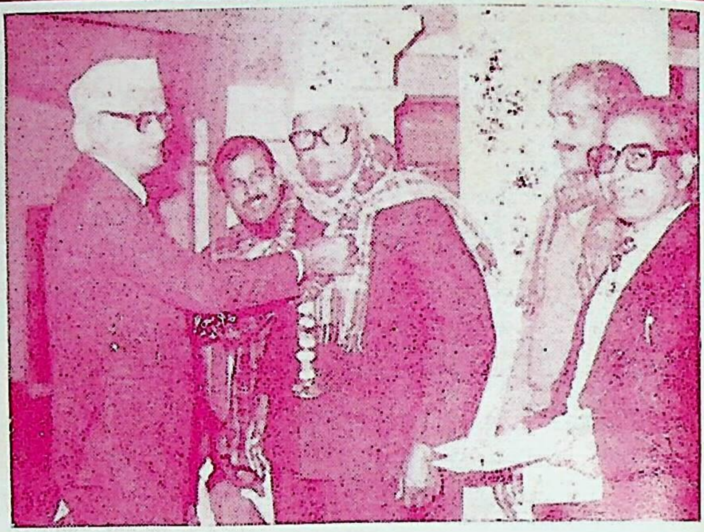

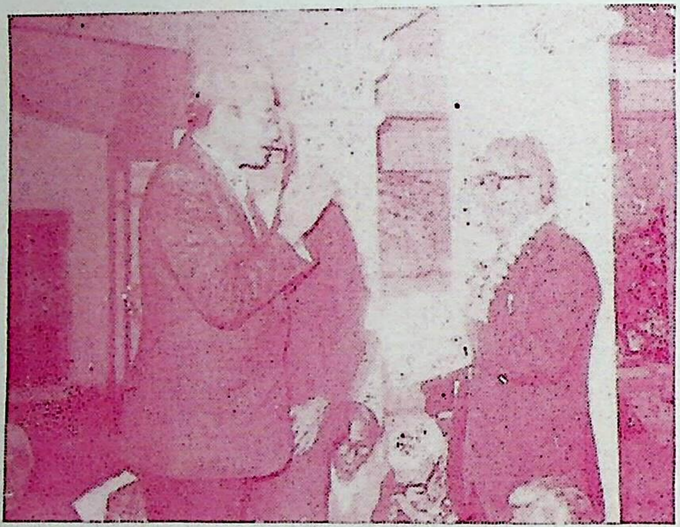

नव निर्वाचित समाज के महामंत्री श्री रामजी राय को माल्यार्पण करते हुये श्री बी० बी० सिंह प्रधान सम्पादक 'ब्रह्मर्षि सन्देश'

दीवान बी० पी० दत्ता, संरक्षक ब्रह्मर्षि समाज कानपुर श्री बी० बी० सिंह प्रधान सम्पादक 'ब्रह्मर्षि सन्देश' को सम्मानित कर माल्यार्पण करते हुये।

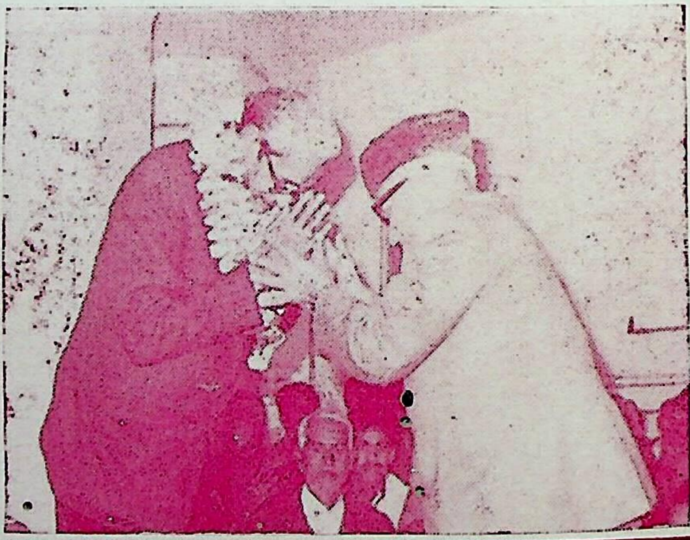

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नव आजीवन सदस्य सूची

नं०	नाम व व्यापार	स्थायी पता	स्थानीय पता
१	अनिल कुमार राय गन फैक्ट्री, कानपुर।	ग्राम पोस्ट–चौकी तहसील-लालगंज जिला आजमगढ़	१२७/११ विजय नगर कालोनी विजय नगर, कानपुर॥
२	अजय कुमार राय गन फैक्टी, कानपुर।	ग्राम पोस्ट–विसुनपुर जिला–गोरखपुर	GI/T २३३अर्मापुर स्टेट अर्मापुर, कानपुर॥
३	अवध राज राय (कानपुर टेक्सटाइल्स)	ग्राम भैंसकुर, पोस्ट–ठेकमा, जिला–आजमगढ़	६८ बासन्ती नगर जूही, कानपुर।
४	अश्विनी कुमार राय (न्यू विक्टोरिया मिल कानपुर)	ग्राम–गहुँनी मेहनगर पोस्ट–लालगंज जिला आजमगढ़	८३A/१२ जूही कालोनी हमीरपुर रोड' कानपुर॥
५	अनिल कुमार राय	ग्राम, पोस्ट–शेरपुर कलाँ जिला-गाजीपुर	– ० –
६	अशोक कुमार राय	ग्राम-पोस्ट–शेरपुर जि०-गाजीपुर	– ० –
७	आनन्द कुमार पाण्डेय ग्रिण्डलेज बैंक, कानपुर	ग्राम-पोस्ट–भोजापुर जिला-बलिया	१३/६ परमठ, कानपुर
८	आनन्द नारायण राय जिला कारागार अधीक्षक कानपुर।	ग्राम, पोस्ट-सुहवल जिला-गाजीपुर	अधीक्षक निवास (कारागार कैम्पस) कानपुर।
९	अवधेशकुमार मिश्र राष्ट्रीय सर्करा संस्थान कानपुर।	ग्राम जगदीशपुर पो० बघनगरी जिला-मुजफ्फरपुर (विहार)	५, वाईजी क्वाटर्स आजाद नगर कानपुर।
१०	श्रीमती इन्द्रावती सिंह पत्नी बलदेव सिंह से०नि० उप पुलिस अधीक्षक	ग्राम, पो०-अनन्तापुर जिला-इलाहाबाद	73 A किदवई नगर, कानपुर।
११	कृष्ण शरण राय जूनियर अभिपंता पनकी पावर हाउस, कानपुर	ग्राम, पोस्ट–अमरपुर जिला–सीवान (विहार)	१६/८२ न्यू कालोनी, पनकी पावर हाउस, पनकी, कानपुर।
१२	कवीन्द्र नरायण सिंह आरक्षण (सेन्ट्रल स्टेशन कानपुर	ग्राम–पोस्ट फुलवरिया वाराणसी कैन्ट ३२/००२	२A/६३ आजाद नगर कानपुर। २०८००२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३ के० पी० सिंह प्रोफेसर आई. आई. टी.	पटना, विहार	क्वार्टर नं० ६३६ आई. आई. टी. कैम्पस, कानपुर।
१४ कमला कान्त पाण्डेय नेशनल सुगर इन्स्टीच्यूट कानपुर।	ग्राम, पो०-भागवत परसा जिला-गोपाल गंज (विहार)	२/२८९ नवाबगंज कानपुर। २०८००२
१५ कृष्ण देव राय कानपुर कोर्ट	ग्राम,चौकी, लालगंज आजमगढ़	१२७/११ विजय नगर कालोनी कानपुर।
१६ कान्ति प्रसाद त्यागी कार्यवेक्षक। एम० एम० जी लघु अस्त्रनिर्माणी. कानपुर	ग्राम–पीरनगर सूदना पोस्ट–असौज़ जिला–गाजियाबाद	N. T/III 132 अर्मापुर इस्टेट कानपुर
१७ कमला प्रसाद सिंह आर्डिनेंस फैक्टरी,कानपुर	ग्राम-पोस्ट-देवचन्दपुर जिला–वाराणसी (उ० प्र०)	G I/117 अर्मापुर इस्टेट कानपुर।
१८ गुरुदेव नारायन राय	ग्राम, पो०-रेवतीपुर जिला–गाजीपुर	– ० –
१९ गोपाल नारायण सिंह खलारी सीमेन्ट वर्क्स, राचीं, विहार।	ग्राम, पोस्ट–महुआरी जिला–वाराणसी	– ० –
२० श्रीमती गिरजा सिंह पत्नी जस्टिस के. पी. सिंह इलाहाबाद उच्च न्यायालय	ग्राम, पोस्ट–बेलवा जिला–वाराणसी	२A महर्षि दयानन्द मार्ग सिविल लाइन्स, इलाहाबाद।
२१ जगदीश नारायण शर्मा महानगरीय मजिस्ट्रेट, फजलगंज कानपुर।	ग्राम, बौलिया पोस्ट–बलुआ गजापुर जिला–वाराणसी	जिलाधीश कम्पाउण्ड, छः बंगलिया, सरकिट हाउस कालोनी कानपुर।
२२ जय प्रकाश सिंह (कन्ट्रैक्टर्स)	ग्राम, डिग्घी, पो० चन्द्रौली जिला–वाराणसी	१०६/४०० A गांधी नगर, कानपुर
२३ जय ठाकुर राय चार्जमैन ग्रेड I	ग्राम पोस्ट–शेरपुर जिला–गाजीपुर (उ० प्र०)	F T / 86 अर्मापुर इस्टेट
२४ जय शंकर प्रसाद राय सहायक आचार्य, एच. बी. टी. आई.	ग्राम, नसरतपुर पो० परसा जिला–गाजीपुर।	D-14 एच. बी. टी. आई कैम्पस आजाद नगर कानपुर। २०८००२
२५ तारा चन्द्र दत्ता कार्यालय अधीक्षक मैकरावर्टस-गंज हास्पिटल	– ० –	ब्लाक नं० ७, ६७ / १७ गोविन्द नगर, कानपुर कानपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ दिनेश दत्त राय	ग्राम, पोस्ट–गोड़उर जिला—गाजीपुर	– ० –
२७ दीनानाथ राय एस. आई. पुलिस (सेन्ट्रल स्टोर) यातायात पुलिस लाईन कानपुर।	ग्राम, पोस्ट–जोगा मुसाहिब जिला कानपुर	सेन्ट्रल स्टोर्स यातायात पुलिस लाईन मीरपुर कैंट, कानपुर।
२८ दुर्गेश कुमार राय व्यापार	ग्राम, खड़हर पो० मुफ्तीगंज जिला जौनपुर	प्लाट नं० ६, नरिया कालोनी पोस्ट- बी. एच. यू०, वाराणसी।
२९ डा० धीरेन्द्र नारायण शर्मा ऐसोसियेट प्रोफेसर, कृषि विश्व विद्यालय	ग्राम–राम नगर पोस्ट — सिरसा रामनगर जिला इलाहाबाद	२/४९३ आजाद नगर, कानपुर। २०८००२
३० नन्द लाल शर्मा अध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय आई. आई. टी, कानपुर	ग्राम, पोस्ट-रेवतीपुर जिला गाजीपुर	नानकारी, आई. आई. टी कानपुर- १६
३१ प्रभाष चन्द्र राय	ग्राम, पोस्ट–सुहवल जिला गाजीपुर	— —
३२ प्रदीप त्यागी मैन्यू फैक्चरिंग केमिस्ट शिवहरा सुगर फैक्टरी, विजनौर	ग्राम पोस्ट–वैरा फिरोजपुर जिला–वुलन्दशहर	— —
३३ फुल्लन राय अवर अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर	ग्राम, कमथरी पोस्ट–कमरवाँ जिला–आजमगढ़।	बी ब्लाक १२४/६८५ गोविन्द नगर, कानपुर।
३४ विनोद राय सहायक अभियन्ता पनकी पावर हाउस कानपुर	ग्राम, पोस्ट भीमवर जिला–आजमगढ़	टाइप ४/६१ अधिकारी आवास पनकी पावर हाउस, कानपुर
३५ डा० बृजेश राय सह प्राध्यापक-कृषि विश्व विद्यालय कानपुर	ग्राम, चोरारी पो० मड़ियाहूँ जिला–जौनपुर	सी २३ कृषि विश्वविद्यालय कालोनी कृषि विश्वविद्यालय कैम्पस, कानपुर।
३६ विकास चन्द्र शर्मा इंस्ट्रूमेन्ट टेकनीशियन आई. इ. एल कानपुर	ग्राम, पोस्ट–श्रीकान्तपुर जिला —आजमगढ़	एम. आई. जी २१, सेक्टर-३ हेमन्त विहार, कानपुर-१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३७ वीरेन्द्र राय विक्टोरिया मिल, कानपुर	ग्राम, पोस्ट—बहादुरपुर जिला--आजमगढ़	११६/७ विजय नगर कालोनी कानपुर।
३८ वैजनाथ राय पुलिस कोर्ट इन्सपेक्टर अभियोजना शाखा, कानपुर	ग्राम, पोस्ट--श्रीनगर जिला—बलिया	७/३७ यातायात पुलिस लाईन कैम्पस क्वार्टर्स, कानपुर।
३९ ब्रह्मदेव राय मिडलैण्ड कम्पनी, मेस्टन रोड, कानपुर	ग्राम, तिलवा पोस्ट-रेवतीपुर जिला--गाजीपुर	५/५३ ऋषी नगर, शुक्लागंज, जिला--उन्नाव
४० वीरेन्द्र प्रसाद राय प्रोसेस टेक्नीशीयन आई. ई. एल. कानपुर	ग्राम, पोस्ट—छिन्नबलिया जिला छपरा (बिहार)	११७ एन ७४ बड़ा बाजार काकादेव, कानपुर
४१ विजय कुमार मिश्र भविष्य निधि विभाग कानपुर	ग्राम पोस्ट--अनन्तापुर जिला इलाहाबाद	६/४१ रानीघाट पुराना कानपुर कानपुर।
४२ विजय कुमार व्यवसाय	शुक्ला ट्रांसपोर्ट २५८ चक्र, जीरो रोड इलाहाबाद	... —
४३ विश्राम सिंह एच. ए. एल. कानपुर	ग्राम, सठिया पोस्ट—शिकार गंज जिला—वाराणसी	२६०/३ जे. के. कालोनी जाजमऊ, कानपुर।
४४ महेश कुमार राय नेशनल सीड कारपोरेशन कानपुर	ग्राम—नगवाँ पोस्ट—हरपुर जिला—गोरखपुर	१२४/६०३ बी, ब्लाक, गोविन्द नगर कानपुर
४५ डा० मुनेश्वर राय सहायक प्राचार्य, क्र० वि० विद्यालय, कानपुर	ग्राम, पोस्ट--वेला सुल्तानपुर जिला--आजमगढ़	सीं-२० राजकीय आवास--कालोनी रावतपुर, कानपुर।
४६ मिथिलेश कुमार मिश्र विक्रीकर कार्यालय, कानपुर	ग्राम, जगदीशपुर- पो० वघनगरी जिला—मुजफ्फरपुर (विहार)	५ बाई जी क्वार्टस, नबाब गंज, कानपुर।
४७ रघुवंश राय अवकाश प्राप्त प्राचार्य	ग्राम—पोस्ट रामपुर जिला—भोजपुर (बिहार)	दिवियापुर, इटावा (उ० प्र०)
४८ राम नन्दन त्यागी इचार्ज चौकी--जाजमऊ	ग्राम--गोपना पो० हापुड़ जिला—गाजियाबाद	जे. के. रेयन गेस्ट हाउस, कानपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४६ राजेन्द्र प्रसाद राय रिजर्व बैंक, कानपुर	ग्राम पोस्ट--थलईपुर जिला--बलिया।	प्लाट नं० १४१२ रतन लाल नगर, कानपुर।
५० राम आसरे सिंह सुरक्षा विभाग आई. ई. एल कानपुर	ग्राम--नूरनगर पो० जलालपुर बाजार, जिला-छपरा (बिहार)	१६८/५ विजय नगर कालोनी, कानपुर
५१ रमा शंकर राय आई. जी. एस. कानपुर	ग्राम--रहुला, पोस्ट--दोहरीघाट जिला--आजमगढ़	२१०/३ जूही लाल कालोनी कानपुर।
५२ रमाशंकर राय जूनियर इजीनीयर पी० डब्लू० डी०	ग्राम--अफजलपुर पोस्ट--जंगीपुर गाजीपुर	११० अलोपी बाग इलाबाद
५३ श्री रमा शंकर सिंह राज्य बीमा निगम (कानपुर)	ग्राम, पोस्ट-बरैनी जिला-मिर्जापुर	डी १५, एसिक निकुंज सर्वोदय नगर--कानपुर ५१
५४ आर. जी राय	ग्राम पोस्ट--शेरपुरकलाँ जिला गाजीपुर	... ...
५५ रतनेश्वर प्रसाद सिंह सहायक अभियंता, पनकी पावर हाउस कानपुर	ग्राम--महमदा पो० पूसा जिला--समस्तीपुर (बिहार)	ए० ई० ५० अधिकारी आवास पनकी पावर हाउस, कानपुर।
५६ आर. एन. राय अधिशासी अभियंता, पनकी पावर हाउस--कानपुर।	ग्राम--पोस्ट बीरपुर जिला--गाजीपुर।	टाईप ४/८१ अधिकारी आवास पनकी पावर हाउस, कानपुर।
५७ राम सुख शर्मा गोपाल आटोमोबाइल्स,	ग्राम पोस्ट--सहरोज जिला--आजमगढ़।	साईट नं० १ ब्लाक ३/५ किदवई नगर--कानपुर।
५८ रामनरेश सिंह कृषि विश्वविद्यालय कानपुर कानपुर	ग्राम--पोस्ट भीषमपुर (वाया सेवापुरी) वारासी।	सी २६ न्यूकैम्पस क्वार्टर्स कृषि वि० वि० कानपुर।
५९ सीताराम राय प्रधानाचार्य, सरदार पटेल इण्टर कालेज मेरठ। उ० प्र०॥	ग्राम पोस्ट--रामगढ़ जिला--गाजीपुर	... ...
६० सूरज कुमार सिंह	ग्राम--पोस्ट शेरपुर कलाँ जिला गाजीपुर	... ...
६१ सुरेन्द्र प्रसाद राय मीट्रोलाजिकल अभियंता आई० आई० टी कानपुर	ग्राम--पोस्ट वड़गों जिला बस्ती। उ० प्र०॥	कार्टर नं० ३०३३ आई० आई० टी कैम्पस कानपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६२ सोमदत्त त्यागी सर्विस इंजीनीयर, ऐग्रो, रामपुर	ग्राम–पोस्ट नायक नगला जिला बिजनौर	सी ८ इण्डट्रियलंएरिया रोशनबाग–रामपुर । उ० प्र० ॥
६३ सुरेन्द्र सिंह ग्रैजुयेट टेलर्स	ग्राम पोस्ट–श्रीकान्तपुर जिला–आजमगढ़ ।	११७/३२ एन मार्केट काकादेव, कानपुर ।
६४ सुरेन्द्र नारायण सिंह भू० पू० न्यायाधीश, उच्च न्यायालय इलाहाबाद ।	ग्राम-पोस्ट-बेलवा जिला-वाराणसी ।	२ A. महर्षिदयानन्द मार्ग सविल लाइंस, इलाहाबाद ।
६५ श्रीपतिराय जे० के० काटन मिल्स कानपुर	ग्राम–पोस्ट कोटवाँ नरायनपुर जिला बलिया । उ० प्र० ॥	३७५/४ शास्त्री नगर कानपुर
६६ सुभाष शर्मा प्रवक्ता एच० बी० टी० आई कानपुर	ग्राम-नरवाँ पो० जमुई जिला-पटना बिहार	टाइप ४ डी- ४८ वेस्ट कैम्पस एच. बी. टी. आई. कानपुर ।
६७ सत्य प्रकाश त्यागी कार्य वेक्षक । एन० एस० एम० आयुध निर्माणी, कानपुर	ग्राम–मुरादग्राम पुर्सी पोस्ट–मुराद नगर जिला–गाजियाबाद	N. T/III 169 अर्मापुर इस्टेट कानपुर
६८ शिवदत्त राय ओ. ई. एफ.	ग्राम-पोस्ट अवथही जिला - गाजीपुर ।	३०५/५ जूही (लाल कालोनी) कानपुर ।
६९ शिवदत्त त्यागी विक्रीकर अधिकारी	के बी- 70/9 A कविनगर, गाजियाबाद	१२०/५२४ शिवाजीनगर कानपुर ।
७० शिव प्यारे राय एलगिन मिल नं० १ कानपुर	ग्राम पोस्ट—बनहरा जिला बलिया उ० प्र० ॥	८/१ फोर्ड में कडानल कालोनी, सिविल लाइन्स, कानपुर ।
७१ शंभू नाथ शाही एम० एम० आयुध निर्माणी कानपुर आर्डिनेंस फैक्ट्री कानपुर	ग्राम–पोस्ट बलथरी जिला–गोपालगंज (बिहार)	GI/T 164 अर्मापुर इस्टेट, कानपुर कानपुर ।
७२ शिवदत्त त्यागी कल्याण अधिकारी आई० जी० एस० कानपुर ।	ग्राम पोस्ट–जडौदा पाण्डा जिला–सहारनपुर	E T—4 मध्य रोड, अर्मापुर इस्टेट कानपुर
७३ सुरेश चन्द्र त्यागी व्यवसाय	ग्राम–पोस्ट खजुरी जिला मेरठ ।	मोहल्ला खई, हापुड़ गाजियाबाद ।
७४ रामेश्वर शर्मा जोनल मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक पटना	ग्राम–पोस्ट चेरो सममेरा बिहार जिला–नालन्दा	१/३२ राजेन्द्र नगर पटना बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नव-वार्षिक सदस्य सूची

१ श्री के. डी. सिंह निरीक्षक, नगर महापालिका कानपुर	ग्राम, पोस्ट-जक्खिनी जिला-वाराणसी	१४३/१२ शास्त्री नगर कालोनी कानपुर।
२ जगदीश प्रसाद पाण्डेय निरीक्षक पुलिस विभाग,	ग्राम-महुलानी पोस्ट-टीकुर जिला-बस्ती	थाना - रायपुरवा, कानपुर शहर
३ देवेन्द्र कुमार त्यागी सहायक अभियंता आवास विकास, कानपुर	ग्राम, पोस्ट-चन्दसरा जिला-मेरठ	४ ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर
४ डा० बद्री राय वैज्ञानिक भौतिक विभाग आई. आई. टी. कानपुर	ग्राम-कुतुबपुर पोस्ट-वारा जिला-गाजीपुर	E-२ एस. बी. आर. ए. आई. आई. टी. कैम्पस कानपुर।

ब्रम्हर्षि-समाज कानपुर

युवा-मंच

नाम	स्थायी पता	स्थानीय पता
अभिमन्यु राय M. Sc. (Ag) Final अविवाहित	ग्राम-भरवलिया पो. अहरा जिला-बस्ती उ० प्र०	कृषि विश्वविद्यालय कैम्पस कानपुर
अभय कुमार राय Ph. D. शोधकार्य (प्रथम वर्ष) अविवाहित	ग्राम-पोस्ट-तीहामुहम्मदपुर जिला-गोरखपुर उ० प्र०	दयानन्द स्नातकोत्तर विद्यालय सिविल लाइन्स, कानपुर
अरविन्द कुमार राय M.B.B S. चतुर्थ वर्ष अविवाहित	ग्राम-काछी कलाँ, पो० कोपागंज जिला-आजमगढ़ उ० प्र०	मेडिकल कालेज, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४ अनिल कुमार राय पुत्र डा० ए० एन० राय, H. B. T .I. तृतीय वर्ष अविवाहित	ग्राम कछी कलाँ पोस्ट—जकोघगं जिला—आजमगढ़	एच० बी० टी आई होस्टल कानपुर
५ अनिल कुमार राय अविवाहित पुत्र बैजनाथ राय तृतीय वर्ष M. B. B. S.	ग्राम—अमरहट पो० खुरहट जिला आजमगढ़ उ० प्र०	मेडिकल कालेज होस्टल कानपुर
६ अंजनी ठाकुर B. Tech. द्वितीय वर्ष	बलिया । उ० प्र० ॥	एच० वी०टी० आई, कानपुर मेडिकल कालेज, कानपुर
७ अरुण राय अविवाहित M B B. B, S (M. D.) अंतिम वर्ष	ग्राम, पोस्ट—करीमुद्दीनपुर जिला—गाजीपुर	
८ अनिल त्यागी अविवाहित M. B. B. S. तृतीय वर्ष	ग्राम—मुडैना जिला—मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)	॥
९ उपेन्द्र राय पुत्र स्व० परमानन्द M. Sc Botony	ग्राम—बरईपुर, पो० जोलहापुर जिला—आजमगढ़	दयानन्द स्नातकोत्तर विद्यालय—कानपुर ।
१० कृष्णकान्त राय M. B. B. S. अंतिमवर्ष	ग्राम—तहवरपुर पो० टीकापुर जिला—आजमगढ़	मेडिकल कालेज कानपुर
११ कौशलेश चन्द्र राय अविवाहित M. B. B. S. द्वीतीय वर्ष	ग्राम—अमाँव पो० भरौली जिला, बलिया	मेडिकल कालेज कानपुर
१२ चन्द्रकेश राय B. Sc. (Ag.) चतुर्थ सेमेस्टर	ग्राम पोस्ट—ठेकमा जिला आजमगढ़	कृषि विश्व विद्यालय कानपुर
१३ जितेन्द्र कुमार राय अविवाहित M. Se. (Ag) प्रथम वर्ष	ग्राम—कोइन्दी बुजुर्ग पोस्ट—तमकुही राज जिला देवरिया । उ० प्र० ॥	॥
१४ झारखण्डे राय विवाहित. पुत्र रामनारायन राय M. Sc. Ag. अंतिम वर्ष	ग्राम—वड़ागाँव पो० मउनाथ भजन जिला आजमगढ़	कृषि विश्वविद्यालय कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५ प्रदीप कुमार राय (अवि०) पुत्र दिलीप राय, M. B. B. S. अंतिम वर्ष	ग्राम–जिगिनापुर पो० टीकापुर जिला आजमगढ़। उ० प्र०।	मेडिकल कालेज कानपुर
१६ प्रदीप कुमार सिंह H. B. T. I. कानपुर द्वितीय वर्ष (अवि०)	ग्राम–भीखमपुर पो० सेवापुरी जिला–वाराणसी।	एच० बी० टी० आई कानपुर
१७ पूर्णेन्दु राय पुत्र बी० बी० राय निर्देशक नीरीक्षण, कानपुर (अवि०)	ग्राम–लउवाडीह पो० करीमउद्दीनपुर गाजीपुर	३/२०७ विष्णुपुरी कानपुर
१८ आर० पी० सिंह (अवि०) B Tech. द्वितीय वर्ष	ग्राम–तेनुईं, पो० हाथी बाजार जिला–वाराणसी	एच० बी० टी० आई कानपुर
१९ राकेश कुमार राय (अवि०) M. Tech अंतिम वर्ष	ग्राम–नउवरतीही पो० वढ़हल गंज पो० वढ़हलगंज जि० गोरखपुर	॥
२० संजय कुमार राय (अवि०) पुत्र चन्द भूषण राय M. B. B. S.	ग्राम, पोस्ट–लिलकर वलिया	मेडिकल कालेज कानपुर
२१ सुरेन्द्र कुमार राय (अवि०) पुत्र अच्युतानन्दराय M. B B. S. द्वितीय वर्ष	ग्राम–रेवरीडीह पोस्ट–सहरोज जिला–आजमगढ़	॥
२२ सुरेश राय (अवि०) B. Sc. (Ag) चतुर्थ सेमेस्टर	ग्राम पोस्ट–मलसा, जिला गाजीपुर	कृषि विश्वविद्यालय कानपुर
२३ सुधेन्दुराय (अवि०) पुत्र बी० बी० राय निदेशक निरीक्षण Mee. Erg. II year (I.I.T.)	ग्राम–नउवाडीह पो० करीमुद्दीनपुर गाजीपुर	३/२०६ विष्णुपुरी कानपुर
२४ शरद चन्द्र राय (अवि०) पुत्र अभय नारायण राय B. Tech. अवि० अंतिम वर्ष	ग्राम रेवरीडीह, पो० सहरोज जिला–आजमगढ़	एच० बी० टी आई कानपुर।
२५ ज्ञान दत्त पाण्डे M. Sc (Ag) अंतिमवर्ष	ग्राम ऊँचं गाँव जमुहे पो० अड़वारा जिला–बस्ती। उ० प्र०	कृषि विश्व विद्यालय कानपुर

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क्षेत्रीय–प्रतिनिधि)

ब्रह्मर्षि–समाज, कानपुर

नाम व पता		क्षेत्र कानपुर नगर
१ अजय कुमार राय जी १/टी० २३३ अर्मापुर इस्टेट, कानपुर।	—	अर्मापुर स्टेट व गन फैक्टरी, फील्ड गन फैक्टरी स्माल आर्म्स फैक्टरी।
२ अनिल कुमार राय १२७/११ विजय नगर कालोनी कानपुर	—	विजय नगर, जरीब चौकी, जे के कालोनी, दादा नगर गन्दानाला।
३ अवधराज राय ९८ वासन्ती नगर जूही कानपुर	—	जूही, लाल, हरी व सफेद कालोनी, अनवर गंज पोस्ट आफिस कालोनी व रेलवे कालोनी।
४ अश्विनी कुमार राय ८३ ए/१२ जूही, कानपुर	—	जूही, ट्रांसपोर्ट नगर, बाबू पुरवा, स्वदेशीमिल
५ कमला कान्त पाण्डेय २/१८९ नवाबगंज, कानपुर	—	आजाद नगर,नवाब गंज, एग्रीकल्चर कालेज तथा एच. बी. टी. आई कालोनी।
६ कृष्णा शरण राय १९/८२ न्यू कालोनी पनकी कानपुर	—	पनकी पावर हाउस, अधिकारी आवास कालोनी तथा आवास विकास कालोनी
७ कवीन्द्र नारायन सिंह २ए/९३ आजाद नगर कानपुर	—	सेन्ट्रल स्टेशन, रेलवे कालोनी, लोको कालोनी रेलवे क्वार्टर्स, २ जूहीयार्ड कानपुर
८ गणेश प्रसाद सिंह १२८/२/५८ यशोदा नगर, कानपुर	—	यशोदा नगर, किदवई नगर, नौबस्ता, रिजर्व बैंक कालोनी कानपुर।
९ रमाशंकर राय २९०/३ जूही लाल कालोनी कानपुर	—	पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ कालोनी, सरकिट हाउस, कैन्ट मीरपुर यातायात पुलिस लाईन, फेथफुल गंज कानपुर
१० आर० के० सिंह (लल्लन जी) २६४/३ जूही लाल कालोनी, कानपुर	—	गोविन्द नगर कानपुर
११ रामनारायन सिंह १९०/२ शंकर नगर कानपुर २०८००७	—	एच. ऐ. एल, पिन्टू नगर, शंकर नगर, हरजेन्द्र नगर रामा देवी चौराहा, कृष्णा नगर, एयर फोर्स एरिया।
१२ विकास चन्द्र शर्मा, M. I G 21 हेमन्त विहार, बर्रा, कानपुर-४	—	आई. ई. एल, बर्रा कालोनी, रतन लाल नगर दबौली गुजैनी, निराला नगर कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३	विश्राम सिंह २६०/३ जे. के. कालोनी कानपुर	—	जे. के. कालोनी, तिवारीपुर, जाजमऊ लाल बंगला, कानपुर।
१४	विजय कुमार मिश्रा ६/४१ रानी घाट, पुराना कानपुर कानपुर–१	—	विष्णु पुरी, पुराना कानपुर, आर्य नगर, स्वरूप नगर अशोक नगर, हर्ष नगर, जवाहर नगर नेहरू नगर गांधी नगर, पी. रोड गुमटी न० ५, कानपुर।
१५	शिव प्यारे राय ८/१ फर्डि मैंकडानल कालोनी सिविल लाइंस, कानपुर	—	सिविल लाईन, परेड, ग्वाल टोली, परमट फूलबाग बड़ा चौराहा, मेस्टन रोड बिरहाना रोड़।
१६	शिवशंकर सिंह ३४६ नानकारी, आइ, आई टी कानपुर	—	आई. आई. टी कैम्पस, एलिम्को एन. एस. आई, इन्दिरा नगर, कानपुर विश्व विद्यालय
१७	शैलेश राय 117/387Q शारदा नगर कानपुर	—	शास्त्री नगर, गीता नगर, सर्वोदय, नगर काकादेव विनायक पुर रावतपुर गाँव एवं कालोनी
१८	हरिद्वार सिंह केसा कालोनी, आजाद नगर कानपुर	—	केसा कालोनी, एच. बी. टी आई कैम्पस चिड़ियाघर, पालीटेकनीक कानपुर
१९	हरिशंकर शर्मा ४८५/६ शास्त्री नगर कालोनी, कानपुर	—	शास्त्री नगर पाण्डुनगर कमला नगर, कौशलपुरी, लाजपत नगर, मरियमपुर।

o:-○o:-

नोट :—समाज के सदस्यों के सूचनार्थ निवेदन है कि कृपया अपने वार्षिक या आजीवन सदस्यता फार्म अपने क्षेत्रीय प्रतिनिधियो के माध्यम से महामंत्री ब्रह्मर्षि समाज कानपुर को भेजने का कष्ट करें।

२ समाज के कानपुर से बाहर के सभी बन्धुगण किसी भी प्रकार की कोई भी सूचना क्षेत्र विशेष के संबंध में चाहें तो कृपया सीधे क्षेत्रीय प्रतिनिधि को ही लिखें तथा प्रतिलिपि महामंत्री ब्रह्मर्षि समाज को भेज दें तो सूचना भेजने में सुविधा होगी।

३ क्षेत्रीय प्रतिनिधियों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की समस्याओं से महामंत्री तथा अध्यक्ष को हर मासिक मीटिंग में अवगत करावें तथा कानपुर से बाहर से प्राप्त पत्रों का उत्तर शीघ्रता से भेजकर सम्पर्क सूत्र की सार्थकता सिद्ध कर लोगों में समाज प्रति विश्वास जगायें॥

राम जी राय
महामंत्री
ब्रह्मर्षि समाज कानपुर

E–४एन० एस० आई० क्वार्टर,
कल्यानपुर, कानपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोक–समाचार

महान वैज्ञानिक डा० बैजनाथ सिंह जन्म– सन् १९१३ ई०, निधन-३१ दिसम्बर, १९८५

सरायगोवर्धन, चेतगंज वाराणसी के एक प्रतिष्ठित भूमिहार ब्राह्मण परिवार में जन्मे बाबू लालबहादुर सिंह के द्वितीयपुत्र डॉ० वैजनाथ सिंह के निधन से ब्रह्मर्षि वंश ने एक प्रतिभाशाली तथा विशिष्ट व्यक्ति को खोदिया है। जिसकी क्षति पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। डा० सिंह अपने परिवार या नगर के ही नहीं सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश या सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये एक समर्पित व्यक्तित्व थे। १९३६ में प्रयाग विश्व विद्यालय से एम. एस-सी. करने के बाद वे उच्च शिक्षा हेतु इगलैण्ड गये थे। १९३८ में डबलिन युनिवर्सिटी से पी-एच.डी. व १९४०, १९४७ में लन्दन विश्वविद्यालय से पी.एच.डी.तथा डी. एस.सी. डिग्री प्राप्त कर उन्होंने यूरोप के विभिन्न नगरों यथा पेरिस, लन्दन, बर्लिन आदि में माइक्रोबाईलाजी में शोध कार्य १९५२ तक किया। १९५२,में केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, में कार्यभार ग्रहण किया तथा निदेशक के पद से १९७२ में सेवा निवृत्त हुये, पर सरकार के अनुरोध पर मृत्यु पर्यन्त विशिष्ट वैज्ञानिक के रूप में सरकारी संस्थान से जुड़े रहे। ऐसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के निधन पर हम ब्रह्मर्षि समाज कानपुर की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते है तथा उनके अग्रज बाबू विश्वनाथ सिंह के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार को आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

समस्तीपुर से प्राप्त एक समाचार के अनुसार ब्रह्मर्षि वंश के भूषण तथा समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी पं० रामबहादुर शर्मा एडवोकेट, भूतपूर्व महामंत्री अखिल भारतीय भूमिहार महा-सभा तथा भू०पू० महा प्रवन्धक हथुआ राज्य का निधन १४/२/८६ को हो गया। उक्त महापुरुष के निधन से समाजने अपना एक गौरव स्तंभ खो दिया है। हम समस्त ब्रह्मर्षि वंश तथा ब्रह्मर्षि सन्देश परिवार की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा उस महान आत्मा की चिर शान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं। भगवान उनके परिवार को दुख वहन करने की शक्ति दे। समाज उनके आदर्शों से सदा प्रेरणा प्राप्त करता रहेगा।

प्रतिभावान खिलाड़ी बाबू भगवती सिंह जन्म–२४ सि० १९०३ निधन–२ नव० १९८५

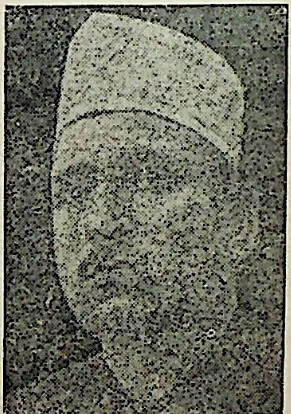

नदेसर वाराणसी कैन्ट के एक संभ्रांत जमींदार परिवार में जन्में बाबू बटुक दयाल सिंह के पौत्र बाबू शिवशंकर सिंह के ज्येष्ठ पुत्र तथा ब्रह्मर्षि सन्देश के प्रधान सम्पादक श्री वी. बी सिंह के अग्रज बाबू भगवती सिंह आरंभ से ही स्वस्थ व्यक्तित्व के एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे। जिलास्तर पर वे हाकी, फुटबाल, तथा क्रिकेट की जिला टीम में चुने जाते तथा खेलते रहे। वे एथेलेटिक्स में भी बढ़चढ़कर भाग लेते थे तथा जिलास्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने में सदा अग्रणी रहे। खेलों के प्रति उनकी यह रुचि जीवन पर्यन्त बनी रही। चरित्र के धनी, धार्मिक वृत्ति तथा उदारमना बाबू भगवती सिंह को प्राय: समकालीन नेताओं तथा समाज सेवियों का सानिध्य सदा प्राप्त रहा। वे सभी के सुख दु:ख में सहभागी बनने को सदा तत्पर रहे। ऐसे उदारमना व्यक्तित्व के निधन पर हम दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा उनके परिवार को उनका विछोह सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि-समाज

कानपुर
प्रधान कार्यालय :
६/४१ रानीघाट, पुराना कानपुर–२०८००२
संस्था रजिस्ट्रेशन संख्या–३२१३/८३

भूमिहार, मोहियाल, त्यागी, चितपावन, नम्बूद्री, गालव, अनाविल,
जमींदार ब्राह्मण और समान रक्त वाली जातियों का केन्द्रीय संगठन

व्यक्तिगत विवरण

१ पूरा नाम
२ जन्म तिथि
३ पिता का नाम
४ पिता का व्यवसाय
५ गोत्र
६ स्थायी घर का पता
७ स्थानीय निवास का पता
८ व्यवसाय
९ पद एवं विभाग
१० कार्यालय का पता
११ अभिरुचियाँ
१२ शैक्षिक/व्यावसायिक योग्यता
१३ पत्नी का नाम
१४ बच्चों का विवरण

क्रम सं	नाम	जन्म तिथि	योग्यता	विवाहित/अविवाहित
१				
२				
३				
४				
५				

१५ जीवन की महत्वपूर्ण सफलता

मैं ब्रह्मर्षि समाज के विधान एवं निर्धारित नियमों से भली भाँति परिचित हूँ। कृपया मुझे समाज का सदस्य बनायें। इस पत्र के साथ मैं रु०............(अंकों में)............सदस्यता के लिए प्रेषित कर रहा हूँ।

दिनांक........................ हस्ताक्षर

नोट :—ब्रह्मर्षि समाज का सदस्यता शुल्क निम्न है :—

१ रु० १०१/-आजीवन सदस्यता शुल्क।
२ रु० २४/-वार्षिक सदस्यता शुल्क।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.